बाल संसार समग्र 1

रंग रंगीले गीतों, कहानियों, नाटकों का रंग रंगीला संसार

संतोष साहनी

बाल संसार समग्र

प्रथम भाग

संतोष साहनी

प्रचारक ग्रंथावली परियोजना
हिन्दी प्रचारक संस्थान
पो. बॉ. ११०६, पिशाचमोचन, वाराणसी-२२१००१

प्रकाशकीय

साहित्य के क्षेत्र में विविध विधाओं पर अधिकारपूर्वक लिखना संतोष जी की लेखनी का वैशिष्ट्य है। कहानी, नाटक, एकांकी, कविता, संस्मरण, यात्रा साहित्य, बाल साहित्य उनके विशिष्ट लेखन क्षेत्र हैं। जहाँ उनकी कविताओं में कविगुरु रवीन्द्रनाथ के विचारों की अभिव्यक्ति है वहीं वह प्रकृतिपरक रचनाओं से प्रभावित भी दीखती हैं। नाटकों में प्रगतिवादी विचारधारा की झलक पात्रों के संवादों के माध्यम से स्पष्ट दिखाई देती है।

गंभीर अध्येता, लेखिका, विचारक, नाटककार और कवि होने के साथ ही साथ हिन्दी साहित्य के प्रति संतोष जी की विशेष अभिरुचि परिवार-परम्परा से जुड़ी दीखती है।

अपने पति स्व० बलराज साहनी की तरह अभिनय के क्षेत्र में भी आपका अच्छा प्रवेश रहा है। सफल अभिनेत्री होने के कारण इनके द्वारा रचित नाटकों में बंगाल के मंचीय नाट्यशिल्प का प्रभाव स्पष्ट दीखता है।

बाल साहित्य के क्षेत्र में पंजाबी में उनकी बहुत सी रचनायें पुस्तकाकार छपी हैं और लोकप्रिय हुई हैं। इनमें से कई पुस्तकें पुरस्कृत भी हुई हैं। बाल नाटकों का मंचन भी हुआ है।

हिन्दी में उन्होंने बच्चों के लिए बहुत कुछ लिखा है। उनके बाल साहित्य लेखन पर पंचतंत्र और हितोपदेश का प्रभाव तो है ही, ग्रिम और हैन्स एण्डरसन की कहानियों की भी छाप है। उनके बाल नाटक सशक्त और सजीव हैं। मालूम होता है कि जब वह लिखती हैं तो उनके पात्र उनकी आँख के सामने खड़े रहते हैं। बंगाल में कोई भी व्यक्ति तब तक बड़ा लेखक नहीं माना जाता जब तक उसने बाल साहित्य की रचना में प्रसिद्धि न पायी हो। शान्ति निकेतन में रही संतोष जी भी साहित्य के साथ सफल बाल साहित्य रचनाकार हैं।

इतना संतुलित लिखकर भी बहुत समय तक अपने आपको प्रकाशित न कराने का संयम उनकी स्वस्थ मानसिक प्रवृत्ति का परिचायक है। वह कहती हैं कि साहित्य को जो कुछ भी देना चाहती हूँ वह पूर्णतः मँजा हुआ रहे। बंगाल के प्रसिद्ध साहित्यकार स्व० राधारमण मित्र की पहली कृति "कलकत्ता दर्पण" *85* वर्ष की उम्र में प्रकाशित हुई थी और उसका बहुत समादर हुआ। श्रीमती साहनी का समग्र भी उनकी एक लम्बे साहित्यिक जीवन संघर्ष की कहानी है। हमें विश्वास है इसका अभूतपूर्व स्वागत होगा।

उन्हें साहित्य में पूर्णता प्राप्त हो चुकी है। उनकी रचनायें आकाशवाणी, दूरदर्शन, पत्र-पत्रिकाओं में तो आ ही चुकी हैं और अब समग्र रूप में प्रकाशित हो रही हैं।

बाल साहित्य लेखन बाल मनोविज्ञान से जुड़ा है। बच्चों की वय सीमा के अनुसार पुस्तकें तैयार करना अपने आप में एक कला है। बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं पर एक लेखक द्वारा लिखा गया हिन्दी का यह पहला समग्र अपने आप में लेखिका के बाल नाटकों, बाल उपन्यास, कविताओं और बाल कथाओं को समेटता है। बाल कविताओं को संगीतबद्ध करके उन्होंने कविताओं को संगीतमय बनाने का प्रयत्न किया है। बाल संसार संतोष साहनी समग्र की यही विशेषता भी है।

उनका प्रकाशक बनकर हमें गौरव का अनुभव हो रहा है।

— कृष्णचन्द्र बेरी

बाल संसार समग्र

प्रकाशक
विजय प्रकाश बेरी

प्रचारक ग्रन्थावली परियोजना
हिन्दी प्रचारक संस्थान
पो० बॉ० ११०६, पिशाचमोचन, वाराणसी

लेखन व संकलन :
संतोष साहनी

चित्रांकन :
दुलाल प्रामाणिक एवं
पुष्पिता बराट
(पुष्पदल)

कम्प्यूटर कम्पोजिंग :
काशी ऑफ़सेट प्रिंटर्स प्रा० लि०
चन्द्रिका कालोनी, सिगरा, वाराणसी

मुद्रक :
काबरा ऑफसेट
रवीन्द्रपुरी, भेलुपुर, वाराणसी

मूल्य :
१००=००

संतोष जी की रचनाओं में काश्मीर झलकता है । प्रकृति का अपार सौन्दर्य, विशाल घाटियाँ, हिमाच्छादित पर्वत, कल-कल करते नदी-नाले, और साथ ही साथ इस विराट दृश्य में रंग भरने वाले पेड़-पौधे, पक्षियों का कलरव, उड़ती रंग-बिरंगी तितलियाँ और उनके पीछे सुनायी देती है भोले-भाले बच्चों की हँसी, उनके गीत, उनके नाचते पैरों के नूपुर। संतोष जी ने संस्कार रूप में प्रकृति के सौंदर्य को ग्रहण किया है । उनका बचपन और शैक्षणिक काल काश्मीर में बीता है, एक तरह से प्रकृति की ही गोद में वह पल कर बड़ी हुई हैं और शायद काश्मीर छोड़कर बम्बई के जनाकीर्ण कोलाहल और महानगर में बस जाने के बाद, वही संस्कार उन्हें उद्वेलित करते रहे हैं, उठते-बैठते उन्हीं दृश्यों की छवि उनकी आँखों के सामने निरन्तर घूमती रही है और इस तरह वह अपनी कलम के सहारे उन्हीं अनुपम दृश्यों में लौटती रही हैं । अपने परिवेश से तो इन्सान कट सकता है पर उसके हृदयग्राही सौंदर्य और उससे जुड़ी यादों से कट नहीं सकता। संतोष जी की रचनाओं में जहाँ उस सौंदर्य को पकड़ पाने की कोशिश है, वहाँ अपने हृदय की प्यास बुझा पाने की ललक भी है ।

संगीत की शिक्षा संतोष जी को बचपन से मिलती रही है, और इस कला में वह आजीवन साधना भी करती रही हैं । उनकी रचनाओं में विशेष रूप से बच्चों के लिये लिखे गये लघु नाटकों में संगीत का आधार दिया गया है, उनमें वह बच्चों को प्रकृति के प्रांगण में ले जाती हैं जिसका निर्माण उनकी कल्पना, उनका प्रकृति प्रेम तथा संगीत की जानकारी करती है । उनकी अनेक रचनाओं का मंचन देश के विभिन्न नगरों, रेडियो तथा टेलीविजन आदि पर हुआ है ।

उनकी सभी रचनाएँ "संतोष साहनी बाल संसार समग्र" दो खण्डों में प्रकाशित हो रही हैं । इससे निश्चित ही हमारे बाल कलाकार तथा नाट्यकर्मी लाभान्वित होंगे ।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भीष्म साहनी

आभार

मैं आभारी हूँ, प्रसिद्ध सितारवादक श्री शमीम अहमद, उनके गुरु पंडित रविशंकर जी, सुप्रसिद्ध सारंगीवादक पंडित रामनारायण, मेरे गुरु एवं मराठी रंगमंच के सुप्रसिद्ध नट-गायक पंडित अनन्तशंकर दामले जी की, जिन्होंने मेरे रचे और स्वरलिपिबद्ध किए 'पर्वत के गीत', 'सागर के गीत' देखे-सुने और इनके प्रकाशन की दिशा में अग्रसर रहने के लिए प्रोत्साहित किया।

आभारी हूँ अपने परिवार, विशेषतौर पर बालक इशान, प्रणव और उनकी माँ अंजु की जिन्होंने यह गीत सुने और 'पर्वत की सैर', 'पर्वत के गीत' के सबसे पहले रंगीन चित्र बड़े चाव और सुन्दरता से बनाए।

आभारी हूँ उन अनेकों बाल-बालिकाओं, दर्शकों, श्रोताओं, शिक्षकों, पाठकों की भी जिन्होंने इन्हें नाटकों के साथ देखा, खेला, गाया और सुना। उन बाल पत्रिकाओं के संपादकों की भी जिन्होंने इन्हें समय-समय पर हिन्दी-पंजाबी में प्रकाशित किया।

प्रतिभाशाली लेखिका, संगीत-ज्ञानी अपनी बड़ी बहन स्व० श्रीमती सत्यवती मलिक के साथ ही तो गई थी अपने परिवार के प्रिय भाई पं० विनयचन्द्र मौदगल्य जी को यह गीत सुनाने गांधर्व महाविद्यालय दिल्ली में। गीत सुनने के बाद उनका गीतों के बारे में भूमिका लिखना, मुझे और बच्चों को आशीर्वाद देना था। कुछेक बरस बीत चुके हैं उन्हें संलग्न भूमिका लिखे हुए।

'बाल संसार' के नाटक, गीत, कहानियां, कविताएं बाल एवं प्रौढ़ पाठकों के पास समग्र रूप में कभी न पहुँच सकते, अगर ईश्वरीय देन की तरह, हिन्दी प्रचारक संस्थान के संस्थापक-संचालक भाई श्री कृष्णचन्द्र जी बेरी से सम्पर्क न हुआ होता। भाई कृष्णचन्द्र जी, उनके सुपुत्र श्री विजयप्रकाश जी ने बाल साहित्य के प्रति जिस आदर्शपूर्ण प्रेम, धैर्य और लगन से इसे प्रकाशित करने का कठिन बीड़ा उठाकर उसे सम्पन्नता दी है इसके लिए किन शब्दों में अपनी कृतज्ञता व्यक्त करूँ।

चार सौ पृष्ठ के 'बाल संसार' के अनेक नाटकों, कहानियों, गीतों, कविताओं के अनेकोंअनेक विषय-वस्तुओं के लिए अनेकों रूप, आकार, भावनाओं के चित्रों की अनोखी सृष्टि श्रीमती पुष्पिता बराट और श्री दुलाल प्रामाणिक जी ने की है। आभारी हूँ इन दोनों प्रतिभापूर्ण सहयोगी कलाकारों की।

—संतोष साहनी

इकराम
बलराज साहनी मार्ग
जुहू, बम्बई ४९
दिनांक १.१.९३

विषय-सूची

क्रम संख्या		पृष्ठ संख्या
1.	मीना और दो तितलियां	13
2.	एक इतवार	17
3.	गुलमोहर का जन्मदिन	19
4.	बिल्ली का बच्चा	23
5.	एक कहानी	25
6.	मीना और मैना	29
7.	बुद्धूमल	30
8.	दो मछलियां	35
9.	अफ़रीका से आई कोयल	39
	टुन-टुन गुड़िया और डब्बू कुत्ता	
10.	कहानी 1	45
11.	कहानी 2	46
12.	कहानी 3	47
13.	कहानी 4	48
14.	कहानी 5	49
15.	कहानी 6	50
16.	कहानी 7	51
17.	कहानी 8	52
18.	कहानी 9	53
19.	कहानी 10	55
20.	कहानी 11	58
21.	कहानी 12	60
22.	नटखट खटपट बन्दर	62
23.	बातूनी कछुआ	63
24.	बुद्धू राजा—बुद्धू बन्दर	65
25.	चतुर खरगोश—बुद्धू हाथी	67
26.	एक थी, एक थी, लड़की!	69

बाल संसार समग्र

बाल कविताएँ

	पर्वत के गीत	
(1)	पर्वत की सैर, पर्वत के गीत	80
(2)	पर्वत की रेलगाड़ी का गीत	82
(3)	पहाड़ी मजदूर गीत	84
(4)	पर्वत के खेत का गीत	84
(5)	बन्दर जी महाराज !	86
(6)	पर्वत लहरें	87
(7)	पर्वत हिम	89
(8)	पर्वत वन	91
(9)	पर्वत पवन	92
(10)	पर्वत-नदियाँ	93
(11)	लंगूर गीत	94
(12)	पहाड़ी फूल	95
(13)	झींगुर गीत	96
(14)	पर्वत के कोयल	99
(15)	मधुमक्खी का गीत	102

क्रम संख्या		पृष्ठ संख्या
(16)	दो पर्वत कन्याएं	102
(17)	पर्वत पे बादल	104
(18)	पहाड़ी टट्टू	108
(19)	तितली गीत	110
(20)	पर्वत के बालक	112
(21)	पर्वत का स्कूल	115
(22)	पर्वत राहें	115
(23)	पर्वत के नन्हें बादल	116
(24)	पर्वत के किसान	117
	'पर्वत के गीत' स्वरलिपि सहित गीतक्रम	
(1)	पर्वत की रेलगाड़ी	118
(2)	पहाड़ी मजदूर	119
(3)	बन्दर जी महाराज!	120
(4)	पर्वत लहरें	121
(5)	पर्वत हिम	122
(6)	पर्वत वन	123
(7)	पर्वत पवन	124
(8)	पर्वत नदियाँ	125
(9)	लंगूर गीत	126
(10)	पर्वत के फूल	127
(11)	झींगुर गीत	128
(12)	पहाड़ी कोयल	129
(13)	मधुमक्खी का गीत	130
(14)	पर्वत पे बादल	132
(15)	पहाड़ी टट्टू	134
(16)	तितली गीत	135
	सागर के गीत	
(1)	यही समुद्र है	141
(2)	आओ, सागर जल में तैरें	141
(3)	सीपियाँ और शंख	142
(4)	इक मछियारा, इक मछियारन	142
(5)	पी लो, नारियल पानी	143
(6)	रेत का घर	143
(7)	मछियारे की कश्ती	144
(8)	मैं हूँ छोटा सागर स्टीमर	144
(9)	नन्हीं मछली	145
	'सागर के गीत' स्वरलिपि सहित गीतक्रम	
(1)	यही समुद्र है	146
(2)	आओ, सागर जल में तैरें	147
(3)	सीपियाँ और शंख	148
(4)	इक मछियारा, इक मछियारन	149
(5)	पी लो, नारियल पानी	150
(6)	रेत का घर	151
(7)	मछियारे की कश्ती	152
(8)	मैं हूँ छोटा सागर स्टीमर	153
	रंगरंगीले गीत	
(1)	विश्वप्रेम का गीत	158
(2)	भारत माँ के हम सब बच्चे	158
(3)	हमारा घर, हमारा देश	159
(4)	मैदानों में बसन्त ऋतु	159
(5)	काश्मीर में बसन्त ऋतु	160
(6)	होली उत्सव	160
(7)	आए बादल बरस, बरस!	163
(8)	आए नीले बादल	163
(9)	पर्वतों पर पतझड़ ऋतु आई	163
(10)	काश्मीर में पतझड़ ऋतु आई	164
(11)	समुद्र में सूर्य अस्त	164
(12)	काश्मीर की "डल झील" में शिकारा	165
(13)	पत्तों की कहानी	165

क्रम संख्या		पृष्ठ संख्या
(14)	प्रभात का तारा	167
(15)	वरुण जी का जन्मदिन	168
(16)	रश्मि और उजाला	168
(17)	मैंने मारा मच्छर	169
(18)	एक मजेदार दृश्य	169
(19)	भीगी बिल्ली और कौआ	170
(20)	चील, मछली और कौए की कहानी	170
(21)	सात रंग-सात सुर	172
(22)	वह तो झींगुर था	174
	शिशु गीत	
(1)	दादा जी की पोती हूँ	179
(2)	देखो, मेरा तीर-कमान	179
(3)	आ जा गुड़िया	179
(4)	हम खाएं फल	179
(5)	मोर रे! मोर रे!	179
(6)	आम और कोयल	180
(7)	चुसेंगे हम आम!	180
(8)	हाथी जी और चूहा जी	180
(9)	अरे ऊँट जी	180
(10)	इमली का पेड़	180
(11)	मैं हूँ घोड़ा	181
(12)	मैं हूँ हवाई जहाज	181
(13)	कुकड़ू ऽऽ कू ऽऽ	181
(14)	चिड़ियां नहाएँ	182
(15)	मीरा और चिड़ियां	182
(16)	मेरे बाग में सुन्दर फूल	183
(17)	बैगनी बैगन	183
(18)	हमने भिंडी उगाई	183
(19)	सुबह हुई	184
(20)	सुबह का गीत	184
(21)	तोते उड़ते	185
(22)	हम हैं कबूतर	185
(23)	सुबह-सबेरे	186
(24)	लालू और आलू	186
(25)	ओले गिरे	187
(26)	पतंग मेरी	187
(27)	अनार का पेड़	188
(28)	बस ड्राईवर और कण्डक्टर	188
(29)	रात हुई	189
(30)	पुच्चु के बच्चे	190
(31)	ले दो मुझको साइकल	190

बच्चों के लिए एक पत्र

प्यारे बच्चो,

आपको कौन-कौन से फूल अच्छे लगते हैं ? गुलाब, चमेली, सूरजमुखी, गेन्दा और कितने ही और रंग रंगीले मीठी खुशबू वाले फूल, सभी अच्छे लगते हैं न !

और पेड़ों की शाखाओं पर हरे-हरे पत्तों के बीच में बैठे कू ! कू ! का ! का ! ची ! ची ! चुख ! चुख ! बोलते पक्षी भी तो सभी को अच्छे लगते हैं। पक्षियों को उड़ते देख कर हम सभी का मन चाहता है कि हम भी आकाश में दूर-दूर उड़ें।

बाग़ों में इधर-उधर उड़ती और मटकती हुई रंग रंग की छोटी-छोटी तितलियां कभी एक फूल पर बैठ कर कभी दूसरे फूल पर बैठ कर फूलों का रस चूसती तितलियां भी तो हमें प्यारी लगती हैं।

और छोटी-छोटी मछलियां, जो नदियों,तालाबों और नीले समुन्दर में मज़े-मज़े से तैरती हैं, वे भी कितनी अच्छी लगती हैं हमें। जी चाहता है उन्हें तैरते हुए देखते ही रहें, देखते ही रहें, हैं न !

मछलियां तो प्यारी लगती ही हैं, पर हमें छोटी-छोटी बिल्लियां भी तो ख़ूबसूरत लगती हैं। हम इन छोटी बिल्लियों को प्याली या प्लेट में थोड़ा-सा दूध डाल कर देते हैं तो कैसे मज़े से उसे खत्म करती है।

और छोटे-छोटे कुत्ते, पिल्ले!अरे, वह तो हमारे दोस्त ही बन जाते हैं। किसी पिल्ले को हम डब्बू का नाम देते हैं और किसी को टॉमी कह कर पुकारते हैं। जब उन्हें उनके नाम से पुकारते हैं, तो कैसे मुंह खोले और दुम हिलाते हुए हमारे पास दौड़ कर आ जाते हैं।

तो प्यारे बच्चो, इस पुस्तक की सभी कहानियां, फूलों, तितलियों, बिल्लियों, मछलियों और पिल्लों की ही छोटी-छोटी कहानियां हैं।

आप इन्हें पढ़िए। इनके चित्र देखिए और फिर आप भी, ऐसी ही कहानियां और कविताएं लिखिए, और इनके सुन्दर चित्र बनाइए।

प्यार से आपकी।

—संतोष साहनी

इकराम
बलराज साहनी मार्ग
जुहू, बम्बई ४६
१-९-८८

बेटी सनोबर एवं देश के प्यारे बच्चों को सप्रेम भेंट,

बाल संसार समग्र

बाल कथाएँ

संतोष साहनी

मीना और दो तितलियां

मीना स्कूल से आई तो किताबें अपनी पढ़ाई की मेज़ पर पटक कर सीधा ही अपने घर के बग़ीचे में चली गयी। उसे बग़ीचे में टहल कर, क्यारियों में खिले फूल-पत्तियां देखकर बहुत ख़ुशी होती थी। उसकी मम्मी ने उसे एक छोटी झारी लेकर दी हुई थी। शंकर माली सुबह शाम फूलों के गमलों और क्यारियों को पानी दिया करता था। शंकर के साथ वह अपनी छोटी झारी से फूलों को पानी देती। जब शंकर क्यारियों की मिट्टी नरम करके उनमें फूलों के बीज डालता तो वह भी उसके साथ मिलकर काम करती।

कुछ ही दिनों में क्यारियों में छोटे-छोटे पौधे उग आते। फिर पौधों के पत्तों के पीछे से फूलों की कलियां झांकने लगतीं। छोटी कलियां धीरे-धीरे बड़े फूल बन जातीं। मीना को फूलों से बहुत प्यार था। अगर कभी उसकी कोई सहेली बग़ीचे में से फूल तोड़ने लगती तो मीना उसे झट रोक देती। उसे कभी-कभी किसी फूल से इतना प्यार आता कि वह उसे चूम लेती।

इस साल चौमासे में बम्बई में खूब बारिश हुई थी। पानी भरे नीले-नीले बड़े-बड़े बादल शेरों की तरह गरजे। आसमान में बिजली कई बार चमकी। कई बार तेज़-तेज़ हवाएं चलीं। कई पेड़ जो तूफ़ान और बारिश का ज़ोर बरदाश्त न कर सके सड़कों के बीचों-बीच और मैदानों में गिर पड़े।

मैदानों में, बाग़-बग़ीचों में, नरम हरी घास उग आयी। कई जंगली बेलें अपने आप उगकर पेड़ों और घरों के बाहर की दीवारों पर चढ़ गयीं। काशनी, पीले, नीले, लाल जंगली फूल इधर-उधर खिलने लगे। बम्बई शहर किसी हरी-भरी पहाड़ी की तरह दीखने लगा।

सितम्बर महीने के अन्त में बारिश ख़त्म होने को आयी। नीले बादल महाराष्ट्र प्रान्त की पहाड़ियों को पार करके दूसरे शहरों-प्रान्तों की तरफ़ चल पड़े। नहाये-धोये नीले आसमान पर अब छोटी-छोटी सफ़ेद बदलियां ही इधर-उधर सैर करती दिखाई देतीं। जब कोई बदली सूरज के मुंह के सामने आ जाती तो सारी बम्बई पर हल्की-सी छाया बिछ जाती। जब वह सूरज के मुंह से परे हट जाती तो फिर से बम्बई में धूप आ जाती।

धूप-छाओं का मौसम तितलियों को बहुत पसन्द है। बरसात में वे अपने आपको न जाने कहां छुपाये रहती हैं। वैसे तो ठीक ही करती हैं। बारिश में तो वे उड़ ही नहीं सकतीं। ज़रा भी पंख गीले हुए तो तितली बेचारी के बुरे हाल। सो, जब नीले बादल चले गये तो तितलियां समझ गयीं कि अब उनका बाग़-बग़ीचों में उड़ने का वक्त आ गया।

मीना अपने बग़ीचे में टहल रही थी। उड़ती हुई तितलियों को देखकर सोचने लगी कि इस साल तो बहुत ही तितलियां हैं हमारे बग़ीचे में। बाह बाह, हरेक तितली के पंखों पर बने नमूने दूसरी तितली के पंखों से बिल्कुल अलग। उड़तीं, भटकतीं, चटकतीं, वे कभी फूलों के पौधों पर बैठें, कभी बेलों पर। कभी आम के पेड़ों की तरफ़ भागें और कभी किसी झाड़ी के पत्तों में छुप जाएं। कभी एक फूल का रस चूसें कभी दूसरे का।

''यह फूलों का मीठा-मीठा रस चूसती हैं। रंग-रंग के फूल पत्तियों पर बैठती हैं इसीलिए यह फूलों जैसी ही रंग-बिरंगी और खूबसूरत हैं।'' मीना तितलियों की तरफ़ देखती हुई सोच रही थी।

आज शाम को बाग़ में सिर्फ़ बड़ी तितलियां ही नहीं थीं, बल्कि बहुत-सी छोटी-छोटी तितलियां भी इधर-उधर उड़ रही थीं। आपस में खेलें खेल रही थीं। एक पीली तितली दूसरी पीली तितली के पीछे यूं उड़ रही थी जैसे उसके साथ आंख मिचौली की खेल खेल रही हो। कभी वे दोनों पेड़ों की तरफ़ ऊपर उड़ें, कभी घास के पास नीचे उड़ने लगें। कभी वे फूलों के पौधों पर पंख जोड़कर आराम करने लगें। फिर एकदम उड़कर हवा में गोल-गोल चक्कर काटने लगें। इस तरह कितने ही तितली जोड़े बग़ीचे में मीना के स्कूल की पहली दूसरी क्लास के लड़के-लड़कियों की तरह खेल रहे थे।

मीना गुलमोहर के पेड़ के नीचे बनी पत्थर की एक सीट पर बैठी यह सब खेल तमाशा देख रही थी। धीरे-धीरे शाम हो रही थी। सूर्य जो कुछ देर पहले पच्छिम दिशा में खड़े लंबे-लंबे नारियल के पेड़ों के पत्तों पर चमक रहा था अब ढलते-ढलते उसकी किरणें पेड़ों के पैरों पर चमकने लगी थीं।

मीना सोच रही थी, ''अगर मैं समुद्र के किनारे सैर करने गयी होती, तो मैं सूर्य को समुद्र में डूबते देख सकती। कितना सुन्दर और अजीब लगता है, सूर्य समुद्र का नीले नीले पानी में डूबना। पानी में डूबता यूं लगता है जैसे वह सोने का घड़ा हो। अगले इतवार ममी पापा से कहूंगी मुझे समुद्र के किनारे ले चलें। सब मिलाकर जायेंगे। मैं अपनी सहेली कल्पना को भी साथ ले जाऊंगी। मज़ा आयेगा।''

अब सूरज नारियल के पेड़ों के पैरों से भी नीचे चला गया था। लेकिन उसकी लाली अभी भी पच्छिम के आसमान में, जलते हुए कोयले की तरह दमक रही थी। उसकी आख़िरी किरणें, गुलमोहर के पत्तों, फूल-झाड़ियों और घरों की छतों पर पड़ रही थीं। आसमान में सैर कर रही नन्हीं सफ़ेद बदलियों पर भी लाल, पीली, नीली किरणें पड़ रही थीं। यूं लगता था जैसे बदलियां आपस में होली खेल रही हों।

अब चिड़ियां भी चूं चूं, चुख़ चुख़ गाती, शोर मचाती, पेड़ों की टहनियों में आकर बैठ रही थीं, सोने के लिए। टांय टांय चिल्लाते हुए तोते बग़ीचे से बाहर खड़े एक नीम के बूढ़े पेड़ की टहनियों और पत्तों में आकर छुप गये। शाम का वक्त सभी के घर आने का वक्त है। मीना मन ही मन सोचने लगी, ''अभी पापा भी आफ़िस से लौट आयेंगे।''

मीना यह सोच ही रही थी उसने देखा कि सभी तितलियां एकदम कहीं ग़ायब हो गयी हैं।

''कहां चली गयीं यह सभी तितलियां ? अभी तो सारी मेरी तरह बग़ीचे में सैर कर रही थीं ? ज़रा मेरा ध्यान ऊपर बदलियों की तरफ़ चला गया तो यह सब न जाने कहां भाग गयीं। यह भी कहीं सोने के लिए चली गयी होंगी। लेकिन कहां ? शायद फूलों की झाड़ियों में कहीं, हरे-हरे पत्तों में छिप गयी होंगी।''

मीना ने इधर-उधर झाड़ियों के पत्तों पर नजर डाली। पर उसे एक भी तितली कहीं नज़र नहीं आयी, ''यह तितलियां तो परियों की तरह हैं। जब लुक-छिप जायें तो बस बिल्कुल ही ग़ायब। फ़र्क सिर्फ़ इतना है कि परियां रात को आती हैं और तितलियां दिन में।'' मीना मन ही मन कह रही थी।

सूर्य भी अस्त हो गया है। चिड़ियां, तोते भी दाना चुन कर सोने के लिए चले गये अपने-अपने घोंसलों में।

तितलियां भी सो गयीं। तो मैं भी जाती हूं अपनी पढ़ाई की मेज़ पर स्कूल का काम करने के लिए। और मीना उठी पत्थर की बेंच पर से अन्दर जाने के लिए। उठते ही वह हैरान होकर चुपचाप सी खड़ी हो गयी। उसने देखा कि ऐन, उसके पैरों के ज़रा ही आगे, दो नन्हीं पीले रंग की तितलियां, घास के एक लंबे पतले से तिनके के साथ अपने नन्हें पैर लगाकर, पंख जोड़कर सो रही थीं। दोनों एक ही तिनके पर !

तिनका भी तितलियों का भार आसानी से उठा, सीधा ही खड़ा था। हल्की हल्की हवा चल रही थी। इसलिए तिनका हवा में कभी थोड़ा दाएं कभी थोड़ा बाएं झूम जाता। तितलियां भी सोये-सोये ही झूम जातीं। यूं लगता था जैसे तिनका नन्हा-सा झूला हो।

अब बग़ीचे में लगे आम के छोटे पेड़ पर झींगुर झिन झिन, झिन झिन, झिन झिन का गीत गाने लगे थे। गुलमोहर के पेड़ की नरम पत्तियां धीमे स्वर में सररर, सररर, मररर, मररर, बोल रही थीं। एक दो छोटे मेंढक अपने घरों से बाहर निकल आये थे। वे भी घास पर कूदने लगे थे। कभी खुश होकर टर्राने लगते। पर तितलियां पक्की और मीठी नींद में सो रही थीं। जैसे वे कोई लोरी सुन रही थीं।

मीना का जी चाहा कि एक बार वह तिनके को हिलाकर तितलियों को जगा दे। उसने सोचा, "तितलियों ने सोने के लिये ग़लत जगह चुनी हैं। रात को अगर कोई बिल्ली या चूहा बग़ीचे में घुस आया तो इनको चटम कर जायेगा। यह अभी बच्चियां हैं। अक्ल की कच्चियां हैं।"

मीना ने तिनके को हिला दिया। दोनों तितलियां चौंक कर हवा में उड़ने लगीं। मीना खुश हो गयी। उसने सोचा यह दोनों समझ गयी हैं कि तिनके पर सोना ठीक नहीं है। यह ऊंची झाड़ी पर सोने के लिए चली जायेंगी। पर नहीं तितलियां तो ज़रा सा ही उड़कर फिर से उसी तिनके से पैर जमाकर पंख बन्द करके एकदम से गाढ़ी नींद सो गयीं।

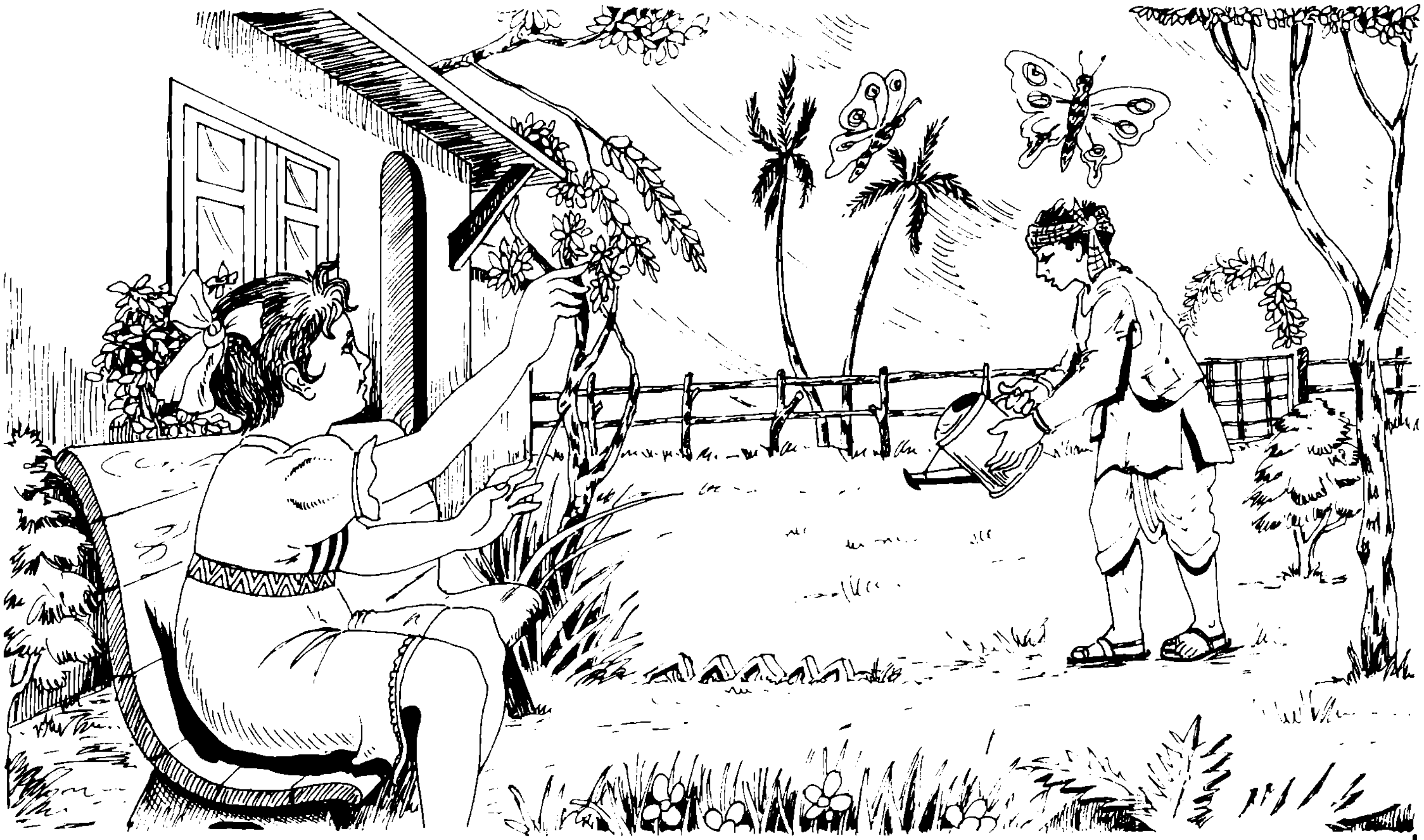

मीना ने सोचा, इनको समझाना फ़िज़ूल है। अब जो इनकी किस्मत में है वही होगा। सो तितलियों को नमस्ते कहकर उदास सी मीना पढ़ाई करने के लिए चली गयी।

दूसरे दिन सबेरे आधे अंधेरे, आधे उजाले में मीना की आंख खुली तो वह फ़ौरन ही बग़ीचे की तरफ़ जल्दी से गयी। ''देखूं तो सही क्या हुआ उन तितलियों का।'' वह मन ही मन सोच रही थी। बाहर बग़ीचे में हल्की ठंड थी। शंकर माली सिर पर मफ़लर बांधे फूल पौधे और घास को पानी दे रहा था। उजाला धीरे-धीरे बढ़ रहा था। मीना चुपचाप जाकर गुलमोहर के नीचे बनी पत्थर की सीट पर बैठ गयी। नज़र इधर-उधर दौड़ाकर उस तरफ़ की घास को देखने लगी जहां शाम को वह तितलियों को नमस्ते करके गयी थी।

''अरे वाह !'' मीना के मुंह से निकला। दोनों तितलियां अभी तक उस हरे-हरे, दुबले-पतले घास के लम्बे तिनके पर आराम से सो रही थीं। मीना का मन ख़ुशी से उछल गया। किसी ने नहीं चटम किया इनको। बच ही गयीं।

सूर्य अभी तक उदय नहीं हुआ था। लेकिन सुनहरी किरणें घास पर बिखरे ओस के मोतियों पर, पत्तों, फूल-झड़ियां मुस्करा रही थीं। दुबले-पतले लंबे घास के तिनके पर भी दो-तीन किरणें पड़ीं। मीठी नींद सो रही नन्हीं पीली तितलियों पर भी पड़ीं। तितलियां सुनहरी फूलों की तरह दीखने लगीं।

माली क्यारियों में पानी देता-देता उधर घास के निकट आ रहा था। जिस फूल झाड़ी पौधे को वह पानी देने लगता उससे पहले ही एकदम से उसमें से तितलियां निकल-निकल कर, हवा में उड़ने लगतीं। उनकी खेलें शुरू हो गयी थीं।

मीना ने दुबला पतला लम्बा तिनका उंगली से ज़रा-सा हिलाया और कहा,

''अब तुम्हारे भी जागने का वक्त हो गया है। जल्दी से उठो। नहीं तो शंकर माली झारी का पानी झर-झर तुम्हारे ऊपर डाल देगा।''

दोनों तितलियों ने यूं पंख खोले जैसे कोई छोटा बच्चा नींद से जाग, अंगड़ाई लेता है। और फिर वे झट से उड़ हवा में आंख मिचौली खेलने लगीं।

एक इतवार

इतवार का दिन था। मीना अपने पापा और मम्मी के साथ समुद्र के किनारे सैर करने के लिए गई। सर्दियों के दिन थे। सुबह के सूरज की किरणें, समुद्र के पानी में, तारों की तरह चमक रही थीं। समुद्र का गहरा नीला पानी मीना को बहुत ही सुन्दर लगा। कितनी-कितनी दूर तक समुद्र का पानी फैला हुआ था। और किनारे की छोटी-छोटी लहरें, मीना के नीले फ़्राक पर लगी सफ़ेद लेस की तरह, दीखतीं। छोटी लहरें नटखट बच्चों की तरह कैसे उछल-कूद कर रही थीं। मीना अपने पापा मम्मी के साथ-साथ समुद्र की रेत पर चलते-चलते यह सब देख कर सोच रही थी और बड़ी लहरें तो मीना को अपने स्कूल के बाहर की दीवारों जैसी लगती थीं। लहरों की बड़ी दीवारें बार-बार बनतीं, और बार-बार टूटतीं।

कितने और लोग भी सैर करने के लिए आए हुए थे वहां। चलते-चलते, मीना के मम्मी पापा को हरबंस चाचा और चाचीजी भी मिल गए।

''ओ हो ! आप लोग भी यहां आए हुए हैं सैर के लिए,'' पापा बोले।

''अजी हम तो हर रोज़ सुबह आते हैं यहां। सुबह सैर कर लें यहां तो सारा दिन तबीयत खुश रहती है।'' चाचाजी हंस कर बोले।

चाचाजी और पापा की आपस में हंस-हंस कर बातें और गप्पें शुरू हो गईं। सभी लोग सूखी रेत पर बैठ गए। मीना भी उनके पास बैठ कर उनकी बातें सुनने लगी।

मीना, मम्मी, पापा, चाचाजी और चाचीजी की बातें भी मीना सुन रही थी और साथ ही साथ रेत में से छोटी-छोटी, मोतियों-सी सुंदर सीपियां भी चुन-चुन कर अपने फ़्राक की जेब में डाले जा रही थी। सीपियां चुनते हुए उसकी नज़र गीली रेत में से बाहर निकलते हुए केकड़ों की तरफ़ गयी। छोटे-छोटे बच्चे केकड़े, फिर उनसे बड़े मम्मी पापाजी जैसे केकड़े, फिर उनसे भी बड़े दादा, दादी जी जैसे केकड़े। कितने, कितने, कितने ही केकड़े रह रहे थे, समुद्र की रेत के अंदर ! कितनी तेज़ दौड़ते थे वे। जैसे वे स्कूटर या मोटर साइकिले हों। कितनी चुस्त थी इनकी टांगें और बाहें ! पता नहीं कितनी टांगें हैं इनकी और कितनी बाहें ! इन केकड़ों के मुंह कहां हैं ? नाक किधर हैं, आंख कहां हैं ? यह क्या खाते हैं, रेत ? रेत खाकर कोई कैसे जी सकता है। शायद यह समुद्र का नमक वाला पानी पी कर ही जीते होंगे। अरे वाह ! वे हैं उनकी आंखें, काली मिरचों जैसी ! कैसे, कैसे यह छुटका-सा केकड़े का बच्चा एकदम से रेत के अन्दर से उछल कर बाहर आ जाता है। इन सब, इतने-इतने केकड़ों के घर रेत के अन्दर ही होंगे। यह छोटा केकड़ा, यह क्या कर रहा है। वाह, वाह ! यह तो रेत की छोटी-छोटी गोलियां बनाकर अपने घर में से बाहर फेंक रहा है। कितनी तेज़ी से, मशीन की तरह यह गोली बनाकर फेंक देता है। इस वक़्त तो सभी केकड़े गोलियां ही बना-बना कर समुद्र की रेत पर फेंक रहे हैं। रेत के ऊपर गोलियां ही गोलियां पड़ी हैं। बड़े केकड़े, बड़ी गोलियां बना रहे हैं और छोटे केकड़े, छोटी गोलियां। कितनी सुन्दर दीखती हैं यह गोलियां। जैसे ड्राइंग के पीरियड में ड्राइंग मास्टरजी कापी पर फूलों के डिज़ाइन बनाते हैं। हां, बिल्कुल वैसे ही।

''केकड़े यह गोलियां बनाते कैसे हैं ? टांगों से ? हाथों से, कि मुंह में बना-बना कर बाहर थूक देते हैं ?'' मीना और ध्यान से एक छोटे केकड़े की तरफ़ देखने लगी।

''ओ हो ! यह केकड़ा तो अपने घर में से रेत अपने सिर पर उठा कर लाया है। दोनों हाथों से सिर पर से ज़रा-सी रेत उतार कर जल्दी से गोली बनाकर रेत के मैदान में फेंक रहा है। इसकी बाहें तो ऐसे हैं जैसे मकान बनाने वाले मज़दूरों के बेलचे होते हैं !

मीना केकड़े की तरफ़ देखे जा रही थी और दोनों हाथों से खुद भी रेत के लड्डू बनाकर अपने आस-पास रखे जा रही थी। मीना सोच रही थी- ''मैं भी लड्डू बना रही हूं और यह केकड़े भी। लेकिन इनके बनाए लड्डू इतने क्यों गोल बनते हैं और मेरे बनाए लड्डू इतने गोल क्यों नहीं बनते ?''

पास ही से मैला-सा गुलाबी रंग का फ़्राक पहने एक लड़की गुज़री। उसके साथ नीली निकर और पीली कमीज़ पहने लड़का भी चल रहा था। मीना ने देखा कि लड़के ने जल्दी से एक केकड़ा पकड़ कर हाथ में पकड़ी कांच की बोतल में डाल

लिया। गुलाबी फ्राक वाली लड़की रेत पर पावों के बल बैठ गई। वह अपने हाथ में पकड़ी कांच की बोतल में केकड़ा पकड़ कर डालना चाहती थी। लेकिन ज्यों ही वह लड़की केकड़ा पकड़ने के लिए हाथ आगे बढ़ाती केकड़ा झट से भाग कर, अपने रेत-घर में घुस जाता। लड़की चुपके से बैठी रही। दो-तीन मिनट बाद केकड़ा जब फिर अपने घर से निकला ही था कि लड़की ने झट से उसे पकड़ कर अपनी बौतल में डाल लिया। यह देख कर मीना उदास-सी हो गई। उसे गुस्सा भी आया। उसका जी चाहा कि वह उस लड़की और लड़के को एक-एक चांटा लगाए। पर वह चुपचाप उन्हें देखती रही। लड़का और लड़की चलते-चलते आगे दूर चले गए। आगे जाकर वे फिर केकड़े पकड़ने लगे।

मुझसे डरता भी है और पकड़ने लगूं तो काट भी लेगा। भला मुझसे डरने की और मुझे काटने की क्या ज़रूरत है? यूं ही ज़रा-सी देर मुझसे खेल ले। एक बार इसको, इसके दांतों से हाथ में पकड़कर अशोक भैया पर रौब जमा लूं कि मैं भी केकड़ा पकड़ सकती हूं तो फिर इसे रेत पर छोड़ दूंगी।''

मीना यह बातें सोच ही रही थी कि उसने कोट पतलून बूट पहने एक लम्बे से लड़के को पास आते देखा। लड़का धीरे-धीरे टहल रहा था और केकड़ों को गोलियां बनाकर फेंकते देख रहा था। फिर, वह पैरों के बल पर रेत पर बैठ गया। एकदम ही उसने एक बड़ा-सा केकड़ा पकड़ लिया। दाएं हाथ से केकड़े का मुंह पकड़ कर बाएं हाथ से उसने अपनी जेब से एक लम्बा-सा धागा निकाला और पता नहीं

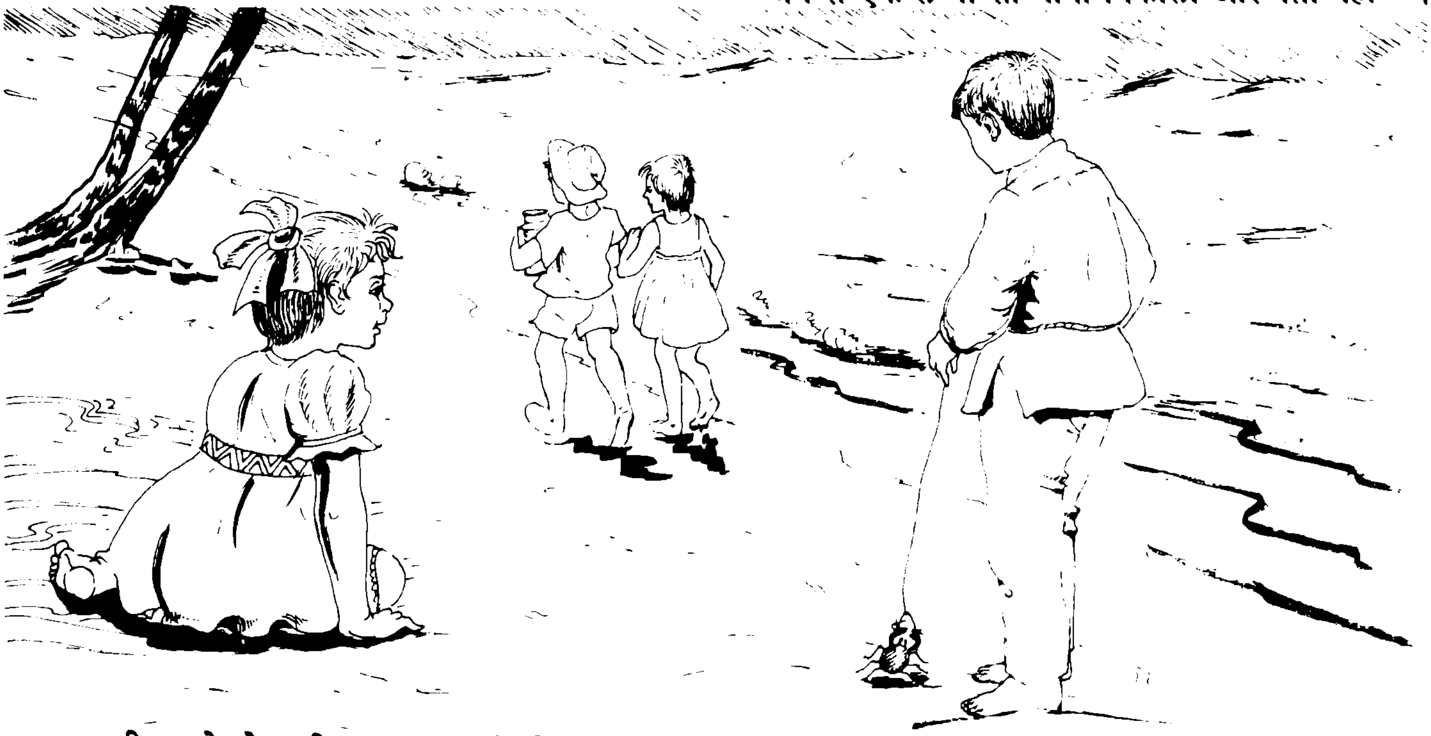

मीना सोचने लगी, ''यह लड़की कैसे केकड़े पकड़ लेती है। केकड़ा कैसे पकड़ते हैं? मैं क्यों डरती हूं। क्यों नहीं केकड़ा पकड़ सकती? मारने के लिए भी नहीं, बोतल में डालने के लिए भी नहीं। ऐसे ही, ज़रा-सी देर हाथ में पकड़ने के लिए। एक बार जब हम लोग समुद्र के किनारे आए थे पिछले साल, तो केकड़ा मुझे खिलौना जैसा लगा था। मैं उससे खेलने ही लगी थी। तब मम्मी ने कहा था कि इसे हाथ नहीं लगाना, केकड़ा काट लेता है। बस तभी से मैं डर गई। यह केकड़ा भी अजीब है। यह

किस तरह, उसने केकड़े के दांतों को बांध लिया। फिर वह खड़ा हो गया। और धागे को खींच कर केकड़े को यूं चलाने लगा जैसे वह लोहे की चेन से बांधा कोई कुत्ता हो। या कोई घोड़ा जिसके मुंह में लगाम पड़ी हो। लड़का धागे से केकड़े को खींचे जा रहा था। केकड़ा अपनी टांगों के बल थोड़ा-सा चला। लेकिन फिर न चला। लड़के ने धागा खींच कर उसको घसीटा। केकड़े में लड़के जितना ज़ोर नहीं था। वह घिसटता हुआ लड़के के बूटों के नज़दीक खिंच गया। लड़के ने कभी धागे को ढील

दो दिन बाद— । ट्री ! ट्री ! ट्री ! टेलीफ़ोन की घंटी बजी । मीना ने टेलीफ़ोन उठाया । निर्मल की आवाज़ थी—

"हैलो मीना ।"

"हैलो, हैलो निर्मल ! कैसी हो ? तुम्हें मेरी चिट्ठी मिल गयी ?"

"हां । इसीलिए तो टेलीफ़ोन कर रही हूं । मीना, मुझे तुम्हारी चिट्ठी समझ में ही नहीं आयी । किसका जन्मदिन है ?"

"अरे, लिखा तो था चिट्ठी में । हमारे गुलमोहर के पेड़ का ।"

"गुलमोहर के पेड़ का ? हा ! हा ! हा ! कभी कोई पेड़ का जन्मदिन भी मनाता है ? तुम मेरे साथ मज़ाक तो नहीं कर रही हो । सच सच बताओ मीना ?"

"सच्ची ! मैं मज़ाक नहीं कर रही ।"

"पर जन्मदिन क्यों मना रही हो ?"

"इस पेड़ की एक कहानी है । बस, तुम ज़रूर आना । तब मैं तुम्हें सारी कहानी बता दूंगी ।"

"अच्छा ।"

"ज़रूर आना ।"

"हां, हां ज़रूर आऊंगी ।"

और मीना ने टेलीफ़ोन का रिसीवर रख दिया ।

छः जून की शाम । साढ़े चार बजने वाले थे । मीना के घर के बग़ीचे में हरे और नाज़ुक पत्तों वाले गुलमोहर के पेड़ के नीचे एक दरी बिछी थी । दरी के ऊपर एक धोबी की धुली हुई सफ़ेद चादर बिछी थी । चादर पर एक प्लेट में बरफ़ी, दूसरी में दालमीजी, तीसरी में बिस्कुट और चौथी में रसगुल्ले पड़े थे । सभी प्लेटें पतली और सुन्दर जालियों से ढकी थीं । मीना ने सिल्क का हरा फ्राक और हरे रंग की चपलियां पहनी हुई थीं । उसके बालों में लाल रिबन थे । वह मुस्कराती हुई बग़ीचे के फाटक के पास खड़ी थी ।

निर्मल, चंपा, तारा और नसीम बानो चारों आपस में हंस-हंसकर बातें करती हुई एक साथ ही चली आ रही थीं । तीनों के हाथों में कागज़ों में लिपटे पार्सल थे । मीना ने अपनी सहेलियों को बारी-बारी से चूमा और कहने लगी-

"ओ हो, तुम तो साथ में प्रेज़ेन्ट भी लायी हो ! क्यों ?"

"मैं तो पहली बार तुम्हारे घर आयी हूं मीना । दिखाओ तो वह गुलमोहर कहां है ?"

"आओ, आओ, यह देखो तो," मीना ने कहा और मीना ने बग़ीचे में ले जाकर उन्हें गुलमोहर का वृक्ष दिखाया । कोमल-कोमल पत्तियों वाला एक सुन्दर वृक्ष ! पत्तियों के बीच में से लाल और केसरी रंग के सुन्दर फूल झांक रहे थे । शाम के सूरज की सुनहली किरणें वृक्ष के पत्तों में से रेशम की रंगीली तारों की तरह गुज़र रही थीं । और गुलमोहर का पेड़, जैसे मीना की सहेलियों को देखकर धीमे-धीमे मुस्करा रहा था ।

"हैलो, गुलमोहर !" निर्मल ने हंसकर कहा । और उसने अपना प्रेज़ेन्ट खोला । पारसल में से एक रबड़ का हरा तोता निकला । लाल चोंच और गर्दन पर काली धार वाला । निर्मल तोते को हाथ में लिए गुलमोहर के पास गयी । पेड़ की एक निचली शाख पर तोता बिठाकर बोली, "टांय ! टांय ! टांय !' जन्म-दिन मुबारक हो ।"

है । उसने मादा गुलमोहर नहीं लगाया । नर गुलमोहर लगा दिया है ।''

''नर गुलमोहर और मादा गुलमोहर क्या होता है ?'' कुलवंत ने पूछा ।

मुझे भी नहीं मालूम था । ममी ने बताया कि पेड़ों में भी कोई स्त्री होते हैं और कोई पुरुष होते हैं । स्त्री वृक्ष को ही फल फूल आते हैं । मीना बोली ।

पक्का फैसला कर लिया पेड़ कटवाने का । मैंने ममी से बहुत प्यार से कहा ममी आप अगली गरमियों तक इसको न कटवाइये । अगर अगली गरमियों में इस पर फूल न आये, तो आप बेशक इसे कटवा दीजिये ।''

मीना कहानी बता रही थी । सब लड़कियां बड़े ध्यान से सुन रही थीं ।

''फिर क्या हुआ ?'' कुलवन्त बोली ।

''अच्छा ? हमें भी नहीं मालूम था ।''

''ममी ने कहा, इस पेड़ को कटवा कर दूसरा, मादा गुलमोहर लगवाते हैं ।''

पर मुझे इस पेड़ के साथ प्यार हो गया था । जब भी ममी इस पेड़ को कटवाने की बात करतीं मेरा मन उदास हो जाता । मैं सोचती, इस पेड़ पर फूल तो नहीं आये । मगर इसके पत्ते और इसकी डालें कितनी सुन्दर हैं । कितनी ठंडी-ठंडी छाया देता है । मैं मन में कभी-कभी सोचती, ''नहीं, इस पेड़ पर एक न एक दिन ज़रूर फूल आयेंगे । ममी ने तीन चार मालियों से पूछा कि यह पेड़ नर है या मादा । माली भी बुद्धू ही थे । कोई कहता था कि यह नर है कोई कहता था यह मादा है । ममी ने

''इस बरस गरमियों में हमारे अड़ोस-पड़ोस के घरों के बग़ीचे में लगे गुलमोहर के पेड़ फूलों से भरने लगे । किंतु हमारे गुलमोहर पर फिर भी कोई फूल न आया । मैं चुपके-चुपके इसे और पानी भी दे आती । पर कोई फूल नहीं आए । सिर्फ़ हरे-हरे पत्ते निकल रहे थे इस पर । मैं बहुत उदास थी । मैंने सोचा अब तो ममी इसको ज़रूर कटवा देंगी । एक दिन ममी ने मेरे सामने ही माली से कहा- "इस गुलमोहर को काट दो और इसकी जगह पर मादा गुलमोहर का पौधा लगाओ ।''

''मैं सारा दिन बहुत उदास रही । कल तो यह पेड़, मेरा प्यारा पेड़ यहां होगा ही नहीं ।''

दूसरे दिन सुबह अभी भी मैं बिस्तर में से उठी ही नहीं थी कि ममी मेरे पास आयी । बोली मीना,

''मीना ! उठो, उठो ! तुम्हें कुछ दिखाऊं।''

मैंने उठकर देखा, कमरे की खिड़की में से।

''ज़रा गुलमोहर को तो देखो,'' ममी बोली।

''कहां, क्या !'' मैं आंख मलते हुए देखने लगी।

''ध्यान से देखो गुलमोहर के पत्तों में।''

''फूल ! गुलमोहर पर फूल आये हैं।'' मैं ख़ुशी से नाचने लगी।

''देखा, देखा ममी। मैं कहती थी कि इन गरमियों में मेरे गुलमोहर पर फूल आयेंगे। ममी आप तो इस बेचारे को कटवाने ही लगी थीं।'' मैं बोली।

''देर से आये हैं पर शुक्र है आये तो।'' ममी बोली।

पांच छः पहले-पहले लाल फूल हरे हरे पत्तों में से झांक रहे थे। कितने सुन्दर लग रहे थे। मैं भागकर नीचे बग़ीचे में गयी और गुलमोहर के पेड़ को चूम लिया।

''कितनी अच्छी बात हुई इस बेचारे पर फूल आ गये।'' निर्मल बोली।

''नहीं तो हम आज इसकी छाया में बैठकर पारटी थोड़े ही कर होतीं।'' कुलवन्त बोली।

''हां ! मीना बोली।'' फिर ममी भी नीचे बाग़ में आ गयीं। मैंने ममी से कहा, ''ममी मैं अपने गुलमोहर की पांचवीं वर्षगांठ मनाऊंगी। मैं पारटी दूंगी ममी।''

''ज़रूर ! ममी ने गुलमोहर की तरफ़ देखते हुए ख़ुश होकर कहा।'' यहीं गुलमोहर की छाया के नीचे ही पारटी करो। अपनी सब सहेलियों को बुलाओ। सो जनाबेवाला यह है हमारे इस गुलमोहर की कहानी।''

मीना जब कहानी सुना चुकी तो उसने गुलमोहर की तरफ़ देखा। उसको यूं लगा जैसे गुलमोहर भी अपनी कहानी सुनता-सुनता मुस्करा रहा था और सभी सहेलियों को प्यार और अपनी छाया का आशीर्वाद दे रहा था।

सभी सहेलियां भी मुस्कुराती हुई, सुन्दर केसरी फूलों और कोमल हरे पत्तों वाले अपने मित्र गुलमोहर के पेड़ की ओर देख रही थीं।

बिल्ली का बच्चा

सारा दिन बहुत जोरों से बारिश होती रही थी। आख़िरकार शाम के वक़्त रुकी। अभी तक आकाश में बादल तो थे। लेकिन बादलों में से पश्चिम की ओर जाते सूरज की किरणें झांकने लगी थीं। सड़कों, फ़ुटपाथों पर चलते लोगों ने अपने अपने छाते बन्द कर लिए थे। बारिश में भीगा एक नन्हा-बिल्ली का बच्चा न जाने कहां से आकर एक चौड़ी सड़क के किनारे आकर बैठ गया। वहीं बैठकर जीभ से चाट-चाट कर अपना बदन सुखाने लगा।

बिल्ली का बच्चा था तो कमज़ोर-सा, लेकिन देखने में सुन्दर था। बड़ी-बड़ी नीली आंखें। बदन पर मुलायम सफ़ेद बाल। बालों में कहीं-कहीं पीले रंग के धब्बे। शाम की हल्की धूप में उसके बदन के बाल थोड़े चमक रहे थे। कभी वह अपने छोटे-छोटे पंजों से अपना मुंह पोंछता। कभी अपनी छोटी-सी गरदन मोड़ कर जीभ से अपनी पीठ चाट कर साफ़ करता।

सड़क पर बसें, मोटरें तेज़ी से आ-जा रही थीं। बिल्ली का बच्चा अगर किसी स्कूल में पढ़ने-लिखने के लिए जाता होता तो उसे इतनी समझ अवश्य होती कि ट्रैफ़िक वाली सड़क पर बैठ कर बाल सुखाना नहीं चाहिए। वह किसी बाग़ में घास पर या बेंच पर जा बैठता। या सड़क के किनारे के फ़ुटपाथ

पर ही [illegible] न तो वह पढ़ा-लिखा ही था [illegible]। वह तो एक छोटा-सा, [illegible] का बच्चा था। उसकी उम्र भी [illegible]-ज्यादा डेढ़ महीने की होगी। उसकी मां ने [illegible] उसको बिल्लियों की भाषा में बताया होगा कि "बेटे जिस सड़क पर बसें, मोटरें दौड़ती हैं उस पर न बैठना।" लेकिन वह तो अभी बहुत ही छोटा था। उसे अपनी मां की बात पूरी तरह समझ नहीं आई होगी। अपना गीला बदन सुखाने के लिए जहां उसे धूप दिखाई दी वहीं वह बैठ गया।

बदन चाटते-चाटते बिल्ली का बच्चा कभी सड़क पर दौड़ती हुई बसों और मोटरों की तरफ़ भी देख लेता। उसे मालूम नहीं पड़ रहा था कि दौड़ती भागती यह क्या चीज़ें हैं। पों, पों, पीं, पीं की आवाज़ें उसके कानों में पड़ रही थीं। बिल्ली का बच्चा तो इन दौड़ती-भागती चीज़ों को देख सकता था, लेकिन बसें, मोटरें चलाते ड्राइवर नन्हें बच्चे को नहीं देख सकते थे। किसी वक़्त भी वह सड़क के किनारे की तरफ़ आती हुई मोटर या बस के नीचे आकर मर सकता था।

सड़क के पास ही बड़ा-सा स्कूल था। छुट्टी की घंटी बजी। लड़के लड़कियां अपनी-अपनी किताबें और स्कूल के बैग उठाए स्कूल की बिल्डिंग से बाहर निकल कर फ़ुटपाथ पर आ रहे थे। आपस में बातें करते, गप्पें मारते वह अपने-अपने घर जा रहे थे। बहुत से बच्चे तो आगे चले गए। लेकिन तीन-चार बच्चे धीरे-धीरे चल रहे थे। उनकी नज़र बिल्ली के बच्चे पर पड़ी।

"कितना प्यारा है यह बिल्ली का बच्चा!" एक लड़की बोली।

छोटा-सा खिलौना दीखता है। देखो तो, कैसे चाट-चाट कर अपना बदन साफ कर रहा है। दूसरी लड़की बोली।

चारों जनें वहीं खड़े होकर बिल्ली के बच्चे की प्यारी-प्यारी हरकतें देखने लगे।

"मैं इसे उठाकर फ़ुटपाथ पर बिठा देता हूं। ऐसा न हो कि यह किसी मोटर के नीचे आ जाए।" एक लड़का बोला।

"नहीं-नहीं, छोड़ो जी। बैठने दो इसे धूप में। कुछ नहीं होगा इसे। जब मोटर आएगी तो अपने आप भाग जाएगा।" दूसरा लड़का बोला।

"नहीं, नहीं इसे उठा ही लेना चाहिए। मैं उठा लाती हूं," पहली लड़की बोली। और वह आगे बढ़ी फ़ुटपाथ पर से नीचे उतरने के लिए।

"ज़रा ठहरो बेटी।" अचानक पीछे से आवाज़ आई। चारों ने हैरान होकर पीछे मुड़कर देखा। सफ़ेद साड़ी पहने एक औरत उनके पीछे खड़ी थी।

"यह मेरा हैंडबैग तो पकड़ना ज़रा।" औरत बोली।

अपना हैंड बैग एक लड़की के हाथ में दे कर वह सड़क पर उतरीं। उसने पहले बाएं देखा फिर दाएं। सड़क ज़रा-सी देर के लिए ख़ाली थी। कोई मोटर या बस आ-जा नहीं रही थीं। स्त्री ने जल्दी से बिल्ली का बच्चा अपने दोनों हाथों में उठाया और उसे फ़ुटपाथ पर एक पेड़ के नीचे बिठा दिया। बिल्ली का बच्चा वहां बैठ कर भी अपनी पीठ चाटने लगा।

"सड़क पर यूं ही नहीं उतर पड़ना चाहिए बेटा। पहले बाएं और दाएं देख लेना चाहिए कि कोई मोटर या बस तो नहीं आ रही। लाओ जी मेरा बैग।" उसने लड़की से मुस्करा कर कहा।

लड़की ने भी मुस्कराते हुए उसे उसका बैग लौटा दिया।

"शुक्रिया। नमस्ते!" यह कहकर वह स्त्री तेज़ी से आगे निकल गई।

"नमस्ते!" बच्चों ने भी पीछे से आवाज़ लगाई और चारों जने फिर से बिल्ली के बच्चे की तरफ देखने लगे।

"यह बुद्धूनाथ तो फिर से भाग कर सड़क पर पहुंच जाएगा।" एक लड़का कहने लगा।

"हां!" दूसरी लड़की बोली।

"तो फिर क्या करें?"

"इसको उठा कर अपने स्कूल की खेलने की कम्पाउंड में छोड़ आते हैं।" एक लड़का बोला।

"यह तो ठीक है। लेकिन वहां वह खाएगा पिएगा क्या? बेचारा भूखा रहेगा।"

"मैं इसे अपने घर ले जाती हूं। मेरा घर तो पास ही है। घर जाकर मैं इसे दूध पिलाऊंगी।" एक लड़की बोली।

"हां, यह ठीक रहेगा। हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे तुम्हारे घर तक।" तीनों बच्चे कहने लगे।

लड़की ने अपनी किताबें अपनी सहेली को पकड़ाई और दोनों हाथों से नन्हें बिल्ली के बच्चे को उठा लिया। नन्हें बच्चे का बदन अब तक सूख चुका था। लड़की ने प्यार से उसके नरम बालों पर हाथ फेरा और आगे चल पड़ी। उसके साथी भी आपस में बातें करते हुए उसके साथ-साथ चल पड़े।

एक कहानी

हिन्दी की क्लास थी। सभी लड़कियां अपने-अपने डेस्कों के साथ जुड़ी सीटों पर बैठी हुई थीं। हिन्दी क्लास की टीचर, बच्चों के लिए छपती एक मासिक-पत्रिका में से कहानी पढ़कर सुना रही थीं लड़कियों को। कहानी बड़ी मज़ेदार थी। सभी लड़कियां बड़े ज़ोर से हंसतीं। कहानी ख़त्म हुई। लड़कियों ने ख़ुश होकर ताली बजाई।

"बड़ी मज़ेदार कहानी है मैडम।" निर्मल बोली।

"एक और कहानी पढ़कर सुनाइए मैडम। आप बहुत अच्छा पढ़ाती हैं।" पुष्पा कहने लगी।

मैडम बोलीं, "आज तुम लोगों की बात मानकर मैंने तुम्हें व्याकरण नहीं पढ़ाया। उसके बदले में एक कहानी सुनाई। अब तुम लोगों को भी मेरी बात माननी पड़ेगी।"

लड़कियां चुप होकर मैडम की तरफ देखने लगीं। मालूम नहीं कौन-सी बात मनवाएंगी मैडम हमसे।

"घबराओ नहीं। मैं तुम्हें कोई मुश्किल काम करने के लिए नहीं कहूंगी।"

"क्या करना पड़ेगा मैडम?" पुष्पा बोली।

"आज शनिवार है। सोमवार तक सब लड़कियां एक-एक छोटी-सी कहानी लिखकर लाओ।" मैडम मुस्कराती हुई बोलीं।

"कहानी?" सभी लड़कियां एक साथ बोलीं।

"हां, हां, कहानी," मैडम बोलीं।

"किसकी कहानी?" विमला ने पूछा।

"चिड़िया की, तोते की, किसी लड़की की, किसी मोटर की, किसी हवाई जहाज़ की। जिसकी भी कहानी लिखना चाहो लिख कर लाओ। मगर सोमवार तक लिख कर लाना ज़रूरी है।" मैडम बोलीं।

हिंदी की क्लास आख़िरी क्लास थी। स्कूल ख़त्म होने की घंटी बजी। मैडम अपनी किताबें, कॉपियां और हाज़िरी का रजिस्टर उठाकर क्लास

रूम से बाहर चली गईं। लड़कियां भी अपनी किताबें, *कॉपियां, पेनें, पेंसिलें संभालने लगीं।*

स्कूल की बस में बैठी लड़कियां आपस में गप्पें चला रही थीं। बस ही में बैठी चार-पांच लड़कियों की टोली किसी नई फ़िल्म का गीत गा रही थीं।

''इतनी चुप-चुप क्यों बैठी हो मीना ?'' पुष्पा ने पूछा।

''कुछ नहीं, वैसे ही।'' मीना बोली।

''बताओ भी। क्या हुआ है, विमला के साथ फिर से कुट्टी हो गई क्या ?''

''नहीं।''

''फिर हुआ क्या है ? बताओ न।'' पुष्पा ने प्यार से पूछा।

''मैं सोच रही हूं किस पर कहानी लिखूं। तुम किस पर लिखोगी ?'' मीना बोली।

''मैं ? पता नहीं। हां, मैं अपने मियां मिट्ठू तोते पर कहानी लिखूंगी। तुम अपने डब्बू कुत्ते पर क्यों नहीं लिखती हो ?''

''नहीं डब्बू पर तो मैं कभी भी नहीं लिखूंगी। उसने परसों हमारे दूधवाले भय्या को काट लिया था। डब्बू है तो बहुत प्यारा। लेकिन कभी-कभी बहुत सताता है। सुबह-सुबह जब मैं सो रही होती हूं, तो डब्बू अपनी ठंडी-गीली नाक मेरे मुंह से लगा देता है।'' मीना बोली।

''तो फिर तुम किस पे लिखोगी ? तुम अपनी मम्मी से जाकर क्यों नहीं पूछती हो। वह तो कॉलेज में पढ़ाती हैं।''

''हां मम्मी से पूछूंगी। पर नहीं। मैं किसी से भी नहीं पूछूंगी। मैं अपने आप ही सोचूंगी कोई कहानी।'' मीना बोली।

बस रुकी। मीना का घर आ गया था।

''टा, टा, पुष्पा !'' और मीना बस से उतर गई।

सोमवार सभी लड़कियां हिन्दी की क्लास में बैठी हुई थीं। हिन्दी की क्लास की मैडम, ऊंची एड़ीवाले सफ़ेद सैंडिल पहने ठप-ठप क्लास में आ गईं।

''नमस्ते मैडम।'' सारी क्लास बोल उठी।

''नमस्ते जी, नमस्ते।'' मैडम बोलीं, और आकर अपनी कुरसी पर बैठ गईं।

''लाओ भई, अपनी-अपनी कहानी'' मैडम बोलीं।

''सब लड़कियां, बारी-बारी से उठकर अपनी-अपनी कहानी वाली कापी मैडम की मेज़ पर छोड़ आईं। सिर्फ़ मीना चुपचाप अपनी डेस्क पर सिर झुकाए बैठी रही।

''मीना, तुम्हारी कापी ?'' मैडम मीना की तरफ़ देख कर बोलीं।

मीना कुछ नहीं बोली। उसके चेहरे पर उदासी थी।

''क्या बात है मीना ? तुमने कहानी नहीं लिखी ?'' मैडम ने पूछा।

''नहीं।''

''तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न। इतनी चुपचाप क्यों हो ?''

''मैं कहानी नहीं लिख सकी।''

"मैं कल सुबह अपने बग़ीचे में गई थी। मैं तितलियों को देख-देख कर उनके बारे में कहानी लिखना चाहती थी।"

"बहुत अच्छा, तो फिर क्या हुआ ? तुम्हें बग़ीचे में कोई तितली उड़ती नहीं दिखाई दी ?"

"नहीं, तितली तो दिखाई दी। लेकिन वह गीली घास पर गिरी हुई थीं।"

"अच्छा ? क्या हुआ था उसे ?" मैडम ने पूछा।

"उसका एक पंख टूटा हुआ था। वह उड़ नहीं सकती थी।"

"फिर ?"

"मैं वहीं घास पर बैठ गई उसको देखने के लिए। मैंने देखा, वह जी तो रही थी। लेकिन वह उड़ नहीं सकती थी। उसके ऊपर दो तीन चींटियां चढ़ आई थीं। मैंने तितली को बड़े प्यार से धीरे से उठा कर अपनी हथेली पर रख लिया। उसके पंखों से चींटियां हटाई।"

"सुबह-सुबह धूप निकली हुई थी। मैं तितली को धूप में ले आई। धूप में तितली के गीले पंख सूख गए। वह पंख फड़फड़ाने लगी।"

"लेकिन वह उड़ तो नहीं सकी होगी। उसके पंख जो टूटे हुए थे।" पुष्पा बोली।

"नहीं, उसका एक पंख तो बिल्कुल ठीक था। केसरी रंग का पंख और उसके ऊपर काले रंग की बिंदियां थीं। लेकिन दूसरा पंख बीच में से टूटा हुआ था। धूप में बैठी तितली ख़ुश नज़र आती थी। यूं लगता था जैसे मुझे धन्यवाद कह रही हो।"

"अच्छा तो फिर क्या हुआ ?" मैडम ने पूछा।

"मैंने सोचा कि अगर मैं इसे किसी बेल या झाड़ी के किसी बड़े से हरे पत्ते पर रख दूं, तो धूप सेक कर वह अपने आप ही उड़ने लगेगी। हमारे घर के बग़ीचे में निम्बू का एक छोटा पेड़ लगा हुआ है। मैंने उस तितली को पेड़ के एक पत्ते पर बिठा दिया। पत्ते पर अपने पांव जमाकर वह चुपचाप बैठ गई।"

सभी लड़कियां मीना की बात ध्यान से सुन रही थीं। निर्मल बोली, "फिर क्या हुआ ?"

"फिर ?"

"मैं उसकी तरफ देखती रही। वह चुमके से

बैठी रही। वह बहुत थकी हुई दिखाई देती थी। मैंने सोचा शायद यह सुबह धूप में सोना चाहती है।''

''हां !'' निर्मल ने ध्यान से कहानी सुनते हुए कहा।

''इतनी देर में मम्मी ने नाश्ता करने के लिए मुझे आवाज़ दी। मैं घर में चली आई। मुझे ख़ुशी थी कि मैंने एक तितली को मरने से बचा लिया। मैंने मम्मी पापा को भी तितली के बारे में बताया। वे भी बहुत ख़ुश हुए। नाश्ता करके मैं फिर बाहर बाग़ में आ गई। पर तितली, तितली पेड़ पर नहीं थी।''

''कितनी सुन्दर थी वह तितली !'' मीना धीमी आवाज़ में अपने आप से कह रही थी।

''मैडम, मुझसे शायद ग़लती हो गई। उसको शायद भूख लग रही थी। अगर मैं उसको बग़ीचे के किसी फूल पर बिठा देती तो शायद वह उसका रस चूस लेती। रस चूसने पर शायद उसका टूटा हुआ पंख भी ठीक हो जाता। वह भूख से ही मर गई होगी।'' मीना दुःखी उदास होकर कह रही थी।

''शायद ! क्या मालूम !'' मैडम बोली।

''कहां गई, उड़ गई ?'' विमल ने पूछा।

''मैंने पत्तों में इधर-उधर देखा। मुझे पहले वह नज़र ही नहीं आई। जब दिखाई दी तो वह ज़मीन पर पड़ी हुई थी। वह, वह मर गई थी। फिर से चींटियां उसके ऊपर रेंगने लगी थीं।''

''च, च, च !'' धीमे से सब लड़कियों के मुंह से निकला।

''पेड़ के पास ही मैंने थोड़ी-सी मिट्टी खोदी। तितली को उठाकर मैंने खुदी हुई मिट्टी के अन्दर डाला। उसके ऊपर मैंने फिर मिट्टी डाल दी। एक गुलाब का फूल तोड़कर उसकी लाल पत्तियां मैंने उस मिट्टी पर बिखेर दी।''

सारी क्लास चुप थी।

''मैंने उस तितली को बचाने की कोशिश की। फिर भी वह मर गई। मैं इतनी उदास थी कल कि मेरा कहानी लिखने को जी भी नहीं चाहा।''

''लेकिन तुमने तितली को बचाने की कोशिश तो की। यह कितना अच्छा काम किया तुमने ! और, तुमने कहानी लिखी तो नहीं, लेकिन तुमने एक अच्छी-सी कहानी हमें सुनाई आज। क्यों भई तुम सब क्या कहती हो ?'' मैडम लड़कियों से पूछने लगीं।

''हां मैडम, हां ! मीना ने एक बहुत अच्छी कहानी सुनाई हमें।'' और सभी लड़कियां प्यार-भरी आंखों से मीना की ओर देखने लगी।

मीना और मैना

मीना को बुख़ार था । डॉक्टर साहब घर आकर उसको देख गए थे । एक इन्जेक्शन भी लगा गए थे । साथ ही कुछ दवाई की गोलियां भी दे गए थे । बुख़ार उतर रहा था; लेकिन धीरे-धीरे । मीना बिस्तर में लेटे-लेटे तंग आ गई थी । उसका जी करता था नहा-धोकर अच्छा-सा फ़्राक पहन कर स्कूल जाए । या घर के बग़ीचे में ही अपनी सहेलियों के साथ खेले । लेकिन जब तक बुख़ार उतर न जाता वह यह सब कैसे कर सकती थी ।

एक दिन जब डॉक्टर साहब मीना को देखने आए तो उनके हाथ में एक छोटा-सा पिंजरा था ।

"देखो मीना तुम्हारे लिए क्या लाया हूं मैं ।"

मीना ने पिंजरे की तरफ़ देखा । उसका चेहरा खुशी से खिल गया । "यह कौन-सी चिड़िया है डॉक्टर चाचा जी ?"

"इस चिड़िया का नाम है मैना ।" डॉक्टर चाचा जी बोले ।

"मैना ! हाय, कितनी प्यारी है । आप इसे कहां से लाए हैं ? ख़रीद कर लाए हैं चिड़ियों वाले की दुकान से ?" बिस्तर में लेटे-लेटे ही मीना सिर उठा कर बोली ।

"बताऊं तुम्हें, कहां से लाया हूं ?"

"हां, हां ! बताइए न !"

"जब मैं अपनी डिस्पेन्सरी से बाहर आकर मोटर में बैठने लगा तो क्या देखा कि एक छोटी मैना मेरी मोटर की सीट पर बैठी है । डर से पंख फड़फड़ा रही है और एक बिल्ली मोटर की खुली खिड़की में से अन्दर सीट पर कूदनेवाली है । "शित, कहकर मैंने बिल्ली को भगा दिया । मोटर के अन्दर जाकर मैंने इस मैना की बच्ची को अपने हाथों में ले लिया ।"

"अरे वाह, आपने कितना अच्छा किया । नहीं तो बिल्ली तो इस बेचारी को कच्चा ही चबा जाती । पर यह छोटी-सी मैना आपकी मोटर में कैसे आ बैठी ?" मीना ने पूछा ।

"पता नहीं कैसे । यूं लगता है कि यह बेचारी अपने घोंसले में से गिर पड़ी थी । अपनी मां से अलग हो गई । अभी इसे पूरा-पूरा उड़ना तो आता नहीं । बिल्ली के पंजों से बचने के लिए कैसे भी उड़कर मेरी मोटर में आ गई ।"

"इसका मतलब है कि यह बड़ी अक्लवाली मैना है। इसको इतनी समझ थी कि मोटर में घुस गई तो शायद बिल्ली से बच जाऊंगी।" मीना की मम्मी बोलीं।

"जी हां, मैना तो पक्षियों में बहुत अक्ल वाली मानी जाती है।" डॉक्टर साहब मीना की नब्ज देखते हुए बोले।

"मैना तो आदमियों की तरह बातें भी कर सकती है न डॉक्टर चाचा जी?"

"हां, सिखाओ तो बहुत बातें करती हैं।"

"गाना भी गा सकती है?"

"अगर बोल सकती है तो गाना भी गा सकती होगी। तुम सिखाना इसे।" डॉक्टर साहब बोले।

"मम्मी मैं इसे पालूंगी। और इसे अपने स्कूल का गाना सिखाऊंगी।"

"हां, हां। तुम ठीक हो जाओ पहले।"

"हां तब तक आप ही इसको खिलाइए-पिलाइए मम्मी। इसको खाने के लिए क्या देते हैं चाचा जी?"

"जो कुछ हम खाते हैं वह सब कुछ यह खा सकती है। उतना ही जितना मैना का एक छोटा बच्चा खा सकता है। ज़्यादा खिलाओगी इसे तो इसका पेट बिगड़ जाएगा। यह भी तुम्हारी तरह बीमार पड़ जाएगी। ज़्यादा नहीं खिलाना। अच्छा मीना अब मैं जाता हूं।"

"नमस्ते चाचा जी। चाचा जी, मैं कब तक ठीक हो जाऊंगी?"

"अगर तुम आज बिल्कुल आराम करो तो कल तक तुम्हारा बुख़ार उतर जाएगा। फिर दो-चार दिनों में चलने-फिरने की ताकत भी आ जाएगी। अगले सोमवार तक तुम स्कूल जा सकोगी। अच्छा नमस्ते।" और डॉक्टर साहब अपना बैग उठाकर चले गए।

"मम्मी, इस मैना का नाम मैं बातूनी कुमारी रखूंगी। इतनी बातें सिखाऊंगी इसको, इतनी बातें कि घर में सबका दिमाग़ चटम कर जाया करेगी।" मीना मैना की तरफ़ देखकर हंसती हुई बोली।

बुद्धूमल

चारपाई पर लेटी हुई मीना कहानियों की एक किताब पढ़ रही थी। गरमियों के दिन थे। कमरे में पंखा चल रहा था। पढ़ते-पढ़ते 'थप!' सी आवाज़ आयी। मीना ने सर उठाकर देखा। चिड़िया का एक नन्हा बच्चा कमरे के फ़र्श पर गिरा पड़ा था।

"यह कहां से गिरा? अरे हां, बिजली के पंखे की ऊपर की टोपी-सी में बने चिड़िया के घोंसले से!" मीना ने छत की तरफ देखते हुए सोचा।

चिड़िया का बच्चा ज़िन्दा था। अपने नन्हें-नन्हें पैर हिला रहा था। चोंच खोल रहा था। उसके नंगे बदन पर अभी ज़रा-ज़रा से बालों से पंख आये थे। वह सीधा बैठ भी नहीं सकता था।

"अब क्या करूं? इसको कैसे बचाऊं?" मीना सोचने लगी। इतना छोटा था चिड़िया का बच्चा। उसको हाथ में लेते हुए भी मीना को डर-सा लगता था। अलमारी में रुई पड़ी थी। मीना ने थोड़ी-सी रुई निकाल कर उसकी नन्हीं-सी दुलाई-सी बनाई। दुलाई को उसने अपने पढ़ने वाली मेज़

पर रखा। फिर उसने हिम्मत करके चिड़िया के बच्चे को संभाल कर हाथों में लिया। उठाकर उसे मेज़ पर रखी हुई रुई की दुलाई पर डाल दिया। फिर वह भाग कर रसोई में गयी।

"मां, मां ! एक चिड़िया का बच्चा अपने घोंसले में से गिर गया है। ममी अब मैं क्या करूं ? आप जल्दी से उस कमरे में आइये।"

मीना की ममी रसोई में पालक का साग काट रही थीं। छुरी पालक वाली थाली में ही रखकर वे मीना के साथ सोने वाले कमरे की तरफ चल दीं।

"कहां है चिड़िया का बच्चा ?" ममी ने पूछा।

"यह देखिये, मेरी मेज़ पर। मीना ने रुई की दुलाई पर पड़े चिड़िया के बच्चे को दिखाया।

"मां, इसको इसके घोंसले में कैसे डालूं ? ऐसे कीजिये ममी, आप कुर्सी पर खड़ी हो जाइये। फिर मैं इसे आपके पास पकड़ा दूंगी। फिर आप इसे इसके घोंसले में रख दीजियेगा।"

"नहीं मीना बेटी। अब इसे इसके घोंसले में नहीं डालना चाहिये।"

"क्यों ?"

"एक बार चिड़िया के बच्चे को आदमी या कोई दूसरा जानवर छू जाये तो चिड़िया उसको अपने घोंसले में नहीं रखती।"

"अच्छा ! पर क्यों ?" मीना हैरान होकर बोली।

"मालूम नहीं। बस चिड़िया का स्वभाव ही ऐसा है। वह देखो इस नन्हें के ममी पापा। चिड़िया और चिड़ा दोनों कमरे की खिड़की पर बैठे चीं-चीं कर रहे हैं। मगर अब इस बच्चे के पास नहीं जायेंगे। मुझे डर है कहीं इसे अपनी चोंच मार-मार कर मार ही न डालें।"

"तो फिर क्या करें हम ?"

"यह तो तुमने अच्छा किया। इसे रुई में लपेट दिया।"

"मां, हम इसे यहीं छोड़कर दूसरे कमरे में चले जाते हैं, देखते हैं इसकी मां इसको अपनी चोंच में उठाकर ले जाती है या नहीं।"

"चिड़िया बेचारी खुद ही कितनी छोटी है। यह इसे अपनी चोंच में कैसे उठा लेगी।" ममी थोड़ा हंस कर बोलीं।

"फिर तो वह मर जायेगी।" मीना उदास होकर बोली। फिर झट से बोली, "मैं इसे पालूंगी ममी। आप फ़िकर न करें।"

"तुम इसे कैसे पालोगी ?" मां ने मुस्कुरा कर पूछा।

"वैसे ही जैसे मैंने शेरु को पाला था, जब वह छोटा-सा पिल्ला था। अभी उसकी आंखें भी नहीं खुली थीं, जब उसको मैं पुष्पा के घर से लाई थी। मां, मुझे एक कटोरी में थोड़ा-सा दूध दे दीजिये।" मीना उतावली होकर कहने लगी।

ममी ने मुस्कुरा कर मीना की तरफ़ देखा और उसे चूम लिया। फिर मां बेटी दोनों रसोई में गयीं। ममी ने कटोरी में तीन-चार चम्मच दूध के डालकर उसमें दो चम्मच पानी भी डाल दिया।

"पानी क्यों डाला मां ?"

"दूध पतला होगा तो चिड़िया के बच्चे को हज़म हो जायेगा। अभी तो बिल्कुल ही छोटा है न।"

मीना ने सोने वाले कमरे में आकर अल्मारी में से ज़रा-सी रुई और निकाल कर उसे दूध की कटोरी में डाल दिया। फिर बड़े प्यार और ध्यान से उसने बच्चे की छोटी-सी चोंच खोली।

"चीं-चीं, चीं !" बच्चा डरता हुआ धीमी आवाज़ में बोला।

लेकिन जब मीना ने रुई की दूध से भीगी गोली को हल्का दबा कर दूध की एक दो बूंदें उसकी चोंच में डालीं, तो वह चुप हो गया। दोनों बूंदें पी गया। उसे भूख लगी हुई थी। दूध की बूंदें उसे मीठी लग रही थीं।

"बुद्धूमल, मैं तुझे मारने थोड़े ही लगी हूं। दूध ही तो पिला रही हूं।" और मीना ने फिर से उसकी चोंच खोली और दो बूंदें दूध की डालीं। बच्चा मज़े-मज़े से दूध पी गया। मीना दो बूंदें और भी डालने ही वाली थी कि ममी झट से बोलीं-

"बस, बस ! पहली-पहली बार दूध पिया है। देखते हैं इसे हज़म भी होता है या नहीं। कहीं ज़्यादा पीकर बीमार न पड़ जाये।" अगर इतना दूध इसने हज़म कर लिया तो एक घंटे के बाद फिर पिलायेंगे।"

"हां, ठीक है ममी।" मीना ने दूध भीगी रुई कटोरी में वापस डाल दी। कटोरी को अपनी पढ़ाई की मेज़ पर रखा। रसोई से जाकर एक छोटा ढकना ले आई और कटोरी को ढक दिया। ममी फिर से रसोई में जाकर पालक का साग काटने लगीं।

"मां, आमों वाली पेटी में सूखी घास थी, वह घास कहां है ?" मीना फिर रसोई के दरवाज़े पर आकर खड़ी हो गयी।

ममी ने थोड़ी सी सूखी घास लाकर मीना को दी।

मीना ने घास लेकर गोल-गोल कटोरी जैसा एक घोंसला बनाया। घोंसले में रुई में लिपटा नन्हा बच्चा उसने डाल दिया। फिर ख़ुशी से अपनी चारपाई पर लेटकर अपनी कहानियों की किताब पढ़ने लगी।

पढ़ते-पढ़ते मीना कब सो गयी उसे पता भी नहीं चला।

"चीं ! चीं ! चीं !"

मीना चौंक कर उठी। उठकर घोंसले के पास गयी। देखा नन्हा बच्चा अपनी नन्हीं चोंच खोले अपनी नयी मां से दूध मांग रहा था।

मीना ने उसकी चीं-चीं करती खुली चोंच में दूध की दो बूंदें डालीं। स्वाद ले-लेकर बुद्धूमलजी दूध पी गये। मीना ने दो बूंदें और डालीं। और दो बूंदें और दो बूंदें।

इसी तरह दिन में तीन-चार बार मीना ने बुद्धूमल को दूध पिलाया।

नन्हें बच्चे के मां-बाप, चिड़िया चिड़ा, पंखे के ऊपर बने घोंसले में अपने दूसरे बच्चों के पास आते लेकिन मीना की मेज पर बने घोंसले की ओर न आते। मीना ने भी अपने बनाये घोंसले के ऊपर एक तिनकों की बनी पतली छोटी टोकरी उल्टी डाल दी ताकि इस निकचू को कोई मार न सके।

लेकिन अब बड़ा मजा आ रहा था, मीना को पंखे के ऊपर बने घोंसले में से भी चीं-चीं की आवाज आती थी और मेज पर बने घोंसले में से भी।

शाम को जब पापा जी और मीना का भाई किशोर घर आये तो मीना ने बड़े चाव से उन्हें अपना निकचू, बुद्धूमल दिखाया।

"मां, चिड़िया अपने बच्चों को खाने के लिए क्या देती है ?"दो दिन के बाद मीना ममी से पूछने लगी।

'चोगा,' मीना की ममी ने अपने बालों में कंघी करते हुए जवाब दिया।

"चोगा क्या होता है ?"

"चिड़िया अम्मी घास में से, खेतों में से जो दाना चुगती है वही अपने मुंह में चगल कर अपनी चोंच से अपने बच्चों के मुंह में डाल देती है।"

"चगल-चगल क्या हुआ ? आपका मतलब है अच्छी तरह चबा-चबाकर !"

"हूं।"

"हां, पतला करके ही बच्चों की चोंच में डालती होगी न !" ममी हंसकर बोलीं।

दूसरे दिन सबेरे तो मीना ने बुद्धूमल को दूध

की बूंदें ही दीं। किन्तु दोपहर को खाना खाने के बाद अपनी थाली में ही ज़रा से चावल और दाल पतले बनाकर उसने बुद्धूमल को खिलाये। "चीं ! चीं ! चीं !" चोंच खोलकर बुद्धूमल मज़े से खा लेता, बल्कि चोंच खोलकर और भी मांगता।

"तुझे अच्छी लगी न खिचड़ी बुद्धूमल ! लो और खाओ। पर बस, और नहीं। नहीं तो तुझे जुलाब लग जायेंगे। बस अब चुप करके सो जाओ।"

और मीना उसे घोंसले में बिठाकर उसके ऊपर टोकरी उल्टाकर रख देती।

"देखिये मम्मी, देखिये पापा। बुद्धूमल कैसे मज़े से मेरे हाथ पर बैठा हुआ है।"

अब ज़रा-सा बड़ा होकर बुद्धूमल मीना के हाथ पर आराम से सवारी करने लगा था। बुद्धूमल मीना के हाथ पर बैठे-बैठे ही खिचड़ी खाता। मीना उसे हाथ में उठाये सारे घर का चक्कर लगा आती। बुद्धूमल अपनी छोटी-छोटी गोल-गोल आंखें कभी खोलता, कभी बन्द करता। गरदन दाएं बाएं मोड़ इधर उधर देखता। छोटी सी चोंच अपने बदन में खोंसता। मीना को इतना प्यारा लगता कि वह उसे चूम लेती।

"इसको मेरे हाथ पर भी रखो न मीना।" किशोर कहता।

"नहीं जी !" मीना बड़े रौब से कहती।

"क्यों नहीं ?" किशोर रूठकर कहता।

"तुम अभी छोटे हो। तुम इसे गिरा दोगे।"

"नहीं मैं नहीं गिराऊंगा। मम्मी, मीना से कहिये न बुद्धूमल को मेरे हाथ पर भी रखे।"

"रखो न इसके हाथ पर भी मीना। नहीं गिरायेगा।"

"ध्यान से हाथ पर रखना किशोर।" मम्मी कहतीं।

मीना बुद्धूमल को किशोर के हाथ पर रख देती। किशोर ख़ुश हो जाता।

"इसके पंख ज़रा और बड़े हो जायें तो यह उड़ने भी लगेगा।" पापाजी कहने लगे।

दो-तीन दिन बाद एक दिन दोपहर के वक्त जब मीना बुद्धूमल को अपने हाथ पर बिठाकर खिचड़ी खिला रही थी कि अचानक वह मीना के हाथ से उड़कर मीना की मेज़ पर रखे अपने घोंसले के पास जा बैठा।

मीना हैरान सी हो गयी। अरे। वाह ! एकदम कैसे उड़ पड़ा।

बुद्धूमल चुपचाप मेज़ पर घोंसले के पास बैठा हुआ था। जैसे वह भी हैरान हो रहा था कि वह कैसे उड़ सका। मीना उसकी तरफ़ देखती रही। बुद्धूमल मेज़ पर ही एक जगह से दूसरी जगह पर थोड़ा-सा उड़ा। फिर वह चुपचाप पंख संभालकर बैठ गया, जैसे वह थक गया हो। मीना उसे हाथ में पकड़ने के लिए आगे बढ़ी। बुद्धूमल फिर उड़ा। पर इस बार वह उड़ न सका और फ़र्श पर गिर पड़ा।

मीना ने उसे उठा लिया। उसे प्यार किया और कहने लगी, "शैतान, तुझे अब उड़ना भी आ गया। मां, देखो अब यह बुद्धूमल उड़ने भी लगा है। चलो बस अब बहुत उड़ लिया आज। बाकी का उड़ना कल सीखना।" और मीना ने उसे घोंसले में डालकर उसके ऊपर उल्टी टोकरी रख दी।

दूसरे दिन सुबह ही चीं, चीं ! चीं ! की आवाज़ से मीना की आंख खुल गयी। बिस्तर पर लेटे-लेटे ही उसने देखा बुद्धूमल के मम्मी, पापा चिड़िया-चिड़ा

अपने और दो बच्चों को कमरे के कभी एक दरवाज़े से दूसरे दरवाज़े तक, कभी एक खिड़की से दूसरी खिड़की तक धीरे-धीरे उड़ना सिखा रहे थे। पहले ममी चिड़िया उड़ती फिर बच्ची चिड़िया अपने छोटे-छोटे पंखों से उड़ती। बड़ी मज़ेदार खेल हो रही थी। ऊपर बने घोंसले में अपने दूसरे बच्चों के पास आते लेकिन मीना की मेज़ पर बने घोंसले की ओर न आते। मीना ने भी अपने बनाये घोंसले के ऊपर एक तिनकों की बनी पतली छोटी टोकरी उल्टी डाल दी ताकि इस निकचू को कोई मार न सके।

मीना लेटे-लेटे ही यह सब देख रही थी। उसे बड़ा मज़ा आ रहा था। देखते ही देखते ममी अपने दोनों बच्चों को खिड़की से बाहर पेड़ की डाल के ऊपर ले गयी।

''चीं ! चीं ! चीं !'' टोकरी के अन्दर से भी प्यारी सी आवाज़ आने लगी।

''नमस्ते जी ! सत सिरी अकाल जी। आदाब अर्ज़ जी ! गुड मार्निंग जी ! बुद्धूमल जी ज़रा ठहरिये मैं अभी आयी।'' मीना ने हंस कर कहा।

मीना उठकर रसोई में आयी। कटोरी में रात की बची हुई खिचड़ी लेकर आयी। टोकरी उठाकर बुद्धूमल को अपने हाथ में पकड़ा। दायें हाथ से खिचड़ी की बहुत ही छोटी-छोटी गोलियां बनाकर उसे खिलाने लगी। खिलाते-खिलाते उसने सोचा, ''मैं इस बुद्धूमल को एक पिंजरे में क्यों न डाल दूं। तब तो मैं हमेशा इसके साथ खेल सकूंगी। लेकिन फिर उसकी नज़र खिड़की से बाहर पेड़ की सुंदर डालियों और हरे-हरे पतों पर पड़ी जिस पर अभी चिड़ियों के दोनों बच्चे और दूसरी चिड़ियां भी खेल रही थीं। सुबह के सूरज की सुनहरी किरणें आम के बड़े पेड़ की हरी पत्तियों पर चमक रही थीं। सुबह-सुबह चिड़ियां, कौए, तोते, बुलबुलें सभी अपने-अपने गाने गा रहे थे।

मीना बाहर का यह नज़ारा देख रही थी। अचानक बुद्धूमल उसके हाथ से उड़कर दरवाज़े के ऊपर जा बैठा। फिर दरवाज़े से उड़कर खिड़की के ऊपर जा बैठा। खिड़की से उड़कर घर के बाहर फूलों की क्यारी में बैठ गया।

मीना भी कमरे से बाहर बरामदे का दरवाज़ा खोल क्यारी के पास आ गयी। शेरू कुत्ता भी उसके पीछे-पीछे दौड़ता आ रहा था। पर शेरू के बुद्धूमल के निकट पहुँचने से पहले ही मीना का पाला हुआ छोटा-सा बुद्धूमल आम के पेड़ की पहली डाल पर उड़ पहुंचा।

पहली डाल से वह उससे ऊपर वाली दूसरी, और फिर उससे ऊपर वाली तीसरी डाल पर पहुंच गया।

थोड़ी ही देर में वह पेड़ पर बैठी, खेल रही, उड़ रही, चहचहा रही दूसरी चिड़ियों के साथ ही उड़ने खेलने लगा।

फूलों की क्यारी के पास मीना और पिछली टांगों पर बैठा डब्बू दोनों मुस्कराते हुए चुपचाप बुद्धूमल को देख रहे थे।

———

दो मछलियां

अगले इतवार मीना अपने पापा, मम्मी के साथ फिर समुद्र के किनारे गई। समुद्र के इस किनारे का नाम था 'जुहू बीच'। मीना ने देखा कि आज तो 'जुहू बीच' रेत का एक बहुत बड़ा मैदान बना हुआ था। समुद्र का पानी बहुत पीछे गया हुआ था। और किनारे की लहरें बिल्कुल छोटी-छोटी थीं। समुद्र गहरा नीला और शांत था।

कितने ही लोग बीच पर सैर करने के लिए आए हुए थे। कुछ धीरे-धीरे टहल रहे थे। कुछ तेज़ तेज़ चल रहे थे, कुछ दौड़ रहे थे। और कोई कोई तो डंड-बैठकें भी निकाल रहे थे। एक जगह पर एक लड़का और लड़की बैठे रेत का मंदिर बना रहे थे।

"नारियलवाला ! नारियल पाणी ! नारियल पिएगा बेबी ?" एक नारियल वाला सिर पर नारियलों का टोकरा उठाए सामने आकर पूछने लगा।

"मम्मी पापा ! मैं नारियल पिऊंगी।" मीना कहने लगी।

"काटो भई, तीन नारियल," पापा बोले।

"मीठे पानी वाला खोलना। और उसमें मलाई भी होनी चाहिए।" मीना कहने लगी।

"पतली मलाई वाला खाएगा कि मोटी मलाई वाला ?" नारियलवाला पूछने लगा।

"मोटी-मोटी, मीठी-मीठी मलाईवाला खाएगा।" मीना बोली।

नारियलवाले ने बड़े से चाकू से नारियल का ऊपर का हिस्सा काटा। पानी और मलाई भरा नारियल मीना के हाथ में दे दिया। नारियल का पानी वाकई बहुत मीठा था। और मलाई भी बहुत मज़ेदार थी।

नारियल हाथ में पकड़े मीना की नज़र छोटी-छोटी दो मछलियों पर पड़ी। दोनों पानी से भरे एक छोटे से तालाब में तैर रही थीं। पानी पर सुबह की धूप की हल्की सुनहरी किरणें पड़ रही थीं। तालाब के बिल्कुल शांत और बिल्कुल साफ़ पानी में से नीचे की रेत दिखाई दे रही थी। एक नन्हीं मछली दूसरी नन्हीं मछली के पीछे भागती। भागकर उसको छू लेती। फिर दूसरी नन्हीं मछली, पहली नन्हीं मछली के पीछे दौड़ती-तैरती। तेज़ी से तैर कर उसे छू लेती। कभी दोनों अपने नन्हें-नन्हें मुंह पानी से बाहर निकालतीं, सांस लेतीं। फिर मुंह पानी के अन्दर डाल कर डुबकी लगातीं। खेलें खेलतीं। नन्हीं मछलियां भी खेलतीं और पानी में तैरतीं उनकी परछाइयां उनकी नकल करतीं। मीना को यूं लगता जैसे वे दो नहीं, चार मछलियां हों।

"रेत में यह छोटा तालाब कैसे बन गया पापा ?" मीना ने पूछा।

"समुद्र की लहरें रात को उमड़ कर बहुत आगे रेत पर आ गई होंगी। और फिर धीरे-धीरे वापस लौट गई है। जब बड़े समुद्र में वापस लौट रही थीं, तो उनका कुछ पानी रेत में बने छोटे-बड़े गढों में भरा रह गया। देखो, वह आगे और भी कितने पानी भरे तालाब हैं।" पापा बोले।

"सुबह की धूप में कैसे सुन्दर लग रहे हैं वह तालाब। छोटी-छोटी पहाड़ी झीलों जैसे दिखाई दे रहे हैं।" मम्मी कहने लगीं।

"उस तालाब का पानी बहकर समुद्र की तरफ़ जा रहा है मम्मी। ऐसे लगता है जैसे वह कोई छोटी-सी नदी हो, जैसे हमने कश्मीर के पहाड़ों में देखी थी। देखिए पापा, पापा, देखो, छोटी नदी में लहरें।" मीना ऊंचे स्वर में कह रही थी।

"हां और नदी के किनारे की रेत फिसल-फिसल कर नदी में गिर रही हैं। देखा तुमने मीना ?" मम्मी बोलीं।

"हां ! बिल्कुल पहाड़ी नदी की तरह मटक-मटक कर बह रही है। तुम्हारी तरह नटखट है यह छोटी नदी।" पापा हंस कर बोले।

"अरे, आप दोनों ने यह मछलियां तो देखी ही नहीं।" मीना बोली।

"कहां हैं मछलियां ?" मम्मी ने पूछा।

"यह देखो तो, यह रहीं दो छुटकी-सी मछलियां। देखिये तो। वाकई, कितनी छोटी हैं। और प्यारी भी कितनी।" मम्मी ने उंगली से पापा को मछलियां दिखाते हुए कहा।

"अरे वाह ! वाह री मछली की बच्चियों। क्या मज़े से तैर रही हो। अच्छा, चलो भी। ज़रा आगे चलें। सैर कर लें थोड़ी-सी।" पापा बोले।

"आप दोनों आगे जाइए पापा मम्मी। मैं यहीं बैठकर मछलियां देखूंगी।"

"अच्छा हम ज़रा आगे सैर कर आते हैं। तुम यहीं रहना। इधर-उधर नहीं जाना।" पापा बोले।

"हां, हां। आप फिक्र न करें। मैं यहीं रहूंगी।" और मीना तालाब के किनारे बैठ गई। पानी में हाथ डालकर उसने मछली पकड़ने की कोशिश की। मछली तीर की तरह आगे भाग गई। मीना ने अपने चप्पल उतारे और पानी में पांव डाले। झुक कर वह मछलियों के पीछे पीछे चलने लगी। मछलियां हाथ में न आईं। पर पानी में चलने का उसे बहुत मज़ा आया।

"कितने मज़े हैं इन मछलियों के। इतने बड़े समुद्र की सैर करती हैं।" मीना पानी में खड़ी सोच रही थी।

वह पानी में से बाहर निकल आई। रेत पर बैठ गई। उसके पानी में चलने के कारण छोटे से तालाब के पानी में हलचल पैदा हो गई थी। नीचे की रेत भी हिलडुल कर इधर उधर तैरने लगी थी। अब फिर तालाब का पानी शान्त और साफ हो गया। मछलियां पानी के नीचे की रेत पर बैठी थीं। कभी मुंह खोल कर रेत में से कुछ निकालतीं। जैसे कुछ खा रही हों। "कोई कीड़ा वीड़ा-सा रही होंगी।" मीना सोच रही थी।

सामने समुद्र में कुछ मछेरे और मछेरने जाल डाल कर कमर तक गहरे पानी में खड़े थे। खूब ज़ोर लगा कर जाल को किनारे की तरफ़ खेंच रहे थे। धीरे-धीरे जाल को समेट कर वे किनारे पर ले आए। किनारे पर तिनकों की टोकरियां रखी हुई थीं। मछेरे और मछेरने जाल में से मछलियां निकाल-निकाल कर टोकरियों में डालने लगे। जाल के पास से गुज़रते हुए बच्चे और बड़े, वहीं खड़े होकर, उनको देखने लगे। मीना भी दौड़ कर वहीं पहुंच गई। खड़ी होकर देखने लगी। जाल में छोटी मछलियां थीं, बड़ी मछलियां थीं, पतली मछलियां थीं, मोटी मछलियां थीं। कोई काली थी, कोई सलेटी रंग की थी, कोई सफ़ेद और एक दो तो लाल रंग की भी थी। मछलियों के साथ ही साथ झींगे, केकड़े और लॉबस्टर भी थे। हां, यह लॉबस्टर ही तो थे नारंगी रंग के। पापा जब पापा मुझे 'मछली-घर' ले गए थे तो वहां कांच की बड़ी-बड़ी सन्दूकों में कई किस्म की मछलियां और सांप थे। वहां लॉबस्टर भी थे। मीना मन ही मन कह रही थी।

मछलियां पानी से बाहर आकर जाल में छटपटा रही थीं। उल्टी-सीधी हो रही थीं। कोई-कोई बेहोश हो गई थीं। मछेरों को जो मछली अच्छी नहीं लगती थी उन्हें वे उठा कर रेत पर फेंक देते थे। एक-दो ग़रीब बच्चे दौड़ते-दौड़ते आए। वे मछेरों से दो-दो तीन-तीन मछलियां मांग कर हाथों में पकड़ कर ले गए। दो टोकरियां भरकर, जाल को कंधों पर रख कर मछेरे आगे चल दिए। मीना भी अपने छोटे तालाब के पास लौट आई।

दोनों मछलियां आंख मिचौली की खेल खेल रही थीं। अपने हाथों में पानी भरकर मीना ने अपना मुंह धोया। एक घूंट पानी मुंह में डाला।

"हाय ! कितना नमकीन है !" उसने किनारे पर थूक दिया। "यह पगली मछलियां दिन-रात इतना नमकीन पानी कैसे पीती रहती हैं ?" मीना सोच रही थी।

फिर तालाब के अंदर घुस गई मीना। मछलियों को हथेली में लेने की बहुत कोशिश की उसने। लेकिन मछलियां मीना से ज्यादा चतुर थीं। झट दाएं-बाएं, आगे-पीछे, ऊपर-नीचे भाग जातीं। "कभी मेरे पास भी छोटा-सा जाल होता, तो मैं इन्हें झट से पकड़ लेती। अगली बार जब आऊंगी तो अपनी जालीवाली ओढ़नी लेकर आऊंगी। और साथ ही एक कांच की बोतल। इन्हें जाली वाली ओढ़नी से पकड़ कर कांच की बोतल में तालाब का पानी भर कर उसमें डाल दूंगी। बैठक में रखूंगी। रचना के घर में कांच का एक मछली-घर है। कितनी सुन्दर-सुन्दर मछलियां तैरती हैं उसमें। लेकिन इनको खाने के लिये क्या देना चाहिए ? रचना से पूछूंगी।" मीना ने सोचा।

"इन मछलियों की मां कहां होगी ? समुद्र में ही तो होगी। यह अपनी मां को याद नहीं करतीं ? पर हमारी पढाई की किताब में लिखा हुआ है कि एक-एक मछली सैकड़ों ही अंडे देती हैं। मोती के दानों जैसे बिल्कुल ही छोटे-छोटे अण्डे। मछली मां भी क्या मुरगी की तरह अंडों के ऊपर बैठती हैं ? किताब में शायद ऐसे ही लिखा हुआ है। और फिर एक दिन, मछली के बच्चे अपने आप ही एक-एक करके अंडों में से निकल कर, तैरने लगते हैं। जैसे तितलियों के बच्चे एक दिन केकून में से तितली बन कर बाहर निकल आते हैं और हवा में उड़ने लगते हैं। कितना अजीब है यह सब। यह दो छोटी-छोटी मछलियां कल परसों-सी पैदा हुई होंगी।" मीना तालाब के किनारे बैठी-बैठी रेत का मंदिर बनाते-बनाते सोच रही थी।

धूप बढ़ रही थी। धीरे-धीरे तालाब का पानी कम होने लगा था।

"अरे ! अब क्या होगा। अगर तालाब का पानी सूख गया, तो इन मछलियों का क्या होगा ? तड़पने लगेंगी। समुद्र की लहरें अपने आप तो पीछे चली गईं। इन दोनों को यहीं भूल गईं। हज़ारों करोड़ों मछलियां नीले-नीले समुद्र में तैर रही हैं। इन

दोनों को इतना भी नहीं मालूम कि समुद्र इतना नज़दीक है। पर, अगर यह इस तालाब में न होतीं तो मैं इनकी मज़ेदार खेलें कैसे देखती।''

''पीं! पीं! पीं!'' मुंह में पीपनी डाले एक बैलून वाला आया। धागों से बांधे लाल, पीले, नीले बैलून हवा में उड़ाता वह मज़े मज़े से चल रहा था। मुंह में से पीपनी निकाल कर बोला।

''बैलून लेगा बेबी?''

''नहीं।'' मीना बोली।

मीना का जी तो बहुत था एक बैलून लेने को। लेकिन पैसे कहां थे उसके पास। और अभी मम्मी पापा तो आए नहीं थे।

रेत का मंदिर बहुत सुंदर बना लिया था उसने। मंदिर के अंदर से रेत निकाल कर एक गुफ़ा बनाई उसने। अब वह मंदिर के बाहर की दीवारें बना रही थी।

किसी ने पीछे से आकर आंखें भींच लीं।

''यह तो मम्मी के हाथ हैं। आपकी अंगूठी से ही मुझे पता लग जाता है।'' मीना हंस कर बोली।

''वाह रे, कितना सुंदर मंदिर बनाया है। और आपकी दो मछलियों के क्या हालचाल हैं जी?'' पापा ने पूछा।

''मज़े से तैर रही हैं। मैंने इनको अपने हाथ में लेने की इतनी कोशिश की मगर यह हाथ में ही नहीं आतीं। पर पापा, जब सूरज की गरमी से इस तालाब का पानी सूख जाएगा तो यह बेचारी तड़प कर मर जाएंगी। पापा, आप इनको अपने हाथों में ले लो कैसे भी, और इन्हें समुद्र में छोड़ आओ,'' मीना ने कुछ घबरा कर कहा।

''अजी, उधर समुद्र की तरफ़ तो देखिए। आप तो अपना मंदिर बनाने में ही मस्त हैं। समुद्र की लहरें अब आगे ही आ रही हैं।'' पापा बोले।

उछल-उछल कर लहरों की सेना आगे बढ़ रही थीं। लहरें ऊपर उठतीं और झाग के जाल बिछाती हुई नीचे गिरतीं। और शोर भी कितना मचा रही थी लहरें।

''लहरें कितनी देर में तालाब के पास पहुँचेंगी?''

''देखती जाओ तुम। ज़रा देर लगेगी। लेकिन आएंगी ज़रूर।'' पापा हंस कर बोले।

कितने ही लोग तैरने वाले कास्ट्युम पहने समुद्र में तैर रहे थे।

''पापा, मैं भी तैरना सीखूंगी।''

''जरूर! अगले हफ्ते तीनों जने नहाएंगे समुद्र में।''

तभी कुछ पास ही से एक गीत सुनाई देने लगा—

''चना ज़ोर गरम बाबू,
मैं लाया चना ज़ोर गरम।
मेरा चना बना है आला
जिसमें डाला गरम मसाला।
जो भी खाए भर के प्याला
खा के हो जाए मतवाला
चना ज़ोर गरम···।
आई चने की बहार
चना गरम गरम तैयार

खा के देखो तो सरकार
चना ज़ोर गरम।''

एक चनाज़ोर गरमवाला ऊंचे-ऊंचे गा रहा था।

''मम्मी मैं चना ज़ोरगरम खाऊंगी।'' मीना बोली।

''नहीं मीना। अभी थोड़ी देर हुई नारियल जो दिया था।''

''सिर्फ़ थोड़ा-सा मम्मी!'' मीना ने प्यार से मम्मी से कहा।

घर में मिन्नतें करती हूँ, तो कुछ खाती नहीं। बाहर आकर, यह भी ले दो वह भी ले दो।'' मम्मी बोली।

''देखो मम्मी, देखो पापा, लहरें आगे आ रही हैं।'' मीना ख़ुश होकर चिल्लाई।

धीरे, धीरे धीरे उछल-उछल कर, लहरा-लहरा कर लहरें आगे बढ़ रही थीं। ज़रा-सा पीछे हटकर और आगे बढ़ आतीं। और बढ़ती-बढ़ती वे तालाब के नज़दीक पहुंच गईं। मछलियों के नीले, पतले पर, धूप में चमक रहे थे। वे पहले की तरह, एक-दूसरी के पीछे तैर रही थीं। उनकी नन्हीं परछाईं भी पानी के नीचे, रेत पर खेल रही थीं। फिर, एकदम लहर आई और धूप में सूखते हुए तालाब को फिर से पानी से भर गई। थोड़ी देर के बाद एक और लहर आई।

''उठो मीना! देखो तो! तुम्हारा फ़्राक गीला हो गया है।'' मम्मी बोलीं।

और सभीजन उठकर पीछे सूखी रेत की तरफ़ चल दिए।

सूखी रेत की तरफ़ जाते हुए मीना ने पीछे घूमकर देखा। एक और ऊंची-सी लहर आई और दोनों नन्हीं मछलियां, उसमें तैरती हुई, लम्बे, चौड़े, नीले, नीले समुद्र में चली गईं!

अफ़रीका से आई कोयल

बरसात का मौसम था। बम्बई में पूरे तीन महीनों से लगातार बारिश हो रही थी। रोज ही बादल गड़-गड़ करते, ढम! ढमक! ढोल बजाते। नीले आकाश में बिजली लहराती, चमक चमक कर घर के कमरों के अंदर भी आकर, डरा देती।

कभी तो बारिश के साथ तेज़ हवा भी चलती। नारियल के पेड़ हवा के ज़ोर से झूलों की तरह दाएं से बाएं झुक-झुक जाते। आम, इमली और अमरूद के पेड़ों की शाखाएं टूट कर ज़मीन और सड़कों पर गिर जातीं। सड़कों पर बारिश का इतना पानी भर जाता कि चल कर तो क्या, बसों में बैठकर स्कूल तक जाना भी मुश्किल हो जाता। तो भी बच्चे, किसी न किसी तरह स्कूल जाते ही रहे और बारिश के पानी में खेलते ही रहे।

एक इतवार जब बारिश कुछ देर के लिए बन्द हुई तो जसबीर अपने घर से कुछ ही दूर रशीदा के घर कैरम खेलने के लिए गई।

''आओ आओ जसबीर। आज मैं तुमको सबसे पहले एक ऐसी चीज़ दिखाऊँगी जिसे तुमने जनम भर में नहीं देखा होगा,'' रशीदा ने दरवाज़ा खोलते ही कहा।

''अच्छा! क्या है वह चीज़? जल्दी से दिखाओ।'' जसबीर चाव से बोली।

''यह देखो तो!'' रशीदा ने जसबीर को अपने घर की बैठक में रखा एक पिंजरा दिखाया।

''अरे वाह! क्या तुमने नेपाली मैना पाली है रशीदा? नेपाली मैना तो बहुत सुन्दर गाती है और जल्दी ही, बातें करना भी सीख जाती है।'' जसबीर ने पिंजरे में बैठे पंछी को देखते हुए कहा।

''यह नेपाली मैना नहीं जी। यह तो एक अफ़रीकन कोयल है।'' रशीदा हंस कर बोली।

''तुम्हारा मतलब, अफ़रीका महाद्वीप की कोयल।''

''हां जी!'' रशीदा ने बड़े चाव से कहा।

''पर कहां से खरीदी? तुम्हारे अब्बाजान ने बहुत रुपए खर्चे होंगे इसे ख़रीदने के लिए।''

"नहीं जनाबेवाली ! यह कोयल तो हमें मुफ़्त ही मिल गई।"

"कैसे ? किसी ने प्रेज़ेन्ट में दी ?"

"नहीं जसबीर कौर जी । यह मैना मेरे अब्बाजान को हमारे घर के बग़ीचे की घास पर गिरी हुई मिली।"

अरे ? घास पर ? वह कैसे ? यह किसी पेड़ पर नहीं बैठी थी ?"

"नहीं, नहीं ! तुम्हें याद है न रशीदा, पिछले सोमवार, बम्बई में कितने ज़ोर की हवा चली थी। तूफ़ान आया था न !" रशीदा कह रही थी।

"हां, हां ! नारियलों के पेड़ और दूसरे भी कई पेड़ गिर गए थे। हमारे घर के तो कमरे भी टपकने लगे थे। उस दिन तो घमासान बारिश हुई थी। बाप रे ! ऐसे लगता था जैसे सारा आसमान ही बरस कर नीचे गिर जाएगा।"

"हां ऽ ! जसबीर अब्बाजान कहते हैं कि तभी यह अफरीकी कोयल अपने दूसरे साथियों के साथ-साथ अफ़रीका के जंगलों से उड़ती-उड़ती हमारे हिन्दुस्तान के वनों की तरफ़ आ रही होगी। यहां पहुंचते-पहुंचते अचानक तूफ़ान आ जाने से भटक गई और थक कर गिर गई।"

"पर तुम्हारे अब्बाजान को यह सब कैसे पता लगा ?" जसबीर ने पूछा।

रशीदा ने बड़े रौब से जवाब दिया, "जनाबेवाला ! मेरे अब्बाजान एक पक्षी पत्रिका के संपादक हैं। यह पत्रिका सिर्फ़ सब तरह के पक्षियों के बारे में ही खोज की हुई दिलचस्प बातें बताती है। मैंने तुम्हें दिखाई तो थी एक दिन। यह देखो तो, यहां टेबल पर भी इसकी एक कापी पड़ी है।"

जसबीर ने टेबल से पंछी पत्रिका उठाई और उसके पन्ने उलट कर देखने लगी रशीदा के साथ। कितने सुन्दर-सुन्दर चित्र थे उसमें तरह तरह के छोटे और बड़े रंग रंगीले पक्षियों के !

"पिछली बार जो पत्रिका तुमने मुझे दिखाई थी उसमें एक बड़े से अफ़रीकन तोते की भी सुन्दर तस्वीर थी।" जसबीर ने पत्रिका के चित्र देखते हुए कहा।

"मेरे अब्बाजान तो पक्षियों के बारे में रूसी, अंग्रेजी, जर्मन और हिन्दी में लिखीं खोज की किताबें पढ़ते रहते हैं। और छुट्टी के दिन तो वे फ़िरोज को और मुझे हमेशा कभी नेशनल पार्क या बम्बई से बाहर किसी पक्षी रक्षा वन की सैर के लिए ले जाते हैं मम्मी के साथ। अब्बाजान के पास एक बहुत अच्छी दूरबीन है। दूरबीन आंखों के सामने रख कर देखें तो दूर उड़ता या पेड़ों में छिपा पंछी भी नज़दीक ही उड़ता या बैठा नज़र आता है।" रशीदा ने कहा।

"अच्छा ! कितनी कमाल की बात है ! पर रशीदा यह कोयल अफ़रीका से उड़कर हिन्दुस्तान आ रही थी ? अफ़रीका तो हिन्दुस्तान से बहुत दूर है ? जसबीर ने प्रश्न-सा पूछा।"

"हां दूर तो बहुत है। पर पक्षी तो बहुत दूर-दूर तक उड़ सकते हैं। और कई पक्षियों के उड़नेकी रफ़्तार भी बहुत तेज़ होती है।" रशीदा ने बताया।

"अच्छा। पर यह एक देश से उड़ कर पक्षी दूसरे देशों में सिर्फ़ सैर ही के लिए ही जाते हैं या इसका कोई और भी कारण है।" जसबीर ने पूछा।

"कारण तो कई होते हैं। गरमियों में कई एक पक्षी गरमी नहीं सह सकते तो वह ठंडे स्थानों पर छाया और पानी की तलाश में चले जाते हैं। जब कहीं किसी देश में अकाल पड़ने लगता है तो पक्षी दाने,अनाज और फल वग़ैरह के लिए पूरे भरे स्थानों पर चले जाते हैं। और उड़-उड़ कर दूर-दूर की सैरें करना भी तो इन्हें अच्छा लगता है।"

"हां भई, यह तो पंखों वाले प्राणी हैं। कहां से कहां, जहां जी चाहा, उड़ने लगे ! हमारी तरह थोड़े ही हैं कि एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए रेलगाड़ी, बस, हवाईजहाज और न जाने किस-किस मशीन की जरूरत पड़े। हाय ! कभी मुझे भी पंख लगा जाते तो मैं तो अभी दूर, दूर, दूर, हिमालय पर्वत पर चली जाती।" जसबीर ने कुछ उदासी से कहा।

"हां,हमारे पंख होते तो हम दोनों सहेलियां दूर-दूर उड़ कर जातीं।" और रशीदा खिड़की से बाहर का आकाश देखने लगी। यूँ लगता था जैसे वह कोई सपना देख रही हो।

"हां हां ! पक्षियों के मजे हैं। सरदियों में मैदानों के वनों, झीलों,नदियों के पास, अनाज और फलों के पास आ गए और गरमियों में ऊँचे पर्वतों के वनों,नदियों के पास चले गए। उड़ते-उड़ते जहां थक गए वहां रुक कर आराम कर लिया वनों में। थकावट उतार कर फिर उड़ने लगे और उड़ते-उड़ते वहीं पहुंच गए, जहां जाने को था। सैकड़ों ही तरह के पक्षी दूसरे देशों से हमारे देश में आते हैं दूर-दूर से। और हमारे देश के पक्षी भी दूर-दूर के देशों में जाते हैं।" रशीदा जसबीर को बता रही थी।

"अच्छा ! पर रशीदा इन सभी पक्षियों को एक देश से उड़कर दूसरे देश में पहुंचने के लिए रास्ता और दिशा कैसे मालूम पड़ जाती है ?" जसबीर रशीदा की बातें हैरानी और चाव से सुन रही थी।

"यही सवाल मेरे भाई फिरोज ने अब्बाजान से भी पूछा था जब हम सभी नैशनल पार्क में सैर कर रहे थे। तो अब्बाजान ने हमें बताया कि पक्षियों को लाखों बरसों से सूर्य, चांद और तारों की रौशनी, गति और उनकी बदलती दिशा को देखते-देखते दिन और रात का अपने आप ही ज्ञान हो गया है। उन्होंने एक दिन हमें एक किताब में से पढ़ के सुनाया कि तारों और पक्षियों के बारे में जानने वाले वैज्ञानिकों ने ऐसी प्रयोगशालाएं बनाई हुई हैं जिन्हें प्लैनेटोरियम कहा जाता है। पक्षियों के जीवन और स्वभाव के बारे में ज्ञान हासिल करने वालों ने इन प्लैनेटोरियम में पक्षियों को पाल कर यह पता लगाया है कि परिंदे कैसे आकाश में, तारों की दिशा बदलने पर, अपनी उड़ान का रुख भी बदल लेते हैं।"

जसबीर अब दीवार से पीठ लगाए रशीदा की बातें यूं सुन रही थी जैसे वह बचपन में अपनी दादी जी के बिस्तर में उनके साथ लेटी रात को परियों की सुन्दर कहानियां सुना करती थी। और रशीदा अपने अब्बाजान से सुनी पंछियों के बारे में नई और दिलचस्प बातें जसबीर को बता रही थी।

"तुम्हें मालूम है जसबीर, पक्षी जब अपने देश के किसी वन से उड़कर किसी दूसरे देश के वन में जाते हैं तो परदेश के वनों-पहाड़ों और झीलों में रहने के बाद वे फिर उसी देश उसी पर्वत वन या झील में लौट आते हैं, जहां उन्होंने अपने घर-घोंसले बनाए होते हैं।" रशीदा कह रही थी।

"कितनी अजीब बात है ! मुझे तो विश्वास ही

नहीं होता। छोटे से भोले से पक्षी, इतने सयाने कैसे होते हैं ? अपने घोंसलों से सैकड़ों हजारों मील दूर जाकर, इनको अपने देश के वनों में बनाए घोंसले कैसे याद रहते हैं ?''

''मैं भी सोच-सोच कर हैरान होती हूं, लेकिन यह बात बिल्कुल सच्ची है। अब्बाजान कहते हैं कि दुनियां के कई देशों में 'पक्षी विज्ञान क्लबें' बनी हुई हैं। पक्षी विज्ञान घरों के मेम्बर उड़ान लेने वाले पक्षियों को, खुले-बड़े स्थानों में पालते हैं। फिर वे उनके पैरों में अपने देश के क्लब के नाम-पते की अंगूठी पहना देते हैं। पंजे में पड़ी अंगूठी वाला पक्षी जब एक देश से उड़कर दूसरे देश के पक्षी रक्षा उद्यान, झील या वन के आस-पास उतर आता है, तो उस देश या प्रांत के पक्षी क्लब के मेम्बरों को पता लग जाता है कि पक्षी कहां से उड़कर आया है। फिर एक देश के पंछी क्लब के मेम्बर दूसरे देश के पंछी क्लब के बारे में जानकारी देते रहते हैं। पंछियों के बारे में।'' रशीदा किसी टीचर की तरह यह बातें जसबीर को बता रही थी।

''रशीदा तुम गप्पौड़ शंख हो। गप्पें ही मारती जा रही हो कब से। मुझ पर रौब जमा रही हो कि तुम पक्षी ज्ञान की कोई बड़ी प्रोफ़ेसर हो।'' जसबीर ने कुछ ऊब कर कहा।

''कमाल है जसबीर ! तुमने पहले तो अपने आप मुझसे पंछियों के बारे में पूछा। अब अब जब मैंने तुम्हें पंछियों के बारे में नई-नई बातें बताई तो तुम्हें ख़ाम ख़ा ही गुस्सा आ गया है। बस आगे से अगर तुमने मुझसे कभी भी कुछ पूछा तो मैं कभी भी नहीं बताऊंगी।'' और रशीदा की आंखों में आंसू आ गए। ऐसे लगता था जैसे दोनों की आपस में कुट्टी ही हो जाएगी।

तभी जसबीर ने रशीदा के करीब आकर उसे चूम लिया और उसके गले में बाहें डालकर बोली, ''अरी पगली, मैं तुम्हें यूँ ही छेड़ रही थी। तुम सचमुच ही नाराज़ हो गई हो ? माफ़ कर दो रशीदा। अब, अब जरा हंस भी दो रशीदा।''

रशीदा के मुंह पर मुस्कान आई। उसने हंस कर जसबीर का मुंह चूम लिया।

''अच्छा एक बात और बताओ रशीदा। यह अफ़रीकन कोयल भी तो दिन को सूरज की रौशनी और रात को तारों के प्रकाश से ही अपनी दिशा की ओर उड़ी होगी। फिर यह कैसे अपना रास्ता भूल कर भटक गई ?''

''रास्ते में तूफ़ान जो आ गया। तूफ़ान में उड़ती उड़ती बेचारी कोयल! शुक्र है बच गई।''

''हां बेचारी प्यारी कोयल ! रशीदा, तुम मानो या न मानो। तूफ़ान में भटकती यह कोयल पहले हमारे ही घर आकर गिरी थी।'' जसबीर ने कहा।

''पहले तुम्हारे घर आकर गिरी थी ? कमाल है ! क्या कह रही हो जसबीर ? तुम मज़ाक कर रही हो।'' रशीदा ने हैरानी से कहा।

''हां भई हां। तूफ़ान वाले दिनों ही की बात है। इतवार का दिन था। मैं सुबह-सुबह उठी। उस वक्त बारिश भी नहीं हो रही थी और हवा भी नहीं चल रही थी। मैं बाहर बग़ीचे में फूलों को देख रही थी। तेज़ हवा से कई फूल बेचारे नीचे घास पर गिर गए थे। तो बाग़ में टहलते हुए मेरी नज़र, घर के बाहर के बरामदे को लगी हुई लोहे की जाली से चिपटी हुई, किसी काली-काली चीज़ पर पड़ी। मैंने जो ध्यान से देखा तो वह काला-सा एक पक्षी था। ऐसा पक्षी मैंने पहले कभी नहीं देखा था। वह डरा हुआ-सा था। मैं धीरे-धीरे चुपचाप, उसके करीब पहुंच रही थी। लेकिन यूं लगा जैसे उसे किसी के पास आने का पता लग रहा हो। पूरी ताकत लगा कर अपने पंजे किसी न किसी तरह जाली में से निकाल कर वह एकदम उड़ गया न जाने कहां ! मुझे यूँ लगता है रशीदा कि यह वही अफ़रीकी कोयल है जो हमारे घर से उड़ी और ज़्यादा न उड़ सकने के कारण थक गई और तुम्हारे घर के बगीचे में गिर गई। इस पिंजरे में बैठी कोयल, बिलकुल उस दिन जैसे पक्षी की तरह दीख रही है।'' जसबीर, पिंजरे में आंखें बंद किए बैठी, चमकते काले पंखों वाली कोयल की तरफ देखती हुई बोली। रशीदा भी कोयल की तरफ़ ही देख रही थी।

''क्या मालूम, शायद वही हो। इसे तो हमारी बिल्ली पुच्चु ही चटम करने वाली थी। अच्छा हुआ कि अब्बाजान ने इसे वक्त पर देख लिया और एकदम से हाथों में उठा लिया और घर के अन्दर ले आए। फिर इसे गरम कपड़े में लपेट कर लिटा

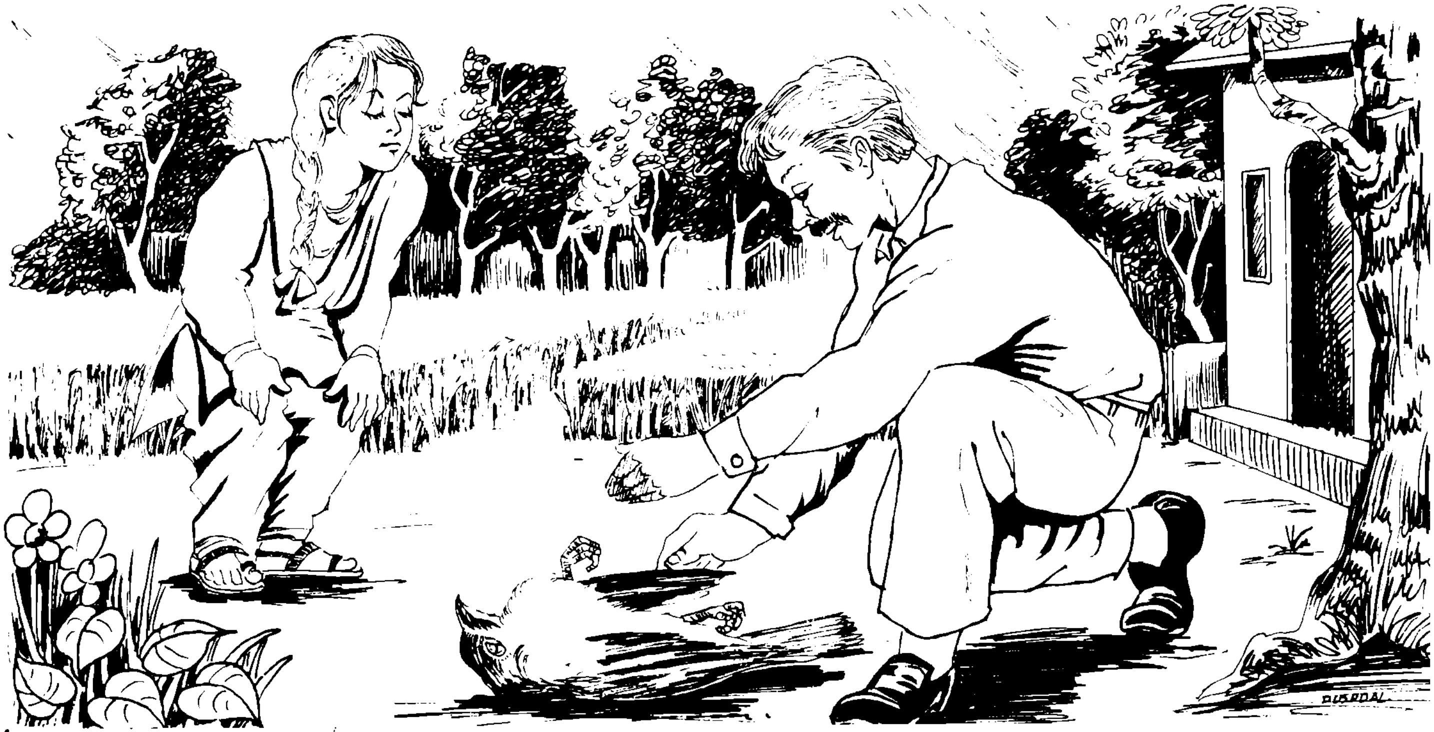

दिया। यह बेहोश-सी थी। अब्बाजान ने इसे थोड़ी-थोड़ी देर के बाद पहले दो तीन बूंदें पानी की पिलाईं और बाद में दो तीन बूंदें दूध में पानी मिला कर पिलाईं और यह आंखें बन्द करके सो गई। थोड़ी देर के बाद जब इसने आंखें खोली और अपनी गरदन उठाई, कुछ पंख हिलाए तो अब्बाजान ने ज़रा-सा पंछी दाना पानी में पतला करके, इसे दिया। इसने चोंच खोल कर ले लिया। फिर यह अपने पंजों के भार पर बैठ गई। एक दो घंटे के बाद अम्मीजान ने इसे केले का छोटा सा टुकड़ा पतला करके दिया। इसने मज़े से खाया। हमारे घर में एक पुराना पिंजरा पड़ा हुआ था। अब्बाजान ने इसे पिंजरे के अंदर बिठा दिया।

''क्यों ? इसे पिंजरे के अंदर क्यों रखा ?'' जसबीर ने पूछा।

''अरे ! सोचो तो। बेचारी बीमार कोयल। यह तो अभी उड़ नहीं सकती। इसे खुले छोड़ देते तो क्या हमारी पुच्चु बिल्ली छोड़ती इसे ? और हमारा कुत्ता चुरमुर वह भी तो बड़ा शैतान है।'' रशीदा ने कहा।

''हा ! हा ! हा ! कितने अजीब नाम रखे हुए हैं तुम लोगों ने अपने कुत्ते और बिल्ली के ! पुच्चु ! और चुरमुर ! ही ! ही ! ही ! जसबीर ज़ोर ज़ोर से हंसने लगी।''

रशीदा भी जसबीर के साथ ही हंस कर बोली, ''पता है, यह दोनों नाम मैंने रखे हैं भी। मैंने यह दोनों नाम एक बाल कहानियों की किताब में पढ़े थे। अम्मीजान, फिरोज़ और अब्बाजान को भी यह नाम मजेदार लगे। पर पुच्चु और चुरमुर दोनों सचमुच ही बड़े शैतान हैं। इसलिए इस कोयल को अभी पिंजरे में रखना ही ठीक है।''

''हां यह तो ठीक किया आपने।''

''हां जसबीर। सुबह शाम अब्बाजान और मम्मीजान इसे पिंजरे से बाहर निकाल कर इसका पिंजरा साफ़ करते हैं। फिर इसे पंछी दाना, केला या कोई और नरम सा फल देते हैं खाने को। और यह भी खुशी से चोंच खोलती है। अब तो यह दाना कटोरी में रखने से, अपने आप भी खाती है। दाना, केला खाकर यह पंख फैला कर अंगड़ाई लेती है। और फिर आंखें बंद करके सो जाती है।''

''तो तुमने इस कोयल का क्या नाम रखा है ?'' जसबीर ने हंस कर पूछा।

''अरे ! इसका नाम तो बहुत ही कमाल का रखा है, बताऊँ ?''

''हां क्या रखा है नाम ?''

''इसका नाम है, चिंचपोकली।''

''चिंचपोकली ? बापरे बाप ! ऐसा नाम तो

मैंने आज तक नहीं सुना।'' जसबीर और रशीदा दोनों फिर हंसने लगीं।

''ओ हो हो। यह तो बहुत ही अजीब पर चटपटा नाम है। इसका पूरा नाम होना चाहिए, चिंचपोकली अफ़्रीकन कोयल।'' और दोनों सहेलियां फिर से हा! हा! हा! हंसने लगीं। वे बार-बार चिंचपोकली कोयल कहती और बार-बार हंसती। उनकी हंसी रुकती ही न थी।

''अब आप लोग इसे पिंजरे ही में रखेंगे अब?'' जसबीर ने पूछा।

''नहीं। अब्बाजान कहते हैं कि किसी छुट्टी वाले दिन हम सभी, बोरिवली के राष्ट्रीय उद्यान में जाएंगे। वहां इतना बड़ा वन है, पहाड़ियां हैं और झीलें हैं। वहां तो सैकड़ों ही तरह के पक्षी हैं। वे अपनी-अपनी सुन्दर बोलियां बोलते हैं और लम्बी लम्बी उड़ाने लेते हैं। कई कक्षी तो ऐसे हैं जो उड़ते भी हैं और मछलियां पकड़ने के लिए झीलों में, गहरी डुबकियां भी लगाते हैं। और वहां तो एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूद-कूद कर जाते बन्दर और उनके बच्चे भी दिखाई देते हैं। तरह-तरह के जंगली फूल और तितलियां तो चारों तरफ़ ही दिखाई देते हैं। सच्ची जसबीर, इतना अच्छा लगता है इस इतने बड़े वन में! हम सभी सुबह घर से खाना डिब्बे में डाल कर वहां चले जाते हैं। सारा दिन पेड़ों के नीचे या पेड़ों के बीच में बनी लम्बी चक्करदार सड़कों पर सैरें करते हैं, आंख मिचौली खेलते हैं, दूरबीन लगा कर पक्षी देखते हैं। फिर दोपहर को पेड़ों के नीचे दरियां बिछाकर, डिब्बे खोल कर आलू के परांठे खाते हैं और पेड़ों के नीचे सो जाते हैं। कभी-कभी पहाड़ियां भी चढ़ते, उतरते हैं। सारा दिन पिकनिक कर के शाम को घर लौट आते हैं। अगले इतवार हम इस चिंचपोकली अफ़्रीकन कोयल को भी पिंजरे समेत साथ ले जाएंगे। वहां जाकर पिंजरे से बाहर निकालेंगे और इसे खुला छोड़ देंगे ताकि यह खुले आकाश में उड़ जाए और अपने साथी कोयलों को ढूंढ़ कर उनके साथ मिल जाए। जसबीर, अगर यह उड़ सके और इसके साथी इसे मिल जाएं तो कितनी कमाल की बात होगी, है न!''

रशीदा और जसबीर दोनों ही पिंजरे में बैठी कोयल की तरफ़ देख रही थीं और अपनी पीली

नोकीली चोंच से अपने काले, चमकीले पंख साफ़ करती, गोल सुन्दर आंखों से कोयल भी तो उनको देख रही थी।

''पर अब तो इसे अपने पिंजरे में और तुम सभी के साथ घर में रहने की आदत पड़ गई है शायद। अगर बड़े बाग में जाकर यह खुले आकाश में न उड़ सकी तो क्या होगा।

''तो हम इसे घर वापिस ले आएंगे।'' रशीदा ने कोयल की तरफ़ प्यार से देखते हुए कहा।

''रशीदा, जब आप लोग बड़े राष्ट्रीय उद्यान में इसे ले जाएंगे, तो मुझे साथ ले जाना न भूलना।''

''हां हां जसबीर, हम सब इकट्ठे ही जाएंगे।'' और दोनों सहेलियों ने एक-दूसरे को चूम लिया।

टुन-टुन गुड़िया और डब्बू कुत्ता

कहानी १

ली में रहते हैं। और नानीजी भी दिल्ली में रहती हैं।
और नानाजी का घर बहुत अच्छा लगता है। जब मैं, मम्मी और
लकत्ते से आती हूँ, तो नानाजी के घर में रहती हूँ।
नानीजी मुझे बहुत प्यार करते हैं।
खिलौने लाकर देते हैं तो मैं उनके बालों में कंघी करती हूँ। अपने
ल कर नानाजी के बालों में बांध देती हूँ।
जी अपने हाथ से मुझे खाना खिलाती हैं।
ती के बिस्तर में घुस जाती हूँ। नानाजी मुझे रोज़ एक नई कहानी

ुनते मैं सो जाती हूँ।

मेरे नानाजी के घर के आगे एक बाग़ है। बाग़ में हरी-हरी घास है।

नानाजी के बाग़ में एक माली भी आता है। माली रोज़ सुबह साइकल पर नानाजी के घर आता है।

बाग़ में एक नल है। माली नल खोलकर झारी में पानी भरता है और फूलों को पानी देता है।

नानाजी के बाग़ में बहुत से सुन्दर-सुन्दर फूल हैं।

नानाजी ने मुझे भी एक छोटी-सी झारी लेकर दी है।

जब माली झारी से फूलों को पानी देता है, तो मैं भी अपनी झारी में पानी भरकर फूलों को पानी देती हूँ।

माली मुझे फूलों के नाम भी बताता है।

एक फूल का नाम है डेलिया। एक फूल का नाम है एस्टर। एक फूल का नाम है पैज़ी। एक फूल का नाम है गुलाब।

सुबह-सुबह जब सूरज की किरणें फूलों पर पड़ती हैं तो सभी फूल ख़ुश हो जाते हैं। सभी फूल मुस्कराते हैं।

कहानी ३

मीरा के कुत्ते का नाम डब्बू है । डब्बू छोटा-सा कुत्ता है । लेकिन बहुत प्यारा और बहुत होशियार कुत्ता है । डब्बू वक्त पर खाना खाता है । मीरा डब्बू की प्लेट में उसे दूध भी देती है । डब्बू कभी-कभी दूध भी पीता है और घर को गन्दा बिलकुल नहीं करता ।

मीरा के पापा ने डब्बू को गेंद कैच करना भी सिखा दिया है । मीरा के पापा रोज़ सुबह मीरा को सैर के लिए बाग़ में ले जाते हैं । डब्बू भी मीरा और पापा के साथ सैर करने के लिए जाता है ।

मीरा अपने साथ एक लाल रंग की गेंद भी ले जाती है । कभी मीरा, कभी पापा गेंद को घास पर दूर फेंकते हैं । डब्बू तेज़ी से भाग कर जाता है और गेंद को मुँह में पकड़ कर लाता है । वह फिर भाग कर मीरा के पास जाता है और मीरा के पाँवों के पास रख देता है । मीरा डब्बू के सिर पर हाथ फेर कर कहती है, "शाबाश ! शाबाश !" डब्बू भी प्यार से मीरा का हाथ चाटने लगता है । मीरा फिर से गेंद को दूर फेंकती है । डब्बू फिर भाग कर जाता है और हवा में उछले हुए गेंद को लपक कर मुंह में पकड़ लेता है ।

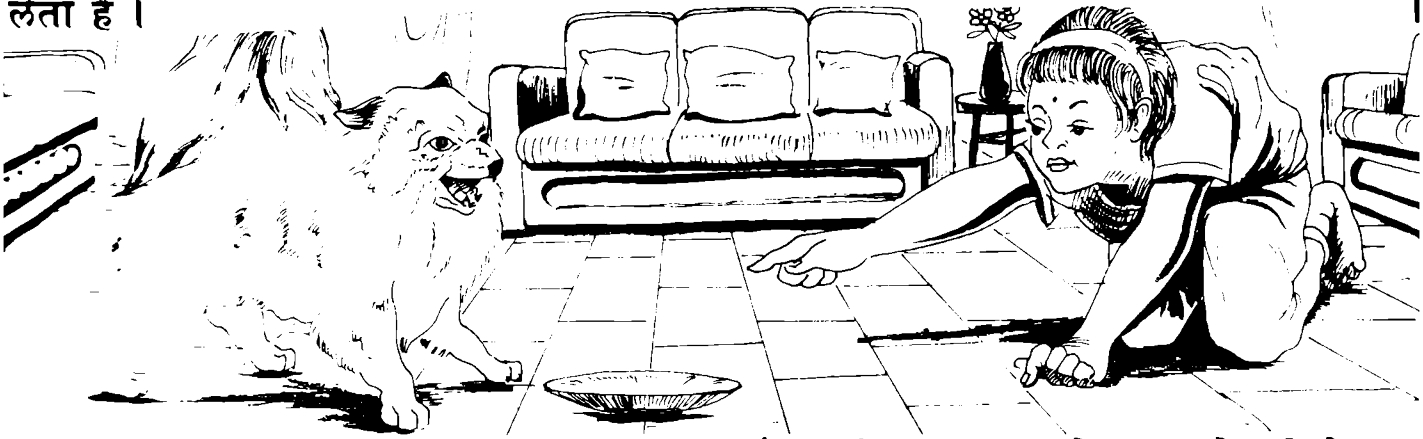

मीरा कभी बाग़ में सुन्दर-सुन्दर फूलों को सूँघती है, कभी डब्बू के साथ खेलती है ।

और मीरा के पापा बाग़ में दौड़ लगाते हैं और कसरत करते हैं । पापाजी डंड बैठक करते हैं । मीरा के पापाजी जब डंड बैठक खत्म कर लेते हैं तब मीरा, डब्बू और पापाजी तीनों जने घर वापस आते हैं ।

इतवार के दिन मीरा और उसकी मम्मी दोनों मिलकर डब्बू को साबुन से नहलाती हैं । नहला कर उसको सूखे कपड़े से पोंछती हैं । फिर डब्बू घर के आँगन में, धूप में बैठ जाता है । बैठ कर अपना बदन सुखाता है । जब डब्बू का बदन सूख जाता है, तो मीरा उसके बालों को बुरुश से साफ़ करती है । बुरुश करने के बाद डब्बू बहुत सुन्दर दिखाई देता है । तब मीरा डब्बू को उसके प्याले में थोड़ा-सा दूध पीने को देती है ।

डब्बू मज़े से दूध पीता है और दुम हिलाता है ।

कहानी ४

जब मैं खाना खाने लगती हूँ, तो एक चिड़िया न जाने कहां से हमारी रसोई में फुर्र करके आ जाती है । चंचल-सी चिड़िया, चूँ-चूँ, चुख-चुख बोलने लगती है । चुपचाप बैठती ही नहीं ।

चिड़िया कभी इधर फुदकती है, कभी उधर फुदकती है । कभी चौकी पर बैठ जाती है । कभी फ़र्श पर आ बैठती है ।

मां तवे पर रोटी पका रही होती है । जब चिड़िया रसोई में इधर-उधर फुदकती है, तो मां शू....शू करके चिड़िया को उड़ाकर बाहर भेज देती है । लेकिन चिड़िया फिर आ जाती है ।

मैं चिड़िया से कहती हूँ, "चिड़िया, चिड़िया आओ । मेरी थाली में खाना खाओ ।"

मैं अपनी थाली में से चावल उठाकर चिड़िया की तरफ़ फेंकती हूँ । चावल फ़र्श पर गिर जाते हैं ।

खिड़की पर बैठी चिड़िया फ़र्श पर उड़ आती है । चोंच से चावल खाती है । दुम हिलाती है और खुश होकर चीं-चीं....चींचीं, चुख-चुख.....चुख-चुख.....बोलती है ।

कहानी ५

माँ : प्यारी मीरा कहाँ से लाई यह बिल्ली का बच्चा ?
मीरा : नीला के घर से लाई हूँ, देखो कितना अच्छा ।
नीली-नीली आंखें इसकी पीले पीले बाल ।
मम्मी, इसके गले में बाँधो मेरा रिब्बन लाल ।
मम्मी थोड़ा दूध तो देना इसको दूध पिलाऊं !
भूखा है बिल्ली का बच्चा करता म्याऊं, म्याऊं !
माँ : मीरा, यह लो दूध पड़ा है, बिल्ली को पिलाओ !
छोटा सा बिल्ली का बच्चा करता म्याओ म्याओ !
मीरा : मीठा-मीठा दूध पिओ, प्यारे बिल्ली के बच्चे !
सो जाओ मेरे बिस्तर में तुम तो बहुत ही अच्छे !

मां मुझे सुबह-सबेरे जगा देती है। मुझे चूम कर कहती है :

"देखो खिड़की से बाहर कौए, चिड़िया, तोते, कबूतर सभी पक्षी नींद से जाग उठे हैं। सभी पक्षी ख़ुश होकर गाना गा रहे हैं। सभी पंछियों ने मुंह हाथ धो लिया है। सभी ने अपने बालों में कंघी कर ली है। सभी पक्षी उड़-उड़ कर दूर-दूर, हरे-हरे खेतों में जा रहे हैं। खेतों में जाकर वे अपनी चोंच से दाना चुन चुन कर खायेंगे।"

मैं भी उठकर हाथ मुंह धोती हूँ। दाँत साफ़ करती हूँ। मां मेरे बालों में तेल भी कभी-कभी लगाती हैं। मेरे बालों में लाल रिब्बन भी बाँधती हैं।

फिर मैं मक्खन-रोटी खाती हूँ। और दूध में मीठा डालकर पीती हूँ।

फिर पों-पों करती हुई स्कूल की बस आ जाती है।

स्कूल के बैग में पढ़ने की किताबें डालकर बस में बैठकर स्कूल चली जाती हूँ।

कहानी ७

एक है एक, छोटी-सी लड़की । उसका नाम है रिचा ।

रिचा श्रीनगर में रहती है । श्रीनगर में एक बहुत सुन्दर झील है । झील का नाम है डल । झील में बहुत-बहुत-सा पानी है ।

डल झील के पानी में किश्तियाँ तैरती हैं । किश्तियों को माँझी लोग चलाते हैं । माँझी लोग चप्पू पानी में डालते हैं । चप्पू से पानी को ज़ोर से पीछे धक्का देते हैं । फिर किश्ती पानी में आगे चलने लगती है । छप, छप, छप, पानी से आवाज़ आती है ।

इतवार के दिन रिचा अपनी ममी और पापा के साथ किश्ती में बैठकर डल झील की सैर करने जाती है ।

रिचा की छोटी बहन भी है । उसका नाम है शुचि । शुचि भी ममी की गोद में बैठकर डल झील की सैर करती है ।

कहानी ८

श्रीनगर में एक और छोटी-सी लड़की रहती है । उस लड़की का नाम है मुकती । मुकती का एक घर नदी के किनारे है । नदी का नाम है जेहलम । जेहलम नदी बहुत सुन्दर नदी है ।

मुकती के पिता का नाम है रहमान । मुकती की माताजी का नाम है हेमाल । मुकती का एक भाई भी है । उसका नाम है अहमद ।

अहमद रोज़ स्कूल जाता है । लेकिन मुकती अभी स्कूल नहीं जाती, क्योंकि अभी वह छोटी है ।

जब मुकती की मां नदी के पानी से कपड़े धोने जाती है, तो मुकती भी मां के पीछे-पीछे भाग कर आती है ।

मां कपड़े धोती है और मुकती नदी के पानी में चल रही किश्तियों को देखती है ।

नदी किनारे कहीं-कहीं सुन्दर फूल भी उगे हैं । मुकती कभी सुन्दर फूलों को सूंघतीं है कभी किश्तियों को देखती है ।

कभी एक छोटा-सा पत्थर उठाकर नदी के हरे-हरे पानी में फेंकती है ।

पानी से आवाज़ आती है–डुक-डुक....डुबक-डुबक । मुकती आवाज़ सुनकर खुश हो जाती है ।

वह पानी में एक और छोटा-सा पत्थर फेंकती है । पानी फिर बोलता है डुबुक.....डुबुक ।

माँ कहती है, "मुकती, पत्थर मत फेंको । किसी को लग जायेगा ।"

मुकती हंसकर कहती है, "मां यहाँ कोई भी आदमी नहीं । यहाँ तो सिर्फ़ सफ़ेदे पेड़ हैं, फूल हैं और पानी है । पत्थर किसी को नहीं लगेगा ।"

मां चुप हो जाती है और थप....थप....थप, कपड़े धोती है ।

कपड़े धो-धो कर माँ के हाथ लाल हो गये हैं । नदी का पानी ठंडा है ।

मुकती पानी में एक और पत्थर फेंकती है । डुबुक....डुबुक....पानी बोलता है ।

मल्लिका अपने बिस्तर में मज़े से सो रही थी । मां ने आकर मल्लिका का मुंह चूमा और कहा, "मल्लिका, उठो बेटी । उठो, मैं तुम्हें एक नयी चीज़ दिखाऊं ।"

मल्लिका झट से उठ कर बैठ गयी और पूछने लगी, "कौन-सी चीज़, मां ?"

"आओ तो बाहर बाग़ में । एक बड़ी अच्छी चीज़ तुम्हें दिखाऊंगी ।"

मल्लिका चारपाई से नीचे उतरी । उसने चप्पल पहने और भाग कर ममी के साथ बाग़ में आई ।

बाग़ में गुलाब, डेलिया और पैज़ी फूल उगे हुए थे ।

सुबह का वक्त था । लाल-लाल, गोल-गोल सूरज नीली-नीली पहाड़ियों के पीछे से निकल रहा था । उसकी सुनहरी किरणें फूलों पर पड़ रही थीं । फूलों की हरी पत्तियाँ धूप में चमक रही थीं ।

"कौन-सी चीज़ दिखाओगी, माँ !" मल्लिका माँ की साड़ी का पल्ला खींचकर प्यार से बोली ।

"इस फूल का क्या नाम है, मल्लिका ?" माँ पूछने लगी ।

"इसका नाम ? इसका नाम है डेलिया। आपने मुझे बताया था। पर वह अच्छी चीज़ कहाँ है, माँ ?"

"हां, हां दिखाती हूँ। देखो तो इस डेलिया के फूल पर कौन बैठा है ?" माँ बोली।

"फूल पर मक्खी बैठी है। लेकिन यह बड़ी मक्खी है। बहुत सुन्दर मक्खी है, माँ।" मल्लिका बोली।

"हाँ, यही तो तुम्हें दिखाने लायी थी। इस मक्खी को कहते हैं मधु-मक्खी।" मां बोली।

"मधु-मक्खी ? मधु-मक्खी क्या होता है, माँ ?"

"फूलों में बहुत मीठा-मीठा रस होता है। मधु-मक्खी फूलों का मीठा रस चूसने आती है।"

"रस चूसती है ? कैसे ?"

"अपने मुंह से।"

"मधु-मक्खी दूध नहीं पीती ?"

"नहीं, मधुमक्खी दूध नहीं पीती। वह सिर्फ़ फूलों का रस चूसती है। मधुमक्खी को शहद की मक्खी भी कहते हैं।" मां बोली।

"शहद की मक्खी ? शहद, आप जो मुझे खाने के लिए देती हैं ?" मल्लिका ने पूछा।

"हाँ, वही शहद। मधु-मक्खी फूलों का रस चूसकर अपने घर ले जाती है।"

"अपने घर ले जाती है ? मधुमक्खी का घर कहाँ है ?"

"मधुमक्खी अपना घर जंगल में किसी पेड़ पर बनाती है।" मां बोली।

"जंगल में ? जंगल क्या होता है, माँ ?"

"जहाँ बहुत .....बहुत से पेड़ होते हैं, उसे जंगल या वन कहते हैं।"

मल्लिका : तो मधुमक्खी जंगल में पेड़ पर अपना घर बनाती है ?

माँ : हां।

मल्लिका : मां, मुझे जंगल देखना है जहां बहुत से....बहुत से ....बहुत से पेड़ होते हैं और मधुमक्खी का घर भी।

माँ : हाँ एक दिन तुम्हारे पिताजी और मैं तुम्हें जंगल की सैर के लिए ले जायेंगे, जहां हम तुम्हें मधुमक्खी का घर दिखायेंगे।

कहानी १०

एक थी नदी, एक थी झील.....और एक था समुन्दर ।

नदी का पानी, झील का पानी और समुन्दर का पानी सभी सूरज की गरमी से गरम हो रहे थे ।

नदी के गरम पानी में से एक सफ़ेद रुई जैसा बादल उड़ा और उड़ते-उड़ते नीले आसमान में पहुंच गया ।

झील के गरम पानी से रुई जैसे नरम और सफ़ेद दो बादल उठे, और उड़ते-उड़ते नीले आसमान में पहुंच गये ।

समुन्दर के गरम पानी में से, तीन रुई से सफ़ेद बादल उड़े और नीले आसमान में पहुंच गये ।

नदी का बादल झील के बादलों को देखकर खुश हुआ और उड़ता-उड़ता पास आया ।

समुन्दर के बादल नदी और झील के बादलों को देखकर बहुत ख़ुश हुए और उड़ते-उड़ते उनके पास आये ।

"नमस्ते जी झील के बादलों ने कहा ।

"राम राम जी ।" कैसे हो ?" नदी के बादलों ने कहा ।

"हैलो !" समुन्दर के बादलों ने कहा ।

"चलो आसमान में दूर दूर की, दूर....दूर की सैर करें ।" नदी के बादल ने कहा ।

और सभी बादल मज़े-मज़े से आसमान की सैर करने लगे ।

इतवार का दिन था । स्कूल की छुट्टी थी । बच्चे सुबह नाश्ता करके खेल के मैदान में फ़ुटबाल से खेल रहे थे ।

बच्चों को गरमी लग रही थी । बच्चों ने आसमान में बादलों को देखा और बोले, "बादलो, बादलो ज़रा पानी तो बरसाओ । हमें गरमी लग रही है ।"

बादलों ने थोड़ी सी पानी की बूँदें बच्चों पर बरसा दीं । बच्चे बहुत ख़ुश हुए और ज़ोर से बोले, "शुक्रिया, बादलो । तुम बहुत अच्छे हो ।" और बच्चे फिर ख़ुशी-ख़ुशी से फ़ुटबाल खेलने लगे ।

बादल आगे की तरफ़ उड़ने लगे ।

नीचे ज़मीन पर एक बहुत बड़ा बाग़ था । बाग़ में घास थी और तरह-तरह के सुन्दर फूल थे । गुलाब, चमेली, गेंदा, पैन्ज़ी, रातरानी—सभी फूलों को, और घास को प्यास लग रही थी । फूलों ने नीले आसमान में बादलों को उड़ते देखा तो बोले, "बादलो, बादलो ! हमें बहुत प्यास लगी है । थोड़ा सा पानी दे दो ।"

बादलों ने फूलों और घास को सूखते देखा, तो उन्हें बहुत दुःख हुआ । उन्होंने फ़ौरन पानी की बूंदें बरसाईं । टप....टप, टिप....टिप, वर्षा की बूंदें पड़ीं । फूलों ने पानी पिया और मुस्कराये । घास भी पानी पीकर हरी भरी हो गयी । सभी ने मुंह ऊपर उठा कर बादलों से कहा—"बादलो बादलो ! तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद ।"

बादलो ने हल्की-सी बिजली चमकाई और फूलों की तरफ़ देखकर मुस्कराये । और फिर हंसते, गरजते, सैर करने के लिए आगे बढ़ गये ।

आगे सैर करते-करते उन्होंने धरती पर जो देखा तो, क्या देखा कि चावल, मक्की और गेहूँ के खेतों को भी गर्मी लग रही थी । प्यास के मारे उनकी तबीयत भी बहुत घबरा रही थी । उन्होंने बादलों को आसमान में उड़ते देखा ।

गन्ने का खेत चावल के खेत से बोला, "चावल के खेत, चावल के खेत, तुम ज़रा बादलों से कहो हम पर भी पानी बरसाए । अगर हमें पानी नहीं मिलेगा, तो हम पकेंगे

नहीं । अगर हम पकेंगे नहीं तो हममें रस नहीं भरेगा, अगर हममें रस नहीं भरेगा, तो सभी बच्चे गन्ना कैसे चूसेंगे ?"

"हां, हाँ, बादलों से प्रार्थना करनी ही पड़ेगी । हमें भी तो पानी चाहिये । हम भी तो प्यासे हैं । हम भी तो सूख रहे हैं ।" चावल का खेत बोला ।

चावल का खेत ऊपर आसमान की तरफ़ देखकर बोला, "बादलो, बादलो, प्यारे सुन्दर बादलो ! तुम तो मज़े से आसमान की सैर कर रहे हो ।" और हमें इतनी गरमी लग रही है, मेहरबानी से कुछ पानी हमें पीने को दो ।

तो बादलों ने रिमझिम रिमझिम
ठंडी, ठंडी
पानी की बूंदें बरसाई ।
खेतों में खड़े
सभी गन्नों ने
पानी की बूंदें
गट, गट करके पीं ।
पानी पीकर गन्ने मोटे हुए ।
पानी पीकर चावल पके ।
उनकी बालियाँ हरी भरी हुईं ।
लम्बी हुईं ।
पानी पीकर
गेहूँ के दाने भी
मोटे, ताजे हुए ।
सभी बच्चों ने सफ़ेद सफ़ेद,
मीठे मीठे चावल खाये ।
सभी बच्चों ने
गन्ने का मीठा मीठा रस पिया
और
तगड़े हुए ।
ख़ुश हुए ।

बादलों का पानी अब खत्म होने को आया था । सभी बादल फिर से जल भरने के लिए नदी, झील और समुन्दर की ओर चल दिये ।

दूर से स्कूल की बस की पों पों की आवाज़। स्कूल की बस मल्लिका के घर के पास पहुंच कर रुक जाती है। बस में बहुत से बच्चे हैं। मल्लिका स्कूल की बस से उतरती है। स्कूल का थैला उसके कन्धे पर है।

मल्लिका : नमस्ते रश्मि, नमस्ते अरुण।

वस में बैठे हुए बच्चे एक साथ कहते हैं : "नमस्ते, मल्लिका।" और बस चली जाती है।

मल्लिका घर के बाहर लगी घंटी बजाती है। मल्लिका की मां दरवाजा खोलती है। घर के अन्दर से एक छोटे से कुत्ते के भौंकने की आवाज़। छोटा-सा कुत्ता पुन्नू भागकर मल्लिका के पास आ जाता है। दुम हिलाता है।

माँ : (प्यार से चूमकर) आ गई, मल्लिका बेटी, स्कूल से।

मल्लिका : हां, मां। हलो पुन्नू। मल्लिका अपनी किताबों का बैग मां के हाथ में देती है। और पुन्नू कुत्ते को गोद में उठाकर उसे प्यार करती है।

माँ : (मल्लिका को चूमकर) आओजी, मल्लिका। चलो पहले तुम्हारा किताबों का बैग तुम्हारी पढ़ने की मेज़ पर रख दें, फिर हाथ मुंह धोयेंगे और दूध पियेंगे।

मल्लिका : माँ, दूध के साथ वह मीठे मीठे बिस्कुट भी देना जो कान्ता मौसी उस दिन मेरे लिये लायी थीं।

माँ : हाँ, हाँ, ज़रूर। अच्छा अब जाकर स्कूल का थैला अपनी पढ़ने की मेज़ पर रख आइये और हाथ मुंह धोइये।

मल्लिका : अच्छा, मम्मी। मल्लिका पढ़ने की मेज़ पर थैला रखती है। हाथ मुंह धोकर तौलिए से पोंछकर खाने की मेज़ पर आती है। मां रसोई से दूध का गिलास और प्लेट में बिस्कुट डालकर मेज़ पर रखती है।

मल्लिका : माँ, एक बिस्कुट, पुन्नू को दे दूं ?

मां : बस, एक ही। और नहीं। वह अपना खाना खा चुका है।

मल्लिका : अच्छा। (मल्लिका एक बिस्कुट पुन्नू कुत्ते को देती है।)

माँ : आज स्कूल में क्या नया मज़ेदार काम किया, मल्लिका बेटी ने ?

मल्लिका : मां, आज स्कूल में हमने एक नया गाना सीखा। गाना सिखाने वाली बहनजी ने सिखाया। बहुत सुन्दर गाना है, माँ। सुनाऊं गा कर।

माँ : हां, हाँ, जरूर। अभी सुनाओ।

मल्लिका : (गीत गाती है)

नीली चिड़िया, नीली चिड़िया
मेरे पास तो आओ
आओ आओ चिड़िया रानी
अपने पंख दिखाओ
नीले आसमान में उड़ना
मुझको भी सिखलाओ।

माँ : वाह वाह। बहुत सुन्दर गीत है। शाम को पिताजी जब घर आयेंगे तो उन्हें भी सुनाना।

कहानी १२

कल इतवार था । अमित के मामाजी को भी दफ़्तर से छुट्टी थी । मामाजी बोले, "चलो अमित, रश्मि, तुम्हें चिड़ियाघर ले चलें ।"

"चिड़ियाघर क्या होता है, मामाजी ?" अमित ने पूछा ।

रश्मि अमित से एक बरस बड़ी थी । वह दो बार अपने पिताजी के साथ चिड़ियाघर देखकर आई थी । वह हंस कर अमित से कहने लगी, "अरे बुद्धूराम, इतना भी नहीं जानते चिड़ियाघर क्या होता है । चिड़ियाघर में तो शेर, चीते, हाथी, हिरण, बन्दर, तोते, मोर और कितने ही जानवर और पक्षी होते हैं । और कितना बड़ा कंगारू है वहाँ पर । है न पिताजी ? और हंस भी तो है वहां पर । और जिराफ़ भी तो देखा था । हाँ, और लंगूर भी ।"

अमित लखनऊ में रहता है । आजकल उसके स्कूल में छुट्टियाँ हैं । वह अपने माताजी पिताजी के साथ दिल्ली में अपने मामाजी के घर आया हुआ है ।

मामाजी की लड़की रश्मि उसको बहुत अच्छी लगती है । रश्मि को भी आजकल छुट्टियाँ हैं । इसलिए दोनों जने मिल कर सारा दिन खूब खेलते हैं ।

"हाँ, हाँ । आज हम अमित को दिल्ली का चिड़ियाघर दिखाने के लिए ले चलेंगे । रश्मि और अमित तुम दोनों फ़टाफ़ट अच्छे कपड़े पहन कर तैयार हो जाओ ।" मामाजी ने कहा ।

"हाँ, मामाजी ।" अमित ने कहा और भाग कर कपड़े बदलने के लिए चला गया ।

"मां, मैं तो आज हरा सिल्क का फ्राक पहनूंगी ।" रश्मि बोली ।

"हां, हाँ, वही पहनो । अल्मारी में इस्तरी किया पड़ा है ।" रश्मि की माँ हंस कर बोली ।

रश्मि के पापा तो पहले से ही सफ़ेद सिल्क की बुशशर्ट और भूरे रंग की पतलून पहने तैयार खड़े थे ।

"अरे वाह । तुम तो दोनों ही बहुत होश्यार हो । कितनी जल्दी तैयार होकर आ गए ।" रश्मि के पापा बोले ।

"मम्मी, ज़रा मेरे बालों में रिब्बन बांध दीजिए तो ।" रश्मि के हाथ में हरा रिब्बन था ।

मम्मी ने रश्मि के बाल ठीक किए कंघी से और उसके बालों में रिब्बन बाँधा । उन्होंने अमित के बाल भी ठीक किए ।

"चलो, अब चल दें ।" रश्मि के पापा बोले ।

और तीनों जने एक दूसरे का हाथ पकड़े घर से बाहर चल पड़े, चिड़ियाघर देखने के लिए ।

नटखट खटपट बन्दर

एक था बन्दर बहुत ही नटखट ।
एक बगीचे मे रहता था,
वहां बहुत उधम करता था ।
इस शाखा से कूद उछलता,
उस शाखा पर झूल पहुंचता ।
कच्चे फल सब तोड़ तोड़ कर,
फेंक डालता उन्हें जमीं पर ।
कभी चिड़ियों के अंडे फोड़,
कभी घोंसले देता तोड़ ।
चिड़िया कौए सब रोते थे,
आंसू से वे मुंह धोते थे ।
राहगीरों को सदा सताता,
पास में जो हो सब ले लेता ।
मानस-पंछी उससे तंग थे,
सज़ा न उसको दे सकते थे ।
अगर जो कोई पकड़ने आता,
बन्दर कूद परे हट जाता ।
फिर वह हंसता खी ! खी ! करके
निर्दोषों को खूब सता के ।

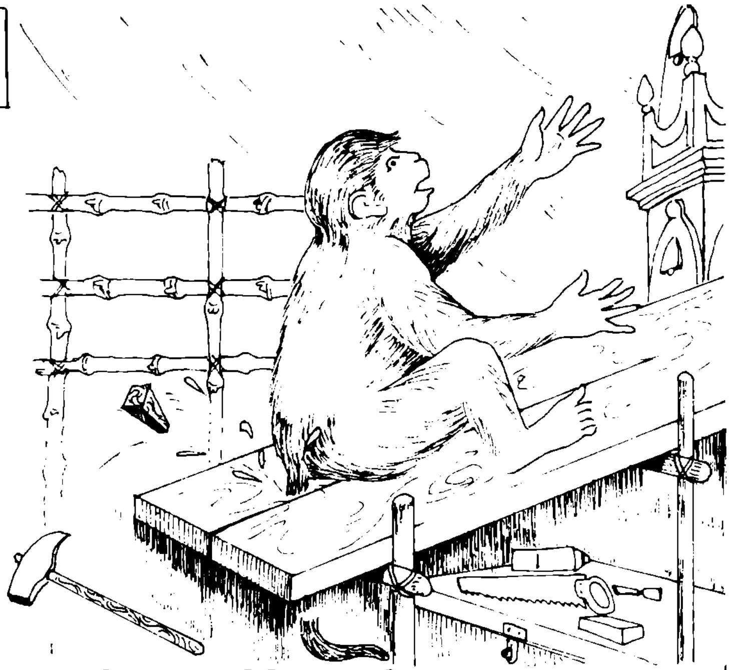

उसी बगीचे ही के अंदर,
बनता था एक सुन्दर मंदिर ।
कारीगर सब काम लगे थे
लकड़ी को वह चीर रहे थे ।
पहुंचा बन्दर उस कोने में,
उनका लगा काम देखने ।
जब दोपहर का खाना खाने
बढ़ई लोग अपने घर गए !
आरा लकड़ी और हथौड़ी,
हर इक चीजें ले उसने छेड़ी ।
कभी उछाली उसने ऊपर,
या दे मारी वहीं जमीं पर ।
इसी तरह हर चीज उठा कर,
उसको इक फुटबाल समझ कर,
खुश हो रहा था नटखट बन्दर,
तोड़ रहा था सुन्दर मंदिर ।

उछल अचानक एक हथौड़ी,
बन्दर की दुम पर आ पड़ी ।
डर के हो गया वह गुमसुम,
बन्दर की थी कट गई दुम !
बाग के पंछी देख रहे थे,
देख तमाशा हंस वे रहे थे,
कटी पूंछ को हाथ में लेकर,
बन्दर भाग गया शरमा कर ।

बातूनी कछुआ

एक था, एक था बड़ा सरोवर,
इक कछुआ था उसके अन्दर ।
पानी में वह तैरा करता,
मछलियों के संग सैरे करता ।
बड़े आराम से रहता कछुआ,
आता वहां न कोई मछुआ ।
जो कोई सरवर तीर पै आता,

कछुआ उसका स्वागत करता ।
कहता, "आओ भइया ! आओ,
थोड़ा पानी पी कर जाओ ।"
पशु-पक्षी थे जितने बन के
सभी बन गए दोस्त थे उसके ।
हर मछली को प्यार वह करता,
कभी किसी को था न सताता ।

पर दो हंस सफ़ेद रंग के
पक्के मित्र हो गए थे उसके ।
उड़ते उड़ते थक जाने पर,
दिन का काम खतम करने पर,
उसके पास वे थे आ जाते,
कई कहानियां उसे सुनाते ।
हैं आकाश में तारे कितने
गिन कर उसे बताते इतने ।
कितनी चींटी हैं धरती पर
करती रहती हैं क्या, दिन भर ।
ऐसी कितनी कितनी बातें
सुन सुन बीतें उसकी रातें ।
बस ऐसे ही बड़े मज़े के
बढ़िया दिन कटते कछुए के ।
किन्तु न सब दिन एक बराबर,
व जग में सुख दुःख दोनों का घर ।
एक बरस पानी नहीं बरसा,
जल जीवों की हुई दुर्दशा ।
धीरे धीरे सरवर सूखा,
हर कोई तड़पा प्यासा भूखा ।
जो तो भाग सके सो भागे,
पीछे रहे जो मरने लागे ।
देख के यह सब कछुआ रोता,
पर वह कुछ भी कर न सकता ।
इक इक कर के मछलियां सारी,
इस दुनिया से गई बेचारी ।
कछुए की टांगें छोटी थीं,
दूर कहीं न जा सकती थीं ।
अपनी मदद न कर वह सकता,
दूजे की कैसे कर सकता ।
पर हंसों ने साथ न छोड़ा,
मुश्किल में न नाता तोड़ा ।
हर दिन उसके साथ रहे वे,
बिनती प्रभु से करते रहे वे ।
'हे प्रभु जी बरसाओ बरखा
जल-जीवों की कीजो रक्षा ।'
पर तो भी पानी नहीं आया,
कछुआ भी मरने को आया ।

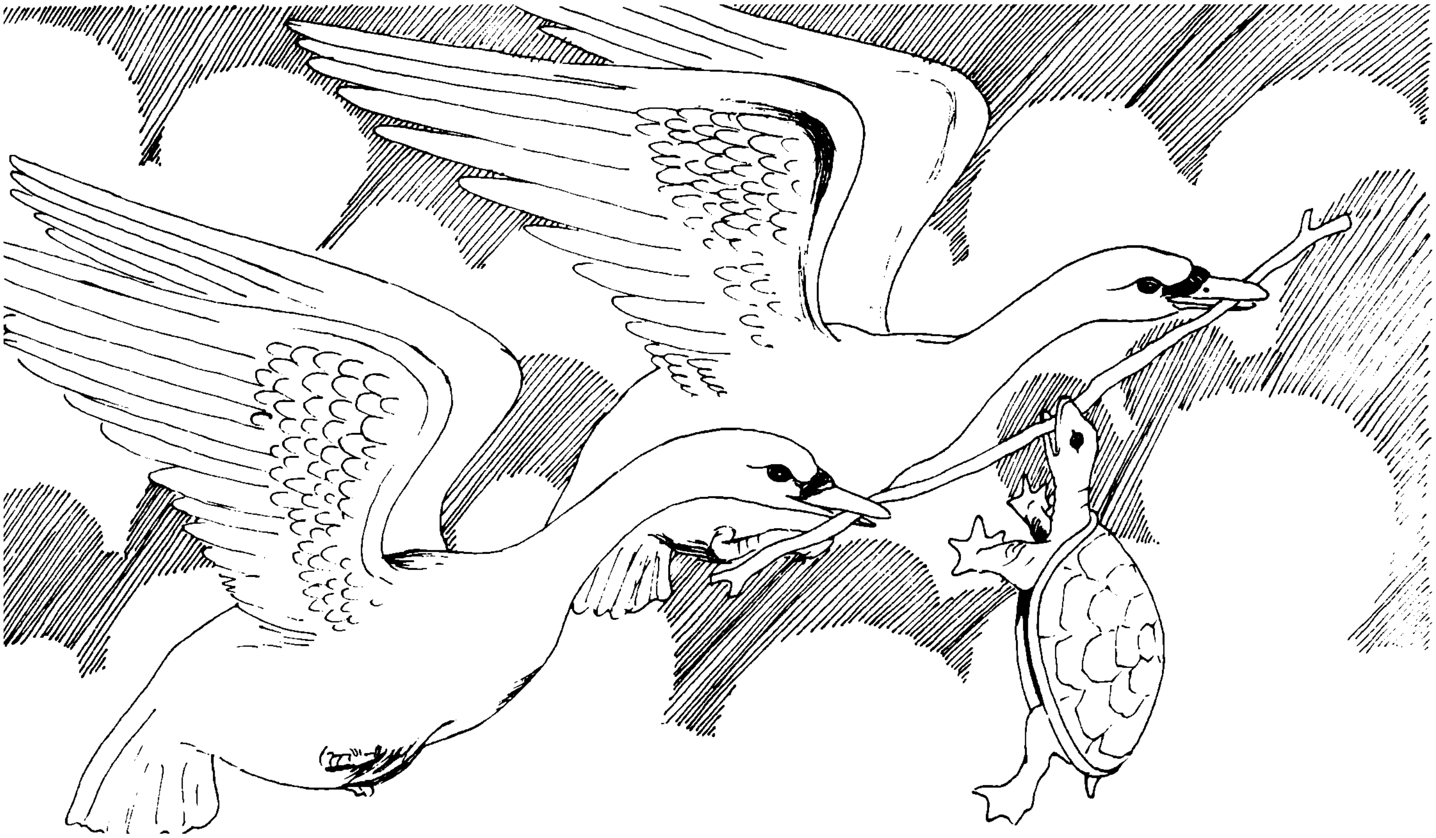

तब हंसों से रहा गया न
बोले, 'भय्या अब चल दो न
तुम्हें यहां नहीं रहने देंगे
कहीं और ले के चल देंगे ।'
कछुआ बोला रोता रोता
''मैं तो कुछ भी नहीं कर सकता ।
न तो तेज़ मैं चल सकता हूं
ना ही तो मैं उड़ सकता हूं ।
कैसे साथ मैं जा सकता हूं
कैसे जान बचा सकता हूं ?
मुझको छोड़ यहीं तुम जाओ
जाओ प्यारे भय्या जाओ ।''
नहीं, नहीं, ऐसा न होगा,
तुम बिन जीवन सूना होगा
भय्या, तुम न पड़ो सोच में
रखो यह लकड़ी तुम मुंह में
दाएं बाएं, हम पकड़ेंगे
यूं हम तुमको लेके उड़ेंगे
पर राह में नहीं बातें करना
गिर जाओगे नीचे वरना ।''

हंसों ने तब लकड़ी पकड़ी,
कछुए ने भी मुंह में जकड़ी ।
हंस उड़े जब पर फैला कर,
कछुआ हुआ ज़मीन से ऊपर ।
ज्यों वह पहुंचा आस्मान पर,
देख जगत, गया अचरज से भर ।
ऊपर बादल ! नीचे धरती !
सुन्दर, हरियाली, मन हरती ।
उसने अजब नज़ारे देखे,
भांति भांति के और अनोखे ।
चीज़ जो दीखै बड़ी भूमि से,
वह दीखै छोटी ऊपर से
छोटी-छोटी सब चीज़ें थीं
सब कितनी प्यारी लगती थीं ।
छोटे खेत, पेड़ भी छोटे,
छोटे दिखते परबत मोटे ।
इसी तरह वे उड़ते उड़ते,
आस्मान में सैरें करते
इक सरवर के नीले गहरे
पानी के ऊपर से गुज़रे ।

नीचे देख के सरवर सुन्दर,
कछुआ गया ख़ुशी से भर
हंस की जोड़ी लगी उतरने
लगी सरोवर का रुख़ करने ।
सरवर तट पर लगा था मेला,
आ पहुंचा था हर अलबेला ।
सजी दुकाने रंग रंगीली,
बिकती थीं चीज़ें चटकीली ।
मर्द औरतें सभी थे आए
बच्चों को भी साथ थे लाए
ढम ! ढम ! ढम ! ढोलक बजते थे,
नाच, गान, नाटक होते थे ।
देखा तभी एक किसी ने
दृश्य अनोखा आस्मान में ।
कछुआ नील गगन में उड़ता
सरवर तट की ओर उतरता ।
बोला, 'अरे देखना नभ में
कछुआ भी अब लगा है उड़ने ।'
देख के कछुआ आस्मान में
लगे लोग अचम्भा करने ।
'कहां ? कहां ? भई कैसे ? कैसे ?
कछुआ आस्मान में कैसे ?
हमे बताओ, हमें बताओ
कहां है कछुआ हमें दिखाओ ।'
सब उंगली कर आस्मान में
इक दूजे को लगे दिखाने
कछुए ने यह देख के सोचा,
यह कर रहे हैं मेरी पूजा ।
मेरे दर्शन को आए हैं
साथ में मेवा फल लाए हैं
बोला, "जीते रहो ! भला हो !"
गिरा धड़ाम से और मरा वह
हंस युगल तब दुःख से बोला,
"कछुए ने यूं ही मुंह खोला ।
मुफ़्त में अपनी जान गंवाई
लकड़ी भी कुछ काम न आई ।"

बुद्धू राजा-बुद्धू बन्दर

एक देश का एक था राजा,
ख़ुश थी उससे उसकी परजा ।
देश में था न कोई भिखारी,
न दुःख देती थी बीमारी ।
भरा ख़ज़ाना पैसे से था,
जितना मांगों मिल जाता था ।
महल के सारे नौकर-चाकर,
करते थे हर काम वक्त पर ।
राजा की करते थे सेवा,
छुट्टी के दिन खाते मेवा ।
पर संतान न थी राजा की,
सबके लिए बात थी दुःख की ।
इसीलिए मन बहलाने को,
दिल का दुख भुला लेने को,
राजा ने पाला इक बंदर,
जो था प्यारा मस्त कलंदर ।
दिन भर राजा के संग रहता,
तरह तरह के करतब करता ।

प्यास कभी लगती राजा को,
बंदर भाग रसोई घर को,
भर गिलास पानी का लाता,
बड़े प्यार से उसे पिलाता ।
कभी कूद पड़ता खिड़की से,
और पेड़ पर चढ़ता झट से ।
मीठा आम तोड़ कर लाता,
और चाव से उसे खिलाता ।
कभी सिपाही वह बन जाता,
झट सैल्यूट करके दिखलाता ।
'सावधान ! और कंधे चुस्त !'
कर दिखलाता सदा दुरुस्त ।
और कभी धोबी वह बनता,
कपड़ों की इक गांठ उठाता,
राजा जी के कपड़े धोता,
रस्सी पर फिर उन्हें सुखाता ।
ढम ! ढम ! ढोलक कभी बजाता,

धीरे-धीरे पाओं दबाता
चूम चाट कर उसे सुलाता ।
पर बन्दर था आख़िर बन्दर
कम ही अक्ल थी उसके अन्दर ।
प्यार बहुत वह कर सकता था
पर कुछ सोच न सकता था वह ।
इसीलिए परजा डरती थी,
राजा की चिन्ता करती थी ।
मंत्री बहुतेरा समझाते
हाथ जोड़ कर विनती करते ।
''बन्दर आख़िर बन्दर ही है
बे अकली से कभी कहीं,
कुछ बिगाड़ न करे कहीं ।''
राजा सुनकर हंसा ज़ोर से
फिर बोला इतना मंत्री से
''इतनी क्यों चिन्ता करते हो ?
इस बन्दर से क्यों डरते हो ।

खी खी करके गाना गाता ।
और नाचता ता ता थई !
थई ता थई तता, ता ता थई !
थक राजा जब सोने लगता
पंखा बन्दर उसे डुलाता

कुछ डरने की बात नहीं है,
जंगली यह बन्दर तो नहीं है,
छोटा था तब से पाला है,
खुद इसको देखा, भाला है ।
जाओ अपना काम करो तुम,

काम के बाद आराम करो तुम,
बच्चों को नाटक दिखलाओ
हलवा पूरी उन्हें खिलाओ ।''
चुप हो मंत्री चला गया,
राजा ने जब ऐसा कहा ।
थक कर राजा फिर सुस्ताया,
बन्दर अपने पास बिठाया ।
बन्दर पंख लगा डुलाने,
नीन्द लगी राजा को आने,
झट से लगा खुरटि भरने ।
सुन बन्दर लगा अचरज करने
इतने में मक्खी इक आई,
राजा की छबि उसको भाई ।
झट बैठी उसके माथे पर ।
लगी साफ़ करने अपने पर
फू ! फू ! फू ! करके बन्दर ने,
मक्खी को माथे से उड़ाने
की कितनी ही कोशिश की
लेकिन ढीट बड़ी थी मक्खी ।
बार बार मुख पर आ जाए
बन्दर को वह बहुत खिजाए
आख़िर बन्दर गुस्सा होकर
लाया इक तलवार उठा कर,
दे मारी उसने मक्खी पर,
जो बैठी थी माथे पर,
मक्खी तो उड़ गई परे
पर इकदम राजा जी मरे !

चतुर ख़रगोश-बुद्धू हाथी

सुनो सुनो जी एक कहानी,
बड़ी पुरानी बड़ी पुरानी ।
पंच तंत्र की एक कहानी,
जिसको सुनकर ख़ुश हो नानी !
एक बार जंगल में बहुत दिन
पानी बिल्कुल भी न बरसा
नदी सरोवर सूख गए सब
पशु-पक्षी सबका जी तरसा ।
बड़े-बड़े हाथी घबराए
रोते पास गए गजराज
बोले, ''हम मरते हैं प्यासे
हमें बचाओ हे महाराज
नन्हें मुन्ने हाथी-बच्चे
तड़प रहे बेचारे प्यासे
कहां से लाएं पानी राजा
अपनी प्यास बुझाएं कैसे ?''
बहुत सोच करने पर राजा
बोले ''हां हां याद है आया ।
एक सरोवर दूर उधर है
अभी किसी ने मुझे बताया ।
भरा हुआ पानी से है वह,
मीठा ठंडा अमृत जल है ।
चलो वहां ही चल दें भाइयों,
सबका इसमें ही मंगल है ।''
बालक-गण को सूंड में लेकर,
चलते चलते, चलते चलते
आख़िर बड़े ताल पर पहुंचे
मरते थे वह, क्या न करते ।
देख जलाशय दूर ही से वह
ख़ुश हो कर ऊंचे चिंघाड़े,
सूंडें उठा उठा कर दौड़े,
बन के कितने पेड़ उखाड़े ।
पी पी पानी पेट फुलाए,
भर भर सूंडों की पिचकारी,
ज़ोर ज़ोर से इक दूजे पे,

ऐसी की तैसी दे मारी ।
सरवर तट की धरती नीचे
बने थे कुछ ख़रगोशों के घर ।
हल्ला, गुल्ला, चिंघाड़ें सुन,
डरे हुए सब निकले ऊपर ।
हस्तीगण के इस उधम से
शामत ख़रगोशों की आई ।
हाथ पांव सिर उन के टूटे
बोले, 'अब न बचेंगे भाई ।'
कैसे इनसे हो छुटकारा ?
कैसे अपनी जान बचाएं ?
या यह स्थान छोड़ हम भागें
या हथियन को दूर भगाएं ।''
बुड्ढा एक ख़रगोश उठा तब,
बोला ''इनसे निपटूंगा मैं ।
तुम सब छुप जाओ जंगल में
इक चालाकी खेलूंगा मैं ।''
इतना कह कर चला गया वह,
खड़ा हुआ वह ऊंचे टीले
और गरज कर वह चिल्लाया ।
'ऐ हाथी, शैतान के पिल्ले ।
किससे पूछ इधर तूं आया ?
नहीं जानता क्या तू इतना
चन्द्रराज का राज यहां है
नहीं चाहता भला क्या अपना ?'
''अभी यहां भाग अरे तू !
वरना इतना पछताएगा
जान हाथ से धो बैठेगा
कान सूंड कुछ भी न बचेगा ।''
हैरां हो कर हाथी बोला,
''कौन है तूं और कहां से आया ।
हाथी राजा के ख़िलाफ तू
ज़ोर-ज़ोर से क्यों चिल्लाया ?''
''मैं हूं चन्द्रराज का सेवक,
आकाश से हूं धरती पर आया ।
चन्द्र बहुत गुस्से हैं तुम पर ।
तुमको यही बताने आया ।
तुमने ऊधम मचा मचा कर
ख़रगोशों को बहुत सताया ।
चांद है ख़रगोशों का राजा,
उसका हुक्म सुनाने आया ।

छोड़ सरोवर चलो यहां से
वरना बुरा तुम्हारा होगा
दांत वांत सब गिर जाएंगे
सूंड कान का भुरता होगा ।"
हाथी बोला, 'जाओ ! जाओ !
बहुत बघारो शेखी मत तुम ।
अच्छा, चलो चांद के पास
अगर कहो उसके सेवक तुम ।'
तब ख़रगोश ले गया गज को,
सरवर तट के इक कोने पर
जहां चांद की कांप रही थी
परछाई हिलती लहरों पर ।
"देखा तुमने ? कांप रहे हैं
ग़ुस्से से महाराज हमारे ।

जो सब ऊधम किए यहां पर
सुने उन्होंने सभी तुम्हारे ।"
हाथी बोला, 'अरे बाप रे !
यह तो सचमुच ही ग़ुस्से हैं ?
अब तो अपनी ख़ैर नहीं रे
लाभ यहां से चलने में है ।'
डर से घुटने टेक वहीं पर
गजराजा ने शीश निवाया
ले कुटुंब भागा सरवर से
ऐसा उसका सिर चकराया ।
तब निकले ख़रगोश बिलों से,
दी बुड्ढे को बहुत बधाई
अकल तुम्हारी बूढ़े काका,
आज हमारे काम में आई ।

दूरदर्शन के लिए एक कहानी

एक थी, एक थी, लड़की !

श्रीनगर, काश्मीर । पहाड़ी बुलबुल की मीठी चहक और चंचल उड़ान से दृश्य शुरू होता है । आज से पैंतीस-चालीस बरस पहले, एक ठेट पुराने काश्मीरी मुहल्ले में, एक पंजाबी घर ।

पतझड़ का मौसम है । सारी, वादी पीले और कांसे के रंग के पत्तों वाले सफ़ेदे चिनार सेब खुमानी और अनेकों अनगिनत किस्म के पेड़ों से रंगी है । ऊँचे पहाड़ों पर बर्फ़ पड़ चुकी है । बरफ़ीली हवा की हाथ-पैर और गालों को ख़ुश्क और लाल कर देने वाली ठंडक, वादी में बढ़ रही है । यूँ लगता है, जैसे इस साल वादी में बर्फ़ जल्दी ही पड़ेगी ।

सुबह के साढ़े आठ-नौ बजने वाले हैं । पांच-छः बरस की पुष्पा गरम पानी से नहा चुकी है । हरे रंग की साफ़ सुथरी सलवार कमीज़ के ऊपर लाल ऊनी स्वैटर पहने वह रसोई घर में एक रंगदार सुन्दर ऊनी आसन पर बैठी है ।

पुष्पा के सामने पड़ी कांसे की कटावदार थाली में, बरफ़ से सफ़ेद ताज़े पकाए, काश्मीरी चावलों की ढेरी लगी है । थाली ही में एक तरफ़ कांसे की कटोरी में रसेदार पके हुए, काबुली चने पड़े हैं ।

रसोई में एक ही खिड़की है । सुबह की ठंड की वजह से खिड़की आधी ही खुली है । खिड़की में से आ रही सुबह के सूरज की सुनहली किरणें, पुष्पा की ठंड से गुलाबी हुई गालों और उसकी थाली पर पड़ रही है ।

कांसे की कटोरी मे पड़े चनों के रस के ऊपर ख़ालिस घी की चमक तैर रही है । ठंड के कारण चावलों और चनों की कटोरी से हल्की भाप उड़ कर लहरा रही है ।

पुष्पा बाएं हाथ में भूगोल की एक खुली पुस्तक पकड़े है । वह पुस्तक को कभी बाएं घुटने पर भी

रख लेती है। खुली पुस्तक के बाएं पन्ने पर काश्मीर का नक्शा और दाएं पन्ने पर जेहलम नदी का भौगोलिक वर्णन है।

पुष्पा चावल कम ही खा रही है। वह पुस्तक में से कुछ पढ़ कर चावलों की ढेरी को ऊँचा करने में ज़्यादा व्यस्त है।

चावलों की ढेरी उसे एक पहाड़ी की तरह से दिखाई दे रही है। पहाड़ी को और ऊँचा करके उसके ऊपर के हिस्से पर उसने एक समतल मैदान-सा बनाया है। मैदान के ऐन बीच में से, कुछ चावल निकाल कर उसने एक नन्हा-सा तालाब बना लिया है। तालाब में उसने अब चनों का रस भर दिया है। रस कुछ तालाब में पड़ा है और कुछ बह कर, थाली के किनारों पर लहराने-बहने लगा है।

घर का नौकर लक्षमन सिंह, जिसे वह बचपन से ही प्यार से, लतपत छिंग कह कर पुकारती है, चूल्हे के पास एक पटरे पर बैठा है। वह हाथों से बजा-बजा कर रोटियां, फिर तवे पर सेंक रहा है।

पुष्पा कभी किताब की ओर, और कभी चावलों की ओर गौर से, और ख़ुशी से देखती हुई, चनों के बहते रस की तरफ़ तर्जनी करके लक्षमन सिंह से कहती है—

पुष्पा : देखो, देखो लतपत छिंग! चश्मा बैरीनाग से जेहलम नदी निकल रही है। देखो न!

लक्षमन सिंह : (हंसकर) हां हां, देख रहा हूँ। फ़टाफ़ट चावल ख़तम कर, तो रोटी डालूँ तेरी थाली में।

पुष्पा : देखो तो लतपत छिंग, पहाड़ों से उतरती हुई, पहले छोटी-सी, फिर वही बड़ी-बड़ी जेहलम नदी, पहले-पहले....पाम्पुर, फिर श्रीनगर, फिर बारामूला और फिर; (किताब में से पढ़ने लगती है)।

लक्षमन सिंह	:	(ढकने वाली टोकरी में पड़ी, मोटे से कपड़े में नई पकी रोटियों पर एक और रोटी रखते हुए) देखा है देखा है बन्दरी ! खतम कर चावल । पता है स्कूल पहुंचने में देर हो जाएगी ।
		साथ के कमरे में से पुरानी दीवार घड़ी खरर, खरर, करके नौ बजाती है ।
पुष्पा	:	(ध्यान से सुनते हुए) साल, आ ऽ ऽ ठ और नौ ऽ ऽ हा हा हा ! बड़ी बुआ जी भी ऐसे ही तो खांसती है । यह घड़ी बड़ी बुआ जी हैं । है न लतपत छिंग !
लक्षमन सिंह	:	कितनी बतंगड़ है यह लड़की । खतम भी कर न चावल ।
पुष्पा	:	(थाली में पड़ी चावलों की ढेरी और लहराते चनों के रस की तरफ़ ध्यान से देख रही है) लतपत छिंगा, अगर मैंने चावल खा लिए तो ऽ ऽ, बैरीनाग का पहाड़ सारा टूट जाएगा !
लक्षमन सिंह	:	(झूठी नाराज़गी से) तू खाएगी चावल कि नहीं ?
पुष्पा	:	ले बाबा ले, तोड़ दिया पहाड़, बस ।
		पुष्पा चावलों की पहाड़ी में, चने के रस की नदी, उंगलियों से मिला कर खाने लगती है । चावलों से, मोटे काबुली चने निकाल कर एक-एक को खाते हुए कहती है–
पुष्पा	:	देखो लतपत छिंग– जेहलम नदी के, रास्ते में पत्थर, और इत्ती बड़ी-बड़ी चट्टानें । हां मैंने अपने आप देखी थी जब पिताजी बड़ी बुआ जी को चश्मा बैरीनाग ले गए थे । तब बड़ी बुआ जी खांसती थीं, घड़ी की तरह । (नकल लगाती है) मैं अब सब पत्थर भी खा जाऊँगी जेहलम नदी के रास्ते में । देखो किताब में भी यही लिखा है ।
लक्षमन सिंह	:	स्कूल की बड़ी बहन जी एक टांग पर खड़ा कर देंगी, देर से पहुँचोगी तो, बड़ा मज़ा आएगा...
पुष्पा	:	खा ही तो रही हूँ लतपत छिंग, और क्या कर रही हूँ । देखो, यह खाया पत्थर, यह पिया जेहलम का पानी और यह देखो खाया पत्थर !
लक्षमन सिंह	:	(थाली के पास ही पड़ी दही की कटोरी की तरफ़ इशारा करके) दही भी तो खाओ ।
पुष्पा	:	अरे अरे ! मैं भी कितनी बुद्धूमल हूँ । चश्मा बैरीनाग के पर्वत पर बरफ़ डालना तो भूल ही गई थी । दही तो बरफ़ होती है न ! तुमने कभी भूगोल पढ़ा है लतपत छिंग, भूगोल, जुगराफ़िया ! भूगोल की इस मेरी किताब में लिखा हुआ है गरमियों में, पहाड़ों की बरफ़ पिघल-पिघल कर, (किताब में से पढ़ती हैं) नदियों के पानी में

मिल जाती है। पर (थाली की तरफ़ देखते हुए) अब तो बैरीनाग का पर्वत ही टूट गया है, मैंने आधा तो खा लिया है, अब पहाड़ पर बरफ़ कैसे डालूं ? बताओ न लतपत छिंग।

लक्षमन सिंह : आज ऐसे सी सड़प कर जाओ दही। बरफ़ की बच्ची !

पुष्पा : हां ठीक है। अब तो कल ही पड़ेगी पर्वत पर बरफ़। बस भई लतपत छिंगा रोटी मेरी थाली में न डालो। कितनी बार समझाया है, तुम्हें कि मेरी थाली में चावल कम डाला करो। पर तुम मानते ही नहीं। मैं नहीं खाऊँगी सारे चावल बस !

लक्षमन सिंह : तो और कौन खतम करेगा ? तेरे स्कूल की बड़ी बहन जी ? टर टर नहीं करो और खतम करो चावल !

पुष्पा : तुम खालो न थोड़े से, लो ! तुम्हें भी तो भूख लगी होगी। पर तुमको तो स्कूल नहीं जाना पड़ता न नौ बजे। इसलिए तुमको जल्दी खाना भी नहीं खाना पड़ता। तुम आज किस वक्त खाना खाओगे। पिता जी को खाना खिला कर ?

लक्षमन सिंह : तुम नहीं ख़तम करोगी न चावल। अच्छी बात है। मैं पिता जी से जाकर कहता हूँ।

पुष्पा : (रोनी-सी आवाज़ में) शिकायती टट्टु ! शिकायती टट्टु ! तुम बहुत ख़राब हो लतपत छिंग !

लक्षमन सिंह : अच्छा, नहीं कहता पिताजी से। फिर तुम ख़तम करो। बहुत अच्छी पुष्पा रानी। बस अब तो थोड़े से ही रह गए हैं।

पुष्पा : (बहुत ही बेदिली से खाते हुए) बस भई। अब तो मैं खाते-खाते थक गई हूँ। तुमने पहले इतने ढेर सारे चावल क्यों ही डाले मेरी थाली में ?

लक्षमन सिंह : चावल न डालता तो बैरीनाग का पहाड़ कैसे बनाती तुम ?

पुष्पा : (ख़ुश होकर) हां, यह तो ठीक है। तुम बहुत अच्छे हो लतपत छिंग।

लक्षमन सिंह : चलो, बस इतने थोड़े तो रह गए हैं चावल। यह गया पहाड़ का टुकड़ा, यह गया एक और पहाड़ का टुकड़ा, यह गया...बीबी रानी दूध-भातखानी...

पुष्पा : देखो तो सारा पहाड़ अब मेरे पेट में घुस गया है, कल से मुझे इतने ढेर से चावल नहीं देना, समझे। खाते खाते मुझे स्कूल जाने में देर हो जाएगी और स्कूल की बहन जी मुझे कोने में एक टांग पर खड़ा कर देंगी।

लक्षमन सिंह : तुम अब कुल्ला करो और मुँह पोछो।

पुष्पा	:	तुम धो दो न मेरे हाथ मुँह लतपत छिंग । कल अपने आप धोए थे तो सारी पीलक मेरे मुंह पर लगी थी । स्कूल की लड़कियों ने देखी तो हंसने लगीं । कहती थीं मुँह धोना भी नहीं आता ।
लक्षमन सिंह	:	अच्छा इधर आ नल के पास । गरम पानी से तेरे हाथ मुँह साफ़ करता हूँ ।
		लक्षमन सिंह पुष्पा के हाथ मुँह साफ करके तौलिए से पोंछता है ।
पुष्पा	:	(मुँह पोंछवाते हुए) हाए लतपत छिंग ! तुम कितने ज़ोर से मुँह पोंछते हो !
लक्षमन सिंह	:	अब (तौलिया खूंटी पर टांगते हुए) अब उठाओ बस्ता और जाओ स्कूल झटपट । स्कूल की दाई, कब से आवाज़ लगा गई है ।
पुष्पा	:	हां हां जा रही हूँ । पर पहले एक आना भी तो दो, आधी छुट्टी के वक्त पूरी खाने के लिए ।
लक्षमन सिंह	:	वाह वाह ! घर में इतने से चावल खाने से, पेट में बैरीनाग का पहाड़ घुसने लगता है और स्कूल जाकर पूरी खाने के लिए पेट में जगह है !
पुष्पा	:	सारी लड़कियां खाती हैं । शीला भी खाती है, कृष्णा भी खाती है ।

लक्षमन सिंह दीवार की खूंटी पर टंगे हुए कोट की जेब में से पैसे निकालने लगता है।

लक्षमन सिंह : यह लो।

पुष्पा : मैं निकालूँगी, मैं निकालूँगी। एक आना, एक आना और। सच्ची लतपत छिंग एक आना और दो।

लक्षमन सिंह : (रौब से) नहीं। बिल्कुल नहीं। पिता जी ने कह रखा है रोज़ सिर्फ़ एक ही आना।

पुष्पा : (उदास सी होकर) सारी लड़कियां रोज़ दो आने लेकर आती हैं स्कूल। सिर्फ़ आज एक आना और दे दो। कल बिल्कुल नहीं देना अच्छा!

लक्षमन सिंह : मुन्नों तू बहुत सताती है। कहा है, और पैसे नहीं मिलेंगे। जा भाग जा स्कूल।

पुष्पा : (रोकर) तू बहुत ख़राब है लतपत छिंग। मेरी तेरे साथ कुट्टी!

लक्षमन सिंह : ले लाडो! ले एक आना और। अब जल्दी जाओ। वरना स्कूल की बहन जी पिताजी से शिकायत करेंगी।

पुष्पा : (ख़ुश होकर पैसे कमीज़ की जेब में डालते हुए) तू बहुत अच्छा है लतपत छिंग। बस, मैं गई स्कूल।

पुष्पा लकड़ी की तख़्ती पर रुमाल में बँधा बस्ता रख कर, रसोई घर से बाहर पड़े अपने स्लीपर पांवों में पहन, धीरे-धीरे सीढ़ियां उतरती हुई घर के छोटे आंगन में आकर, पंजों के बल, आंगन के दरवाज़े का कुंडा खोलते हुए, अपने पिता जी की आवाज़ में पुकारती है।

पुष्पा : लछमण सिंह ऽ ऽ ऽ कुंडा लगा लेना बीबा ऽ ऽ ऽ।

और लछमण सिंह, रसोई घर की खिड़की में से झांक कर, आराम से इधर-उधर, नीचे-ऊपर देखती, स्कूल वक्त पर पहुँचने के खयाल को आधा मन में रखे, आधा भूले, स्कूल जा रही पुष्पा को देख कर कुछ झुंझलाता है, कुछ मुस्कुराता है।

समाप्त

बाल संसार समग्र

बाल कविताएँ

संतोष साहनी

परिचय

कुछ बरस हुए, वसन्त-बहार के खिलते, फूलते-फलते मौसम में मुझे शिमला पर्वत और उसके आस-पास के सौंदर्य स्थलों की सैर करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रकृति और बालकों के परस्पर स्वाभाविक ही गहरे संबंध के बारे में मैं बाल-कहानियां व बाल-नाटक लिखती ही रही हूं। लेकिन इस बार हिमांचल प्रदेश की प्राकृतिक सुन्दरता ने मुझे बालगीत लिखने की प्रेरणा दी।

यह गीत मैंने एक संगीत-नाटिका के रूप में यूँ रचे कि कैसे कुछ बच्चे छुट्टियों में अपने माता-पिता के संग सांप सलोटी चक्कर लेती, मोड़ लेती, एक पर्वत से दूसरे पर्वत पर चढ़ने के लिए, एक के बाद एक कई अंधेरी गुफ़ांए पार करती छोटी पर्वत-रेलगाड़ी के सफ़र करते, कालका स्टेशन से धीरे-धीरे, शिमला पर्वत पहुँचते हैं और पर्वतीय संसार के अनेकों अनेक सुन्दर रंग-रूप आश्चर्य और चाव से देखते अनुभव करते हुए, उनके बारे में अपने आप ही गीत-संगीत रचते हैं। खेलते, हंसते, सैर करते, गीत गाते बच्चे, प्रकृति के अनेक पहलुओं के बारे में सहज ज्ञान और उस ज्ञान से स्वाभाविक उपजते संगीत और साहित्य का ज्ञान भी प्राप्त करते हैं।

बाल कविताएं लिखते समय मैंने बच्चों द्वारा उच्चारण हो सकने के लिए सरल और सहज शब्द वाक्य चुनने की कोशिश की। विषय और भाव भी वह लिए जो बच्चों के मानसिक स्तर और रुचि के हों।

कविताओं को संगीत देते समय भी विषय-वस्तु, दृश्य-चित्रों को निखारने और उभारने वाले स्वर, स्वर समूह, ताल और लय मैंने सोचे और रचे।

बच्चों की मानसिक आयु और रुचि के मुताबिक विशेष गीत-संगीत रचे जाने चाहिए। यही मानते हुए मैंने 'पर्वत के गीत', 'सागर के गीत' और कई एक और गीत रचे हैं। बालगीत-संगीत मेरी राय में, बाल साहित्य सृजन का एक बहुत जरूरी और महत्वपूर्ण अंग है। हर स्कूल में विशेष तौर पर नर्सरी स्कूलों में तो एक संगीत अध्यापक का होना मैं जरूरी समझती हूँ। अपनी रची दो बाल-संगीत पुस्तकों में मैंने हर गीत के साथ उसकी स्वरलिपि भी दी है, ताकि गांव या शहर के किसी भी स्कूल में संगीत अध्यापक हारमोनियम की सहायता से, बच्चों को, मेहनत करके, सच्चे, सुरीले सुरों में से गीत-संगीत सिखा सकें। आमतौर पर हमारे स्कूलों में अधिकतर बच्चे राष्ट्रगीत या कोई प्रार्थना गीत भी एक सुर होकर नहीं गा सकते।

इस बालगीत संगीत संकलन में मैंने संगीत अध्यापक के लिए विशेष सुझाव भी दिए हैं। आशा है यह सुझाव क्लास या बालरंग मंच पर पेश करते वक्त सहायक होंगे।

'पर्वत के गीत', 'सागर के गीत' और मेरे रचे अन्य कई गीत, मेरे अपने निर्देशन में, रेडियो, स्टेज और दूरदर्शन पर, बच्चे बड़े चाव और सफलता से कई बार गा चुके हैं। अन्य कुछ प्रान्तों के बालशिविरों में और बाल रंगमंचों पर आयोजित किये प्रोग्रामों में भी बालक-बालिकाएं इनमें से कुछेक गीत गा चुके हैं।

संतोष साहनी

भूमिका

भारतीय भाषाओं विशेषतया हिंदी में, बच्चों के लिये उपयुक्त गीतरचना की ओर बहुत कम ध्यान दिया गया है। 'झूठी माया झूठी काया' जैसे घोर वैराग्य और निराशा भरे या भारी भरकम उपदेशों से लदे गीत जबर्दस्ती उनके गले उतार दिये जाते हैं। शास्त्रीय संगीत के नाम पर "मेरी आली पिया बिन" जैसे विरहगीत तोतारटंत पद्धति से उन्हें गाते देख हम विशेष संतोष का अनुभव करते हैं। रेडियो, टेलीविजन और फिल्मों के माध्यम से जो सस्ते इश्किया गाने निरंतर कानों पर पड़ कर उन्हें कंठस्थ हो जाते हैं, उन्हें सबके सामने गवाकर अभिभावकगण फूले नहीं समाते।

वास्तव में यह एक ज्वलंत समस्या है। बालकों के लिये संगीत कैसा हो इस पर गंभीरतापूर्वक विचार किया जाना आवश्यक है। चालीस वर्षों से अधिक समय तक संगीत शिक्षा के क्षेत्र में काम करने के अनुभव के आधार पर मैं कहना चाहूँगा कि बालकों की स्वाभाविक अभिरुचि और मनोविकास को ध्यान में रखकर ही, उनके लिये गीत रचना की जानी चाहिये। बच्चों के संगीत के लिये अनिवार्य रूप से आवश्यक है कि उसमें प्रसादगुण सर्वोपरि हो। इन गीतों की कविता, धुन और लय सभी सरल किंतु आकर्षक हों। वन, पर्वत, नदी, निर्झर, सागर, फूल, तितली, पक्षी, सूर्योदय, सूर्यास्त, चांदनी रात, वर्षा और वसंत के बारे में गीत उन्हें सिखाइये–उन्हें प्रकृति के पास ले जाइये। गीत की धुन ऐसी मोहक हो कि अनायास बच्चों की जबान पर चढ़ जाये। बच्चा सुनते ही थिरक उठे, ऐसी झूमती हुई लय होनी चाहिये। इस प्रकार की रचना सुनते ही बच्चे स्वयं आग्रहपूर्वक इन गीतों को सीखना चाहेंगे।

ऐसे ही बालोपयोगी गीतों की रचना का श्रेय श्रीमती संतोष साहनी को है– मैंने उन्हीं के भावपूर्ण कंठस्वर में गीत सुने– साथ ही बच्चों द्वारा गाये गये कैसेट पर रिकार्ड के रूप में भी। मुझे लगा कि यही वे गीत हैं जिनके लिए बच्चे तरसे हुये थे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन गीतों को सुनकर और गाकर वे फिल्मी गीतों को भूल जायेंगे। ये गीत स्वरलिपिबद्ध होकर पुस्तकरूप में प्रकाशित हो रहे हैं, इसका मुझे आनंद है। और भी संतोष की बात है कि इस पुस्तक की चित्र सज्जा स्वयं बच्चों ने की है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि बालकों की शिक्षण संस्थाओं तथा संगीत शिक्षकों द्वारा इस पुस्तक का समुचित स्वागत तथा उपयोग होगा। भारत की भावी पीढ़ी के शुभचिंतक इस महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिये संतोषजी के आभारी रहेंगे। इस पुस्तक के साथ ही साथ कैसेट पर भी ये गीत लागत मूल्य पर उपलब्ध हों, ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए। क्योंकि केवल स्वरलिपि के आधार पर अधकचरे शिक्षकों द्वारा गीत कभी-कभी मूलरूप से इतने अलग हो जाते हैं कि उन्हें पहचानना भी मुश्किल हो जाता है। सिखाते समय यदि स्पष्ट कर दिया जाय, तो अन्य भाषीय बालकों के लिये भी इन्हें सीखना मुश्किल न होगा।

स्वयं संतोष भी यह दावा करना नहीं चाहेंगी कि यह प्रयास सर्वथा त्रुटिहीन तथा सर्वांगपूर्ण है, किन्तु इतना तो अवश्य कहा जा सकता है कि यह सही दिशा में उठाया गया सही कदम है। इस महत्वपूर्ण उपक्रम के लिये उन्हें हार्दिक आशीर्वाद देता हूँ। शिशु कल्याण के लिये उनके द्वारा किये जा रहे कार्यकलापों की सफलता के लिये शुभ कामना व्यक्त करता हूँ।

विनय चन्द्र मौदगल्य
संस्थापक-संचालक
गंधर्व महाविद्यालय, नई दिल्ली

बाल संसार समग्र

पर्वत के गीत

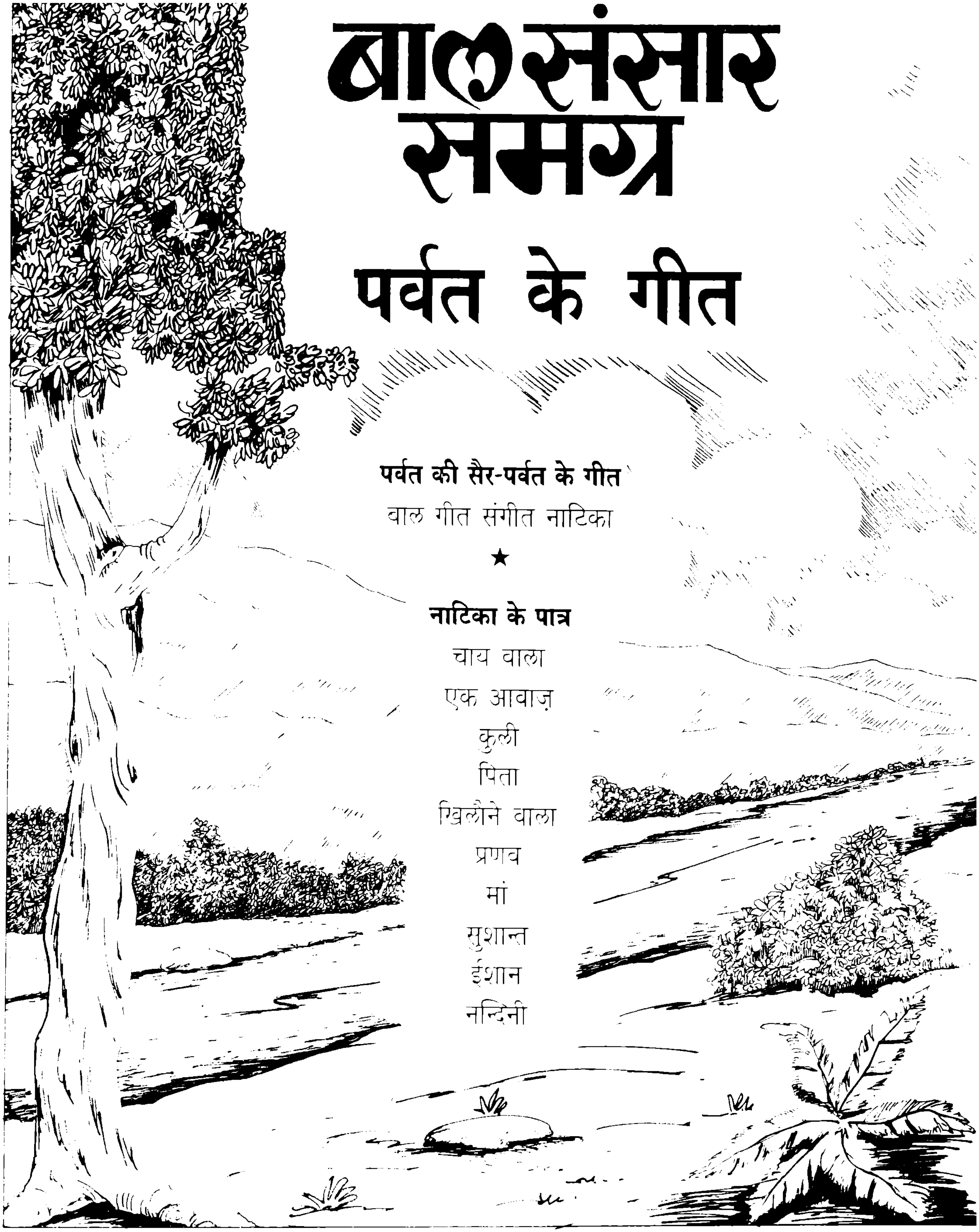

पर्वत की सैर-पर्वत के गीत

बाल गीत संगीत नाटिका

★

नाटिका के पात्र

चाय वाला

एक आवाज़

कुली

पिता

खिलौने वाला

प्रणव

मां

सुशान्त

ईशान

नन्दिनी

पर्वत की सैर, पर्वत के गीत

गीत-संगीत नाटिका

(रेलवे स्टेशन का वातावरण, लोगों की चहल पहल, किसी बड़ी रेलगाड़ी की सीटी और स्टेशन की घंटी की टिन ! टिन ! स्टेशन पर, चाय, अखबार, खिलौने बेचनेवालों की पुकारें)

चायवाला : १. चाय गरम...

अख़बारवाला : २. 'आज की ताजा खबर'

एक आवाज़ : ३. एक कप गरम-गरम चाय देना भाई चायवाले...

: ४.(किसी गाड़ी के छुक-छुक करके, चल पड़ने की आवाज़, किसी गाड़ी की सीटी)

चायवाला : ५. चाय गरम बाबूजी, चाय बिस्किट ! चाय ! चाय !

६. (स्टेशन पर चहल-पहल, दौड़ते जूतों की आवाज़)

७. (मां, पिता और बच्चे छोटी रेलगाड़ी के डिब्बे की तरफ़ तेज़ी से जा रहे हैं)

कुली : कौन से डिब्बे में सामान रखना है बाबूजी ?

पिता : इधर, इस डिब्बे में। अंदर ले आओ, यह सूटकेस भी।

खिलौने वाले की लंबी पुकार : एक रुपिया, एक रुपिया... लालमुंह वाला बन्दर एक रुपये में ! सूंढ़वाला हाथी ! एक रुपए में शेर... बच्चों के बढ़िया खिलौने...! एक रुपए में, एक रुपए में...!

प्रणव : मां, मुझको बन्दल चाहिए एक लुपए में... ।

मां : पहले गाड़ी में बैठेंगे फिर बन्दल खरीदेंगे। मेरी उंगली पकड़े रखो, भागो नहीं। सुशान्त, पिताजी को देखा ?

सुशान्त : हां मां। वह उस डिब्बे के दरवाज़े पे खड़े हाथ हिला कर बुला रहे हैं।

मां : जल्दी चलो फिर। अपना अपना बैग हाथ में है न !

मां : ईशान तुम्हारा बैग कहां है ?

ईशान : यह रहा मेरे हाथ में।

नन्दिनी : मां, इस गाड़ी में बैठेंगे हम ?

मां : हां।

ईशान : यह गाड़ी हमें परबत पर ले जाएगी ?

मां : हां।

(बच्चे तेज़ी से प्लेट फारम पर चल-दौड़ रहे हैं।)

प्रणव : मां, यह छोती शी गाड़ी है न !

ईशान : पर मां, इतनी छोटी-सी गाड़ी इतने बड़े पहाड़ पर कैसे चढ़ेगी ?

नन्दिनी : हां मां, इसके तो सिर्फ़, एक, दो, तीन और चार ही डिब्बे हैं।

मां (हंसकर) : सब बतलाऊंगी। पहले गाड़ी में बैठ तो जाओ।

पिता : (पुकारकर) ईशान, नन्दिनी, प्रणव, सुशान्त, इधर-इधर इस डिब्बे में ! मेरा हाथ पकड़ो प्रणव, ए शाबाश। ऐसे, ऐसे ऽ ऽ अन्दर आओ, आ जाओ सारी बानर सेना !

(डिब्बे से भाग कर अपनी-अपनी सीटों पर बैठने की, जूतों की आवाज़ ! गाड़ी की सीटी।)

नन्दिनी : अहा, इस डिब्बे में और कोई भी नहीं। (भागकर) मैं यहीं बैठूंगी, खिड़की के पास।

ईशान : तुम नहीं, मैं बैठूंगा खिड़की के पास। उठो !

नन्दिनी : (रुआंसी-सी) मां, देखो तो, ईशान ऽ ऽ !

मां : (हंसकर) अरे भई, दूसरी भी तो खिड़कियां हैं। ईशान, तुम उस खिड़की के पास बैठो।

प्रणव : मैं किश के पाश बैथूं मां ?

पिता : तुम हमारी गोद में।

प्रणव : नहीं, मैं भी खिलकी के पाश बैथूंगा।

(सीटी बजती है। घंटी बजती है ! गाड़ी चल पड़ती है)

नन्दिनी : हां मां, पिताजी, अब बताइए, इतनी छोटी-सी गाड़ी इतने बड़े परबत पर कैसे चढ़ेगी ? बड़े परबत पर चढ़ने के लिए तो बहुत लंबी गाड़ी चाहिए न !

पिता : नहीं बेटे, बड़े पहाड़ पर चढ़ने के लिए छोटी ही गाड़ी चाहिए। ऐसी गाड़ी, जो पहाड़ों के मोड़ों पर आसानी से घूम सके, जिसको चढ़ाई चढ़ते वक्त ज़्यादा वज़न उठाना पड़े।

सुशान्त : देखो ईशान, गाड़ी कैसे चक्कर ले रही है- सांप की तरह, रेंगती हुई।

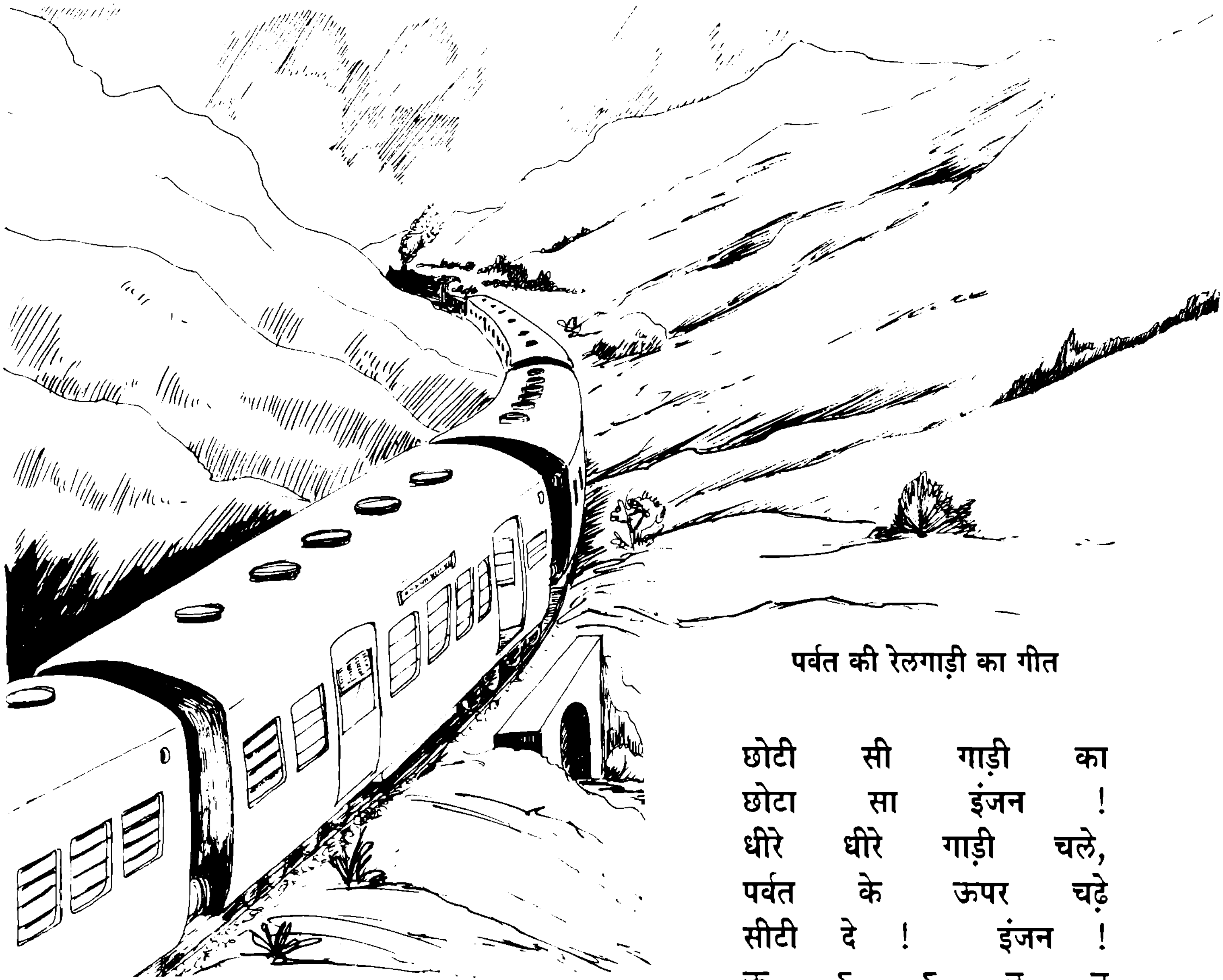

नन्दिनी : दिखाओ, दिखाओ ! हाँ, हाँ ! बिल्कुल सांप की तरह, धीरे-धीरे...

(गाड़ी की छुक छुक । सीटी)

प्रणव : छोती सी गाड़ी है यह- छोती शी ऽ ऽ

मां : (हंसकर) हां छोती शी गाड़ी और छोता शा इंजन ऽ ऽ

१. रेलगाड़ी गीत शुरू होता है । सभी मिलकर गाते हैं। सभी रेल की सीटी-सी आवाज़ की नकल करते हैं। सभी रेलगाड़ी की सीटी-सी आवाज़ से गाते हैं।)

पर्वत की रेलगाड़ी का गीत

छोटी सी गाड़ी का
छोटा सा इंजन !
धीरे धीरे गाड़ी चले,
पर्वत के ऊपर चढ़े
सीटी दे ! इंजन !
ऊ ऽ ऽ उ उ
ऊ ऽ ऽ ऽ ऽ !
छिक ! छिक ! छिक ! छिक !
छुक ! छुक ! छुक ! छुक !
छनन ! छनन ! छनन ! छनन !
झटपट झटपट ! खटपट खटपट
झटपट झटपट ! खटपट खटपट
ऊ ऽ ऽ उ उ
ऊ ऽ ऽ ऽ ऽ !
खिड़की से बाहर
दाएँ देखो ! बाएँ देखो !
दोनों ओर ! दोनों ओर !
पीले पीले खेत और

हरे हरे वन !
ऊ ऽ ऽ उ उ
उ ऽ ऽ ऽ ऽ !

(गीत समाप्त होता है।)

(गाड़ी चलने के हल्के साउंड इफेक्ट्स।इंजन की सीटी। पहियों की आवाज़। गाड़ी एक अंधेरी गुफ़ा में गुजर रही है)

नन्दिनी : अरे ! यह क्या ? पिताजी, गाड़ी पहाड़ के अंदर घुस रही है !

सुशान्त : बुद्धू ! पहाड़ के अन्दर, यह तो एक गुफ़ा है। है न पिता जी !

पिता : हां, हमारी गाड़ी एक पहाड़ी गुफ़ा के अन्दर से निकल कर, दूसरे ओर ऊंचे पहाड़ की तरफ जा रही है।

ईशान : गुफ़ा कैसे बनी ?

पिता : पहाड़ के रेलवे इंजीनियरों और मज़दूरों ने पहाड़ को काट कर गुफ़ाएं बनाईं। फिर इसमें रेल की लाइनें लगाईं और फिर, छोटी रेलगाड़ी एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ को कम वक्त में आसानी से पार करने लगी– समझे ! हूं ?

मां : बड़ा मुश्किल काम होता होगा पहाड़ में गुफ़ा बनाना।

पिता : हां ऽ ऽ पर इन्सान अपनी हिम्मत, और ज्ञान से मुश्किल से मुश्किल काम भी पूरा कर लेता है।

(गाड़ी के गुफ़ा में रुकने की आवाज़)

सुशान्त : गाड़ी रुक गई, गुफ़ा में ही !

नन्दिनी : क्यों ? पिताजी ?

पिता : कोई कारण होगा।

(टक, टक, टिक, टिक ! की आवाज़ सुनाई देती है)

सुशान्त : गुफ़ा में कुछ मज़दूर भी हैं- काम कर रहे हैं।

(टक ! टक ! टिक ! टिक टिन ऽऽ की आवाज़ फिर सुनाई देती है)

पिता : मैं पूछता हूं क्या बात है। ए भाई साहब, गाड़ी रुक क्यों गई ?(खिड़की से, गुफ़ा में बाहर देखकर कुछ पूछते हैं)

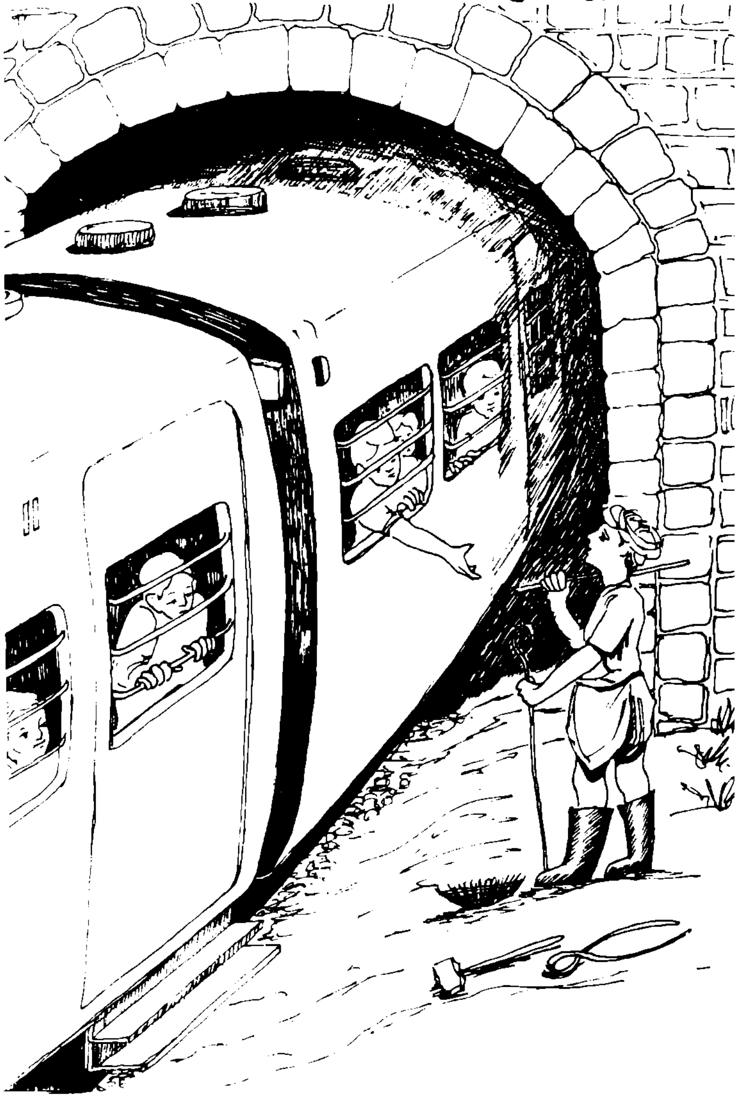

एक मज़दूर : रेल की पटरी पर कुछ पत्थर गिर पड़े थे और पटरी कुछ ढीली थी-अभी ठीक हो जाएगी।

(पहाड़ी मज़दूर गीत ! टिक-टिक, ठक, ठक की आवाज़ भी सुनाई दे रही है। साथ ही साथ मां, पिता और बच्चे सभी मिलकर गाते हैं)

पहाड़ी मज़दूर गीत

पत्थर कूटें,
सड़क बनायें,
पीठ पे भारी
बोझ उठायें,
लकड़ी काटें
पुल बनायें,
गाड़ी चढ़ें
तभी पर्वत पर
जब हम हरी
झंडी दिखलायें।
हंसते गाते
काम करें हम,
मेहनत करके
खाना खायें।

(गीत समाप्त। गाड़ी सीटी देती है)

एक मज़दूर : अब लाइन ठीक है।

की आवाज़

(फिर सीटी। और गाड़ी चल पड़ती है)

नन्दिनी : गाड़ी गुफ़ा को पार कर गई।

सुशान्त : अब दूसरा पहाड़ आ गया है पता है नन्दिनी !

प्रणव : अब दूशला पहाड़ आ गया है, दूशले पहाड़ पर धूप भी है।

मां : हां और कितना हरा भरा है दूसरा पहाड़।

ईशान : मां, वह सामने के पहाड़ों पर नीचे से ऊपर तक सीढ़ियां कैसी बनी हैं।

मां : (हंसकर) यह सीढ़ियां नहीं, यह पहाड़ी किसानों की हरी-भरी खेतियां हैं। पहाड़ों की ढलवानों पर बनाई है न किसानों ने, एक के बाद एक तो सीढ़ियां ही दीखती हैं।

सुशान्त : हां, कितनी सुन्दर लगती है—

गीत-पहाड़ी खेतियां

(बातचीत के ढंग में मां, पिता और बच्चे मिलकर गाते हैं)

पर्वत के खेत

जैसे सीढ़ी हो महल की,
या सीढ़ी ऊँचे मंदिर की !
पर्वत ढलवानों की खेती,
नीचे से ऊपर तक जाती।
हरी भरी पर्वत की खेती
कितनी ही है सुन्दर लगती।
दूर दूर तक जाए बिछती
मक्की, गेहूँ, धान की खेती।
जब पवन है सरसराती,
मस्त हो यह झूम जाती।
धूप का है सेक लेती
धीरे धीरे जाएं पकती
साल में दो बार पकती
साल में दो बार कटती।

कृषक का यह घर है भरती
यही है सबको अन्न देती।

(गाड़ी की रफ़्तार धीमी पड़ने लगती है। गाड़ी एकाध लाइन बदलती है)

सुशान्त : कोई स्टेशन आ रहा है।

ईशान : हां, देखो वह कहां। अरे, स्टेशन भी छोटा-सा ही है।

पिता : पहाड़ी गांव का स्टेशन है न! पहाड़ी गांव के घर भी छोटे हैं। वह देखो सुशान्त, छोटे-छोटे घर, इस पहाड़ पर और उस पहाड़ पर भी।

ईशान : और उस पहाड़ पर भी–

प्रणव : छोते-छोते धर- मां देखो उश पहाड़ पर भी
(सभी हंसते हैं)

(गाड़ी रुक जाती है स्टेशन पर आकर हल्के झटके की आवाज़ देकर)

किसी दूसरे डिब्बे से आवाज़ : कुली ऽ ऽ कुली ऽ ऽ सामान-उतारना भाई!

चायवाला : चाय गरम गर ऽ ऽ म- चाय बिस्किट!

सुशान्त : मां, मैं चाय पिऊंगा।

नन्दिनी : और मैं भी

ईशान : और मैं भी-

पिता : चायवाले भय्या, इधर आना भाई।

प्रणव : (खुश होकर पुकारता है) मां बन्दल! मां बन्दल !

नन्दिनी : देखिए मां प्रणव आपको बन्दर बुला रहा है बड़ा शैतान है।

प्रणव : नहीं ऽ ऽ वह देखो बन्दल!

ईशान : हां, वह देखो रेलवे स्टेशन के जंगले पर बैठा हुआ बन्दर! अरे वाह!

प्रणव : मां, बन्दल क्या खा रहा है?

पिता : (हंसकर) आम चूस रहा है। भला इसे आम मिल कहां से गया?

मां : किसी फलवाले की दुकान से उठा लिया होगा।

सुशान्त : या किसी के घर से चुराया होगा।

प्रणव : बन्द ऽ ऽ ल! बन्द ऽ ऽ ल!

नन्दिनी : ए ऽ ऽ, अजी सुनिए, बन्दर जी महाराज ऽ ऽ

(बन्दर गीत शुरू होता है। बीच-बीच में बन्दर की खी ऽ ऽ ऽ की आवाज़ गीत की लय बन्दर का तमाशा दिखाने वाले के डमरू के ताल में है)

सभी गाते हैं—

बन्दर जी महाराज !

सुनिये बन्दर जी महाराज !
क्या है आपके हाथ में आज
कहां से लाये हैं यह आम !
क्या यह चोरी का है काम ?
किसके घर से उठा के लाये ?
या, है कहीं से ख़रीद के लाये ?
पर पैसे तो नहीं आपके पास
अजी, आम का रस तो तुम चूसोगे,
गुठली भी, क्या खा जाओगे ?
अजी,आप तो बिलकुल बन्दर ही हैं!
आप, आप तो मियां मछंदर ही हैं !

सुशान्त : देखो नन्दिनी, एक और गुफ़ा आ रही है।

नन्दिनी : कहां ? कहां ?

प्रणव : किधल है गुफ़ा ? किधल है गुफ़ा आ गई ! मां गुफ़ा आ गई-फिर अंधेला आ गया गाड़ी में।

नन्दिनी : और गाड़ी के डिब्बे की बिजली जग गई।

प्रणव : अहा, गुफ़ा गुफ़ा। गुफ़ा !

ईशान : वह सामने देखिये सामने, फिर रोशनी, गोल गोल चक्कर गुफ़ा के पार दीख रही है।

(गाड़ी की छुक छुक।)

प्रणव : गुफ़ा खतम हो गई। धूप आ गई।

मां : गुफ़ा पार करके गाड़ी पहाड़ की दूसरी तरफ आ गई।

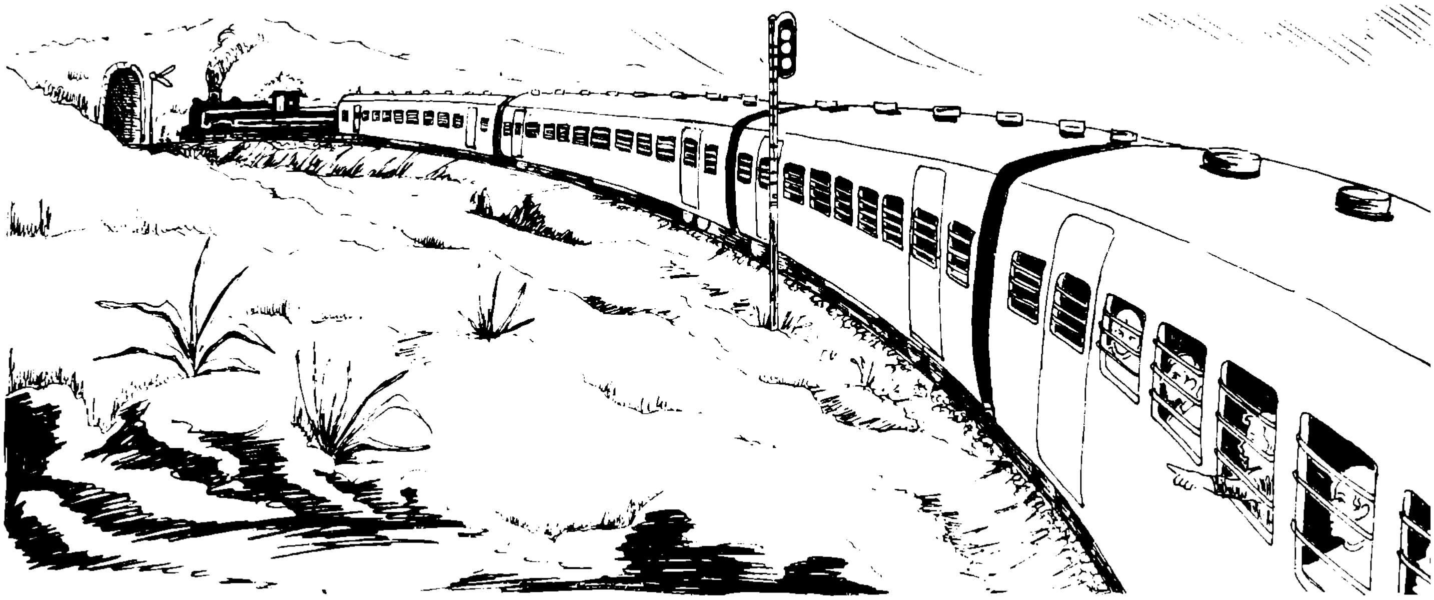

(गीत समाप्त होते-होते सीटी बजती है। घंटी बजती है। गाड़ी धीरे-धीरे चल पड़ती है—फिर तेज़ रफ़्तार से चल पड़ती है)

सुशान्त : और सामने देखिए पिताजी, और ऊंचे पहाड़ आ गए—पहाड़ों की लंबी, कतारें ही

कतारें- कैसे लहरा रही हैं।

पिताजी : हूं ऽ ऽ समुन्दर की लहरों की तरह एक के बाद एक और कितनी ही कतारें !

सुशान्त : देखो नन्दिनी, किसी लहर पर धूप है और किसी पर बादलों की छाया।

नन्दिनी : हाय ऽ ऽ कितनी ऽ ऽ कितनी सुन्दर लगती है– नीली-नीली परबत लहरें ऽ ऽ।

(सभी मिलकर गाते हैं–पलभर की खामोशी और फिर गीत आरम्भ होता है)

सभी मिलकर गाते हैं–

'परबत लहरें'

पर्वत लहरें, दूर दूर तक
लहराएं लहराएं !
नील गगन में सूरज चमके
और लहरें मुस्कराए।
पर्वत लहरें !
उड़ते, उड़ते बादल आएं,
सूरज को ढक जाएं !
सूर्य निकलना चाहे बाहर
बादल उसे छिपाएं
एक लहर पर धूप खिली है
एक लहर छाया में !
पर्वत लहरें दूर दूर तक
लहराएं ! लहराएं !

(गीत समाप्त- फिर पलभर खामोशी)

प्रणव : पिताजी यह देखो लंबे-लंबे पेड़।

पिता : हां-

नन्दिनी : इन पहाड़ों की ढलानों पर दूसरी किसम के पेड़ हैं-यह कौन से पेड़ हैं ?

पिता : इन पेड़ों का नाम है देवदार।

मां : ढलवानों पर देवदार के हरे-हरे पेड़-इनके पत्तों के गुच्छे, सुबह की धूप में मशालों से जगमगाते दीखते हैं।

(पहाड़ों में वनों में गूंजती, गाड़ी की सीटी। गाड़ी चलने की आवाज़ की गूंज।)

मां : यह जंगली अखरोट का पेड़ है न जी ?

पिता : हां और यह खुमानी का।

ईशान : इस पहाड़ की तरफ बड़ी ठंड है मां।

मां : हां बेटे, पहाड़ की इस तरफ सुबह की धूप नहीं पड़ती न इसलिए देखो, उन सामने के पहाड़ों पर कितनी बढ़िया धूप खिली है।

पिता : पर अब ठंड भी ज़्यादा हो रही है। ज़्यादा ऊंचाई पर आ गए हैं न हमलोग। अपने-अपने स्वैटर और कोट पहन लो बच्चा लोग।

मां : हां बच्चो। नन्दिनी, तुम्हारी जुराबें किधर हैं ?

नन्दिनी : यह रहीं, मेरी कोट की जेब में, अरे, दूसरी जुराब कहां गई ? हां कोट की दूसरी

जेब में यह रही।

प्रणव : मां, यह नन्दिनी बहुत खराब है। झट जुराब उतार देती है। देखो, मैंने नहीं उताली मेली लाल जुराब। मेरे तो जूते भी लाल हैं और–

(गाड़ी चलने की धीमी आवाज़)

मां : बहुत अच्छा बेटा है प्रणव !

ईशान : बरफ़ ! बरफ़ ! सुशान्त ! नन्दिनी ! मां ! देखो बरफ़ ! वह दूर !

नन्दिनी : कहां ? कहां ?

(डिब्बे में हलचल। इधर उधर दौड़)

सुशान्त : कहां ? हां ऽ ऽ दूर, परे उन पहाड़ों के पीछे से झांक रही है बरफ़ की चोटियां...

(गाड़ी धीमी रफ़्तार से चल रही है)

मां : वह देखो प्रणव, वह दू ऽ ऽ र। सफ़ेद सफ़ेद।

प्रणव : वह शफ़ेद, शफ़ेद ? वह बरफ़ है मां ?

मां : हां ऽ ऽ देखो तो कैसे सुबह की धूप में मुस्करा रही है किसी परी की तरह।

ईशान : नहीं रुई की तरह !

सुशान्त : जी नहीं, सफ़ेद हंस की तरह।

प्रणव : मां यह बरफ़ है? नहीं यह तो आईसक्रीम है? मैं आईस्क्रीम खाऊंगा।

ईशान : धत्। कभी पहाड़ों पर भी आईसक्रीम पड़ती है !

सुशान्त : यह तो बरफ़ के घर और

बरफ़ की गुफ़ाएं दीखती हैं।

नन्दिनी : हां ऽ ऽ, वोह ऽ ऽ सफ़ेद सफ़ेद। अरे, हाय ऽ ऽ, अहा !

प्रणव : कहां है ऽ ऽ किधल ?

पिताजी : अहा, क्या खूबसूरत है- दूध-सी सफ़ेद–

(परबत-हिम गीत आरम्भ। सभी गाते हैं–)

पर्वत हिम
दूध सी सफ़ेद है
रूई सी नरम !
ऊंची-ऊंची चोटियों पे
लेट रही हिम !
सबसे ऊँची चोटियों पे
करती है निवास !
रहती दूर, बहुत दूर
आती नहीं पास।
हँस के बुलाऊँ
आओ ! आओ !
मेरे पास।

(गीत समाप्त—पलभर शान्ति।
गाड़ी चल रही है। सीटी)

मां : उत्तर की तरफ बरफ़ों से लदी ऊंची ऊंची चोटियां और दूसरी तरफ दूर मैदानों की तरफ उतरती परवतों की ढलवानें, और ढलवानों पर हरे भरे खेत और बन ! वाह !

नन्दिनी : मां, पिताजी, हम पहाड़ पर ही क्यों नहीं रहते। मैं तो परबतों पर ही रहना चाहती हूं।

मां : पर तुम्हारे पिताजी की नौकरी जो मैदान के शहर में है। और छुट्टी के लिए हम तुम यहां आ गए।

प्रणव : (थोड़ा-थोड़ा रोने लगता है)

मां : क्या हुआ प्रणव ?

प्रणव : मेरे हाथ ठंडे हो गए है-ऊ हूं !

मां : अरे ! ओहो ! आजा, आजा मेरी गोदी में। अपने छोते-छोते हाथ मेरी गरम शाल के अन्दर कर लो। गरम हो जाएंगे।

(मां प्रणव के हाथ चूमती है। गाड़ी की रफ़्तार धीमी पड़ती है। सीटी)

पिता : बस, अब हमारा स्टेशन आने ही वाला है। सुशान्त, ईशान, नन्दिनी अपने अपने बैग, अटैची केस, अपनी चीज़ें संभाल लो सब लोग। प्रणव की मां, खाने का डिब्बा और टोकरी, सीट के अंदर से निकालना और मैं सूटकेस निकालता हूं।

(सामान खींचने की आवाज़। झटके के साथ गाड़ी रुकती है)

खोमचे वाले की आवाज़ : गरम गरम पकौड़े। चाय गरम।

पिताजी : कुली ऽ ऽ यह सामान उतारना भाई- चलो वानर सेना ! सभी लोग गाड़ी से उतरो- ए शाबाश ! संभल के- प्रणव। उतरो, देखकर, संभल कर।

(सभी कूद के नीचे उतरते हैं)

प्रणव : मां-मेरे हाथ गरम हो गए।

नन्दिनी : पिताजी, हम कहां जा रहे हैं ?

पिता : यहां एक छोटे से होटल में हमने एक कमरा लिया है किराए पर। वहीं जा रहे हैं।

ईशान : मां मुझे बहुत भूख लगी है।

पिता : अभी थोड़ी देर में खाना खाएंगे।

सुशान्त : अहा, यहां कितने सुन्दर लंबे-लंबे पेड़ हैं।

मां : कितना घना जंगल है।

नन्दिनी : यह कौन से पेड़ हैं ?

सुशान्त : यह शायद-पिताजी, यह चीड़ के पेड़ हैं न पिता जी।

पिता : हां, देखो इनकी सूखी, पतली, सुईयां पहाड़ी धरती पर कैसे बिखरी हुई हैं।

प्रणव : (सूंघकर) हां आ रही है, आ रही है सुगंध मुझे भी (छींकता है)।

(सबकी हंसी)

ईशान : मुझे दो चीज चीड़ का गुच्छा नन्दिनी ऽ ऽ देखो मां- ऽ ऽ देखूं तो कैसे नहीं देती।

नन्दिनी : नहीं दूंगी।

प्रणव : मैं पकड़ लूंगा नन्दिनी को।

नन्दिनी : तुम नहीं पकड़ सकते !

मां : चीड़ बन की भी अपनी तरह की भीनी-भीनी सुगंध है।

नन्दिनी : हां ऽ ऽ मुझे भी सुगंध आ रही है। कितनी अच्छी ! प्रणव, यह चीड़ का गुच्छा सूंघो-

(दौड़ भाग। हंसी, खेल और किलकारियों की आवाज़)

सुशान्त : वह छू लिया ईशान को।

ईशान : नहीं, अभी नहीं।

पिता : छू लिया ! पकड़ लिया !

('परबत-बन' गीत मां शुरू करती हैं,सभी गाते हैं)

पर्वत वन गीत

पर्वत वन
सघन सघन।
देख देख हो
हर्षित मन।
हरे हरे और
लंबे, लंबे!
इक सौ! दो सौ!
चार पांच सै!
कितने, कितने,
जाने कितने,
इनके तन!
इनकी खुशबू
सूंघ सूंघ कर,
बीच ही इनके
खेल, खेल कर,
हर्षित पुलकित
हो तन मन!
पर्वत वन
सघन! सघन!

गीत समाप्त। पलभर चुप्पी।

प्रणव : मां, मुझे भूख लगी है।

नन्दिनी : मां, मुझे भी।

मां : अरे, रेलगाड़ी में सारा रास्ता कभी मूँगफली, कभी मटरी, कभी बिस्किट खाते आ रहे हो इतनी भूख कैसे लग आई?

सुशान्त : मां मुझे भी भूख लगी है।

नन्दिनी : मां हम लोग, हम लोग अभी इतना खेले भी तो हैं।

ईशान : और गाने भी कितने गाए हैं।

पिता : और पहाड़ की ठंडी स्वच्छ हवा में तो भूख तेज़ होती ही है। प्रणव की मां, मुझे भी भूख लग रही है।

मां : तो क्या मुझे ही भूख नहीं लग रही! मुझे सबसे ज़्यादा भूख लगी है। चलो भागो, सभी दौड़ के पहुंचो होटल के कमरे में। वहीं जाकर अपना खाने का डिब्बा खोल लेंगे। गरमा गरम आलू के पराठे, मटर पनीर की भाजी और पकौड़े।

ईशान : गरमा गरम सब कुछ खा जाएंगे।

प्रणव : शब कुछ गलमा गलम। मां मैं थक गया।

मां : इसे ज़रा गोद उठा लीजिए।

पिता : (प्रणव को कंधे पर बिठाकर) ऐ शाबाश! हो जाओ सवार घोड़े पर। चलो जी बानर सेना, अपने होटल के कमरे में।

सुशान्त : कमरे में नहीं पिताजी, मां, यहीं पेड़ों के नीचे दरियां बिछाकर बैठेंगे और खाना खाएंगे। कितना मज़ा आएगा।

ईशान : हां-हां।

नन्दिनी : हां मां, यहीं पेड़ों के नीचे।

पिता : बिल्कुल ठीक। यहीं डिब्बा खुलेगा खाने का। दरियां

बिछाओ जी, दरियां। सुशान्त, नन्दिनी, प्रणव ऽ ऽ और ईशान तुम टोकरी में से तश्तरियां निकालो और मैं अभी उधर नदी से पानी लेके आया बाल्टी में ऽ ऽ।

(पिता गाते हुए जाने लगते हैं- परबत बन ऽ ऽ)

नन्दिनी : नदी ? नदी कहां है ?

पिता : बस कुछ ही नीचे, इन दो पहाड़ियों के बीचोंबीच में। मैं अभी आया। तुम लोग डिब्बा खोलो और खाना शुरू करो।

सुशान्त : पिताजी, मैं भी आपके साथ चलता हूं।

ईशान : मैं भी।

नन्दिनी : मैं भी।

सुशान्त : मां, नदी के किनारे चल कर ही खाना क्यों न खाएं। दरियां और खाने की सभी चीजें नदी के किनारे ही ले जाएंगे- हमारा बड़ा सामान होटल पर छोड़ देते हैं और...

पिता : अच्छी बात है ऐसा ही करेंगे।

मां : पर यह प्रणव तो सो गया है, दरी पर।

पिता : मैं इसे उठा लेता हूं। बाल्टी तुम पकड़ो। बड़ा बढ़िया प्रोग्राम है। तुम लोग पहाड़ी नदी भी देख लोगे। तो चलोजी वानर सेना, राईट ! लेफ्ट ! राईट ! लेफ्ट ! इधर, उधर जंगल के बीचोंबीच, इस पगडंडी पर से उतरते चलो।

(घने बन में पेड़ों की साएं, साएं)

सुशान्त : देखो ईशान पेड़ कैसे झूम रहे हैं इधर, उधर...

मां : परबत की ठंडी पवन बन में घूम घूम कर गीत गा रहे हैं...

गीत 'परबत पवन' (मां शुरू करती है।)

पर्वत पवन

पर्वत के वन में
घू ऽ में ऽ प ऽ व ऽ न !
स ऽ न ऽ न ! स ऽ न ऽ न !
झू ऽ म, झू ऽ म जाये सारा,
झुक झुक जाये सारा
पर्वत का वन
घू ऽ में ऽ प ऽ व ऽ न !
सूखे सूखे पत्ते गिरें,

धरती ऽ पे आन गिरें
खनन ! खनन !
पर्वत के वन में
घू ऽ में ऽ प ऽ ब ऽ न !

(गीत गाते हुए सभी चलते-चलते नदी के किनारे पहुंचते हैं- कभी-कभी दौड़ कर उतरने की, पैरों की आवाज़, नदी की झर ! झर ! भी, यहां ज़रा पहले से, शुरू हो जाती है)

प्रणव : (नींद से जागकर) नदी ! नदी ! नदी ! ईशान, नदी !

मां : अरे-आप जग उठे प्रणव जी !

सभी बच्चे : (हंसकर) नदी, नदी, नदी, सचमुच ! वह, वह सामने !

(नदी की झर, झर, पत्थरों से टकराने की आवाज़)

नन्दिनी : किधर से ? इधर से ऽ ऽ सुशान्त ?

ईशान : नदी भी गाना गा रहीं है। सुना प्रणव।

प्रणव : नदी गाना गाती है ? नदी कहां से आ रही है ?

मां : नदी से पूछो।

'परबत-नदिया' गीत। (सभी बच्चे बारी-बारी से सवाल करते हैं और मां के स्वर में नदी जवाब देती है।)

सभी बच्चे मिलकर गाते हैं प्रश्न—

पर्वत नदिया
बहो, बहो !
अपनी कहानी
कहो, कहो !
कहाँ से आई ?
कहाँ चली ?
कहाँ चली
कहाँ चली ?

नदी का उत्तर—

सूरज निकला
हिम पिघली,
झर, झर, झर, झर,
झर, झर, झर, झर
झर झर झर झर,
झर झर झर मैं
बह निकली !

नदी की झर, झर, झर। परवत के पक्षियों की कभी, कहीं आवाज़ (पलभर खामोशी।)

नन्दिनी : अरे बाप रे ! कितना ठंडा पानी है ऽ ऽ ज़रा हाथ डालो पानी में ईशान। मेरे हाथ कितने ठंडे हो गए हैं।

ईशान : हां, मेरे भी- देखो मां, सुशान्त नदी के पत्थरों पर कूद-कूद कर नदी के पार जा रहा है। मां, सुशान्त को मना करो, पानी में गिर पड़ेगा। पिताजी ऽ ऽ देखिए।

मां : सुशान्त, आओ बेटे, पहले खाना खा लो।

पिता : सुशान्त इधर आओ, निकालो जी टिफ़न कैरियर से गरमा गरम आलू के परांठे और मटर पनीर।

मां : इतनी ठंड है, और देर भी कितनी हो गई है। परांठे तो ठंडे पड़ गए होंगे।

पिता : फिकर न करो। सब हज़म

हो जाएगा पहाड़ी नदी का साफ़ मीठा पानी पीकर । आओ बच्चा लोग । वाह भई, क्या बढ़िया मटर पनीर बनाए हैं । मीना, तुम्हारा भी जवाब नहीं ।

मां : (हंसकर) अजी छोड़ो भी ! सब कुछ तो ठंडा हो गया ।

सुशान्त : इतना ठंडा पानी है । पर पीकर और मुंह धोकर मज़ा आता है, मां, मेरे परांठे पर थोड़ा मटर पनीर और डालो ।

नन्दिनी : मेरे परांठे पर भी । और आम का अचार भी तो दो मां ।

ईशान : मुझे भी ।

प्रणव : अचार में बहुत मिलची है- मां मुझको हलवा दो मीठा-मीठा । वह देखो बन्दल-बन्दल ।

ईशान : कहां ?

प्रणव : वह पेड़ पर बन्दल । काला काला बन्द ऽ ऽ ल ।

पिता : यह नहीं बन्दर, नहीं हज़ूर,
यह है लम्ब पूंछ लंगूर !

पिता 'लंगूर गीत' गाने लगते हैं—

सभी बच्चे और मां गीत की पंक्तियां दोहराते हैं—

यह नहीं बन्दर, नहीं हजूर !
यह तो लंबपूंछ लंगूर !
काला मुँह, मटकती आँखें
बदन पे नीला नीला रोम
चीड़ पेड़ के ऊपर बैठा
इसका पिचका गाल ।
देखो इसकी शान गरूर !
कितनी लंबी पूंछ है इसकी
पर छोटे कान ज़रूर !
तोड़-तोड़ पत्ते पेड़ों से
अपना पेट भरे भरपूर !
पर्वत वासी, है वन वासी
राजा, लंब पूंछ ! लंगूर !

(गीत समाप्त होता है)

प्रणव : देखो, देखो, नन्दिनी ! राजा लंब पूंछ लंगूर झूला झूल रहा है ।

ईशान : अरे वाह ! एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कैसे झट से कूद गया ।

पिता : अपने साथियों के पास जा रहा होगा न ।

नन्दिनी : लंगूर तो पहाड़ के जंगलों में ही रहते हैं न पिताजी ।

पिता : हां बेटे ।

मां : अब दोपहर ढलने लगी है । देखो, सामने के पहाड़ों और पेड़ों की परछाइयां लंबी हो रही हैं ।

पिता : और ठंड भी ज़्यादा हो गई है ।

मां : अब चलना चाहिए । उतराई उतरना तो आसान था अब चढ़ाई चढ़नी होगी—देर लगेगी ।

पिताजी : हां चलो भई वानर सेना ।

प्रणव : (हंसकर) लंबपूंछ लंगूल!

पिता : (हंसकर) ठीक है! चलो भई

लंगूर सेना! सामान इकट्ठा करो। सुशान्त, तुम दरियां उठाओ। ईशान तुम खाने का डिब्बा और नन्दिनी तुम पानी की खाली बाल्टी उठाओ। और प्रणव—तुम मेरी उंगली पकड़ो और रेडी, स्टेडी, ऽऽ स्टार्ट!

सुशान्त : नमस्ते पहाड़ी नदी! फिर मिलेंगे।

ईशान : नमस्ते पहाड़ी नदी! फिर मिलेंगे।

नन्दिनी : नमस्ते पहाड़ी नदी! फिर मिलेंगे।

प्रणव : नमस्ते पहाली नदी! झर, झर, झर गाने वाली नदी!

(पलभर की चुप्पी)

प्रणव : देखो मां फूल छोता शा। और यह भी—और यह भी।

मां : हां! यह लाल, यह काशनी- अरे, यहां, इस ढलवान पर कितने सुन्दर फूल हैं!

(सभी चढ़ाई चढ़ने लगते हैं और परबत-फूल गीत शुरू होता है।)

सभी मिलकर गाते हैं—

ढलवानों की
हरी घास पर
पीले, पीले,
नीले, नीले,
और सफ़ेद,
नरम! नरम!
गोल! गुलाबी
और काशनी
नटखट! नटखट!
सुन्दर फूल!
चट्टानों के
कोनों में से
चुपके! चुपके!
झांक रहे हैं
हवा में हंस हंस
झूम रहे हैं
पर्वत फूल

(चढ़ाई चढ़ते-चढ़ते गीत समाप्त होता है। गीत समाप्त होने पर)

प्रणव- देखते हुए: यह परबत फूल! वह भी परबत फूल! और नदी? नदी कहां गई?

नन्दिनी : नदी छिप गई!

ईशान : नदी नीचे रह गई।

पिता : पर सुनो, सुनो, नदी का गीत अभी भी सुनाई दे रहा है। सुनाई दे रहा है प्रणव?

प्रणव : झर झर झर हां, नहीं झर-झर झर नहीं सुनाई देता।

सुशान्त : हम लोग चढ़ाई चढ़ते ऊपर ऊपर आ रहे हैं-तो झर झर आवाज़ कम हो रही है।

मां : और सुनो! सुनो एक नया गीत!

(झींगुरों की आवाज़ शुरू होती है)

नन्दिनी : यह आवाज़, यह किसकी है मां?

ईशान : हां यह, यह क्या आवाज़ है

चिर, चिर, चिर ?

सुशान्त : सुनो, अब तो सारा बन गूंजने लगा। यह, यह झींगुर तो नहीं पिताजी ?

पिता : जी हां ऽ ऽ झींगुर ही तो हैं।

ईशान : यह झींगुर गा रहे हैं पिताजी ?

पिता : गा नहीं बजा रहे हैं ?

नन्दिनी : बजा रहे हैं ? क्या पिताजी ?

अरबों, झींगुर होंगे इस इतने बड़े बन में।

नन्दिनी : लाखों, करोड़ों ? अरबों ?

सुशान्त : तो और क्या, इतना भी नहीं पता !

नन्दिनी : झींगुर के झिन झिन स्वरों को सुनकर गाकर उनकी नकल करती है। झिन झिन झिन।

पिता : नन्हा झींगुर एक कीड़ा होता है। पेड़ों में बैठा अपने पर से पर रगड़ता है बहुत तेज़ी से तो ऐसा गीत सुनाई देता है। सारा बन गूंजने लगता है।

ईशान : एक ही झींगुर के पर रगड़ने से ?

पिता : नहीं

सुशान्त : अरे बुद्धूनाथ, एक झींगुर नहीं हजारों, लाखों, करोड़ों,

(झींगुर गीत आरम्भ)

नन्दिनी (गाकर) : सं नी सं नी, सं रे, सं नी।

ईशान(गाकर) : नहीं, सं रें, सं रें, सं रें, सं रें, सं नी।

झींगुर गीत

सभी गाते हैं—

पर्वत वन में
झींगुर को सुन
झनन झनन झिन
झिन झिन झिन !

झिन झिन झिन झिन
झिन झिन झिन !
पर से पर
टकरा के बजाये
झिन झिन की
सुन्दर धुन,
पेड़ों में छिप
झींगुर बैठे
दीख न पायें
सिर्फ़ बजायें
झिन झिन की
सुन्दर धुन
गूंजें वन
खुश हो मन।

(गीत समाप्त। झींगुरों की आवाज़ बराबर सुनाई दे रही है)

प्रणव : (रोकर) मां, मेरे हाथ फिर थंदे हो गए।

मां : आओ, मैं तुम्हें उटा लूं। ऐ शाबाश, अब अपने छोते-छोते हाथ मेरी शाल के अन्दर रखो। ऐशे ऽ ऽ। मेरा पारा-पारा पनव !

प्रणव : मैं पनव नहीं,प्रणव हूँ।

मां : (हंसकर) हां, प्रणव।

ईशान : मां, मुझे भी टंड लग रही है।

पिता : बस अब होटल नज़दीक ही है। पहुंचते ही गरमा गरम चायबिस्किट- मिलेंगे।

सुशान्त : और डबल रोटी, मक्खन,

नन्दिनी : और पकौड़े !

ईशान : और चटनी पुदीने अनारदाने की।

मां : और प्रणव के लिए गरम-गरम दूध और मीठे-मीठे बिस्किट।

पिता : बस यह आखिरी चढ़ाई है फिर होटल आ जाएगा। चलो जी। छोटी सी गाड़ी बनाकर चलो।फिर से गाओ, छोटी-सी गाड़ी का छोटा-सा इंजन।

ईशान : (गाता है) धीरे-धीरे गाड़ी चले।

नन्दिनी : परबत के ऊपर चढ़े

प्रणव : सीटी देवे इंजन।

सुशान्त : ऊ ऽ ऽ ऽ

नन्दिनी : हाय ! मैं तो थक गई हूं।

ईशान : मैं तो नहीं थका बिलकुल भी। पर भूख लगी है, ज़ोर से।

पिता : (हंसकर) पहाड़ पर ऐसा ही होता है। बन्दरों को भूख लगी ही रहती है सारा वक्त।

नन्दिनी : और नींद भी आ रही है।

पिता : यह लो, आ गया होटल। बस अब तुम लोग डट के खाओ, पिओ और फिर हम तुम्हारे बिस्तर बिछा देंगे। और घुस जाना अपने-अपने बिस्तरों में।

मां : अजी देखो तो, सूरज की सुनहरी किरणें दूर के परबतों पर पड़ने लगीं।

पिता : हां, हां ! देखो, उत्तर पूरब

की बरफ़ीली चोटियों पर भी।

('उ हू ऽ हू ! उ हू ऽ हू ऽ ।' किसी पक्षी का स्वर सुनाई देता है)

ईशान : यह कौन बोल रहा है ?

पिता : मेरे ख्याल में यह कठफोड़वा पक्षी है । किसी पेड़ में बैठा बोल रहा है ।

(घंटियों की गूंज)

मां : गाएं, बकरियां, ऊपर की ढलवानों से नीचे उतर रही हैं।

नन्दिनी : क्यों

मां : सुबह घास चरने ऊपर चढ़ी होंगी । अब नीचे उतर रही हैं। अपने घर लौट रही हैं ।

ईशान : इनका घर कहां है ?

(घण्टियों की आवाज़ ज़रा नज़दीक आ रही है)

मां : वह देखो, सामने छोटे-छोटे घर ।

नन्दिनी : यह पहाड़ी किसानों के घर हैं न !

(गाएं, बकरियों की बाएं, बाएं, मैं ऽ ऽ मैं ऽ ऽ की आवाज़ सुनाई देती है)

मां : हां ।

ईशान : शाम की धूप चीड़ के पेड़ों पर भी पड़ रही है मां ।

मां : हां बेटे ।

नन्दिनी : और बकरियों और गऊओं पर भी ।

(पलभर चुप्पी । किसी पक्षी की धीमी कू ऽ ऽ कू ऽ ऽ की आवाज़)

सुशान्त : (धीमें स्वर में) सुनो ईशान, सुनो नन्दिनी—यह किस पक्षी की आवाज़ है ?

(कू ऽ ऽ ! कू ऽ ऽ के स्वर)

पिता : सभी पहाड़ी पक्षी अपने पेड़ों पर उतर रहे हैं रात को सोने के लिए ।

मां : और यह हमारा छोता-सा पंछी पनव, नहीं प्रणव तो सो गया मेरे कंधे पर ही ।

पिता : पहुंच गए होटल पर । आओ, चलो बच्चों अन्दर ।

(गाएं, बकरियों के गले की घंटियों की धीमी आवाज़ । दूर से आती बाएं ऽ बाएं । मैं ऽ मैं ऽ की आवाज़)

(मां, बच्चे और पिता होटल के अन्दर चले जाते हैं ।)

(पहला भाग समाप्त)

दूसरा भाग

दूसरे दिन सुबह-सबेरे

(पहाड़ी कोयल के प्रभात गीत के स्वरों की आवाज़ सुनाई देती है)

पिता : (बिस्तर में लेटे-लेटे धीमी आवाज़ में) कोयल का गीत, सुना तुमने मीना ? जागो, सुनो तो, पहाड़ी कोयल गा रही है।

मां : (उनींदे में) ऊं ऽ ऽ। क्या कहा आपने ?

पिता : कोयल ! कोयल गा रही है बाहर, किसी पेड़ पर, जागो बच्चो, कोयल का गीत सुनो ऽ ऽ।

कोयल के मधुर व सुरी-से स्वर होटल के कमरे के बाहर सुनाई देते हैं। स्वर कुछ यूँ है—

प ऽ ग ऽ, प ऽ ग ऽ, प ऽ रे ऽ रे ऽ ऽ,

धृ ऽ स ऽ, धृ ऽ स ऽ, धृ ऽ स ऽ, धृ ऽ स ऽ।

मां और पिता अपने बिस्तरों में लेटे-लेटे ही गाते हैं—

पर्वत की कोयल,
दीख नहीं पाये।
वन में छुपी कहीं,
लबा गीत गाए।
सं ऽ ध ऽ सं ऽ ध ऽ
सं ऽ प ऽ प ऽ ऽ ऽ
रे ऽ म ऽ रे ऽ म ऽ
रे ऽ म ऽ म ऽ !
चोंच से बांसुरिया
सुन्दर बजावे,
सुन्दर बजावे,
सुन्दर बजावे !

मां : अहा, कितनी प्यारी, मधुर आवाज़ है। पहाड़ी कोयल की। (धीमे) ईशान, सुशान्त, नन्दिनी, जागो, सुनो, सुनो पहाड़ी कोयल गा रही है।

नन्दिनी : मां, मैं तो पहले ही से जागी हुई हूं। ईशान, सुनो, सुशान्त। यह तो अभी तक सोए पड़े हैं।

(कोयल की पुकार)

नन्दिनी : (बिस्तर से कूदकर) मां, पिताजी, मैं कमरे के बाहर जाकर देखती हूं कोयल कौन-से पेड़ पर बैठी गा रही है। (भागती है)

मां : अरे नन्दिनी ऐसे नहीं। बाहर बड़ी ठंड है। स्वेटर और जुराब जूते पहन कर जाओ। अरे

(नन्दिनी दरवाज़ा खोलकर जाती है। खुले दरवाज़े से कोयल का गीत सुनाई देता है। नन्दिनी कोयल के स्वरों की नकल करती है फिर कमरे में लौट आती है।)

नन्दिनी : (कमरे में आकर) पिताजी ऽ। मैंने कोयल का गीत तो सुना। लेकिन कहीं दिखाई तो नहीं दी कोयल।

पिताजी : और हमने कोयल का गीत भी सुना और तुम्हारा भी।

(कोयल-गीत फिर सभी गाते हैं। गीत समाप्त होता है।)

पिताजी : देखो जी बानर सेना, कल हम यह पहाड़ उतर कर नदी के किनारे गए थे। आज सुबह तुम सब जल्दी से तैयार हो जाओ, उधर सामने की पहाड़ी की सैर के लिए निकलेंगे। ठीक है ?

सब : हां जी, ठीक है।

मां : स्वेटर जूते पहन लो भई सब लोग।

प्रणव : मेरा जूता ऽ ऽ, मेरे लाल जुराब, किधर हैं ?

मां : मैं पहनाती हूं।

पिता : ईशान तुम्हारे बूटों के तसमे खुले हुए हैं। बांधो, नहीं तो गिरोगे।

ईशान : बांधता हूं।

(कमरे में जूतों की चहल-पहल, दरवाज़ा खुल रहा है, बंद हो रहा है)

पिताजी : क्यों भई, हो गए तय्यार ? तो चलो, रेडी ऽ ऽ, स्टैंड। और स्टार्ट। लेफ्ट, राईट, लेफ्ट राईट !

(सभी लेफ्ट राईट कहते और अपने होटल से बाहर पर्वतीय वन की तरफ चल पड़ते हैं)

प्रणव : (गाता है) छोती शी गाड़ी का

सभी : (धीमे स्वर में गाते हैं) छोता शा इंजन।

(आधा या सारा गीत धीमें स्वर में सभी चलते-चलते गा रहे हैं। गीत समाप्त। पल भर चुप्पी)

मां (धीमें स्वर में) : चारों तरफ पहाड़ ही पहाड़ हैं ! कितनी शान्ति है इस वक्त !

सुशान्त (खुशी और आश्चर्य से धीमें स्वर में) : देखो ईशान, सूरज की पहली किरणें पश्चिम के ऊंचे पहाड़ों की चोटियों पर। और चोटियों की बरफ़ गुलाबी, गुलाबी दीख रही है।

ईशान : पर अभी ठंड बहुत है।

नन्दिनी : मेरी तो नाक भी ठंडी हो गई है। मां, अपना रुमाल देना तो। ह ह ह ! ऽ ऽ ऽ (कंपकंपाती है)

प्रणव : और मेरे हाथ-मेरे हाथ फिर से थंदे हो गए। आपकी शाल में गरम कर लूं ?

मां : यानी के आप मेरी गोद में आना चाहते हो। आओ।

(फिर ख़ामोशी। किसी पर्वतीय पक्षी के बोल) अरे !

ईशान : देखो, देखो नन्दिनी यह कौन-सा पक्षी था ?

सुशान्त : हां ऽ ऽ, कितने सुन्दर पीले और भूरे, लंबे-लंबे पंखों वाला पक्षी है। लो उड़ गया झट से।

ईशान : छुप गया घने जंगल में।

नन्दिनी : यह कौन-सा पक्षी था पिताजी ?

पिता : नाम याद नहीं आ रहा है।

मां : (हंसकर) यूं कहिए न, नाम पता ही नहीं।

पिता : (झेंप कर) नहीं, नहीं अरे

भई हमारे घर में वह पक्षियों के बारे में जो किताब है न उसमें मैंने इसकी फ़ोटो भी देखी थी और नाम भी पढ़ा था–

नन्दिनी : वह पहाड़ी कोयल तो नहीं थी जो आज सुबह गा रही थी।

पिता : नहीं जी, ज़रा ठहरो, इसका नाम है, इसका नाम है- लो याद आ गया न। घर जाकर इसकी बेशक फ़ोटो देख लेना।

सुशान्त : अब सूरज की किरणें अब

नन्दिनी : घास पर पड़ी ओस की बून्दों पर भी।

मां : बूंदें चमक रही हैं- हीरे की कणियों की तरह-अनगिनत।

प्रणव : और मेरे मुंह पर भी आ गई सूरज की किरणें। मेरे हाथ पर भी धूप आ गई है मां।

नन्दिनी : और बन के फूलों पर भी-

सुशान्त : कितनी चुपचाप है इस वक्त पहाड़ पर !

पिता : चारों तरफ सुन्दरता और शान्ति, इसीलिए तो दूर-दूर से लोग आते हैं परबतों पर,

हमारे पहाड़ पर भी आ गई।

मां : हां देखो, सामने चीड़ के हरे-हरे पेड़ों के शिखरों पर सुनहरी धूप

ईशान : और वह उधर ढलवानों की घास पर भी

शहरों के भीड़ भड़क्के, गंदगी और शोर से छुट्टी पाने के लिए।

(पलभर के लिए बिल्कुल शान्ति। इस संपूर्ण शान्ति में, पास ही सिर्फ़ अकेली एक मधुमक्खी की धीमी आवाज है।– भ न न, भ न न,

भ न, भ न ! मधुमक्खी की सुन्दर गीत-सी आवाज़ को सभी सुनते हैं । फिर गीत गाते हैं।)

मधुमक्खी का गीत

भनन,भनन,भन
भनन भनन,भन।
भनन भनन !
रस चूसन
मधुमक्खी आई,
फूल फूल पर
आ मंडलाई
कुछ मत बोल !
चुपके सुन !
मधुमक्खी की
भनन भनन भन
भनन भनन !
सुबह सबेरे
धूप खिली है,
हवा अभी तक
नहीं चली है।
शांत है पर्वत-
शांत है वन !
मक्खी रानी
फूल, फूल पर
मंडराये और
गाती जाये
भनन भनन भन
भनन भनन !
भनन भनन भन
भनन भनन !

(गीत समाप्त । संपूर्ण शान्ति, पलभर ।)

सुशान्त : पहाड़ों का आसमान कितना निर्मल, साफ़ होता है । शहरों के आसमान जैसे नहीं- मैला और धूल भरा !

नन्दिनी : यह आसमान तो कितना सुंदर है, गहरा नीला।

मां : तुम्हारे फ्राक-सा नीला।

प्रणव : मेरा स्वेटर भी तो नीला है आशमान जैसा।

मां : हां।

ईशान : पर- पहाड़ों पर बैठे बादल तो बरफ़ से भी ज़्यादा सफ़ेद हैं।

(गाएं बकरियों की बाएं, बाएं और मैं ऽ ऽ मैं ऽ ऽ। उनके गले की घंटियों की गूंज सबेरे के शान्त वातावरण में सुनाई दे रही है।)

ईशान : वह कौन आ रहा है ?

सुशान्त : दो पहाड़ी लड़कियां, अपने पहाड़ी कपड़ों में।

मां : कैसे सुंदर, भोले भाले चेहरे हैं।

पिता : ठंड में गुलाबी हुए गाल !

(पहाड़ी लड़कियों को देखते हुए सभी बारी-बारी से एक-एक पंक्ति धीमे मीठे स्वरों में बातचीत के ढंग में—गीत की तरह कहते हैं।)

दो पर्वत कन्याएं गीत

रोज़ सबेरे
पूरब की
पर्वत माला
के पीछे से
सूरज निकले।
औ ऽ ऽ र,

दो गाएं, दो
बकरी लेकर
दो छोटी सी
पर्वत कन्या
घर से निकलें।
छोटी सी
दो पर्वत कन्या
पगडंडियां ऽ
चढ़ते-चढ़ते
ढलवानों के
ऊपर जाएं
गीत भी गाएं।
गाएं बकरी,
घास भी खाएं,
पत्ती खाएं,
पर्वत ऊपर
चढ़ती जाएं।
गऊएं बोले
बा ऽ एं! बाएं!
बकरी बोले,
मैं ऽ ऽ मैं ऽ ऽ
घास पे बैठी
दो छोटी
पर्वत कन्याएं
धीमें सुर में
मीटे सुर में
एक पहाड़ी
गीत गाएं।

(गीत के दौरान बीच-बीच में गाएं, बकरियों की घंटियों और बाएं बाएं, माएं माएं की आवाज़। फिर परबत कन्याओं का धीमा गीत, दूर से। कोई पहाड़ी धुन हिमाचल प्रदेश की। फिर एकाएक बादलों की गरज सुनाई देने लगती है।)

प्रणव : अरे। दु धु म! दु धु म! सुनो जी, बादल बोल रहे हैं।

नन्दिनी : डु ढुम। डु ढुम! बादल गाएं

ईशान : (ज़रा ज़ोर से) डुढुम! डुढुम! ढोल बजाएं !

सुशान्त : (और ऊंचे) ढक, ढुक! डुम! बादल गाएं ढोल बजाएं!

पिता : (हंसकर) एकाएक गगन पे बादल,

मां : घिर आए लागे बरसन।

(सारा गीत गाया जाता है)

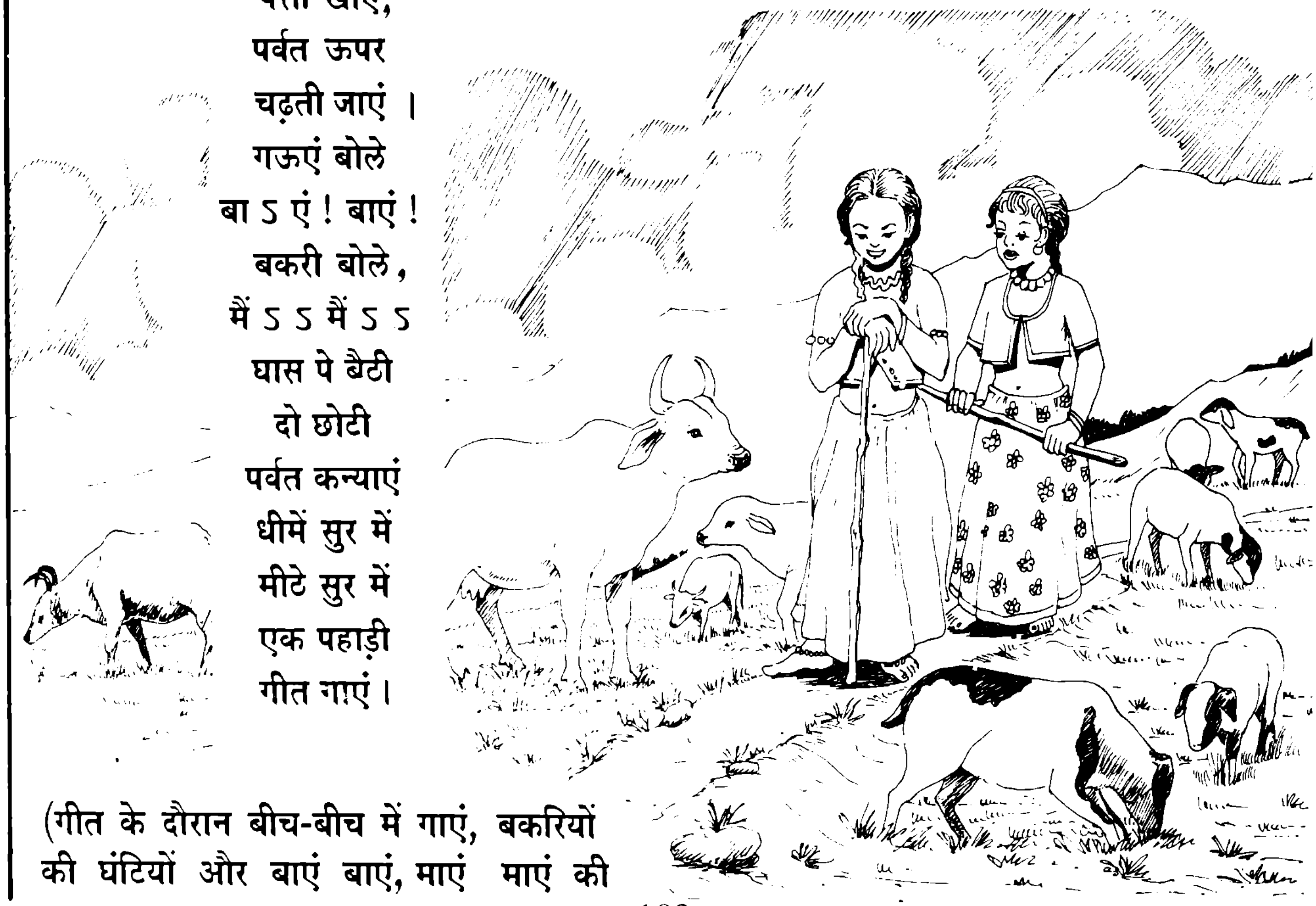

पर्वत
पे
बादल

दुधुम दुधुम !
डुढुम ! डुढुम !
ढक ! ढुक ! ढुम !
लागे बरसन नीले घन
लागे बरसन नीले घन
टिप, टिप, टिप, टिप,
टिप, टिप, टिप, टिप,
नी़ ध नी़ सं, नी ध नी सं
नी़ ध नी सं, नी़ ध नी सं
लागे बरसन, नीले घन ।
अभी अभी तो,
धूप खिली थी,
हवा भी कैसी भली भली
थी,
एका एक गगन पे बादल
घिर आये लागे बरसन
टिप, टिप, टिप, टिप,
टिप टिप टिप टिप
नी़ ध नी सं, नी़ ध नी सं !
दुधुम ! दुधुम !
डुढुम ! डुढुम !
ढक ! ढुक ढुम !

(गीत समाप्त होने पर)

पिताजी : इस बड़े चीड़ पेड़ के नीचे खड़े हो जाओ बच्चो नहीं तो बिल्कुल भीग जाओगे ।

मां : मेरे ख़याल से तो जल्दी नीचे होटल की तरफ उतर पड़ना चाहिए । थोड़ी देर में तो यह पेड़ भी टपकने लगेगा ।

पिता : हां, नीचे उतरना ही ठीक रहेगा । चलो भाई बानर सेना, नीचे उतरें । पर धीरे ऽ ऽ, संभल के पांव रखो ऽ ऽ । वरना फिसल जाओगे । नहाना-धोना तो तुम्हारा इस बारिश में ही हो जाएगा । होटल में पहुंच कर नए कपड़े पहन लेना ।

(अब बादलों की गरज कम और दूर से सुनाई देने लगती है)

ईशान : टिप, टिप, टुप टिप !

नन्दिनी : टप, टुम, टिप, टिप ? देखो तो बारिश से सारा बन, सारा पहाड़ भीग गया ।

प्रणव : अरे ! मैं फिसलने लगा था और (रोकर) मेरे हाथ भी टंडे हो गए ऽ ऽ ।

मां-पिता दोनों : (प्यार से) अरे, अरे, अरे, आओ जी आओ ।

मां : इसे उठा लीजिए जी ।

पिता : ए ऽ शाबाश, सवार हो जाओ घोड़े पर (घोड़े के हिनहिनाने की नकल करते हैं) होश ! होश ! घोड़े की सवारी आ रही है—रास्ता छोड़ो—(सब हंसते हैं)

सुशान्त : लीजिए, बारिश बंद भी हो गई ।

पिता : पहाड़ों पर अक्सर ऐसा ही होता है । एकाएक बारिश आई और एकाएक बन्द हुई ।

सुशान्त : बरसात के मौसम में भी ?

पिता : नहीं, बरसात में तो कई बार कितने कितने दिन बरसात होती रहती है- लेकिन यह तो बसन्त का मौसम है न !

नन्दिनी : फिर से धूप निकल आई।

ईशान : मुझे तो भूख लगी है।

प्रणव : मुझे भी भूख लगी है । होतल आ गया। होतल आ गया।

मां : चलो जी अब जल्दी से सूखे कपड़े पहनो और गीले कपड़े निचोड़ के बाहर धूप में डालो।

प्रणव : मां गीले कपले धूप में कैसे सूख जाते हैं ?

ईशान : मुझे भूख लगी है

नन्दिनी : मुझे भी, मुझे भी।

पिता : बस कपड़े पहनो, मुँह हाथ धोओ, दांत साफ़ करो और जाओ खाने के कमरे में । हम भी तब तक सामान बांध लेते हैं।

ईशान : पिताजी ऽ ऽ, आमले ऽ ऽ ट।

सुशान्त : पिताजी ऽ ऽ ! आमलेट ! धत् ! ऐसे थोड़े ही कहते हैं कहना चाहिए, पिताजी मैं आमलेट खाऊंगा।

(पिता-मां की ज़रा-सी हंसी)

नन्दिनी : और मैं आलू पूरी खाऊंगी।

ईशान : और मैं दूध और परोठा । मां, मेरी कमीज का बटन बन्द नहीं होता।

मां : इधर आओ बेटे। एक बटन नहीं, तीनों बटन खुले हुए हैं। लो बंद कर द्दिए।

पिता : चलो भई ऽ ऽ खाने के कमरे में ऽ ऽ। लेफ्ट, राइट, लेफ्ट राइट

प्रणव : छोती शी गाड़ी का

पिता : छोता शा इंजन !

(सभी रेलगाड़ी बन कर रेलगाड़ी का गीत गाते हुए खाने वाले कमरे में जाते हैं।)

ईशान : नमस्ते वेटर जी।

वेटर : नमस्ते छोटे साहब ! क्या लीजिएगा नाश्ते के लिए।

ईशान : आमले ऽ ऽ ट !

वेटर : बहुत अच्छा साहब ! और बेबी आप क्या खाएंगी।

नन्दिनी : ऊं ऽ ऽ ज़रा सोचने दो। मैं भी आमलेट...

ईशान : पर अभी कमरे में तो तुमने कहा था पूरी आलू खाओगी !

नन्दिनी : हां, हां, पूरी आलू, पूरी आलू ! और चाय गरम गरम !

पिता : चाय नहीं, सबके लिए एक-एक कप गरम दूध।

प्रणव : और मैं क्या खाऊं मां ? मैं हलवा खाऊंगा । और सुशान्त भी हलवा खाएगा है न सुशान्त।

सुशान्त : नहीं, मैं भी आमलेट और टोस्ट मक्खन लगा के।

मां : और खाने का डिब्बा भी भरवा लेने हैं जी, वापसी के लिए।

पिता : हां, दिन का खाना तो

रेलगाड़ी में ही होगा ।

नन्दिनी : पिताजी, हम अभी वापस जा रहे हैं ?

पिता : हां बेटे, कल सोमवार तुम्हारा स्कूल जो है ।

ईशान : नहीं ऽ ऽ एक दिन और ठहर जाते हैं ।

नन्दिनी : हां पिताजी, मां ऽ ऽ इतना अच्छा लग रहा है यहां ।

सुशान्त : हां, पर परसों तो मेरी तिमाही परीक्षा है । मुझे तो घर जाकर केमिस्ट्री की पढ़ाई करनी है ।

पिता : फिर भी तो कभी आएंगे परबत की सैर के लिए !

नन्दिनी : (उदासी से) ऊं... ! इतना मज़ा आ रहा था ।

ईशान : फिर कब आएंगे ?

मां (हंसकर) : फिर, फिर जल्दी आएंगे गरमियों की छुट्टियों में और तब ज़्यादा देर ठहरेंगे । देखो प्रणवजी दूध का कप दोनों हाथों से पकड़ कर पिओ । देखो देखो, दूध स्वेटर पर गिर रहा है । ठहरो मैं नैपकिन से पोंछ दूं ।

पिता : अभी दो घंटे है गाड़ी पकड़ने में । बस नाश्ते के बाद अब इस तरफ की पहाड़ी चढ़ेंगे । फिर पगडंडी से नीचे उतर कर रेलवे स्टेशन पहुंच जाएंगे ।

ईशान : पगडंडी क्या होती है पिताजी ।

पिता : पगडंडी यानी छोटा पहाड़ी रास्ता । सुबह पगडंडी से ही तो पहाड़ी पर चढ़े थे । अब एक दूसरी पगडंडी से दूसरी पहाड़ी चढ़ के रेलवे स्टेशन पहुंचेंगे ।

मां : अजी सुनिए, ऐसा करते हैं । कुली खड़ा है, उसे कहते हैं, हमारा पड़ा सामान सीधा स्टेशन ले जाए । और हम लोग उस पहाड़ी की सैर करते कराते वक्त पर स्टेशन पहुंच जाएंगे ।

पिताजी : ठीक है, फर्स्टक्लास प्रोग्राम ! बानर सेना, तुम लोग आगे-आगे चलो उस पहाड़ी पर । हम लोग होटल के पैसे चुका कर अभी आए कि आए, हूं !

सुशान्त : जी पिताजी । चलो... बच्चा... लो... ग । चलो प्रणव, मेरी उंगली पकड़ो...।

प्रणव : नहीं, मैं उंगली नहीं पकडूंगा। मैं अब बड़ा हो गया हूं । मैंने अभी अभी दूध पिया है । मां मां कहती है दूध पीकर बच्चे बड़े हो जाते हैं ।

सुशान्त : अच्छा बन्दर जी, महारा ऽ ज !

प्रणव : मैं बन्दल नहीं-मैं तो प्र-ण-व हूं । तुम बन्दल हो ।

सुशान्त : (हंसकर) अच्छा प्रणव ! चलो जल्दी...।

प्रणव : हां चलता हूं, चलता हूं ।

(चलता है दौड़ते हुए) लेफ्ट राईट, लेफ्ट राईट, 'छोटी सी गाड़ी का...'

सुशान्त : चलो बानर सेना जल्दी । ईशान चलो ?

नन्दिनी : चलो जी लंगूर सेना... !

सुशान्त : प्रणव, तुम इंजन बन जाओ और हम तीनों रेलगाड़ी के डिब्बे बनेंगे। हूं !

प्रणव : हां, छुक, छुक ! छुक !

सुशान्त : एक दूसरे के पीछे, ऐसे... ! लो, पिताजी और मां भी आ गए !

पिता : मां बनेगी चौथा डिब्बा और मैं पाँचवां डिब्बा । ऊ... ! छुक, छुक, छुक, छुक, अरे इंजन, चलो भी । रेडी..., स्टैडी...

(सामने से आते टट्टुओं के गले में घंटियों की आवाज)

प्रणव : (चिल्लाकर) पिताजी गधे, पिताजी गधे ! देखो, देखो !

पिता : (हंसकर) यह गधे नहीं प्रणव, यह पहाड़ी टट्टू हैं।

मां : (हंसकर) यह पहाड़ी टट्टू है !

प्रणव : नहीं घदे नहीं टट्टू ! यह ट-ट्टू कहां से आ रहे हैं ?

पिताजी : टट्टुओं से पूछो !

(घंटियों की आवाज़)

प्रणव : टट्टू ! टट्टू । आप कहां से आ रहे हैं ?

(टट्टुओं के गले की घंटी और उनकी है !कू ! है ! हू ! की आवाज)

प्रणव : टट्टू ने क्या कहा पिताजी ?

पिता : टट्टू क्या कहते हैं..., टट्टू वाले भाई से पूछो ।

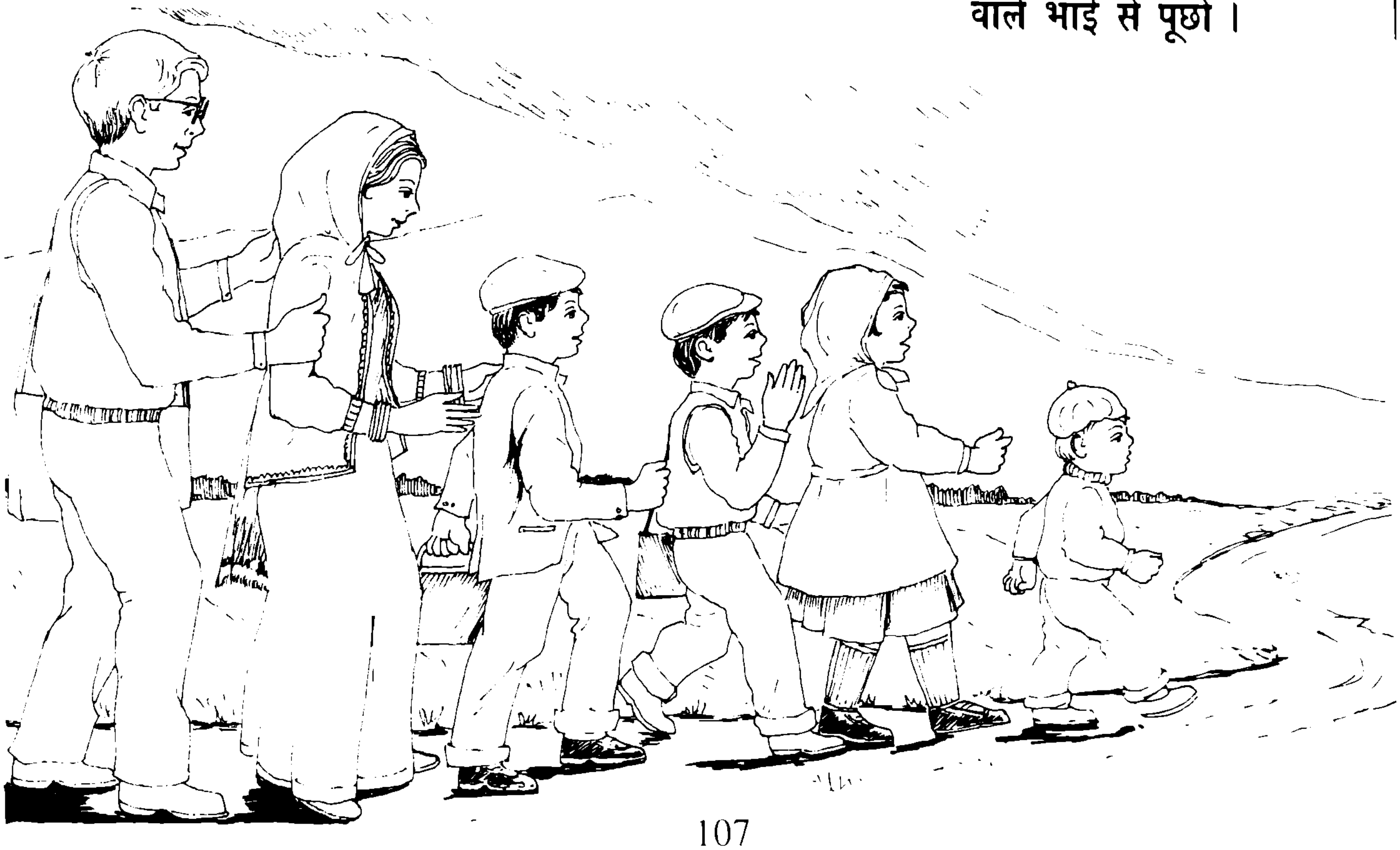

टट्टूवाला : छोटे साहब क्या पूछ रहे हैं बाबूजी ?

सुशान्त : आप जा किधर रहे हैं ? टट्टूवाले भाई साहब आप किधर जा रहे हैं ?

टट्टूवाला : दू...र, चन्दनपुर गांव को जा रहे हैं छोटे बाबूजी।

सुशान्त : आप टट्टुओं पर क्या लाद के जा रहे हैं !

टट्टू वाला : बस, कुछ न कुछ सामान, इधर से उधर और उधर से बेचने के लिए।

सुशान्त : कब तक पहुंचेंगे चन्द्रपुर ?

(टट्टुओं के गले में बंधी घंटियों के स्वर)

टट्टूवाला : शाम तलक पहुंच जाएंगे। आप किधर को जा रहे हो साहब ?

ईशान : हम तो रेलवे स्टेशन जा रहे हैं।

टट्टूवाला : स्टेशन तो थोड़ा ही दूर है। अच्छा राम-राम बाबूजी।

सभी : राम राम ! राम राम

(घंटियों की आवाज़ परे होने लगती है)

सुशान्त : लीजिए एक और गीत बन गया।

(गीत पहाड़ी टट्टू ! शुरू होता है।)

(बीच बीच में। घंटियों की गूंज दूर होती जा रही- कभी नज़दीक जान पड़ती हैं)

पहाड़ी टट्टू गीत

सभी मिलकर बारी-बारी से, अपनी-अपनी पंक्ति रचकर गाते हैं।

टिन, टिन, टिन, टिन,
टनन, टनन।
टुन टिन, टुन टिन
टन, टन, टन !
टट्टू जायें
भार उठायें।
दूर से आयें,
दूर ही जायें ऽ ऽ।
परबत पथ पर,
चलते दिन भर,
जब थक जाते,
तब रुक जाते,
सुस्ता लेते
फिर चल पड़ते !
गले की घंटी
बजती रहती
टिन टिन, टिन टिन
टुन टिन टुन टिन
टनन टनन ऽ ऽ

प्रणव : मां, मैं तो थक गया हूं मुझे उठा लो।

मां : नहीं, नहीं। अभी कैसे थक गए हो। स्टेशन तो अब थोड़ी ही दूर है। थोड़ा-सा और चल लो। फिर तो रेलगाड़ी की सैर करोगे मज़े से।

नन्दिनी : अरे ! आहा ! पहाड़ की इस तरफ, कितने फूल हैं रंग रंग के। यह कौन-सा फूल है पिताजी ?

पिता : कौन-सा ?

नन्दिनी : यह यह गुलाबी रंग का ?

ईशान : यह तो गुलाब है !

पिता : हां यह है वन-गुलाब। मेरे रामलाल जीजा जी इसे सतवन्ती गुलाब कहते थे। मालूम है क्यों प्रणव की मां ?

मां : क्यों ?

पिता (हंसकर): मेरी बड़ी बहन का नाम जो सतवन्ती है ! जवानी में वे भी इस गुलाब-सी सुन्दर थीं।

मां : अरे वाह, कमाल की बात बताई आपने। वाह रे सतवन्ती गुलाब ! कितनी भीनी-भीनी सुगंध है इसकी। सूंघो तो बच्चो !

नन्दिनी : (सूंघ कर) हूं। कितनी अच्छी।

ईशान : कितनी, कितनी अच्छी। प्रणव, मत तोड़ो इसे। देखिए मां।

मां : प्रणव... तोड़ोगे न..., तो... इसकी खुशबू ख़त्म हो जाएगी। देखो तो, झाड़ी से उगा हुआ, सारे बन को खुशबू दे रहा है।

प्रणव : और यह कौन-सा फूल है मां ?

मां : यह सफ़ेद तो शायद पहाड़ी डेज़ी है।

पिता : और इस पीले फूल को बटर-कप कहते हैं अंग्रेज़ी में।

नन्दिनी : हिन्दुस्तानी में क्या कहते हैं पिताजी ?

पिताजी : हिन्दुस्तानी में ? हिन्दुस्तानी में तो मुझे पता नहीं—किसी पहाड़ी भाई से पूछना पड़ेगा।

मां : हम लोगों को अपनी भाषाओं में फूलों के नाम पता ही नहीं—हमने कभी जानने की कोशिश भी नहीं की।

प्रणव : (पुकार कर) तितलियां ! तितलियां। वह, वह, यह, वह देखो देखो नन्दिनी।

सुशान्त : हां। पहाड़ की इस तरफ कितनी तितलियां हैं।

मां : हां वाकई ! इधर फूलों वाली झाड़ियां ज़्यादा है न शायद इसीलिए।

तितली गीत

सभी बारी-बारी से एक-एक पंक्ति गाते हैं–

रंग-रंग की
तितलियां!
नीली, केसरी, गुलाबी,
पीली, भूरी, काली,
तितलियां!
हल्के, हल्के,
पंख हिलाती
उड़ती, उड़ती, उड़ती,
फूल फूल पर
बैठ है जाती
तितलियां!
थिरक थिरक कर
मटक मटक कर
फूल फूल की
गंध सूंघती
फूलों जैसी
ही बन जाती
तितलियां! तितलियां
उड़े वनों में तितलियां
आ हा हा हा! आ हा हा हो!

(गीत समाप्त होता है)

प्रणव : मां, तितली मेरे हाथ में ही नहीं आती। भाग जाती है।

सुशान्त : मैंने पकड़ ली, देखो।

प्रणव : दिखाओ, दिखाओ! पिताजी, सुशान्त ने तितली पकड़ ली मेरे हाथ में दो सुशान्त!

सुशान्त : वह उड़ गई! मैंने छोड़ दी। पर मेरे हाथ में उसके पंखों के रंग लग गए हैं। देखे... प्रणव!

प्रणव : देखो मां पीला रंग, नीला रंग!

नन्दिनी : दिखाओ!

ईशान : दिखाओ। अरे, कैसे लग गया रंग? कैसे मां?

मां : तितलियां फूलों पर बैठती हैं, फूलों का रस चूसती हैं। तो फूलों का रंग उनके पंखों में आ जाता है।

ईशान : और पंखों से हाथों पर लग जाता है।

प्रणव : कैसे...

(रेल की सीटी सुनाई देती है)

पिता : बानर सेना..., लंगूर सेना... टाइम हो गया स्टेशन पर पहुंचने का। दस मिनट में हमें स्टेशन पर पहुंच जाना चाहिए। अब तो क्विक मार्च होगा। लेफ्ट! राईट! लेफ्ट! राईट!

प्रणव : (गाता है) ऊ...! ऊ ऽ ऽ!
छोती-सी गाड़ी का
छोता शा इंजन।

प्रणव : पिताजी, मैं नहीं भाग सकता। मैं थक गया हूं। मुझे उठा लो।

पिता : (हंसकर) अच्छा, अच्छा लो। ए शाबाश! चढ़ जाओ मेरे कंधों पर!

बाकी बच्चे : लेफ्ट राईट, लेफ्ट राईट! लेफ्ट, राईट!

सुशान्त : वह रहा स्टेशन ।

पिता : और वह रहा हमारा कुली ।

प्रणव : वह है हमाली छोती-सी गाड़ी ।

ईशान : और छोटा-सा इंजन ! छोटा-सा स्टेशन !

मां : और छोटा-सा प्रणव ।

पिता : और यह रहा हमारा छोटा-सा डिब्बा ।

सुशान्त : अरे, डिब्बा फिर ख़ाली है ।

नन्दिनी : हां, और कोई भी नहीं ।

ईशान : हां, मज़ा है, मज़ा ।

नन्दिनी : पर छुट्टी तो ख़तम हो गई । मैं तो बहुत उदास हूं । सीटी बजती है । गाड़ी चल पड़ती है धीरे-धीरे ।

प्रणव : (गाता है) छोती शी गाड़ी का

ईशान : छोता शा इंजन ।

नन्दिनी : गाड़ी चले धीरे-धीरे

सुशान्त : परबत से नीचे उतरे ।

मां : ऊ... ! ऊ...

(गाड़ी की सीटी बज रही है । छुक ! छुक की आवाज़ में धीरे-धीरे गाड़ी पर्वत से नीचे की ओर चल पड़ती है ।)

(समाप्त)

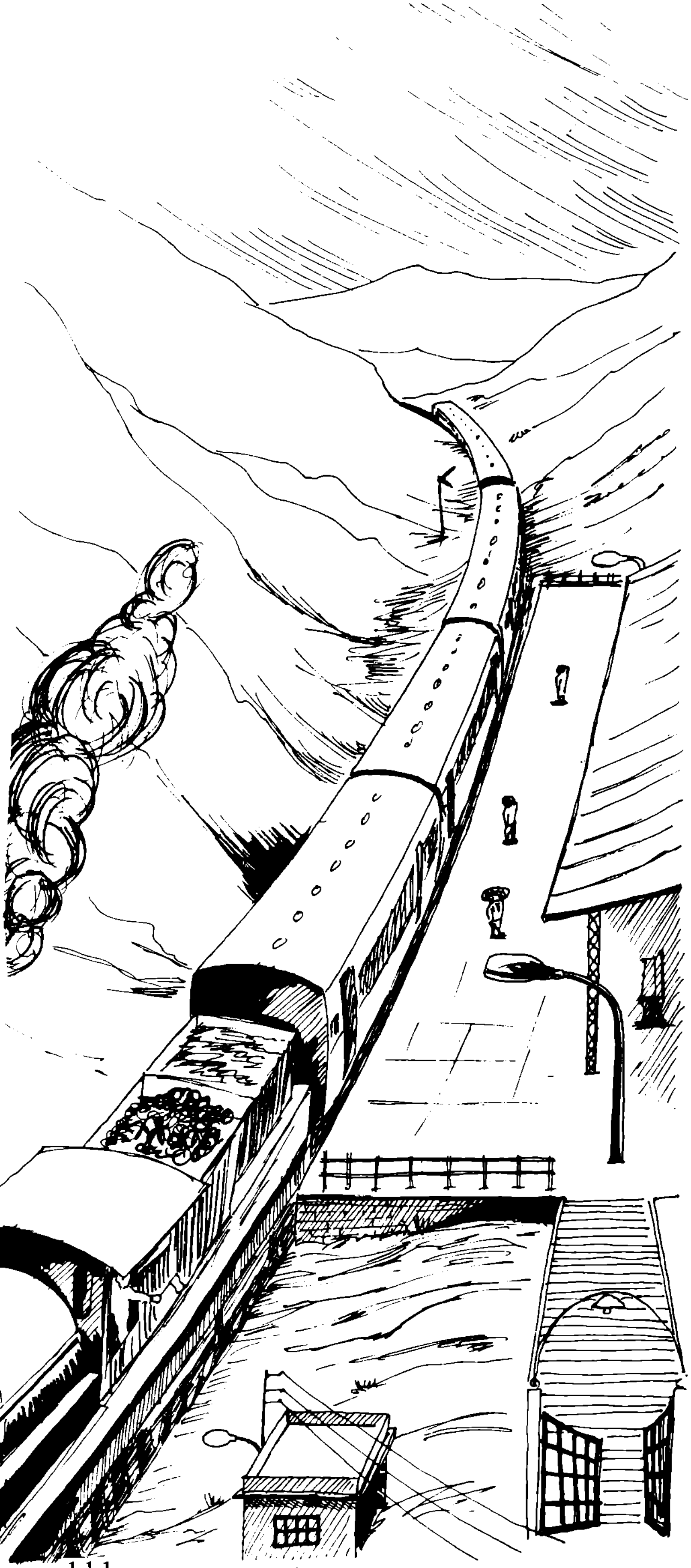

पर्वत के बालक

उर्मिल और चन्दन

सुबह सबेरे
घर से अपनी
पुस्तकें लेकर
चन्दन निकला।
सुबह सबेरे
घर से अपनी
पुस्तक लेकर
उर्मिल निकली।
पर्वत पथ पर
चलते दोनों
बाते करते
शाला जाते।
और अचानक
आसमान से
झर, झर, झर, झर,
रिमझिम, रिमझिम,
टिप, टिप, टिप, टिप,
झरर झरर
पेड़ों पर, पत्तों
पर, पथ पर
बून्दें लागी
झट टपकन !
पर्वत पथ की
इक ढलान पर
इक चट्टान के
नीचे है इक
अपने आप
बना बनाया
छोटा सा इक
पत्थर घर !
उर्मिल चन्दन
पुस्तक पकड़े
भाग के जल्दी
छोटी छोटी
सुन्दर सुन्दर
मूर्तियों जैसे,
खड़े हो गए
घर अन्दर !
टिप टिप
टुप टुप
झर झर
रिम झिम
टपक टपक कर
भीग गया था
वन पर्वत।
पर सूखे के
सूखे दोनों
हँसते हँसते
मज़े मज़े से
बातें करते,
कोई पक्षी
कोई फूल देखते
दोनों जन !
(समाप्त)

पर्वत का स्कूल

सफ़ेद सफ़ेद
ठंडी ठंडी
बरफ़ों भरे
ऊँचे पर्वतों
की गोदी में
मंदिर जैसी
सुंदर सी
एक पहाड़ी ।
हरे भरे
मक्के के
चावल के
खेतों वाली ।
कच्चे, पक्के
नए पुराने
गांव घरों और
चीड़ के लंबे
पेड़ों वाली
है वह पहाड़ी ।

उसी पहाड़ी
के नीचे है
रुन झुन बहती,
छोटी छोटी
चट्टानों के
बीच गुजरती
उछल उछल
परबत गोदी से
छोटे से इक
हरे हरे
मैदान में बहती
छोटी सी इक
नदी पहाड़ी ।
उस छोटी सी
नदी किनारे
मखमल जैसी
हरी घास पर
दो पेड़ों के
नीचे बैठे
गांव के बच्चे ।
पुस्तक लेकर,
कापी लेकर,
लड़की बैठी,
लड़के बैठे ।
कुरसी लेकर
टीचर बैठे
एक बहनजी !

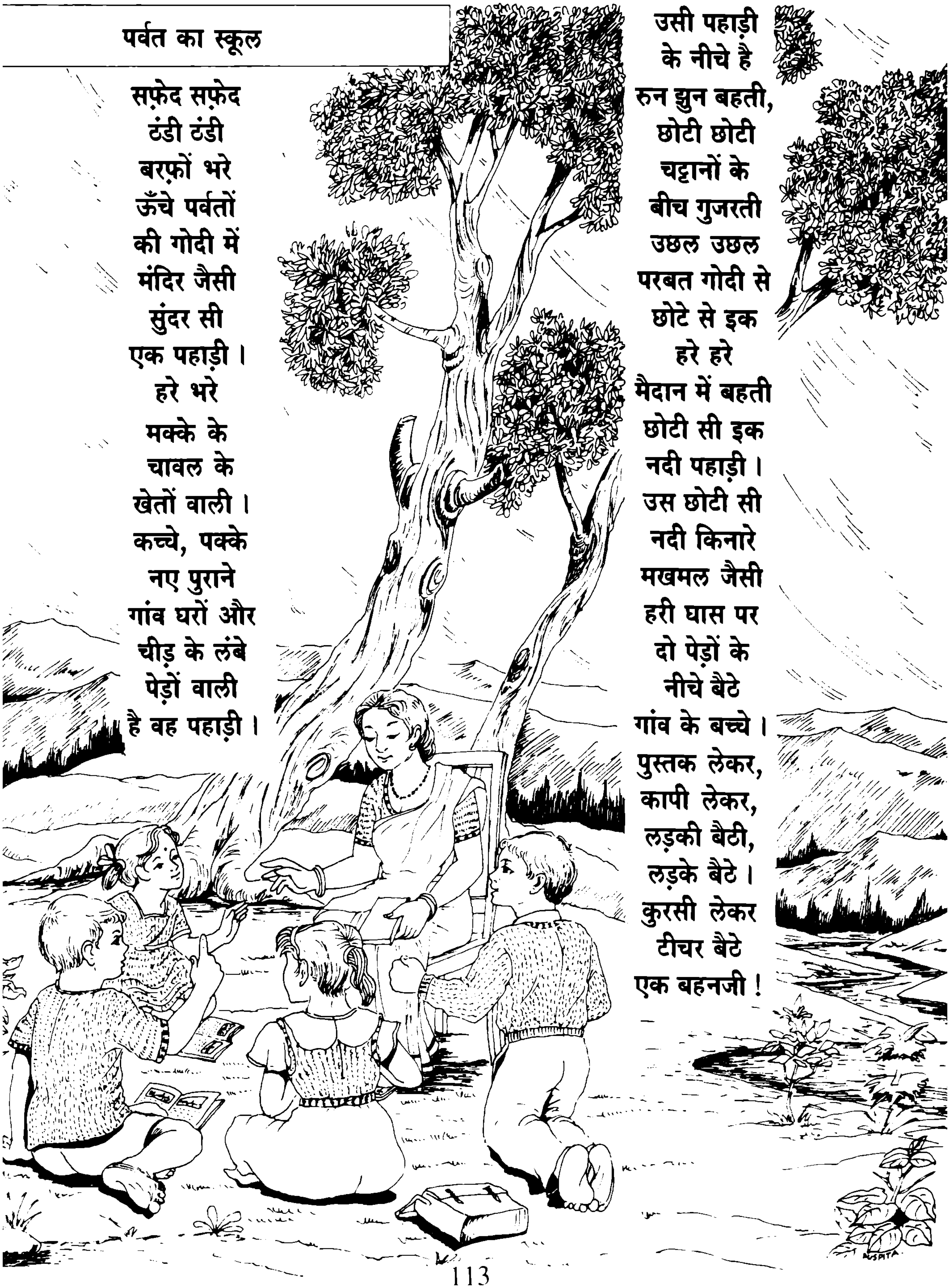

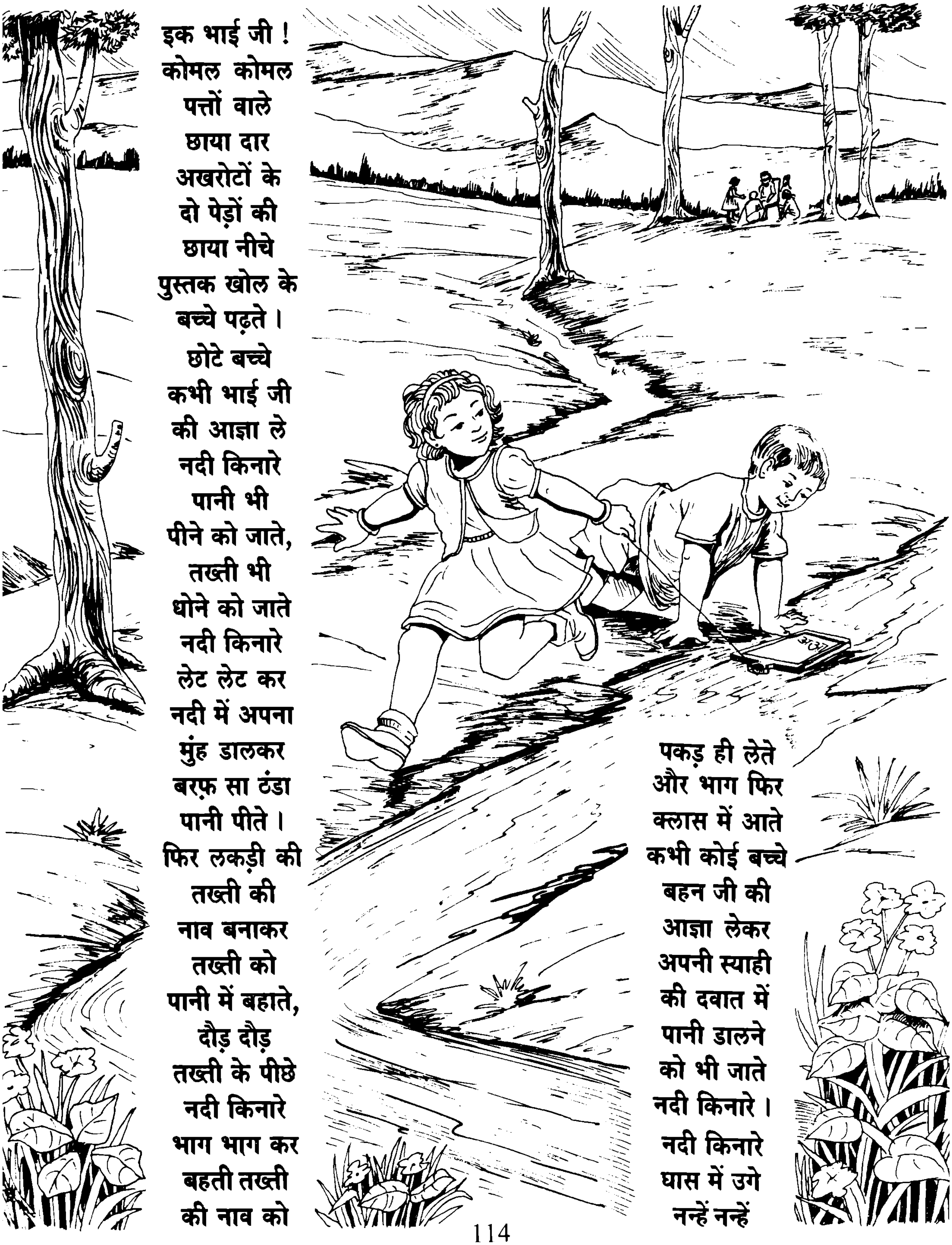

इक भाई जी !
कोमल कोमल
पत्तों वाले
छाया दार
अखरोटों के
दो पेड़ों की
छाया नीचे
पुस्तक खोल के
बच्चे पढ़ते ।
छोटे बच्चे
कभी भाई जी
की आज्ञा ले
नदी किनारे
पानी भी
पीने को जाते,
तख्ती भी
धोने को जाते
नदी किनारे
लेट लेट कर
नदी में अपना
मुंह डालकर
बरफ़ सा ठंडा
पानी पीते ।
फिर लकड़ी की
तख्ती की
नाव बनाकर
तख्ती को
पानी में बहाते,
दौड़ दौड़
तख्ती के पीछे
नदी किनारे
भाग भाग कर
बहती तख्ती
की नाव को
पकड़ ही लेते
और भाग फिर
क्लास में आते
कभी कोई बच्चे
बहन जी की
आज्ञा लेकर
अपनी स्याही
की दवात में
पानी डालने
को भी जाते
नदी किनारे ।
नदी किनारे
घास में उगे
नन्हें नन्हें

रंग रंगीले
फूल तोड़कर
नदी के पानी
में वे बहाते।
फूल तैरते
नदी के जल में
तैर तैर वे
आगे बढ़ते।
फूलों के संग
बच्चे भी
छोटी नदी
किनारे चलते।
खेलें खेल
खेल कर बच्चे
भाग के अपनी
अखरोटों के
दो पेड़ों की
छाया नीचे
लगी स्कूल की
क्लास में आते।
सरदी का
मौसम जाने पर
वसन्त का मौसम
आने पर
पर्वत गांव के
छोटे बच्चे
अभी भी ऊनी
कपड़े पहने
धीमी धीमी
गरमीवाली
धूप छांओं में
अपने गांव के
स्कूल में पढ़ते
(समाप्त)

पर्वत राहें

दूर दूर तक
राहें जाएं।
पतली, पतली
पगडंडियां
जो कहलाएं।
बीच बनों के,
इस पहाड़ से
उस पहाड़ पर,
घूम घूम कर
चक्कर लेकर,
टेढ़ी मेढ़ी,
पर्वत गले में
शेष नाग सी
लिपटी लिपटी
कभी पर्वत से
नीचे जाती

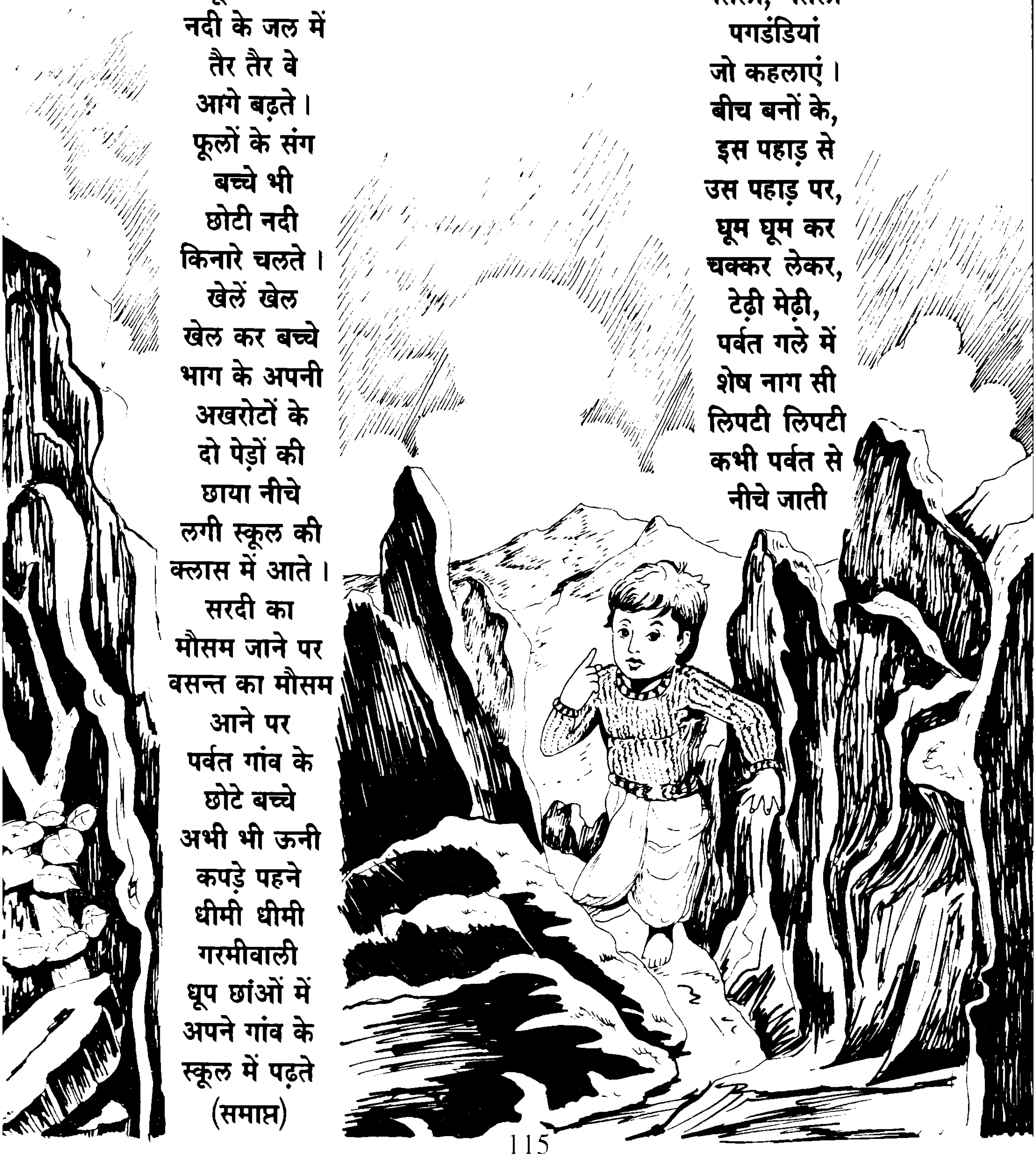

कभी पर्वत के
ऊपर चढ़ती ।
दूर दूर तक
और दूर तो
दीख न पाएं
बीच वनों के
वे खो जाएं
फिर भी दूर
दूर तक जाएं
परबत राहें
कौन गया था ?
कौन चढ़ा था
सबसे पहले
सुन्दर सुन्दर
वन पर्वत पर ?
कौन आदमी
था वह पहला ?
काटे जिसने
पहले पत्थर,
चला वनों के
बीच बीच में
जिसके पैरों
के निशान बन
गई यह छोटी
छोटी राहें,
पगडंडियां !
कौन था वह ?
कौन थे वे ?
क्या वे थे
कोई वन मानुष ?
जिनके पाओ
के निशान यह
सुन्दर राहें !
(समाप्त)

पर्वत के नन्हें बादल

हल्की हल्की
धूप खिली है ।
गहरे नीले
आसमान में
सैर कर रहे
तैर रहे
घूम रहे
आंख मिचौनी
सूरज जी से
खेल रहे
हिम चोटी पर
लेट रहे
बैट रहे
गोल मटोल
छोटे छोटे
सफ़ेद बादल !
(समाप्त)

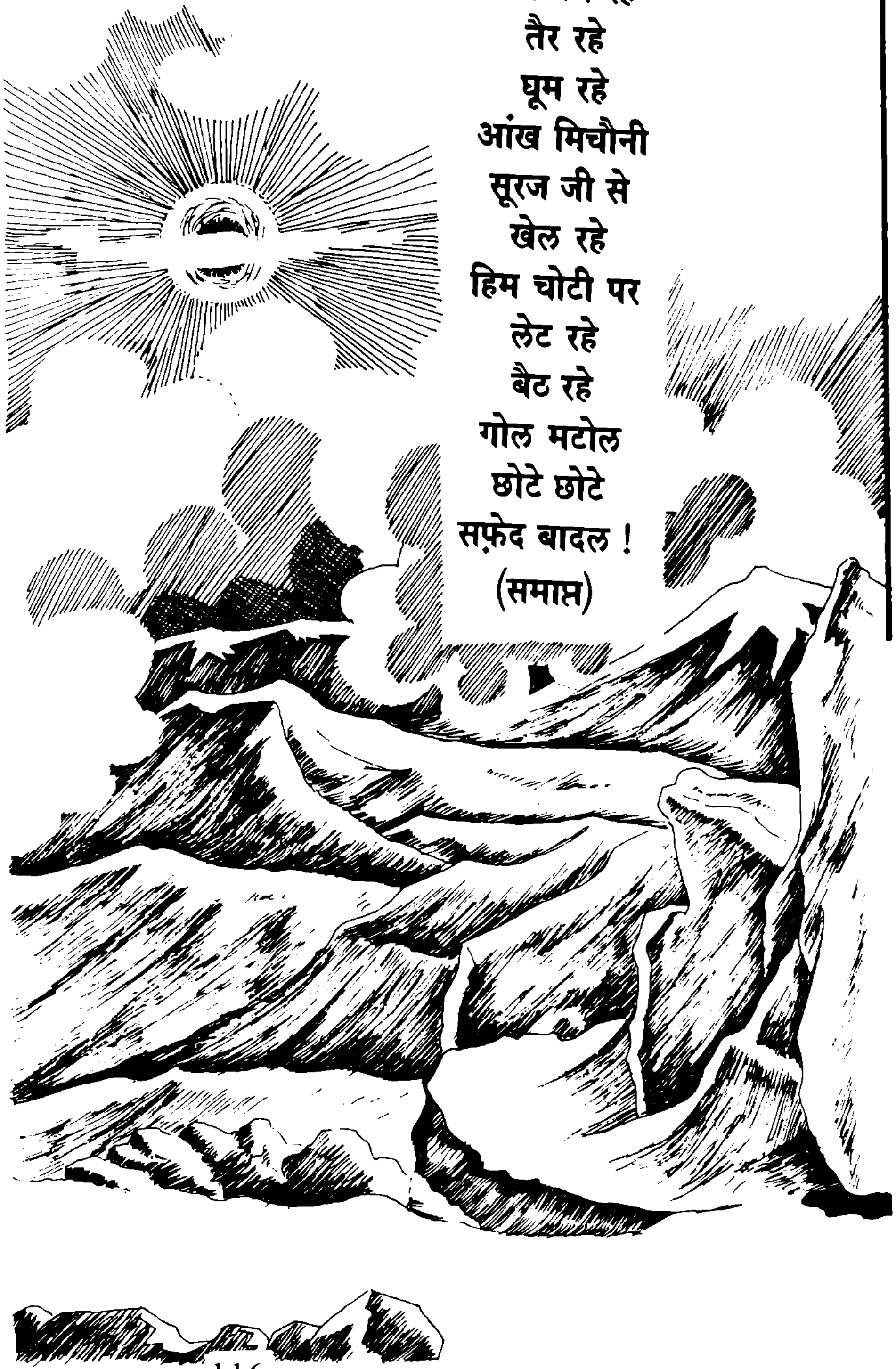

पर्वत के किसान

गरमी की छुट्टियां होने पर
मीना पप्पू गए पर्वत पर ।
दिन भर लम्बी सैर करते
खाते, खेलते थे वे जी भर !
कभी वे चढ़ते वन-वृक्षों पर
कभी देखते वे वन पक्षी
कभी किसी बस ही में बैट
जाते किसी नई जगह पर ।
अपने पापा-मम्मी के साथ
मीना पप्पू सैर करते,
पर्वत खेतों में आ पहुंचे
इक दिन इक पगडंडी चढ़ते ।
एक पर्वत के गांव के नीचे
पर्वत खेत थे सीढ़ियों जैसे,
ऊनी पहाड़ी कपड़े पहने
किसान थे अपनी खेती करते ।
खेतों में थी बैल जोड़ियां
हलों से जुड़ी हुई थी वे,
दाएं बाएं पूंछ हिलाती,
धीरे धीरे चलती वें ।
ले कुदाल किसान कन्याएं
नरम कर रही थीं मट्टी को ।
मार मार कर फोड़ रही थी
मट्टी के मोटे ढेलों को ।
बैल चल रहे आगे आगे
पीछे थे किसान महाराज
दूर दूर खेती फैली थी
हरियाली करती थी राज
पप्पू मीना, मम्मी पापा
इक किसान को नमस्कार कर
''क्या बीजते ? कब काटेंगे ?
लगे पूछने करीब जाकर !

''अब, वसन्त के मौसम में हम
चावल की खेती बीजेंगे
गरमी में जब पक जाएंगी
तभी बालियां हम काटेंगे''
'आओ बैटो' किसान बोले
'आप तो है महमान हमारे
यूं ही न जाने देंगे आज
देखन आए खेत हमारे ।''
तब मक्की की मोटी रोटी
और साग ताजी सरसों का,
थाली में रख लाए दादा,
और दिया इक ढेला गुड़ का ।
भूख लगी थी बहुत सभी को
रोटी खाकर मज़ा ही आया
पीने को झरने का पानी
किसान जी ने हमें पिलाया ।
धन्यवाद कहकर दादा को
लौटे हम पर्वत खेतों से
पगडंडी से उतर उतर कर
पहुंचे होटल मज़े मज़े से ।

मध्य लय में	प	प	–	ध	ग	ग	–	ग	स	स	–	स
कविता के भावों को प्रकट	छो	टी	ऽ	सी	गा	ड़ी	ऽ	का	छो	टा	ऽ	सा
करते, हर्ष आश्चर्य भरे,												
मधुर स्वरों में दो बार !	प़	प़	प़	प़	ध़	ध़	ध़	ध़	नी़	नी़	नी़	नी़
कुछ विलम्बित लय। गाड़ी	धी	रे,	धी	रे	गा	ड़ी	च	ले	प	र्व	ऽत	के
के पर्वत चढ़ने की कठि-												
नाई के भाव प्रकट करते	ग	ग	ग	ग	प	–	प	–प!				
हुए मध्य लय में चाव से।	सी	टी	दे	दे	इं	ऽ	ज	ऽन				
गाड़ी की पर्वत में गूँजती	सं	–	प	पप	सं	–	–	–!	सं	–	–	पप
सीटी का प्रभाव देते स्वर।	ऊ	ऽ	ऽ	उउ,	ऊ	ऽ	ऽ	ऽ!	ऊ	ऽ	ऽ	उउ
मध्य लय से धीरे-धीरे द्रुत	गस	गस	गस	गस	पग	पग	पग	पग	पगस!		पगस!	
लय पर जाते स्वर।	छिक,	छिक,	छिक,	छिक	छुक,	छुक,	छुक,	छुक,	छनन !		छनन !	
चाव से हर्ष भरे स्वर।												
	सरे	गरे!	सरे	गरे!	गप	धप!	गप	धप	सरे	गरे!	सरे	गरे!
	झट	पट!	झट	पट!	खट	पट!	खट	पट!	झट	पट!	झट	पट!
पहले की तरह	सं	–	प	पप	सं	–	–	–!	सं	–	प	पप
	ऊ	ऽ	ऽ	उउ	ऊ	ऽ	ऽ	ऽ!	ऊ	ऽ	ऽ	उउ
चलती गाड़ी की खिड़की से	प	प	ऽ	ध	ग	ग	ग	ग,	स	रे	ग	प
बाहर का पर्वतीय सौन्दर्य	खिड़	की	ऽ	से	बा	ऽ	ह	र	दा	एं	दे	खो,
प्रकट करते भाव भरे आश्चर्य												
भरे स्वर, मध्य लय में !	ध	ध	प	–प	ध	ध	प	–प				
	दो	नों	ओ	ऽर,	दो	नों	ओ	ऽर				
	सं	नी	ध	प	म	ग	रे	ग	प	म	ग	रे
	पी	ले,	पी	ले	खे	ऽत	औ	ऽर	ह	रे	ह	रे
पहले की तरह	सं	नी	ध	प	म	ग	रे	ग	स	रे	ग	म
	पी	ले,	पी	ले	खे	ऽत	औ	ऽर	ह	रे	ह	रे
	सं	–	प	पप	सं	–	–	–,	सं	–	प	पप
	ऊ	ऽ	ऽ	उउ	ऊ	ऽ	ऽ	ऽ,	ऊ	ऽ	ऽ	उउ

पहाड़ी मजदूर

निर्देशक के लिए सुझाव	गीत संगीत			रचना–संतोष साहनी
मजदूरों के पत्थर कूटने का प्रभाव देते हुए मध्य द्रुत लय ताल में, धीमें से स्वरों में बच्चे गाएं	सा सरे सा– सा– पऽ त्थर कूऽ टेंऽ,	सारे गम पग प– सड़ ऽक वि छाऽ एँऽ		
कुछ ऊँचे स्वर में	धु– –धु प प पीऽ ऽठ पे भाऽ रीऽ	म– मप ग– ग– बोऽ झ उ ठाऽ एंऽ,		
धीमे से कुछ ऊँचे स्वर में	सासा सारे सा– सा– लक ड़ीऽ काऽ टेंऽ,	सारे गम पग प– पुऽ ऽल ब नाऽ एंऽ,		
मजदूरों का आत्मविश्वास के साथ काम करना जताते मधुर स्वर	धु– –धु पप पप रेऽ ऽलकी पट रीऽ	मम मप ग– ग– हम ही बि छाऽ एंऽ		
,,	सा– सारे ग –म गाऽ ड़ी च ढ़े ऽतव	पऽ धध नीनी सांसां हीऽ पर वत पर		
,,	सांसां सांनी धप प– जब हम हरी झंऽ	म– मग रे– ग– डीऽ दिख लाऽ एंऽ		
,,	सरे ग– रेग म– हंस तेऽ, गाऽ तेऽ	गम पम मप ध– काऽ मक रेंऽ हम		
,,	संसं संनी धध प– मेह नत कर केऽ	म– मग रे– स– खाऽ नाऽ खाऽ एंऽ		

बन्दर जी महाराज

निर्देशक के लिए सुझाव	गीत संगीत							रचना–संतोष साहनी
बन्दर नचाने वाली की डुग-	सप	प-	ग	गध	पम	गम	प	प!
डुगी की चपल मध्य-द्रुत	सुनि	एऽ,	बं	दर	जीऽ	महा	रा	ज!
लय में शरारत से प्रश्न	सं-	सं-	प-	-ध	पम	गम	प	प?
पूछने के ढंग में बच्चे	क्या	है,	आ	ऽपके	हाऽ	थ में	आ	ज?
मधुर स्वरों में गाएं	सप	-प	ध	प	ग	नी	ध	-ध?
	कहाँ	ऽसे	ला	ए	हैं	यह	आ	ऽम?
बातचीत के ढंग में	ध	ध	नी	नी	ध	ध	नी	नी?
पर मधुर स्वरों में	क्या	यह	चो	री	का	है	का	ऽम?
	धध	धनी	धप	पप	पध	धनी	ध-	प-?
	किस	केऽ	घर	सेऽ	उठा	ऽके	लाऽ	एऽ?
	प-	सं-	संसं	सांसां	संप	-सां	सं	सं?
	याऽ	हैंऽ	कहीं	ऽसे,	खरी	ऽदके	लाऽ	ए?
कुछ चिढ़ाते हुए	ध	ध	ध	ध	ध	ध	नी	सां!
	पै	से	तो	नहीं	आ	ऽपके	पा	ऽस!
	सप	-प	पमं	प-	पमं	पध	पमं	प-
	आऽ	ऽमका	रस	तोऽ	तुम	चूऽ	सोऽ	गेऽ
	संसं	सं-	प	प	प	सं	सं	सं?
	गुठ	ली	भी	क्या	खा	जा	ओ	गे?
	सप	-प	पध	पप	पमं	पध	पमं	प-!
	आऽ	ऽपतो,	बिल	कुल	बंऽ	दर	हीऽ	हैंऽ!
	सं-	-सं	पप	पप	सरे	गम	प-	प-
	आऽ	ऽपतो	मियां	ऽम	छंऽ	दर	हीऽ	हैंऽ
						मियां मछंदर		

पर्वत लहरें

निर्देशक के लिए सुझाव | गीत संगीत | रचना–संतोष साहनी

मध्य लय में मधुर स्वर	प़ स ग प	धप मग म- -,	नीध पम प -	संनी धप ध -
धीमे से कुछ ऊँचे होते	प र ब त	लह ऽऽ रें ऽ,	लह ऽऽ रें ऽ	लह ऽऽ रें ऽ
पर्वत शृंखलाओं का सौंदर्य				
प्रकट करते स्वरों में	प सं सं सं	नी रें सं सं		
बालकों से गवाएँ	दू ऽ र, दू	ऽ र त क		
	गरें संनी रेंसं नीध	संनी धप धप मग	मप प प –	
	लह ऽऽ राऽ ऽऽ	एंऽ ऽऽ लह ऽऽ	रा ऽ एं ऽ	
हर्ष-आश्चर्य भरे मधुर स्वर	सध -ध धध धध	नीसंरेंस नी–धनीसंनीध नी	नीसं धनी पध मंप	गमंप प – –
कुछ चपल सूर्य और	नीऽ ऽलग गन मंऽ	सूऽऽऽ रज चमऽऽ केऽ,	और लह रेंऽ, मुस	काऽऽ एं – –
बादलों की खेल दर्शाते				
स्वरों में	रेस गरे मग पम	धप नीध संनी सं-,	संरेंग रेंसं नीसंरें संनी	धनीसं सं –
	उड़ तेऽ, उड़ तेऽ	बाऽ दल आऽ एंऽ,	सूऽऽ रज कोऽऽ ढक	जाऽऽ एं ऽ ऽ
प्राकृतिक सौंदर्य वर्णन	संगं रेंस नीरें संनी	धसं नीध मंध प–	रेस गरे मग पमं	धप प– – –
करते मधुर स्वर	सूऽ रज निक लाऽ	चाऽ हेऽ बाऽ हर,	बाऽ दल उसे ऽछि	पाऽ एंऽ – –
	पसं -सं नीध प–	नीसरे -सं सं– सं–	सरे गमं प– गमं	ध प – –
	एऽ ऽकल हर पर	धूऽऽ ऽपखि लीऽ हैऽ,	एऽ कर हेऽ छाऽ	या में – –
	सरे गम प- धनी	धनीसं सं – –	सरे गम प– गम	ध- प- – –
	एऽ ऽकर हेऽ छाऽ	याऽऽ में – –	एऽ ऽकर हेऽ छाऽ	याऽ मेंऽ – –

पर्वत हिम

निर्देशक के लिए सुझाव	गीत संगीत			रचना–संतोष साहनी
कुछ विलंबित लय में	प – प	ग – म	प – ध	प – –
बर्फीली चोटियों के प्रथम	दू ऽ ध	सी ऽ स	फे ऽ द	है ऽ ऽ,
दर्शन से जागी सुंदर				
भावनाएं लिए मधुर स्वर,	ध – नी	सं – नी	प – –	– – –
धीमे से कुछ ऊँचे होते,	रु ऽ ई	सी ऽ न	र ऽ म	ऽ ऽ ऽ
फिर धीमे होते। फिर कुछ				
ऊँचे होते स्वर।	रें – सं	नी - ध	प – म	ग – रे
	ऊँ ऽ ची,	ऊँ ऽ ची,	चो ऽ टि	यों ऽ पे
धीमे से कवितामय मधुर	स – रे	ग – म	प – –	– – –
स्वरों में गाएं	ले ऽ ट	र ऽ ही	हि ऽ ऽम	ऽ ऽ ऽ
हर्ष आश्चर्य भरे धीमे-ऊँचे-	प -प प	ध – नी	सं – रें	सं – सं
धीमे होते स्वर	स ऽब से	ऊँ ऽ ची	चो ऽ टि	यों ऽ पे
	नी -नी ध	प – म	प – –	– – प
	क ऽर ती	है ऽ नि	वा ऽ ऽ	ऽ ऽ स,
ऊँचे से धीमे कुछ उदासी	गं गं रें	सं – नी	रें रें सं	नी – ध
लिए स्वर	र ह ती	दू ऽ र,	ब हु त	दू ऽ र
	नी - ध	प – म	प – –	– – प
	आ ऽ ती	न ऽ हीं	पा ऽ ऽ	ऽ ऽ स
प्यार-चाव भरी पुकार	गरे स – रे	ग म प सं	प सं रे ग	म – – -म
लिए स्वर	हंऽस के ऽ बु	ला ऊँ, आ ओ,	आ ओ, मे रे	पा ऽ ऽ ऽस

पर्वत वन

निर्देशक के लिए सुझाव | गीत संगीत | रचना–संतोष साहनी

मध्य लय में. हर्ष आश्चर्य	स	ग	प	थ	प	म॑	प	-	सं	सं	-	म॑	प	-	-	प
से धीमे से कुछ ऊँचे	प	ऽ	र्व	त	व	ऽ	ऽ	ऽन,	स	घ	ऽन	स	घ	ऽ	ऽ	ऽन
होते स्वर																
	ध	–	प	सं	–	नी	रें	–	म॑	ध	प	म॑	प	–	–	–!
	दे	ऽ	ख,	दे	ऽ	ख	हो	ऽ,	ह	ऽ	र्षि	त	म	ऽ	ऽ	ऽन!
धीरे से धीरे ऊँचे होते	ध	नी	ध	नी	सं	–	नी	नी	प	–	रें	–	सं	नी	सं	–
मधुर स्वर	ह	रे	ऽ	ह	रे	ऽ	औ	र	लं	ऽ	बे	ऽ	लं	ऽ	बे	ऽ
कुछ बातचीत के ढंग से	स	स	ग	–	ग	ग	प	–	प	सं	सं	सं	सं	सं	सं	–!
मानो गिनने की कोशिश	इ	क	सौ	ऽ,	दो	ऽ	सौ	ऽ,	चा	ऽ	र,	पां	ऽ	च	सौ	ऽ
करने																
आश्चर्य-हर्ष से	नी	रें	सं	नी	सं	गं	रें	सं	रें	मं	गं	रें	नी	रें	सं	नी
	कि	त	ने	ऽ,	कि	त	ने	ऽ,	जा	ऽ	ने	ऽ	कि	त	ने	ऽ
	ध	सं	नी	ध	नी	–	–	–!								
	इ	न	के	ऽ	तन	–	–	–!								
धीमे-मधुर स्वरों में	म॑	प	ध	नी	म॑	ध	प	ऽ	ग	म॑	ग	म॑	ध	प	म॑	प
	इ	न	की	ऽ	खु	श	बू	ऽ	सूं	ऽ	घ,	सूं	ऽ	घ	क	र
कोमल भरे स्वरों में	म॑	ग	प	म॑	ध	प	नी	ध	रे	सं	नी	ध	सं	नी	ध	ध
	बी	ऽ	च	ही	इ	न	के	ऽ	खे	ऽ	ल,	खे	ऽ	ल	क	र
हर्षित स्वरों में	ध	सं	नी	ध	म॑	ध	प	प	स	ग	प	ध	प	–	–	–!
	ह	ऽ	र्षि	त,	पु	ल	कि	त,	हो	ऽ	त	न	मन	–	–	–!
	ध	सं	नी	ध	म॑	ध	प	प	स	ग	प	सं	सं	–	–	–!
	ह	ऽ	र्षि	त,	पु	ल	कि	त	हो	ऽ	त	न	मन	–	–	–!

पर्वत-पवन

निर्देशक के लिए सुझाव | गीत संगीत | रचना–संतोष साहनी

मध्य लय। कुछ धीमे, मधुर	प़	स	–	ग	गुम	गुध	प	–	रेग	रे	–	प	प	–	–	–!
स्वर वर्नों में घूमती पवन	प	र्व	ऽत	के	वऽ	ऽन	में	ऽ	घूऽ	मे	ऽ	प	व	ऽ	ऽ	ऽन!
का चित्र सा दर्शाते स्वर																
	रेग	रे	म	ग	स	–	–	–!	रेग	रे	–	प	प	–	–	ऽ!
	घूऽ	मे	ऽ	प	व	ऽ	ऽ	ऽन!	घूऽ	मे	ऽ	प	व	ऽ	ऽ	ऽन!
हवा में घूमते पेड़ों का चित्र	प	–सं,	प	–मं	प	–ध,	नी	–सं,	प	–सं,	प	–मं	प	–ध,	नी	–सं!
सा दर्शाते मधुर स्वर	झू	ऽम,	झू	ऽम	जा	ऽए,	सा	रा,	झू	ऽम	झू	ऽम	जा	ऽए	सा	रा
हवा में झुकते पेड़ों को	प	सं	प	मं	प	ध	नी	सं	प	ध	प	मं	प	ध	नी	सं
दृश्य दर्शाते सुन्दर स्वर	झु	क,	झु	क,	जा	ए	सा	रा,	झु	क,	झु	क,	जा	ए	सा	रा
चाव-अचरज भरे मधुर स्वर	रेग	रे	–	प	प	–	–	–!	रेग	रे	म	ग	स	–	–	–
	पऽ	र्व	ऽत	का	व	ऽ	ऽ	ऽन!	घूऽ	मे	ऽ	प	व	ऽ	ऽ	ऽन
पर्वतीय एकान्त में एक-एक	प,	ध,	प,	मं,	प,	ध,	नी,	सं	प,	ध,	प,	मं,	प,	ध,	नी,	सं,
पत्ते के धरती पर अलग-	सू	खे,	सू	खे,	प	त्ते,	गि	रें,	सू	खे,	सू	खे	प	त्ते,	गि	रें
अलग गिरने का चित्र दर्शाते																
आनन्दमय स्वर	प	ध	नी	सं	प	ध	नी	सं	प	–ध	प	मं	प	–ध	नी	सं
	प	त्ते,	गि	रें,	प	त्ते,	गि	रें,	ध	ऽर	ती	पे,	आ	ऽन	गि	रें
	प	–ध	प	मं	प	–ध	नी	सं,	प	–ध	नी	सं	प	–ध	नी	सं
	ध	ऽर	ती	पे,	आ	ऽन	गि	रें,	आ	ऽन	गि	रें,	आ	ऽन	गि	रें
मधुर खनकते से स्वर!	सग	–ध,	प!	–	सग	–ध	प!	–	सग	–ध	प!	–				
धीमे से कुछ ऊँचे होते स्वर	खन	ऽन्, खनन्!			खन	ऽन्, खनन्!			खन	ऽन्, खनन्!						
धीमे पहले की तरह																
	प़	स	–	ग	गुम	गुध	प	–	रेग	रे	–	प	प	–	–	–प
	प	र्व	ऽत	के	वऽ	ऽन	में	ऽ	घूऽ	मे	ऽ	प	व	ऽ	ऽ	ऽन
हवा की सनन-सनन	स	ग	–	प	ग	–	–	–ग	स	ग	–	प	ग	–	–	–प
दर्शाते स्वर	स	न	ऽन्,	स	न	ऽ	ऽ	ऽन्!	स	न	ऽन्,	स	न	ऽ	ऽ	ऽन्
	रेग	रे	–	प	प	–	–	–!	रेग	रे	म	ग	स	–	–	–
	घूऽ	मे	ऽ	प	व	ऽ	ऽ	ऽन!	घूऽ	मे	ऽ	प	व	ऽ	ऽ	ऽन

पर्वत नदिया

निर्देशक के लिए सुझाव | गीत संगीत | रचना–संतोष साहनी

		बच्चों का प्रश्न		
मध्य लय ! हर्ष-आश्चर्य से	प़ सा सा रे	प़म़ गरे सा –,	म़ ग रे प	म ग रे -
मधुर स्वरों में पूछा प्रश्न ।	प र ब त	नऽ दिऽ या ऽ,	ब हो ऽ, ब	हो ऽ ऽ ऽ,
कुछ धीमे से कुछ ऊँचे होते स्वरों में	रे ग ऩी सा	रे ग रे –	म ग रे प	म ग रे –!
	अ प नी क	हा ऽ नी ऽ	क हो ऽ क	हो ऽ ऽ ऽ!
	प प प सां	ध – प –?	ग म ग ध	प – – –?
	क हां ऽ से	आ ऽ ई ऽ?	क हां ऽ च	ली ऽ ऽ ऽ?
	ग म ग ध	प – – – ?	ग म ग ध	प — – – ?
	क हां ऽ च	ली ऽ – – ?	क हां ऽ च	ली ऽ – – ?
		नदी का उत्तर		
दो बार कहिए !				
ऊँची चोटियों से उतरती	पर्म पर्म पध प–	गम गरे ग –	सांनी धप धप मग,	सांनी धप धप मग
चंचल-चपल धारा का	सूऽ रज निक लाऽ,	हिम पिघ ली ऽ,	झर, झर, झर, झर,	झर झर झर झर
चंचल-चपल हर्ष भरा उत्तर				
	सांनी धप धप मग	पम़ गरे सा– प-!		
	झर झर झर मैंऽ	वह निक लीऽ ऽऽ!		

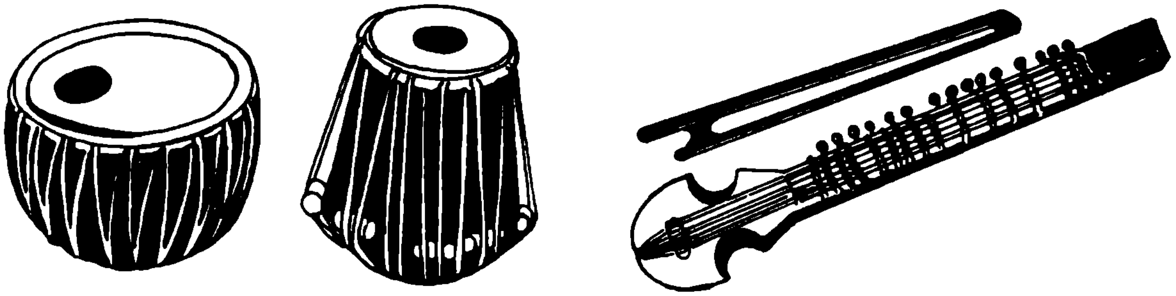

लंगूर

नेर्देशक के लिए सुझाव	गीत संगीत			रचना–संतोष साहनी
चित्रों की सहायता से	पप गध पध पप	गनी –नी ध –ध!		
बन्दर-लंगूर का अन्तर	यह नहीं बंऽ दर	नहीं ऽह ज़ू ऽर!		
खुशी से समझते हुए				
मध्य-द्रुत मध्य लय में चपल	पप प– गं– गंरें	–रें संगं रें –रें!		
स्वरों में	यह तोऽ लंऽ बपूं	ऽछ, लंऽ गू ऽर!		
मध्य लय में	प पम॑ पप प	गध पमे पमे प		
	का लाऽ मुंह, म	टक तीऽ आँऽ खें,		
,,	पसं संसं संनी सं–	नीध पम॑ प प।		
	बद ऽनपे नीऽ लाऽ	नीऽ लाऽ रोम!		
,,	परें रेंरें –रें रें	रेंगं रेंसं रें– रें–		
	चीऽ ड़पे ऽड़ के	ऊऽ पर बैऽ ठाऽ		
	सं– नीध पप प–	पसं संरें सं सं		
	देऽ खोऽ इस कीऽ	शाऽ ऽनग रु ऽर		
पूंछ की लम्बाई दर्शाते	गग ग– संसं सं–	पसं संसं संसं संसं		
चपल स्वरों में	कित नीऽ लंऽ बीऽ	पूँऽ ऽछहै इस कीऽ		
मज़ाकिया, बातचीत के	संसं संसं धध धऽ	धऽ धनी ध- –ध		
स्वरों में	पर हैंऽ छोऽ टेऽ	काऽ ऽनज़ रु ऽर		
हर्ष-आश्चर्य भरे स्वरों में	गंरें रेंरें संसं संनी	नीरें संनी धप प–		
	तोऽ ड़,तो ऽड़ पऽ	तेऽ पेऽ ड़ोंऽ सेऽ		
हँसी भरे स्वर	पसं सं– संप पसं	पसं पसं सं- –सं		
	अप नाऽ पेऽ टभ	रेऽ भर पू ऽर		
मध्य लय में धीमे से धीरे-	सप पप प– प–	सं– संसं सं– सं–		
धीरे ऊँचे होते मधुर स्वरों में	पर वत वाऽ सीऽ	हैऽ वन वाऽ सीऽ		
	गं – गं –!	रें – रें प	– ध नी रें	सं – – –!
	रा ऽ जा ऽ!	लं ऽ ब, पूं	ऽ छ लं ऽ	गू ऽ ऽ ऽर!

पर्वत के फूल

निर्देशक के लिए सुझाव | गीत संगीत | रचना–संतोष साहनी

मध्य लय में। हरी ढलवानों	सां	नी	ध	प	म	ग	रे	सा,	सा	रे	सा	रे	ग	म	ग	ग
में खिले रंग-रंग के फूलों	ढ	ल	वा	ऽ	नों	ऽ	की	ऽ,	ह	री	ऽ	घा	ऽ	स	प	र,
को पहली बार देखने से प्रकट																
हुए चाव आश्चर्य भरे भावों में	ग	—	प	—	ग	–	प	–	ध	–	प	–	ध	–	प	–
धीमे से धीरे ऊँचे होते स्वर	पी	ऽ	ले	ऽ,	पी	ऽ	ले	ऽ	नी	ऽ	ले	ऽ,	नी	ऽ	ऽ	ले
												(धीमे	स्वरों में)			
	प	सां	सां	सां	सां	—	—	सां!	ध	नी	सां	ध	नी	ऽ	ऽ	ऽ,
	औ	ऽ	ऽर	स	फ़े	ऽ	ऽ	द!	न	र	म,	न	र	ऽ	ऽ	म,
धीमे, मीठे स्वरों में	ग	म	प,	ग	म	—	–	ऽ!	प	सां	सां	सां	सां	ध	सां	ऽ
	न	र	म,	न	र	ऽ	ऽ	म!	गो	ऽ	ऽल,	गु	ला	ऽ	बी	ऽ
धीरे-धीरे ऊँचे होते स्वरों में	सां	ध	रें	सां	–	सां	सां	–,	सां	ध	म	ध,	सां	ध	म	ध
	औ	ऽ	र	का	ऽ	श	नी	ऽ,	न	ट	ख	ट,	न	ट	ख	ट
फिर धीरे-धीरे धीमे होते	सा	रे	ग	धप	म	—	–	–मु!								
मधुर स्वरों में	सुं	ऽ	द	रऽ	फू	ऽ	ऽ	ऽल!								
धीमे से कुछ ऊँचे होते स्वर	म	–	म	ग	प	–	प	म्	ध	–	ध	प	सां	–	प	–
और फिर धीमे होते स्वर	च	ऽ	टूटा	ऽ	नों	ऽ	के	ऽ	को	ऽ	नों	ऽ	में	ऽ	से	ऽ
	ध	सां	सां	–	प	ध	ध	–	सां	ध	ध	रें	सां	–	सां	–
	चु	प	के	ऽ,	चु	प	के	ऽ,	झां	ऽ	ऽक	र	हे	ऽ	हैं	ऽ
धीमे से कुछ ऊँचे होते झूमते	म	ग	-	म	प	ध	नी	सां	सां	ध	ध	रें	सां	–	सां	–
से स्वरों में	ह	वा	ऽ	में	हं	स,	हं	स	झू	ऽ	ऽम	र	हे	ऽ	हैं	ऽ
	सा	रे	ग	धप	म	–	—	–म	म	प	ध	रें	सां	—	–	–सां!
	प	र	ब	तऽ	फू	ऽ	ऽ	ऽल,	प	र	ब	त	फू	ऽ	ऽ	ऽल!

झींगुर

निर्देशक के लिए सुझाव	गीत संगीत							
मध्यलय !	सा ग	प ग	प ध	प–	मंपध	प मं	प–	मं मे
धीमे मधुर स्वर	पर	बत	वन	मेंऽ,	झींऽऽ	गुर	कीऽ	सुन!
धीमी गूँज लिए स्वर।	सांनी	सांनी	सांनी	सांनी	सां रे	सां रे	सां रे	सां रे
	झिन्	झिन्	झिन्	झिन्	झिन्	झिन्	झिन्	झिन्
	प मं	प ध	प प	ग म	ग प	म ध	प मं	प ऽ
	पर	सेऽ	पर,	टक	राऽ	के न	जाऽ	एंऽ
	सांनी	सांनी	सांनी	सांनी	सां रे	सां रे	सां रे	सां रे
	झिन्	झिन्	झिन्	झिन्	झिन्	झिन्	झिन्	झिन्
	सां नी	सां नी	सां नी	सां–	ग म	प ध	प	–!
	झिन्	झिन्	झिन्	की	सुंऽ	दर	धुन	–!
हर्ष आश्चर्य लिए स्वर	सा ग	प ग	प–	ग प	ग म	ग ध	प मं	प–
	पेऽ	ड़ोंऽ	में	छिप	झींऽ	गुर	बैऽ	ठेऽ
	ग म	ग ध	प मं	प–	सांऽ	प	मंऽ	पऽ
	दीऽ	ऽखन	पाऽ	वेंऽ,	सिऽ	र्फ सु	त जाऽ	एंऽ
	सांनी	सांनी	सांनी	सांनी	सां रे	सां रे	सां रे	सां रे
	झिन्	झिन्	झिन्	झिन्	झिन्	झिन्	झिन्	झिन्
	सां नी	सां नी	सां नी	सां–	ग म	प ध	प	–!
	झिन्	झिन्	झिन्	की	सुंऽ	दर	धुन	–!
तीन बार	सा ग	प ध	प !	–	सां सां	प ग	सां	–!
	गूंऽ	जेऽ	वनऽ	ऽन	खुश	होऽ	मन !	
	सांऽ	ग ध	पं	–	सांसां	प ग	सां	–
	गूंऽ	जेऽ	वन	–	खुश	हो	मन !	

पहाड़ी कोयल

निर्देशक के लिए सुझाव	गीत संगीत			रचना–संतोष साहनी
हर्ष-आश्चर्य	सासा –सा रेम पध	मप धप म– म–		
भरे मधुर स्वर	पर्व ऽत की कोऽ यल,	दीख नहीं पाऽ एऽ		
	रे रे ऽ म	सा सा – सा		
	वन में ऽ छु	पी क ऽ हीं		
	ध़ ध़ ग –रे	सा – सा –!		
	लं बा गी ऽत	गा ऽ ए ऽ!		
पहाड़ी कोयल की बांसुरी के	सां ध सां ध	सां प प –		
स्वरों सी मीठी आवाज में	आ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ		
	रे म रे म	रे म म –		
	आ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ		
कोयल के स्वरों को सुनकर,	सा–सा सासा रेम पध	म–प धप म– म–		
हर्ष, उल्लास भरे स्वरों में	चोंऽच से बां सुरि याऽ	सुंऽ दर ब जाऽ एऽ,		
कुछ ऊँचे से धीरे धीमे	म–प धप म- म-	म–प धप म– म–		
होते स्वर !	सुंऽ दर ब जाऽ एऽ,	सुंऽ दर ब जाऽ एऽ		

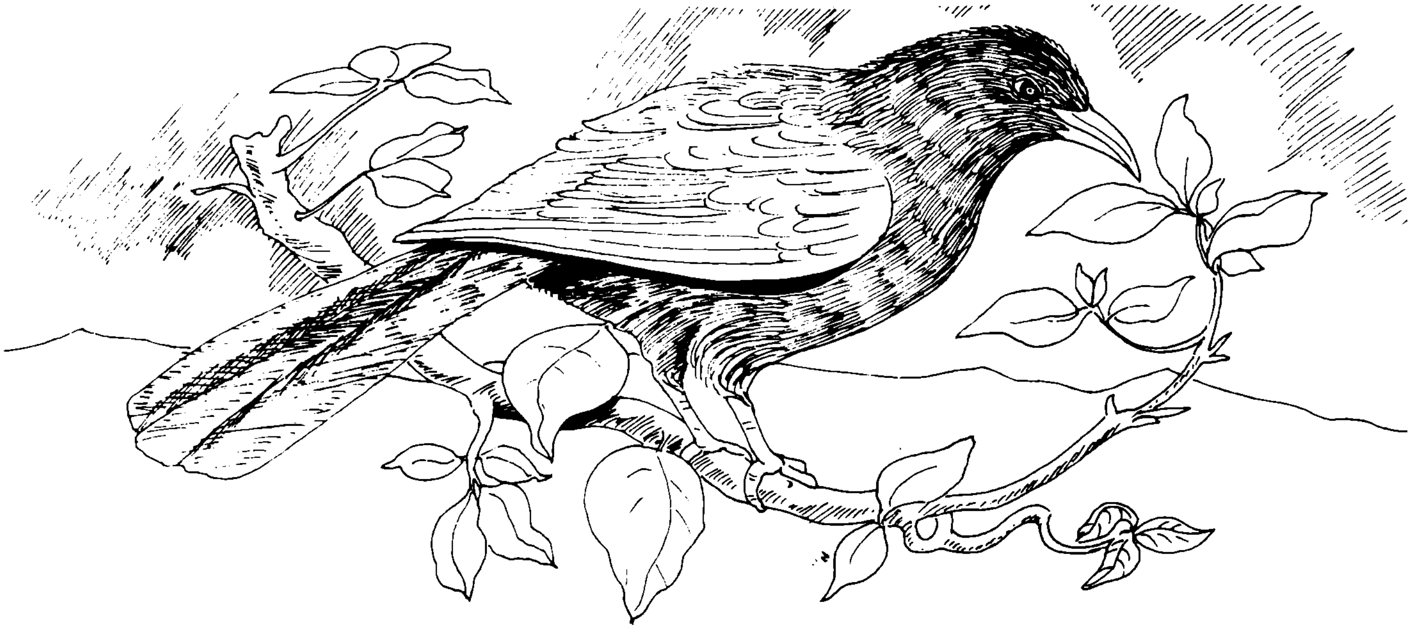

मधुमक्खी

निर्देशक के लिए सुझाव	गीत संगीत											
मध्य लय में। धीमे स्वरों में मधुमक्खी की तरह भनभनाते हुए	नी	स	-स	नी	स	स	नी	स	नी	स	स	नी
	भ	न	ऽन,	भ	न	ऽन,	भ	न,	भ	न	ऽन,	भ
	स	नी	नी	स	नी	-नी	स	नी	स	नी	नी	स
	भ	न	ऽन,	भ	न	ऽन,	भ	न,	भ	न	ऽन,	भ
	स	नी	नी	स	नी	नी	सं	नी	स	नी	नी	स
	भ	न	ऽन,	भ	न	ऽन,	भ	न,	भ	न	ऽन,	भ
धीमे से ऊँचे होते मधुर स्वरों में	प	ध	प	म	ग	म	प	प	प	ध	प	म
	र	स	चू	ऽ	स	न,	म	धु	म	ऽ	खी	ऽ
	म	ग	रे	प	म	ग	रे	रे	प	ध	प	म
	फू	ऽ	ल,	फू	ऽ	ल,	प	र,	आ	ऽ	मं	ऽ
फिर धीमे-मीठे स्वरों में	धध	धध	प	-प	संसं	सं-	प	-प	ग	म	ग	रे
	कुछ	मन	बो	ऽल,	चुप	केऽ	सु	ऽन,	म	धु	म	ऽ
पहले की तरह	नी	स	-सं	नी	स	स	नी	स	नी	स	स	नी
	भ	न	ऽन,	भ	न	ऽन,	भ	न,	भ	न	ऽन,	भ
	स	नी	-	स	नी	नी	स	नी	स	नी	नी	स
	भ	न	ऽन,	भ	न	ऽन,	भ	न,	भ	न	ऽन,	भ
मानों प्रकृति का सौंदर्य निहारते हुए हर्ष आश्चर्य भरे स्वरों में	प	प	प	प	ग	–	ग	–,	ध	प	ध	प
	सु	ब	ह	स	बे	ऽ	रे	ऽ,	धू	ऽ	ऽप	खि
	ग	प	–	प	ग	–	ग	–	ध	ध	–	ध
	ह	वा	ऽ	अ	भी	ऽ	त	ऽक,	न	हीं	ऽ	च

मधुमक्खी

निर्देशक के लिए सुझाव — गीत संगीत — रचना–संतोष साहनी

धीमे स्वर	म	–	म	म	रे		रे	रे,	म॑	ऽ	म॑	म॑	प	–	–	–!
	शां	ऽ	त	है	प	र	ब	त,	शां	ऽ	ऽत	है	व	ऽ	ऽ	न!
धीमे से कुछ ऊँचे होकर	प	सं	ध	सं	प	–	प	–	म	ग	रे	म	म	ग	प	प
फिर धीमे होते मधुर स्वरों में	म	ऽ	खी	ऽ	रा	ऽ	नी	ऽ,	फू	ऽ	ल,	फू	ऽ	ल	प	र
	रे	स	ग	रे	म	ग	प	प	ग	म	ग	रे	स	–	प	–
	मं	ड	ला	ऽ	ए	ऽ	औ	र	गा	ऽ	ती	ऽ	जा	ऽ	ए	ऽ
पहले की तरह	नी़	स	स	नी़	स	स	नी़	स	नी़	स	स	नी़	स	स	–	–
	भ	न	ऽन	भ	न	ऽन	भ	न	भ	न	ऽन	भ	न	ऽ	ऽ	ऽन
	स	नी़	नी़	स	नी़	नी़	स	नी़	स	नी़	नी़	स	नी़	–	–	–
	भ	न	ऽन	भ	न	ऽन,	भ	न	भ	न	ऽन	भ	न	ऽ	ऽ	ऽन

पर्वत के बादल

निर्देशक के लिए सुझाव	गीत संगीत											
मध्य से द्रुत लय मे दो बार	प़	स	–	स	स	–	–	–	स	प	–	प
धीमे से ऊँचे होते बादलों की	दु	धु	ऽम!	दु	धु	ऽ	ऽ	ऽम!	डु	ढु	ऽम!	डु
गरज के गंभीर स्वर												
	प	सं	सं	सं	सं	–	–	सं !	प	सं	सं	सं
	ढ	ऽक!	दु	ऽक!	ढु	ऽ	ऽ	ऽमं!	ढ	ऽक!	ढु	ऽक!
	सं	–	नी॒	प	म	प	ग॒	म	नी॒	ध	नी	ऽ
	ला	ऽ	गे	ऽ	ब	र	स	न,	नी	ऽ	ले	ऽ
	सं	ऽ	नी॒	प	म	प	ग॒	म	म	–	रे	–
	ला	ऽ	गे	ऽ	ब	र	स	न	नी	ऽ	ले	ऽ
पेड़ों-पत्तों पर गिरती धीमे	नी॒,	ध,	नी,	सं	नी॒	ध	नी	सं	नी॒	ध	नी	सं
ऊँचे स्वरों में वारिस की बूँदों	टिप,	टिप,	टिप,	टिप	टुप,	टुप,	टुप,	टुप	टिप,	टिप,	टिप,	टिप
का प्रभाव देते मधुर स्वर												
	सं	ऽ	नी॒	प	म	प	ग॒	म	म	–	रे	–
	ला	ऽ	गे	ऽ	ब	र	स	न	नी	ऽ	ले	ऽ
मध्य लय में हर्ष आश्चर्य-	स	म	–	रे	प	–	प	–	ग॒	म	रे	स
मय धीमे स्वर	अ	भी,	ऽ	अ	भी	ऽ	तो	ऽ,	धू	ऽ	ऽप	खि
	नी॒	ध	नी॒	प	ग॒	म	रे	स	स	म	–	रे
	ह	वा	ऽ	भी	कै	ऽ	सी	ऽ	भ	ली	ऽ	भ
कुछ ऊँचे होते स्वर।	सं	ऽ	नी॒	प	म	प	ग॒	म	नी॒	ध	नी	ऽ
हर्ष-आश्चर्य भरे स्वर	ए	ऽ	का	ऽ	ए	ऽ	क,	ग	ग	न	पे	ऽ,
	सं	सं	नी॒	प	म	प	ग॒	म	नी॒	ध	नी	नी
	घि	र	आ	ऽ	ए	ऽ,	ला	ऽ	गे,	ऽ	ब	र

पर्वत के बादल

निर्देशक के लिए सुझाव | गीत संगीत | रचना–संतोष साहनी

पहले की तरह धीमे, कुछ	नी॒	ध	नी	सं	नी॒	ध	नी	सं	नी॒	ध	नी	सं	नी॒	ध	नी	सं
ऊँचे फिर धीमे स्वर।	टिप	टिप	टिप	टिप	टुप	टुप	टुप	टुप	टिप	टिप	टिप	टिप	टुप	टुप	टुप	टुप
	सं	–	नी	प	म	प	ग॒	म	नी॒	ध	नी	सं	सं	–	–	सं
	ला	ऽ	गे	ऽ	ब	र	स	न	नी	ऽ	ले	ऽ	घ	ऽ	ऽ	ऽन
	सं	–	नी॒	प	म	प	ग॒	म	म	–	रे	–	स	–	–	–
	ला	ऽ	गे	ऽ	ब	र	स	न	नी	ऽ	ले	ऽ	घ	ऽ	ऽ	ऽन

पहाड़ी टट्टू

निर्देशक के लिए सुझाव | गीत संगीत | रचना–संतोष साहनी

मध्य लय में। पहाड़ी राहों	नी–! ध–! नी–! ध–!	नी ध ध, नी	ध – – –!	
में बजती घंटियों की गूँज	टिऽन! टिऽन! टिऽन! टिऽन!	ट न न, ट	न ऽ ऽ ऽन!	
से धीमें स्वर				
	ध– नी– ध– नी–	ध नी नी नी	ध नी - !	
	टुन, टिन, टुन, टिन,	टुन, टुन, टुन, ऽ	– – – !	
सदा सदा से बोझे उठाते	ध – ध प	मं – प प,	ध प ध, प	मं – प –,
टट्टुओं के धैर्य और कुछ	ट ऽ ट्टू ऽ	जा ऽ एं ऽ,	भा ऽ र, उ	ठा ऽ एं ऽ,
उदासीभरी दर्शाते स्वरों में				
	रे – – ग	मं – प -	ध – – नी	सं - रें -!
	दू ऽ ऽर से	आ ऽ एं ऽ,	दू ऽ ऽर ही	जा ऽ एं ऽ!
टट्टुओं की धीमी स्थिर	ग रे, मं ग,	प मं, ध प,	ध ऩी, ध प	मं प ध ध,
पहाड़ी रास्तों पर ऊपर-	प र ब त,	प थ, प र,	च ल ते ऽ,	दि न भ र
नीचे जाती चाल!				
थके, उदास स्वरों से	ऩी ऩी ध ध	ध़ ध़ प प	मं मं म म	ग मं प प
	जब, थक, जा ते,	तब, रुक, जा ते,	सु स्ता, ले ते	फिर चल पड़ ते
पहले की तरह	धप धप मं– प–	धध धप मं प	ऩी ध ऩी ध	ऩी ध ध ऩी
	गले ऽकी घंऽ टीऽ	बज तीऽ रह तीऽ	टिन टिन टिन टिन	ट न न ट
	ध – – ध	ध ऩी ध ऩी	ध ऩी ऩी ऩी!	
	न ऽ ऽ न	टुन टिन टुन टिन	टुन टुन टुन ऽ!	

रंग रंगीली तितलियां

निर्देशक के लिए सुझाव | गीत संगीत | रचना–संतोष साहनी

मध्य लय में, हर्ष-आश्चर्य भरे धीमे से कुछ ऊँचे होते मधुर स्वरों में।	म	प	ग	ध	नी	सं	सं	नी	ध
	रं	ऽ	ग	रं	ऽ	ग	की	ऽ	ऽ
मानो एक के बाद एक रंग की अनेकों तितलियां देखते हुए	म	प	म	ध	नी	सं	सं	नी	ध
	ढं	ऽ	ग	ढं	ऽ	ग	की	ऽ	ऽ
	म	प	म	ध	नी	सं	सं	नी	ध
	सुं	द	र,	सुं	द	र,	प्या	ऽ	री
	ध	रें	सं	नी	ध	प	म	–	–
	ति	त	लि	यां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	म	प	ध	नी	सं	रें	सं	–	–!
	ति	त	लि	यां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ!
	म	प	ध	ध	नी	सं	सं	नी	ध
	नी	ऽ	ली	औ	ऽ	र	पी	ऽ	ली
	म	प	ध	ध	नी	सं	सं	नी	ध
	भू	ऽ	री	औ	ऽ	र	का	ऽ	ली
	म	प	ध	ध	नी	सं	सं	नी	ध
	ला	ऽ	ल	का	ऽ	श	नी	ऽ	ऽ
	ध	रें	सं	नी	ध	प	म	–	–
	ति	त	लि	यां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	म	प	ध	नी	सं	रें	सं	–	–
	ति	त	लि	यां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
तितलियों की कोमल - चंचल उड़ान के चित्र दिखायें मधुर स्वरों में।	म	प	ध	ध	नी	सं	सं	नी	ध
	धी	ऽ	रे	धी	ऽ	रे	धी	ऽ	रे
	म	प	ध	ध	नी	सं	सं	नी	ध
	पं	ऽ	ऽ	ख	ऽ	हि	ला	ऽ	तीं

रंग रंगीली तितलियां

निर्देशक के लिए सुझाव	गीत संगीत									रचना–संतोष साहनी
	म	प	ध	ध	नी	सं	सं	नी	ध	
	फू	ऽ	ल	फू	ऽ	ल	प	ऽ	र	
	ध	रें	सं	नी	ध	प	म	–	म	
	हैं	ऽ	ऽ	स	ऽ	ज	जा	ऽ	तीं	
	म	प	ध	नी	सं	रें	सं	–	–	
	ति	त	लि	यां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	म	प	ध	ध	नी	सं	सं	नी	ध	
	थि	र	क	थि	र	क	क	ऽ	र	
	म	प	ध	ध	नी	सं	सं	नी	ध	
	म	ट	क	म	ट	क	क	ऽ	र	
	म	प	ध	ध	नी	सं	सं	नी	ध	
	फू	ऽ	ल	फू	ऽ	ल	की	ऽ	ऽ	
	ध	रें	सं	नी	ध	प	म	–	–	
	गं	ऽ	ध	सूं	ऽ	घ	तीं	ऽ	ऽ	
	म	प	ध	नी	सं	रें	सं	–	–	
	ति	त	लि	यां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
धीमे से धीरे ऊँचे होते, फिर कुछ धीमे होते मधुर, हर्ष आश्चर्य भरे स्वरों में।	म	प	म	ध	नी	सं	सं	नी	ध	
	उ	ड़	ती	उ	ड़	ती	उ	ड़	ती	
	म	प	म	ध	नी	सं	सं	नी	ध	
	फू	ऽ	लों	प	र	जा	बै	ऽ	ठीं	
	म	प	म	ध	नी	सं	सं	नी	ध	
	फू	ऽ	लो	सी	ब	न	जा	ऽ	तीं	
	ध	रें	सं	नी	ध	प	म	–	–	
	ति	त	लि	यां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	म	प	ध	नी	सं	रें	सं	–	–!	
	ति	त	लि	यां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ!	

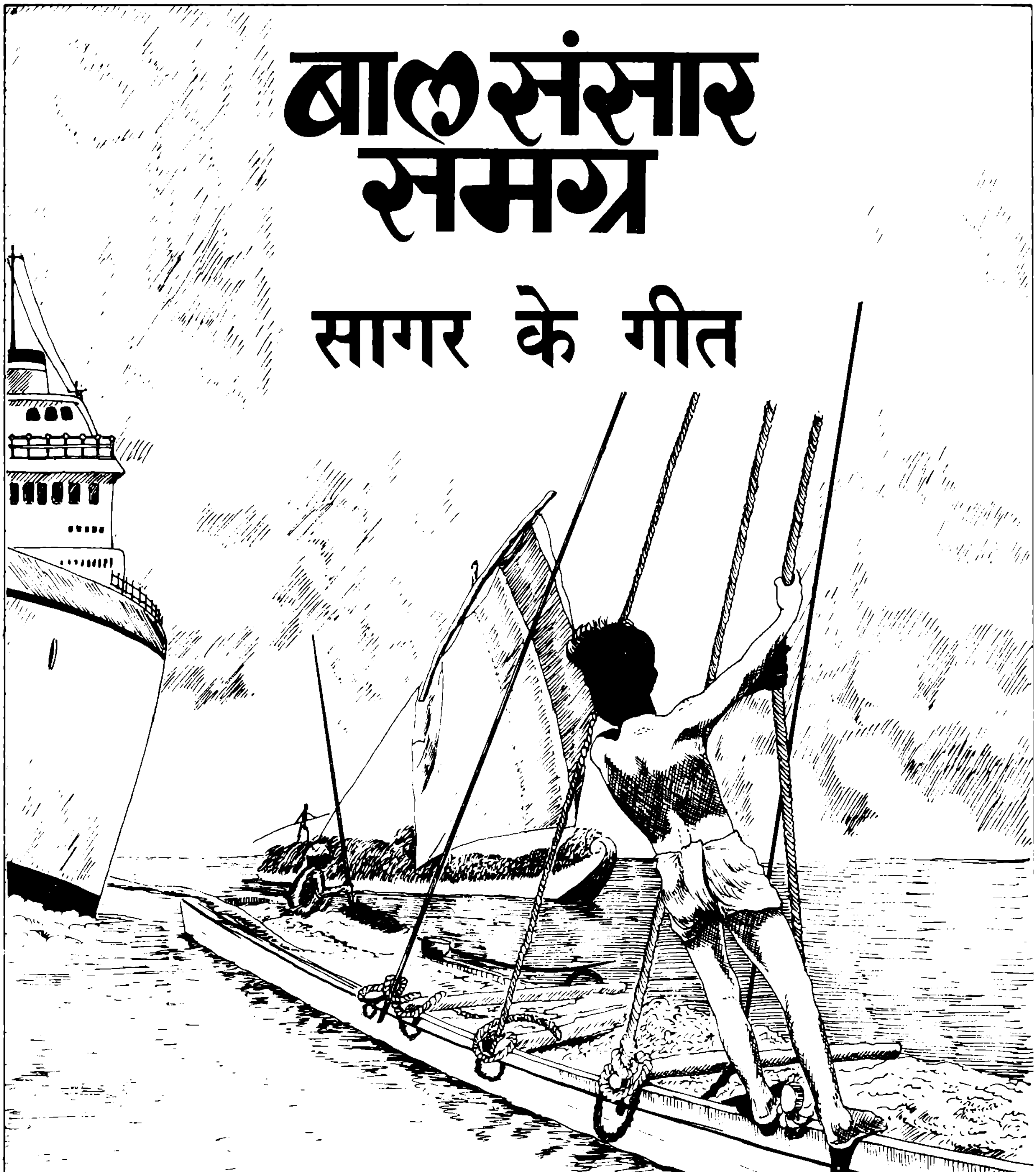
बाल संसार समग्र
सागर के गीत
PUSPITA

सागर के गीत-परिचय

प्यारे बच्चो,

मैं बम्बई में समुद्र के पास रहती हूं। रोज सुबह मैं समुद्र के किनारे की रेत पर सैर करने जाती हूं। कभी अकेली जाती हूं और कभी बच्चों और बड़ों के साथ।

समुद्र तट की रेत पर चलते हुए हम सभी, दूर-दूर तक फैले, सुन्दर नीले सागर को देखकर खुश होते हैं। समुद्र की लहरों के साथ साथ आ रही शुद्ध हवा में सांस लेकर हम स्वस्थ होते हैं।

कभी हम सभी रेत के बीच में से झांकती-चमकती सीपियां और छः छोटे-छोटे घोंघे और शंख चुनते हैं। चुन कर उन्हें घर ले जाकर अपने घर को सजाते हैं।

कभी हम गीली रेत इकट्ठी करके रेत के घर बनाते हैं।

समुद्र किनारे पर हम मछियारों को जाल डाल कर मछलियां पकड़ते भी देखते हैं।

कई मछियारे तो अपनी नावों में दूर-दूर, समुद्र में जाते हैं, तरह-तरह की मछलियां पकड़ कर बाजार में बेचने के लिए।

वहीं से दूर समुद्र में, बड़े-बड़े जहाज भी चलते दिखाई देते हैं कभी-कभी। यह समुद्री जहाज यात्रियों को एक देश से दूसरे देश में ले जाते हैं।

पर कई कुछ छोटे समुद्री जहाज सिर्फ़ व्यापार का सामान एक देश से दूसरे देश में ले जाते हैं।

कई बहुत बड़े और छोटे जहाज हमारे देश की नाव सेना के जहाज हैं।

और फिर हैं वे नावें जिन्हें स्टीमर कहते हैं। भारत के हर कोने से जो बच्चे और बड़े बम्बई की सैर करने आते हैं, वे, इन स्टीमरों पर बैठ कर, समुद्र की छोटी-छोटी सैर के मजे लूटते हैं।

बच्चों, अपने इन स्वर लिपी सहित रचे गीतों द्वारा मैंने आपको समुद्र तट के कुछ एक मनोरंजक दृश्यों का परिचय दिया है।

आशा है आप इन गीतों को पढ़कर और गाकर, कविता, संगीत, गीत और सागर दृश्यों का ज्ञान और आनन्द पा सकेंगे।

इन गीतों का पूरा आनन्द लेने के लिए संगीत का कुछ ज्ञान जरूरी है। आशा है वह ज्ञान आपको घर में अपने बड़ों से और स्कूल में अपने संगीत अध्यापक-अध्यापिका जी से मिल सकेगा।

संतोष साहनी

संगीत शिक्षकों के लिए कुछ शब्द

प्रकृति हम सबकी मां, मित्र और सहायक है। वह सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं शक्ति दायक है।

बालकों का, प्रकृति के अनेकानेक रूप-रस-गंध–स्पर्श-घ्राणों से स्वाभाविक ही संबंध है। इस स्वाभाविक सबंध को इन गीतों द्वारा मैंने कुछ और विकसित और पक्का करने की कोशिश की है।

बच्चों का गीत-संगीत और लय से भी स्वाभाविक संबंध है। उस संबंध को सरल सहज संगीत-साहित्य द्वारा और विकसित करना भी मेरा उद्देश्य रहा है।

इन गीतों को मैं शास्त्रीय रागों की शुद्धता में भी पिरो सकती थी। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया! कविताओं के शब्द वाक्य, भाव चित्रों को उभारने के लिए जो श्रुति स्वर या स्वर-समूह मुझे उपयुक्त लगे मैंने उन्हीं का प्रयोग करने की कोशिश की है।

मूल रूप-रस-गंध–स्पर्श-घ्राण के आसपास अन्य कितने ही अतितार, तार,-कोमल, अति कोमल शेड होते हैं। मैंने बालकों की इन शेड्ज़ से (Shades) परिचय कराने की एवं इस परिचय द्वारा, उनकी ज्ञानेन्द्रियों, मन-बुद्धि की संवेदनशीलता का और अधिक विकास करने का प्रयास किया है।

संगीत अध्यापकों से विनम्र निवेदन है कि वे इन गीतों के शब्द-भाव-चित्रों और स्वर-स्वर समूहों को, उनकी गति लय को, समझ कर, उनके अनुकूल ही यह गीत बच्चों को सिखाएं।

यह सभी गीत अधिकतर सरल बातचीत, कहानी व नाटक के रूप में रचे गए हैं। गीत सिखाते वक्त अध्यापक गीत के सुरीलेपन और रोचक अभिव्यक्ति की ओर पूरा ध्यान रखें। तभी यह गीत सुन्दर और सफल रहेंगे।

यही समुद्र है

ऊपर नीला आसमान और
नीचे नीला, गहरा पानी ।
दूर दूर तक, दूर दूर तक,
कितना, कितना. कितना पानी ।
यही है सागर ? यही समुद्र है ?
हां जी, हां ऽ ! हां जी, हां ऽ
यही है सागर ! यही समुद्र है ।
बून्द उड़ाती, उछल कूदती,
आगे बढ़ती ! पीछे मुड़ती,
छोटी छोटी और बड़ी सी,
लहरों वाला नीला पानी !
आ हा हा ! आ हा हा
यही है सागर ! यही समुद्र है !
प्यास लगी है, पीलूं इसको ?
ज़रा सा चख के देखूं इसको ?
अरे बाप रे !
यह तो बहुत नमकीन है पानी
पर है कितना सुन्दर पानी
हां जी हां ! हां जी हां !
यही है सागर ! यही समुद्र है।

आओ, सागर जल में तैरें

आओ ! सागर जल में तैरें
बुला रही हैं शीतल लहरें !
फ्राक उतारें, कमीज़ उतारें
सिर्फ़ एक चड्ढी ही पहरें
दौड़ के सागर में घुस जाएं
बुला रही हैं शीतल लहरें ।
आओ ! सागर जल में तैरें ।
छप ! छप ! छप ! पैर मार कर,
छप ! छप ! छप ! हाथ चलाकर
मछली बन, सागर में तैरें
बुला रही हैं शीतल लहरें ।
आओ ! सागर जल में तैरें !
स र र र र र र र र हवा चल रही,
तो भी गरमी हमें लग रही
श र र र र र र गाना गा कर
बुला रही हैं शीतल लहरें !
आओ सागर जल में तैरें !
हम लहरों पर कूद रहे हैं,
लहरें हम पर कूद रही हैं,
अरे आई मेरे सिर पर लहरें !
बुला रही हैं शीतल लहरें
आओ ! सागर जल में तैरें !

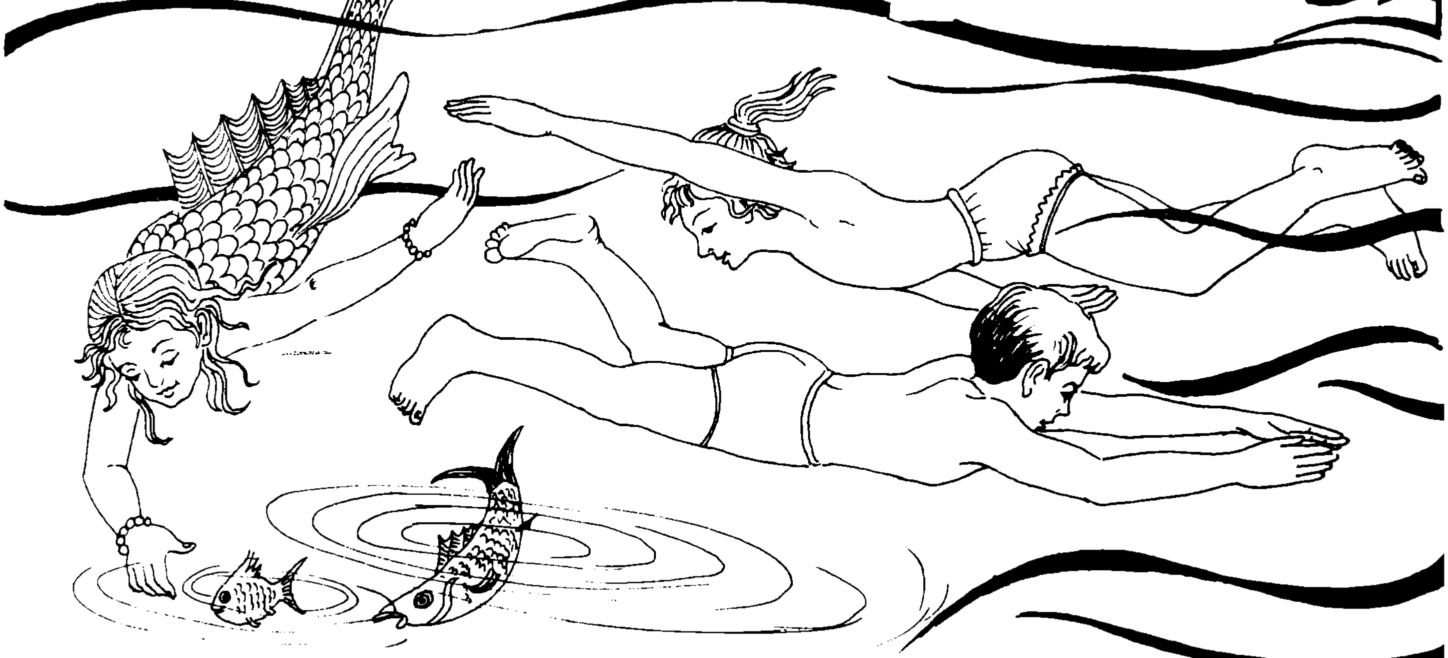

सीपियां और शंख

प्रश्न—

रेतीले मैदान पे बिखरे
इधर, उधर, चारों तरफ
यह क्या हैं ? वह क्या हैं ?
अरे ! अरे ! यह सिपियां हैं !
और देखो, यह शंख हैं
कितने शंख ! और सिपियां हैं !
सिपियां, शंख, कहां से आए ?
कौन छोड़ गया है इनको ?
रेत में यह सब कैसे आएं ?
हमें बताएं ? हमें बताएं ?
रंग रंग के शंख और सिपियां
रोज़ रेत पर कहां से आएं ?

उत्तर—

सागर जल में जीते रहते
छोटे छोटे अनेक जीव
अपने अन्दर ही के रससे
अपने अपने घर बनाएं
कोई घर घोंघे, कोई सिपियां
कोई सुन्दर शंख बन जाएं ।

उमड़ उमड़ कर लहरें आएं
साथ शंख और सिपियां लाएं
इन्हें रेत पर छोड़ के जाएं
मीना पप्पू झुक झुक जाएं

सुन्दर शंख और सिपियां चुनकर
अपनी जेबे भरते जाएं

इक मछियारा, इक मछियारन

कंधों तक गहरे पानी में
खड़ा हुआ है इक मछियारा
इक मछियारन जाल बिछाकर,
सागर जल में ।
कितनी देर से खड़ा हुआ है
ठंडे पानी में मछियारा
जाल बिछा कर सागर जल में ।
ऊंची ऊंची लहरें आएं
उछल, उछल जाए मछियारा
और मछियारन
जाल बिछा कर सागर जल में ।

आख़िर फंसी जाल में मछली,
बाहर खेंच लाया मछियारा
और मछियारन
बिन जल, मछली लगी तड़पने।
पकड़ पकड़ कर केकड़े मछली
और लाबस्टर भी तब मछियारा
और मछियारन
अपनी लगे टोकरी भरने।
कंधों पर रख जाल, टोकरी
सिर पर रख कर तब मछियारा
और मछियारन
लौट चले अब घर को अपने!

पी लो, नारियल पानी

नारियल वाले का गीत

नीला, नीला, सागर
रेत का किनारा,
पास ही खड़ा है बन
नारियल का सारा!
पीलो नारियल पानी!
नारियल पानी ऽ ऽ ऽ!
रेतीली ज़मीन में
उगता है नारियल
नमकीन है सागर पानी
मीठा नारियल जल।
पीलो नारियल पानी
नारियल पानी ऽ ऽ!
ऊंचे पेड़ नारियल के
कितने दुबले पतले,
छतरी जैसे पत्तों में पर
मोटे फल हैं लटके
पीलो नारियल पानी!
नारियल पानी ऽ ऽ ऽ!
देखो, कैसे नारियल वाला
झट से पेड़ पे चढ़ के
फलों के गुच्छे बांध, बांध कर
धरती पर है पटके।
पीलो नारियल पानी
नारियल पानी ऽ ऽ!
अभी तोड़ कर लाया हूं मैं
नारियल के फल ऽ
जिसको प्यास लगी है, पीलो
ताज़ा! मीठा जल!
पीलो नारियल पानी!
नारियल पानी ऽ ऽ!

रेत का घर

पप्पू, मीना, दोनों मिल कर
रेत का घर हैं बना रहे,
गीली, गीली रेत जोड़कर
सुन्दर घर इक बना रहे!
रेत के कमरे, रेत की सीढ़ी,
रेत की खिड़की, रेत की छत
गीली गीली रेत जोड़ कर
सुन्दर घर इक बना रहे।
बना रहे हैं रेत का आंगन,

सपने जैसी धुंधली, सुंदर
झिल मिल करती
इसकी है परछाई हिलती ।
जाल डाल नीली लहरों में
खड़ी दूर इक
मछियारे की कश्ती ।

यह है आंगन की दीवार
और दीवार के चारों ओर
बहा रहे हैं जल की धार ।
मीना लाई कहीं से पत्तियां
पप्पू लाया कहीं से फूल
दोनों मिलकर आंगन में अब
सुन्दर बाग भी बना रहे ।

मैं हूं छोटा सागर स्टीमर

छछक ! छछक ! चले मशीन !
भों ऽ ! भों ! बजता हॉर्न
देखो जी, मैं हो गया स्टार्ट
मैं हूं छोटा स्टीमर !
आओ जी, बैठो स्टीमर पर,
सैर करो सागर लहरों पर,
सागर फैला दूर दूर तक
मैं भी जाऊं दूर दूर तक !
सागर की है नीली लहर
मैं पंछी, उड़ता लहरों पर,
डगमग ! डगमग ! डगमग ! डगमग !
जाऊँ नीचे ! आऊँ ऊपर !

मछियारे की नाव

दूर, वहां जहां
आसमान और सागर मिलते
बीच में उनके
सफ़ेद सफ़ेद क्या है वह !
एक बड़ी सी तितली कोई ?
या शायद कोई जल की परी है ?
या है वह इक सफ़ेद बदली ?
या तैरता हंस है कोई ?
नहीं जी, नहीं ऽ ऽ !
वह इक नाव है मछियारे की !
सुबह की धूप में
नीले जल में

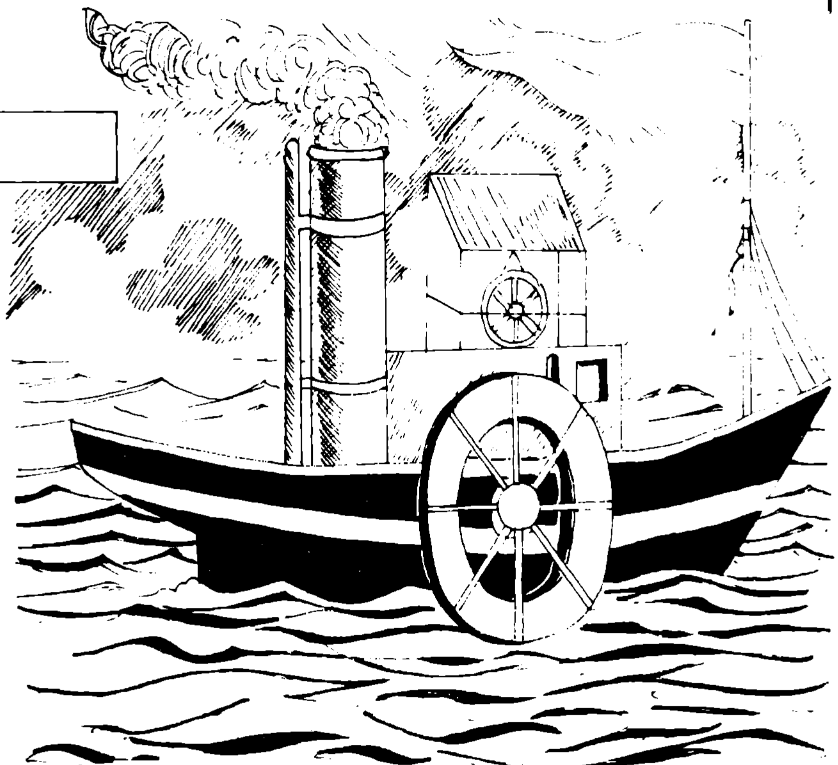

बच्चे–
सैर कर रहे हम स्टीमर पर,
स्टीमर नाचे लहर लहर पर,
सुनो, सुनो गाती है लहर
छपक ! छपक ! छरर ! छरर !
छछक ! छछक ! चले मशीन
भों ऽ ! भों ऽ ! बजता हॉर्न ।
स्टीमर–
देखो जी ज़रा मेरी चाल !
मैं हूँ छोटा स्टीमर !

नन्हीं मछली

नीले समन्दर
के पानी के अन्दर
रहे एक मछली
है नन्हीं और पतली !
परों को हिला के
और दुम को डुलाके
ज़रा दूर जाए
तो फिर लौट आए।

वह उछले जो ऊपर
तो नाचे लहर पर
ज़रा मुहं दिखाए
कि झट से छिपाए।
तो डुबकी लगा के
परों को हिला के
वह नीचे को जाए
हरी काई खाए।
वह जल में ही खाती
वहीं सांस लेती
वह सोती वहीं है
रोती बिल्कुल नहीं हैं।
पकड़ने जो जाऊं
तो धोखा मैं खाऊँ
वह हाथों में आए
तो झट भाग जाए।

यही समुद्र है !

निर्देशक के लिए सुझाव | गीत संगीत | रचना–संतोष साहनी

मध्यलय सागर के प्रथम दर्शन से	स- गग रे- प- ऊऽ पर नीऽ लाऽ	गम गस -स सग़ आऽ समा ऽन और	स- ग- रे- प- नीऽ चेऽ नीऽ लाऽ	गम गरे स- ग- गह राऽ पाऽ नीऽ
व्यक्त होने आश्चर्य-हर्ष के भाव। धीमे से कुछ ऊँचे होते मधुर स्वरों में बच्चे गाएँ	पध पध संसं संसं दूऽ र,दू ऽर तक	सग गरे पप पप दूऽ र,दू ऽर तक,	सस ग- रेरे प- कित नाऽ, कित नाऽ	गम गरे स- प- कित नाऽ, पाऽ नीऽ
	सप -ध ध- धध? यही ऽहै साऽ गर?	सध धध -ध ध-? यही समु ऽद्र हैऽ?	गम गरे ग- – हाँऽ जीऽ हाँऽ ऽ	गम गरे ग- – हाँऽ जीऽ हाँऽ ऽ!
	धप मग स- गग यही ऽहै साऽ गर!	पम गस -स स- यही समु ऽद्र हैऽ		
शब्दों के भावों को व्यक्त करते स्वर चित्र!	स- सस रे- स- बूँऽ ऽदउ ड़ाऽ तीऽ	गप गप -प प- उछ ल,कू ऽद तीऽ,	मग पम धप नीध आऽ गेऽ बढ़ तीऽ	संनी धप मग रेस पीऽ छेऽ मुड़ तीऽ
	सरे ग-, सरे ग- छोऽ टीऽ, छोऽ टीऽ	सप -प प- प- औऽ ऽरब ड़ीऽ सीऽ	गम गरे स- ग- लह रोंऽ वाऽ लाऽ	गम गरे स- प नीऽ लाऽ पाऽ नीऽ
	सप -प प –! अहा ऽहा हा ऽ!	पसं -सं सं –! अहा ऽहा हा ऽ!	धप मग स- गग, यही ऽहै साऽ गर,	पम गस -स स- यही समु ऽद्र हैऽ!
	पध -ध प- प- प्या ऽसल गीऽ हैऽ	प- सं- पप सं-? पीऽ लूँऽ इस कोऽ?	पप -ध पप धध ज़रा ऽसा चख कर	प- ध- पप प- देऽ खूँऽ इस कोऽ
	गंगं -सं -सं संसं! अरे ऽबा ऽप रेऽ!	पध पध पध पध यह तोब हुत नम	सं- पम गम प- कीऽ नहै पाऽ नीऽ!	सं- प- सं – ओऽ होऽ हो ऽ
	गम गरे गम प- पर हैऽ कित नाऽ	गम गरे सरे ग- सुंऽ दर पाऽ नीऽ	गम गरे ग- –! हाँऽ जीऽ हाँ –	गम गरे ग- –! हाँऽ जीऽ हाँ –
	धप मग स- ग- यही ऽहै साऽ गर	'पम गस -स स-! यही समु ऽद्र है।	धप मग स- ग- यही ऽहै साऽ गर	पम गस -स स-! यही समु ऽद्र है।

आओ सागर जल में तैरें

निर्देशक के लिए सुझाव | गीत संगीत | रचना–संतोष साहनी

मध्यलय	स- प- ग- पप	गम गरे सरे ग-	धध -प मग रे-	पम गरे सरे ग-
धीरे से ऊंचे होते।	आऽ ओऽ साऽ गर	जल मेंऽ तैऽ रेंऽ,	बुला ऽर ही हैऽ	शीऽ तल लह रेंऽ,
चाव और हर्ष भरे				
मधुर स्वर	गप -ध प- प-	पप -ध प- प-	ध- धप -प प-	सग -ध प- प-
	फ्राऽ कउ ताऽ रेंऽ	कमी ज़उ ताऽ रेंऽ	सिऽ फए ऽक चऽ	ढ़ीऽ ऽही पह रेंऽ
	सं- -सं प- पप	सरे गम प- प-,	धध -प मग रे-	पम गरे सरे ग-
	दौऽ ड़के साऽ गर	मेंऽ घुस जाऽ एंऽ,	बुला ऽर हीऽ हैऽ	शीऽ तल लह रेंऽ
पानी में पैर-हाथ चलाने का	सस! सस! सस! सस!	ग- गस -स सस	पप! पप! पप! पप!	प- मग रेग मम
प्रभाव प्रकट करते धीमे से	छप! छप! छप! छप!	पैऽ रमा ऽर कर,	छप छप छप छप	हाऽ थच लाऽ कर
कुछ ऊँचे होते स्वर				
	संसं संसं नीनी ध-	पध पम गम प-	धध -प मग रे-	पम गरे सरे ग-
	मछ लीऽ बन साऽ	गर मेंऽ तैऽ रेंऽ	बुला ऽर हीऽ हैऽ	शीऽ तल लह रेंऽ
पवन की सरसराहट व्यक्त	सरे सरे सरे सरे	गग -स -रे ग-	प प पप प-	मग -रे -ग म-
करते धीमे मधुर स्वर	सर् सर् सर् सर्	हवा ऽच ऽलर हीऽ	तो भी गर मीऽ	हमें ऽल ऽगर हीऽ
धीमे से कुछ ऊँचे फिर	संसं नीनी धध पप,	संसं नीनी धध पप	संसं नीनी धध पप	पध पम गम प-
धीमें होते मधुर स्वर	शर्, शर्, शर्, शर्,	शर् शर् शर् शर्	गाऽ नाऽ गाऽ कर	गाऽ नाऽ गाऽ कर
	धध -प मग रे-	पम गरे सरे ग-	धध -प मग रे-	पम गरे सरे ग-
	बुला ऽर हीऽ हैंऽ	शीऽ तल लह रेंऽ	बुला ऽर हीऽ हैंऽ	शीऽ तल लह रेंऽ
चपलता व्यक्त करते	सस पप गग पप	सप -प प- प-	पप संसं पप संसं	सप -प प- प-
मधुर स्वर	हम लह रोंऽ पर	कूऽ दर हेऽ हैंऽ	लह रेंऽ हम पर	कूऽ दर हीऽ हैंऽ
	रेंरें सं- नी धप	पध पम गम प-	धध -प मग रे-	पम गरे सरे ग-
	अरे! आऽ ई मेरे	सिर पर लह रेंऽ	बुला -र ही- हैं-	शीऽ तल लह रेंऽ

सागर में सिपिया और शंख

नेर्देशक के लिए सुझाव	गीत संगीत		
बातचीत के ढंग में	स ध़ स रे	ग- -म गम प-	गग -ध प -प
संगीतमय स्वरों में	रे ती ले मै	दाऽ ऽन पे बिख रेऽ	इध ऽरउध ऽर
मध्यलय में बच्चे गाएँ!			
	गग धध प -?	संसं पप सं -?	संसं -रें सं- संसं
	यह क्या है ऽ ?	वह क्या है -?	अरे ऽअ रेऽ यह
नाटकीय ढंग से सागर के	संसं प सं सं	पसं -सं सं -!	सरे गम पध पम
बारे में ज्ञान बढ़ाते भाव	और दे खो, यह	शंऽ ऽख है ऽ	कित नेऽ शंख और
व्यक्त करते हुए संगीतमय			
स्वरों में बालक गाएँ !	गम पध पमं पप	गम -ध पमं प-	सं-सं नी-नी नीगम पध
	सिपि यांऽ शंऽ खक	हाँऽ ऽसे आऽ एऽ ?	कौऽन छोऽड़ गयाऽ हैऽ
	पसं संसं नीनी धध	रें- रें- संनी सं-?	गम -ध प- प-
	रेऽ ऽतपे यह सब	कैऽ सेऽ आऽ एऽ ?	हमें ऽब ताऽ एँऽ
	रेस गरे मग पमं	पध नीसं नीध प-	सं- पध -ध धध
	उम ड़उ मड़ कर	लह रेंऽ आऽ एऽ	साऽ थशं ऽख और
	संप -ध -ध धध	गम पध पमं प-,	स- पप ग- पप
	इन्हें ऽरे ऽत पर	छोऽ ड़के जाऽ एँऽ,	मीऽ नाऽ पऽ प्पू
	सरे गम पग पप	पग पध पग पप	गम गरे प- प-
	सुंऽ दर शंऽख और	सिपि यांऽ चुन चुन	अप नीऽ जेऽ बेऽ

एक मछियारा, एक मछियारन

निर्देशक के लिए सुझाव | गीत संगीत | रचना–संतोष साहनी

सागर और मछियारों की कहानी नाटकीय ढंग से मधुर स्वरों में बच्चे गाएँ !	स- सप मम मम कंऽ धोऽ तक गह	मस सप म- म- रेऽ पाऽ नीऽ में	मम -प म- म- खड़ा ऽहु आऽ हैऽ	मम मप म- प- इक मछि याऽ राऽ
	मम मनी प- पप और मछि याऽ रन	मसं -नी धनी संसं जाऽ लबि छाऽ कर	सरे गप मग म- साऽ गर जल मेंऽ	सरे गप मग म- साऽ गर जल मेंऽ
मध्य लय में	सस सप म- मम कित नीऽ देऽ ऽरसे	मम -प म- म- खड़ा ऽहु आऽ हैऽ	म- मनी प- प- ठंऽ डेऽ पाऽ नीऽ	म- मप म- म- मेंऽ मछि याऽ राऽ
	मम मनी प- पप और मछि याऽ रन,	मसं -नी धनी संसं जाऽ ऽल वि छाऽ कर	सरे गप मग म- साऽ गर जल मेंऽ	सरे गप मग म- साऽ गर जल मेंऽ
	स- सप मग म- ऊँऽ चीऽ, ऊँऽ चीऽ	सस सप मग म– लह रेंऽ आऽ एऽ	मम मनी पप प- उछ ऽलउ छऽल जाऽ	मम मनी प- प- एऽ मछि याऽ राऽ
	मम मनी प- पप और मछि याऽ राऽ	मसं -नी धनी संसं जाऽ ऽलवि छाऽ कर	सरे गप मग म- साऽ गर जल मेंऽ	सरे गप मप म- साऽ गर जल मेंऽ
	स- सप मम मम आऽ खिर फसी ऽजा	-स सप मग म- ऽल मेंऽ मछ लीऽ	म- मनी प- पप वाऽ हर खेंऽ चला	पम मनी प- प- थाऽ मछि याऽ राऽ
	पम मनी प- पप और मछि याऽ रन	पप संसं धनी सं- जल बिन मछ लीऽ	गम पध पमे प- लगी ऽत ड़प नेऽ	गम पध पमे प- लगी ऽत ड़प नेऽ
	सरे सम रेप मम पक ड़,प कड़ कर	सरे सम रेप मम केऽ कड़े, मछ लीऽ,	रेम रेप मप मम और लाऽव स्टर भीऽ	मम मप प- म- इक मछि याऽ राऽ
	मप मनी प- पप और मछि याऽ रन	मसं संनी धनी सं- अप नील गेऽ ऽऽ	सरे गप मग म- टोऽ करी भर नेऽ	सरे गप मग म- टोऽ करी भर नेऽ
	मस सप मम मम कंऽ धोंऽ पर रख	मस सस पम म- जाऽ ल,टो ऽक रीऽ	मस सप मम मम सिर पर रख कर	मप मप म- म- इक मछि याऽ राऽ
	मप मनी प- पप इक मछि याऽ रन	मसं -नी धनी संसं लौऽ ऽटच लेऽ अब	सरे गप मग म- घर कोऽ अप नेऽ	सरे गप मग म- घर कोऽ अप नेऽ

नारियल वाले का गीत

निर्देशक के लिए सुझाव	गीत संगीत			रचना–संतोष साहनी
नारियल वाले को निमंत्रण देती पुकार व्यक्त करते मधुर स्वर	प़स सरे गुरे सस नीला नीला साऽ गर,	प़स सरे गुगु – रेत का कि नारा ऽ	प़म गुरे सरे गुगु पाऽस ही खड़ा है वन	प़म गुरे सस पप नारियल का सारा, पीलो
	स-रे गुरे सस पप नारि यल पानी, पीलो	स-रे गुरे सस पप नारि यल पानी पीलो	स-रे गुरे सस – नारि यल पा नीऽ-	प पप प सं ना रियल पा नी
	स- सस स –! नाऽ रियल पानी !			
बातचीत के ढंग में ढंग में संगीतमय स्वर	प़स स-रे गु-रे सस रेती लीज़ मीऽन मेंऽ	प़स सरे गुगु गुगु उगता ऽ है नारि यल	पप मम गुरे सरे नमकीन है सागर पानी	मम गुरे सस पप मीठा नारियल फल पीलो
	स-रे गुरे सस पप नाऽरि यलपा नी- पीलो	स-रे गुरे सस पप नाऽरि यलपा नीऽ पीलो	स-रे गुरे सस – नाऽरि यल पा नीऽ ऽ	प पप प सं- ना रियल पा नीऽ
	स सस स- स-! ना रियल पाऽ नीऽ!			
नारियल वृक्षों के बारे में ज्ञान देते मधुर स्वर	प़स स-रे ग-रे सस ऊँचे पेऽड़ नारि यलके	मम गुरे सम – कितने दुबले पतले ऽ !	पपप मम गुरे सरे छतरी जैसे पत्तों में पर	मम गुरे सस पप मोटे फल है लटके, पीलो
	स-रे गुरे सस पप नाऽरि यल पानी, पीलो	स-रे गुरे सस पप नाऽरि यल पानी पीलो	स-रे गुरे सस – नाऽरि यल पा नीऽ-	प पप प सं ना रियल पा नी
	स सस स स! ना रियल पा नी!			
कुछ नाटकीय ढंग से मधुर स्वर	प़स सरे गु-रे सस देखो, कैसे नारियल वाला	ममम गुरे सम – झट से पेड़ पे चढ़के ऽ	पपप मम गु-रे ससरे फल के गुच्छे बाँध बाँध के	मम गुरे सस पप धरती पर है पटके! पीलो
	स-रे गुरे सस, पप नारि यलपा नीऽ पीलो	स-रे गुरे सस - नाऽरि यल पानी ऽ	प पप प सं- ना रियल पा नीऽ	स सस स –! ना रियल पा नीऽ
नाटकीय ढंग से पुकारते मधुर स्वरों में बच्चे गाएँ!	प़स ससरे गुरे सस अभी तोऽड़कर लाया हूँ मैं	मम गुरे सम – नाऽरि यल के फल ऽ	पपप ममम गुरे सरे जिसको प्यास लगी है पीलो	मम गुरे सस पप ताजा, मीठा जल पीलो
	स-रे गुरे सस! पप नाऽरि यल पा नीऽ ! पीलो	स-रे गुरे सस –! नाऽरि यल पा नीऽ पीलो	प पप प सं! ना रियल पा नीऽ	स सस स स! ना रियल पा नी!

रेत का घर

शिक के लिए सुझाव | गीत संगीत | रचना–संतोष साहनी

सागर तट पर रेत का	ग ग, स स	गम गरे सस गग	प पध पम गरे	सस -रे ग –
घर बनाने की कहानी	प प्यू, भों ना,	दोऽ नोऽ मिल कर	रे ऽतका घर हैऽ	बना ऽर हे ऽ
कहते बच्चे मधुर स्वरों				
में गाएँ!	ध- धसं प- प-	म- गरे -स सस	प- पध पम गरे	सस -रे स –
	गीऽ लीऽ गीऽ लीऽ	रेऽ तजो ऽड़ कर	सुंऽ दर घर इक	बना ऽर हे ऽ
मध्य लय में।	ग- -ग सस स-	ग- -ग सस ग-,	प- -ध पम गरे	स- -रे ग -ग
	रेऽ ऽतके कम रेऽ,	रेऽ तकी सीऽ ढ़ी	रेऽ ऽतकी खिड़ कीऽ	रेऽ ऽतकी छ ऽत
	ध- धसं प- प-	म- गरे सस सस	प- पध पम गरे	सस -रे स –
	गीऽ लीऽ गीऽ लीऽ	रेऽ तजो ऽड़ कर	सुंऽ दर घर इक	बना ऽर हे ऽ
	सस -रे ग- ग-	प- -प ग- पप	पप पध पम गरे	स- सरे ग- -ग
	बना ऽर हेऽ हैंऽ	रेऽ ऽतका आंऽगन,	यह हैऽ आंऽ गन	कीऽ दीऽ वाऽ ऽर
	ध- धसं प- पप	गम गरे स- पप	पप -ध पम गरे	सस रेरे ग -ग
	औऽ रदी वाऽ रके	चाऽ रोंऽ ओऽ ऽर	वहाँ ऽर हेऽ हैऽ	जल कीऽ धा ऽर
	ग- गरे सरे ग-	गग -रे सरे ग-	प- पध पम गरे	सस -रे ग -ग
	मीऽ नाऽ लाऽ ईऽ	क्हीं ऽसे पत्ति याँ	पऽ प्यूऽ लाऽ याऽ	क्हीं ऽसे फू ऽल
	ध- धसं पप पप	गम गरे स- पप	प- पध पम गरे	सस -रे स -स
	दोऽ नोंऽ मिल कर	आंऽ गन मेंऽ अब	सुंऽ दर बाऽ गभी	बना ऽर हेऽ ऽ!

मछियारे की कश्ती

निर्देशक के लिए सुझाव | गीत संगीत | रचना–संतोष साहनी

मध्य लय में	सप	-प	धुप	नप	मप	गुम	पधु	पप	रेगु	मप	मधु	प-
सागर की एक और कहानी	दूऽ	ऽऽव	हांऽ	जहां	आऽ	समा	ऽन	और	साऽ	गर	मिल	तेऽ
धीमे से कुछ ऊँचे होते	गु-	गुरे	गम	प-	धुप	पध	प-	-प	मम	नी-	प-	–?
मधुर स्वरों में बालक गाएँ !	बीऽ	चलें	उन	केऽ	सफे	ऽदस	फ़े	ऽद	क्या	हैऽ	वह	ऽऽ?
मधुर, बातचीत के संगीतमय												
आश्चर्य-हर्ष भरे स्वरों में	गु-	गुरे	गुम	पप	पधु	पध	पध	प-	धुप	धुप	धुप	प-
	एऽ	कब	ड़ीऽ	सीऽ	तित	लीऽ	कोऽ	ईऽ	तित	लीऽ	कोऽ	ईऽ
	गु-	गुरे	गुम	पप	पधु	पधु	पधु	प-	धुप	धुप	धुप	प-
	याऽ	शाऽ	यद	कोई	जल	कीप	रीऽ	हैऽ	जल	कीप	रीऽ	हैऽ
	नी-	पनी-	नी	नी-	रेगु	मप	मधु	पु-	रेगु	मप	मधु	प-
	याऽ	ऽतै	र	ताऽ	हंऽ	सहै	कोऽ	ईऽ,	हंऽ	सहै	कोऽ	ईऽ
	पप	नीप	नी-	नी-	पप	नीप	नी-	नी-	नीप	-सं	नी-	नी-
	नहीं	ऽ, न	हींऽ	जी	नहीं	ऽन	हींऽ	जीऽ	नहीं	ऽन	हींऽ	जीऽ
	नीनी	-पनी	नी-	नी-?	संनी	-सं	नी-	नी–?	संसं	-सं	नी-	नी-
	बता	ऽएं	क्या	वह?	बता	ऽएं	क्या	वह?	बता	ऽएं	क्या	वह?
	रेगु	मप	मधु	प-	मप	मनी	धुप	प-	मप	मनी	धुप	प-
	वह	इक	कऽश	तीऽ	मछि	याऽ	रेऽ	कीऽ	मछि	याऽ	रेऽ	कीऽ
	सप	पप	धुप	पप	रेगु	मप	मधु	प-	पधु	नीसं	नीधु	प-
	सुन	हरी	धूऽ	पमें	नीऽ	लेऽ	जल	मेंऽ	नीऽ	लेऽ	जल	मेंऽ
	गुगु	गुरे	गुम	प-	पधु	पधु	पधु	प-	पप	नी-	पप	नी-
	सप	ने	जैऽ	सीऽ	सप	ने	जैऽ	सीऽ	धुंध	लीऽ	धुंध	लीऽ
	गुम	गुरे	गुम	प-	पधु	पधु	पधु	पम	रेगु	मप	मधु	प-
	झिल	मिल	कर	तीऽ	इस	कीऽ	हैऽ	पर	छाऽ	ईऽ	हिल	तीऽ
	मप	गुम	पधु	पप	पधु	मप	नीधु	पप	रेगु	मप	मधु	प-
	जाऽ	लडा	ऽल	कर	खड़ी	ऽदू	ऽर	इक	मछि	याऽ	रेऽ	कीऽ
	म-	नी-	–	–	ग-	प-	–	–	नी-	प	–	–
	किऽश	ती			किश	ती	ऽ	ऽ	किश	ती	ऽ	ऽ

छोटा सा स्टीमर

निर्देशक के लिए सुझाव — गीत संगीत — रचना–संतोष साहनी

कुछ द्रुत लय में सागर	गसस! गसस!	गसस! गसस!	सगग! सगग!	सगग! सगग!
के छोटे स्टीमर की सैर	छछक! छछक!	छछक! छछक!	छछक! छछक!	छछक! छछक!
करने का आनंद लेकर				
बच्चे, स्वयं स्टीमर बनने	गसस! गसस!	गसस! गसस!	सगग! सगग!	सगग! सगग!
आनन्द ले उसे व्यक्त	छछक! छछक!	छछक! छछक!	छछक! छछक!	छछक! छछक!
करते, मधुर स्वरों में बच्चे				
नाटकीय ढंग से गाएँ!	सप -! सप -!	सप -! सप -!	सप -! सप -!	सप -! सप -!
	भों ऽ! भों ऽ!	भों ऽ! भों ऽ!	भों ऽ! भों ऽ!	भों ऽ! भों ऽ!
	स पप गग -प!	स प ग प	स- प- प- पप!	सस पप प- पप
	हो गया स्टा ऽर्ट!	मैं हूँ छो टा	स्टी ऽऽ मऽ ऽर!	स्टी ऽऽ म- ऽर
	स- सरे ग- गरे	गम गरे गम -ग	प पध प- पध	प - - -प!
	साऽ गर कीऽ हैऽ	नीऽ लीऽ लह ऽर	मेऽ राऽ रंऽ गस	फे ऽ ऽ -द
	गस गस! गस गस	पग पग पग पग	पम ग- पम ग-	मप ध- मप ध-
	डग मग! डग मग	डग मग डग मग	जाऽ ऊँ नीऽ चेऽ	आऽ ऊँऽ ऊऽ पर
	सरे गम गरे गग	गम पध पमं पप	सप -! सप -!	सप -! सप -!
	मैंऽ पंऽ छीऽ उड़ता	ताऽ लह रोंऽ पर	भों ऽ! भों ऽ!	भों ऽ! भों ऽ!
	गसस! गसस!	गसस! गसस!	सगग! सगग!	सगग! सगग!
	छछक! छछक!	छछक! छछक!	छछक! छछक!	छछक! छछक!
	स प प प	ध- पप ध- पप	पग गध प- प-	सरे गम पमं प-
	आ ओ जी, बै	ठो स्टी मर पर	सैऽ रक रो– साऽ	गर लह रोंऽ पर
	स- पप ग- प-	सप पप -प पप	स- ध- प- ध-	मप पप पप पप
	साऽ गर फेऽ लाऽ	दूऽ रदू ऽर तक	मैंऽ भीऽ जाऽ ऊँ	दूऽ रदू ऽर तक

ग- रेरे गम प-	सस पप गग पप	सस पप गग पप	गम पध पम॑ पप
सैऽ रक रर हे	हम स्टी मर पर	स्टी मर नाऽ चेऽ	लह रल हर पर,
पग -ध पप पप	गम गध पम॑ पप	पग ऽप ग- –	पग -प ग- –!
सुनो ऽसु नोऽ गाऽ	तीऽ है ल हऽ ऽर	छप ऽकछ पऽ ऽक	छप ऽकछ पऽ ऽक!
सप -प गग पप	सरे गम सरे गम	सप -प गग पप	सरे गम सरे गम
हवा ऽच लर हीऽ	सर रर सर रर	हवा ऽच लर हीऽ	सर रर सर रर
सप – । सप –!	सप – सप –!	सप – सप –	सप – सप –!
भोंऽ ऽ । भोंऽ ऽ!	भोंऽ ऽ भोंऽ ऽ!	भोंऽ ऽ भोंऽ ऽ	भोंऽ ऽ भोंऽ ऽ!
स प ग प	सस पप – –!	स प ग प	सस पप – –!
मैं हूँ छो टा	स्टी मर ऽ ऽ	मैं हूँ छो टा	स्टी मर ऽ ऽ!

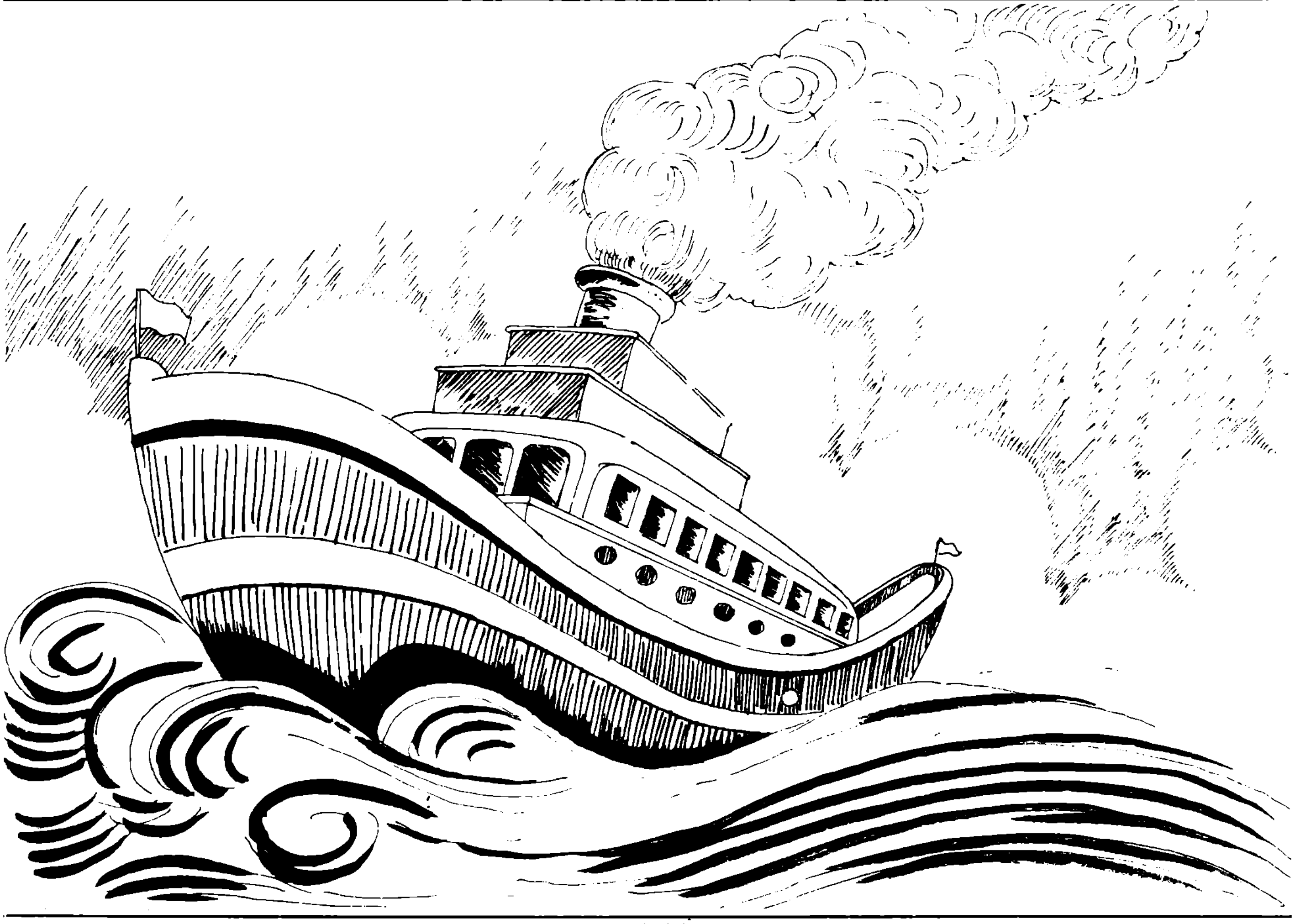

बालसंसार समग्र

रंगरंगीले गीत

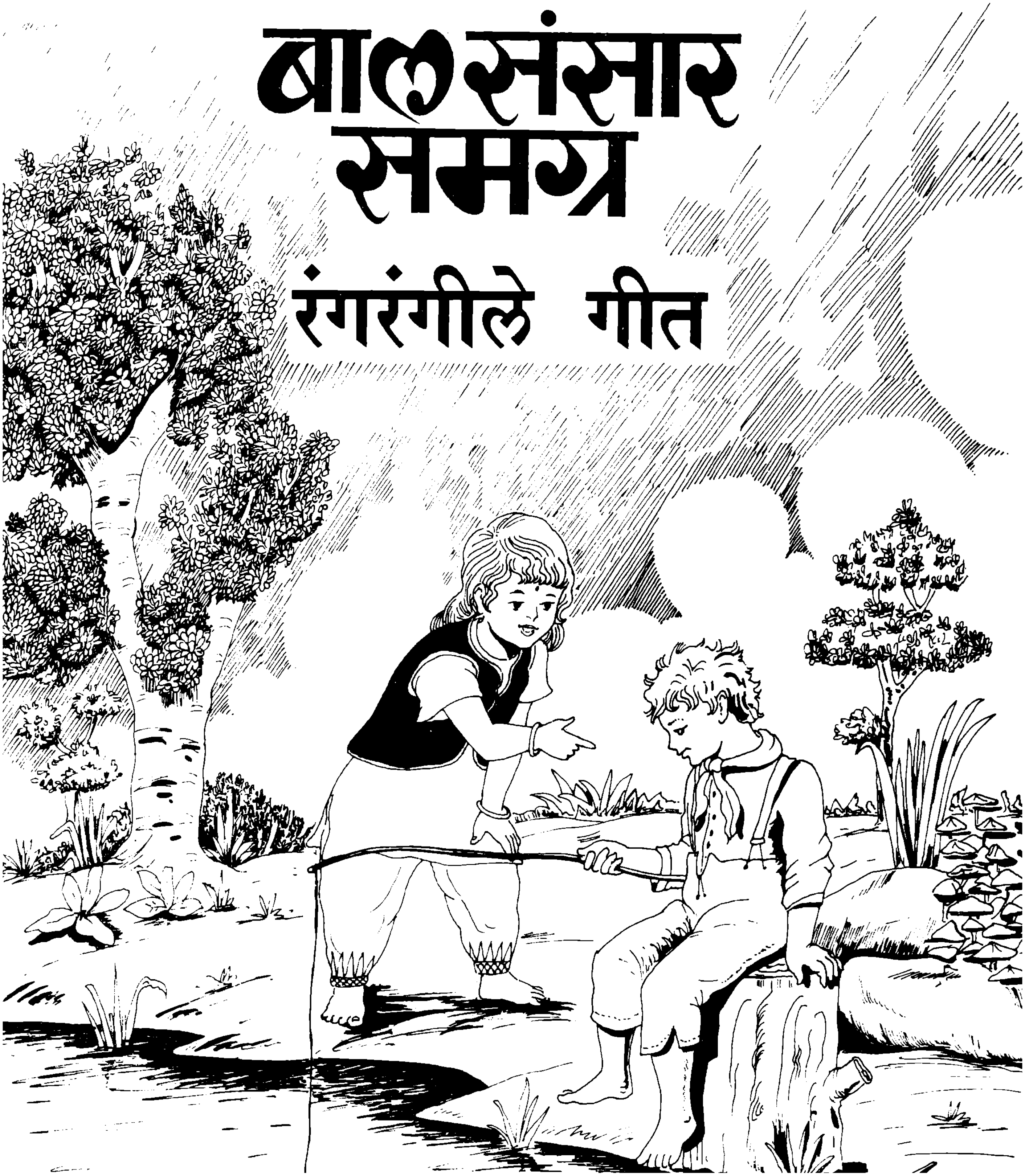

परिचय-शब्द

बच्चों के लिए रोचक साहित्य की कमी महसूस करते हुए, कुछेक बरसों से मैं बाल-नाटक, बाल कहानियां और बालगीत लिखती रही हूं।

'रंगरंगीले गीत' संकलन आयु के लिहाज से, कुछ बड़ी आयु के बच्चों के लिए है।

इन कविताओं के विषय वस्तु बच्चों के अपने मनपसन्द विषयों और अनुभवों ही की अभिव्यक्ति है। साथ ही साथ, बच्चों का नए विषयों से, नए शब्द-वाक्यों, भावों और विषयों से परिचय करवा कर उनकी मानसिक और साहित्यिक सीमाओं को बढ़ाने की भी कोशिश की गई है।

इस संकलन की कविताएं हिन्दी और पंजाबी की बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। आकाशवाणी और बाल सांस्कृतिक शिविरों में भी प्रस्तुत किए जा चुकी हैं।

संतोष साहनी

इकराम
बलराज साहनी मार्ग
जुहु बम्बई ४९
८-१०-१९८८

विश्व प्रेम का गीत

सूर्य हमें प्रकाश है देता,
धरती देती धान,
सागर हमको जल है देता
वायु देती प्राण ।
हम हैं बच्चे अफ्रीका के,
ऐशिया के, योरोप के, आस्ट्रेलिया
के, और अमरीका के ।
हम हैं बच्चे काले रंग के,
हम हैं गोरे रंग के,
हम बच्चे हैं पीले रंग के,
मित्र हैं इक दूजे के !
यह आकाश, चान्द और तारे,बन
पर्वत नदियां, पशु-पक्षी, सब मित्र
हमारे मित्र हैं कुल दुनियां ।
इक दूजे के संग जिएंगे
सभी को करेंगे प्यार,
जीवन की हम रक्षा करेंगे
जिएगा तभी संसार ।

भारत मां के हम सब बच्चे

भारत मां के हम सब बच्चे
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई
बौद्ध, यहूदी, जैन, पारसी
मिल के पढ़ेंगे और खेलेंगे
करेंगे इक दूजे की भलाई ।
इस धरती का अन्न है खाते,
पीते इसकी नदियों का जल,
खूब पढ़ेंगे, बनेंगे लायक
देश का काम करेंगे मिलकर ।
बुद्ध, मोहमद, ईसा, नानक
सभी ने प्यार का सबक दिया है
सब धर्मों से प्यार करो जी
गांधी जी ने यही कहा है ।
मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारे
प्यार का संदेसा देते हैं,
गीता, कुरान, बाईबिल गुरवाणी
सभी में प्यार के गीत लिखे हैं ।
छूत, अछूत और ऊँच, नीच को
हम बच्चे अच्छा नहीं माने,
जो मेहनत कर खाना खाए
हम तो उसको अच्छा माने ।
विश्वशान्ति के हम रखवाले
कभी जंग न होने देंगे
कुल दुनियां के सब बच्चों से
प्यार का रिश्ता हम जोड़ेंगे

हमारा घर, हमारा देश

छोटा सा है घर हमारा
लेकिन कितना सुंदर ।
ऐसे साफ़ रखें इसको
जैसे मस्जिद, मंदिर ।
साफ़ रखें हम कपड़े बरतन,
फर्श और दीवारें,
छोटे से आंगन में हमने
फूल लगाएं प्यारे ।
कापी, पुस्तक, पेन और रबर
ठीक जगह हम रखें
कंघी, साबुन और खिलौने
रोज़ ठीक से रखें
घर के बाहर एक गली है
वह भी साफ़ हम रखें
घर, आंगन और गली हमारी
सब ही सुंदर दीखें ।
गली में कचरा हम नहीं फेंकें
थूकें नहीं सड़क पर,
पेड़ लगाए है हमने तो
गली के दो कोनों पर ।
हर बसन्त में इन पेड़ों पर
सुंदर फूल खिलेंगे
हरे हरे पत्ते झूमेंगे
शीतल वायु देंगे
दूर से आए सुन्दर पंछी
पेड़ों पर बैठेंगे
चहक-चहक और गीत सुना कर
खुशियां हमको देंगे ।
आओ, हम सब मिल कर रखें
सब घर, गलियां सुन्दर ।
देश हमारा होगा जी तब
सब देशों से सुन्दर !

मैदानों में वसन्त रितु

गई शरत रितु धीरे-धीरे,
वसन्त रितु है आई ।
चुपके-चुपके नई पत्तियां
पेड़ों पर है लाई ।
नन्हीं पत्तियां लाल रंग की
बड़ी है हरी हरी ।
कई पेड़ों की शाखाएं
फूलों से है भरी ।
फूलों से भी सुगंध कैसी
भीनी भीनी आए,
इन्हें देख और इन्हें सूंघ मन
खुशियों से भर जाए ।
धरती का है एक रंग और
फूल अनेकों रंग के
अलग अलग है चेहरे इनके
अलग नाम है इनके ।
बेलें भी अब तो
उगती बढ़ती जाएं
रंग रंग के फूल सजाएं
बहुत ही हमको भाएं ।

काश्मीर में वसन्त रितु

शुक्र है, कितने दिनों के बाद
हल्की धूप खिल रही है
गहरे नीले बादलों की
चादर, अब परे हुई है ।
नीले सागर से अंबर में
नन्हें बादल तैर रहे हैं
बड़े बड़े बादल अब जाकर
हिम शिखरों पर लेट रहे हैं ।
घरों की छतों और मैदानों में
बरफ-चादरें अभी बिछी हैं
पर अब हल्की गरम धूप में
जल्दी जल्दी पिघल रही हैं ।
छतों से बरफ के छोटे टुकड़े
थप ! थप धरती पे गिरते !
और खेतों पर बिछी बरफ के
टुकड़े मट्टी में मिलते ।

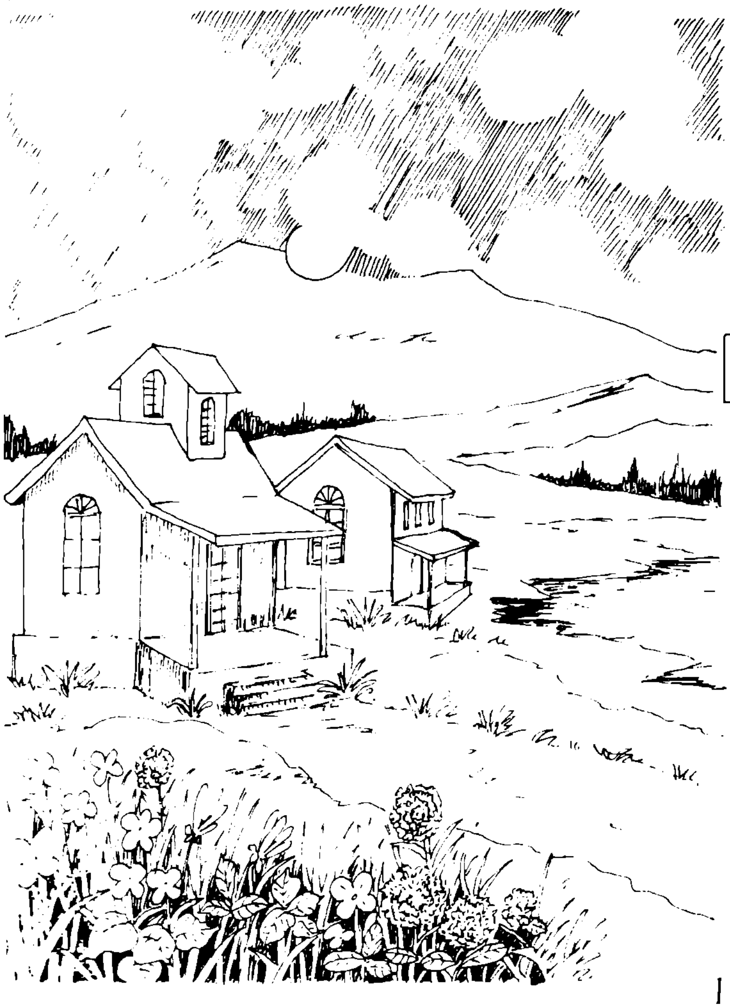

नंगे गीले सफ़ेदे के पेड़
खड़े, धूप है सेंक रहे
उन पर नन्हें नरम से पत्ते
उग कर, सर, सर, झूम रहे ।
गेंदे की झाड़ी उग आई
नरगिस के हैं फूल खिले
वेदमुरक की खुशबू आई
बुलबुल के हम बोल सुनें
गया पहाड़ी कौआ काला ।
भद्दी, भारी से सुर वाला,
आस्मान खिल गया निराला
आया चैत्र मास मतवाला ।
सेब अलूचे के बृक्षों पर,
आडू नाश्पाती पेड़ों पर,
बादाम, अखरोट वृक्षों पर
फूल रंगीले, उगेंगे सुन्दर ।
निशात, शालीमार के बाग
फूलों से अब भर जाएंगे
काश्मीर के चिनार वृक्षों पर
नए पत्ते अब उग आएंगे ।
सुन्दर रेशमी वस्त्र पहन कर
बैसाखी मेले जाएंगे
सुन्दर सी किश्ती में बैठ के
झील डल की सैर करेंगे ।

होली उत्सव

(एक गीत, नृत्य नाटिका)

रंग-रंग के कपड़े पहने बालक बालिकाएँ ढोलक के ताल की लय में नाचते हुए प्रवेश करते हैं। हाथों में रंग लिए एक-दूसरे पर हल्के-हल्के उड़ाने का अभिनय करते सभी बच्चे गोल चक्कर सा बना कर नाचते हुए गाते हैं।
सभी बच्चे खुशी और चाव से–

होली है ! होली है !
आज । आज तो होली है !

फूल खिल रहे हैं बागों में
फूलों की खुशबू है पवन में
आओ मिलकर नाचें गाएं
होली का त्यौहार मनाएं
आई होली, रंग रंगीली
खुशियों वाली, और छबीली !

पहले दो बच्चे–
लाए हैं हम रंग फूलों से !

दूसरे दो बच्चे–
लाए हैं हम रंग पत्तों से !

चौथी बच्ची–
लाई हूं मैं रंग धरती से !

पांचवां बालक–
लाया रंग मैं नील गगन से !

छटा बालक–
लाया हूं मैं रंग सूरज से !

दो बालिकाएं–
लाई हैं हम रंग वसन्त से !

पहले दो बालक (गुलाल ऊपर उड़ाते हुए)–
पीला रंग

दूसरे दो बालक– नीला रंग

चौथा बालक– लाल रंग

पांचवां बालक– हरा रंग

दो बालिकाएं–
काशनी और केसरी रंग ।

सभी बच्चे मिलकर गाते नाचते हैं–

रंग उड़ाएं रंग उड़ाएं ।
इक दूजे को रंग लगाएं ।
रंग रंगीले हम बन जाएं ।
फूलों जैसे हम बन जाएं !
गोरे, काले, हिन्दू , मुस्लिम,
जैन, पारसी, सिख, ईसाई,
आओ मिलकर नाचें गाएं
होली का त्योहार मनाएं !

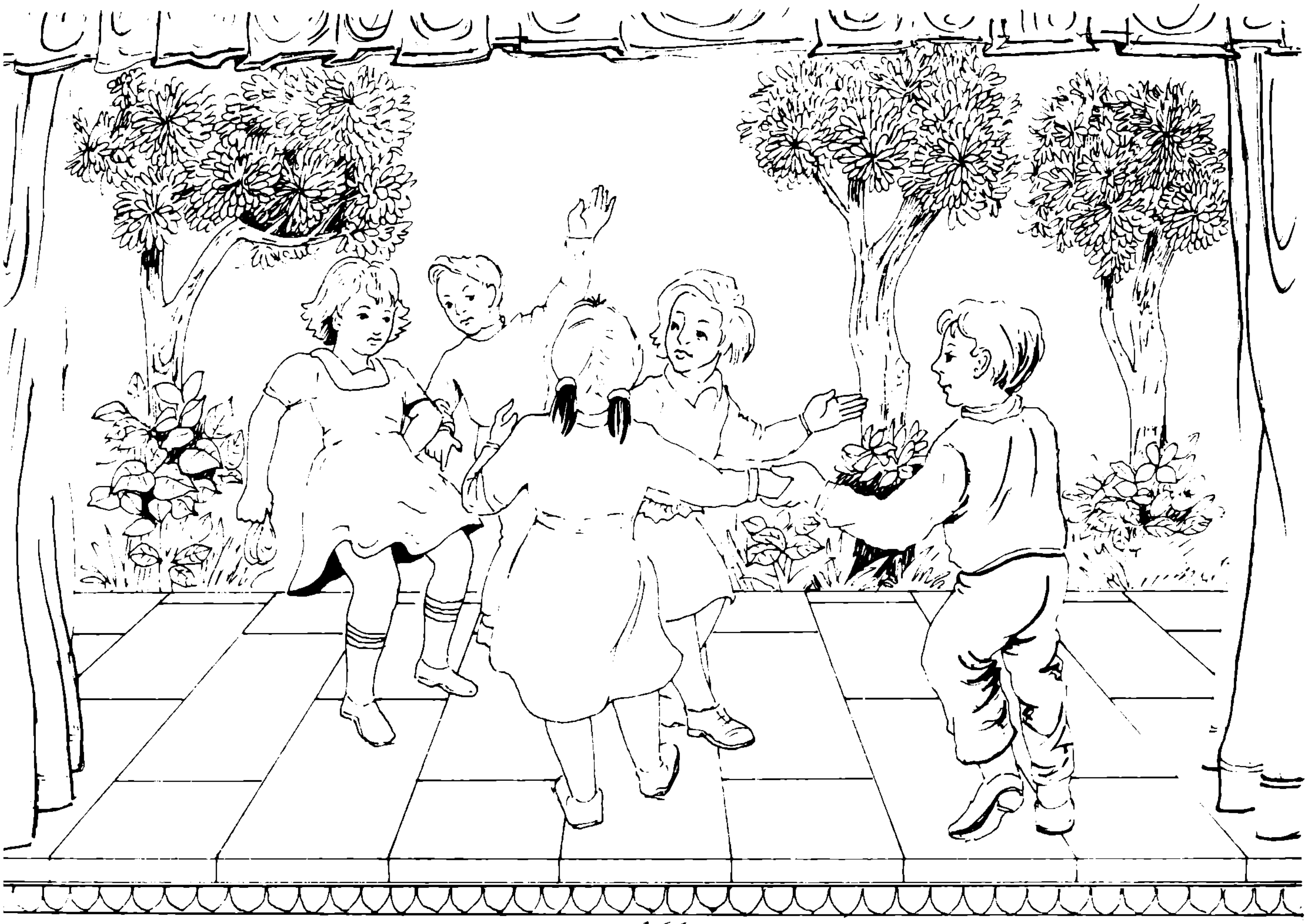

यह सभी बच्चे नाच गा रहे हैं। तभी रंग मंच के पीछे से कुछ बालक बालिकाएं पेड़ की एक हरी भरी लेकिन काटी हुई बड़ी सी शाखा को घसीटते हुए उसे होलिका जलाने के लिए ले जाते हुए प्रवेश करते हैं। वे भी गा रहे हैं—

होली है ! होली है !
आज ! आज तो होली है !

यह बालक बालिकाएं रंगमंच के एक ओर खड़े होकर इस शाखा को काट कर छोटे टुकड़े बनाने का अभिनय करते हैं। पहले ग्रुप के बच्चे इन बच्चों को देखते हैं और सोच में पड़ जाते हैं और दुखी से दिखाई देते हैं। इतने में एक बालक एक तोते का मुखौटा पहने दाखिल होता है। एक और बालक कौए का मुखौटा पहने उड़ने का अभिनय करता प्रवेश करता है।

एक बालिका गाय का और एक बालिका बकरी का मुखौटा पहने अपनी अपनी आवाज़ों में बाएं ! बाएं ! माएं ! माएं ! पुकारते प्रवेश करते हैं। इसी प्रकार एक बालक हाथी और एक बालक शेर का मुखौटा पहने प्रवेश करते हैं।
पहले ग्रुप के बालक और पशु पक्षी चिंतित और दुखी हुए दूसरे ग्रुप के बालकों की तरफ देखते हैं।
फिर पहले ग्रुप के बालक बालिकाएं दूसरे ग्रुप के बालकों से प्यार से समझाकर गाते हैं—

वृक्ष हैं कितने सुन्दर लगते !
साफ हवा और छाया देते,
वृक्ष हमें फलफूल हैं देते,
बाढ़ अकाल से हमें बचाते
वृक्ष हमारे मित्र हैं मित्रों
इस धरती के प्राण हैं मित्रों

दो बालक—
इन्हें न काटेंगे हम भय्या,
इन्हें बचाएंगे हम भय्या ।
दो बालिकाएं—
इन्हें जलाएंगे न भाई,
रंगों से खेलेंगे भाई ।
दो और बालक—
होली खेलेंगे रंगों से,
वृक्षों को हम न काटेंगे !
हाथी और शेर—
सारे मिल के वचन कीजिए !
वृक्षों वन को न काटिए !
सभी बच्चे—
वृक्ष सभी के मित्र हैं भाई
पशुओं के भी मित्र हैं भाई
पक्षियों के भी मित्र हैं भाई
तोता—
टांए ! टांए ! टांए !
वृक्ष हमारे मित्र हैं भाई
कौआ—
कांए ! कांए ! कांए !
इन्हें न काटेंगे हम भाई !

सभी बच्चे और पशु पक्षी मिलकर, एक दूसरे का हाथ पकड़कर गोल चक्कर बना कर नाचते गाते हैं और गुलाल और दूसरे रंग हल्के हल्के उड़ाते हैं जैसे वे एक दूसरे पर फेंक रहे हों।
सभी मिलकर गाते हैं—

होली है ! होली है !
आज ! आज तो होली है ।
फूल खिल रहे हैं बागों में
फूलों की खुशबू है पवन में
आओ मिलकर नाचे गाएं
होली का त्योहार मनाएं

(इसी गीत के गायन के साथ होली उत्सव की बाल नृत्य नाटिका समाप्त होती है।)

आए बादल बरस, बरस !

आजा बादल, बरस बरस ।
तेरे बिन जी रहा तरस ।
खेतों को कर सजल, सरस
गरमी से वे गए झुलस ।
नीले बादल ! आओ, आओ !
ठंडी जल बून्दे बरसाओ
आ बादल ! आ शोर मचा रे,
आ बादल, बिजली चमका रे ।
गरज गरज कर बादल आ रे
उमड़ घुमड़कर बादल आ रे
नदियां नाले सूखे सारे
फूल घास भी प्यासे सारे
गाए भैंस बकरी बेचारी
भूख प्यास से है दुखियारी
आजा नीले बादल प्यारे
आजा अब न देर लगा रे
सागर से भर पानी ला रे
धरती पर सारा बरसा रे

आए नीले बादल

गरज रहे हैं नीले बादल
गरज रहे हैं नीले बादल
बरखा आने वाली है
अभी गिरेंगी नन्हीं बून्दे
गरमी जाने वाली है ।
हल्की, ठंडी हवा चली है
लगती कितनी भली भली है ।
पेड़ झाड़ियां झूम रहे हैं
आसमान को देख रहे हैं
रिम झिम झिम बारिश आई !
मट्टी से भी सुगंध आई ।
बड़े, भाग कर घर को जाएं
पर बच्चे बारिष में नहाएं ।
आंहा ! आंहा ! वर्षा आई
रिम झिम रिम झिम वर्षा आई

पर्वतों पर पतझड़ रितु आई

गई गरमियां धीरे धीरे,
अब है नई रितु आई
खुश्क सी ठंड हवा में लेकर
पतझड़ रितु है आई ।
फलों के बागों में अब सेब
पक कर लाल हुए,
सेब तोड़ माली पेड़ों से
ढेर हैं लगा रहे ।
पकी धान, मक्की की फसलें
किसान काट रहे,
धान और मक्की के दाने
धूप में सुखा रहे ।
पेड़ों के पत्तों के रंग
पीले पड़े भूरे हुए
सूखे पत्ते पेड़ों से गिर
घास पे हैं बिखरे ।
ढलवानों की लम्बी घास भी
हरी से पीली हुई
ऊँची ऊँची चोटियों पर
नई बरफ़ गिरी ।

काश्मीर में पतझड़ रितु आई

सुबह शाम हम रंग रंग के
स्वैटर पहनने लगे
दोपहर को भी अब तो सबको
धूप ही अच्छी लगे ।
बादाम, अखरोट, भूनी मक्की
खाने के दिन आए
गरम राख भर कांगड़ियां[1]
सेकने के दिन आए ।
फल फूल और अन्न उगाती
धरती अब है थकी
बीज और जड़ें अंदर समेट
आराम है करने लगी ।
धीरे धीरे ठंड है बढ़ती
धुंध वनों में छाई
अपनी ही सुन्दरता लेकर
पतझड़ की रितु आई ।

समुद्र में सूर्य अस्त

सुबह से चलता चलता सूरज
जग को रौशन करता सूरज,
फल फूलों में रंग-रस भरके,
गेहूं, दालें, धान पका के,
उतर रहा अब पश्चिम दिश को,
चला सूर्य किसी और देश को ।
किरणें बिछाई जो धरती पे
घास, वृक्ष, ऊँचे पर्वत पे,
घरों की छत और दीवारों पे,
दरवाज़ों, खिड़की, कांचों पे,
किरणें धीरे इक इक करके,
अपने ही में फिर समेट के,
सूर्य लगा विदाई लेने,
लगा स्वप्न देश में जाने ।
लो सूर्य सागर में उतरा,
नीले जल में तैर रहा ।
दीखे सूर्य सोने का मटका,
सागर जल को भरने लगा,
लगा डुबकने सागर जल में। झलकें
किरणें नीले जल में ।
इक चौथाई ओझल हुआ
धीरे धीरे आधा हुआ
अरे ! लो, आधा गया
गया, गया, विदा हुआ ।
रह गई पीछे सूर्य की लाली
वह भी धीरे होती काली ।

[1] [illegible]—हाथ पैर गरम करने के लिए मिट्टी [illegible] की बनी एक काश्मीरी अंगीठी

काश्मीर की 'डल झील' में शिकारा

भारत में एक नगर
उसका नाम है श्रीनगर ।
श्रीनगर में एक नदी
धीरे धीरे वह बहती ।
जेहलम है उस नदी का नाम
बहना ही है उसका काम ।
कश्ती चलती है उसमें
और हाऊस बोट कितने ।
कश्ती को कहते हैं शिकारा
जल पर चलता दीखे प्यारा ।
अबकी हम काश्मीर गए थे
हाऊस बोट में हम ठहरे थे ।
हाऊस बोट लकड़ी का बना है
जल में तैर रहा बंगला है ।
झीलों की सैर करता है
जेहलम में ठहरा करता है ।
बोट के संग था एक शिकारा
नाम था उसका रौशनआरा,
मोती की झालर वाला था,
गद्दों और परदों वाला था ।
साथ में उसके थे दो चप्पू
जिन्हें चलाते मैं और पप्पू ।
छप ! छप ! छप ! चप्पू को चलाते
दूर शिकारा हम ले जाते
साथ हमारे था इक मांझी
नाम था उसका बस्ता सुभान जी

पत्तों की कहानी

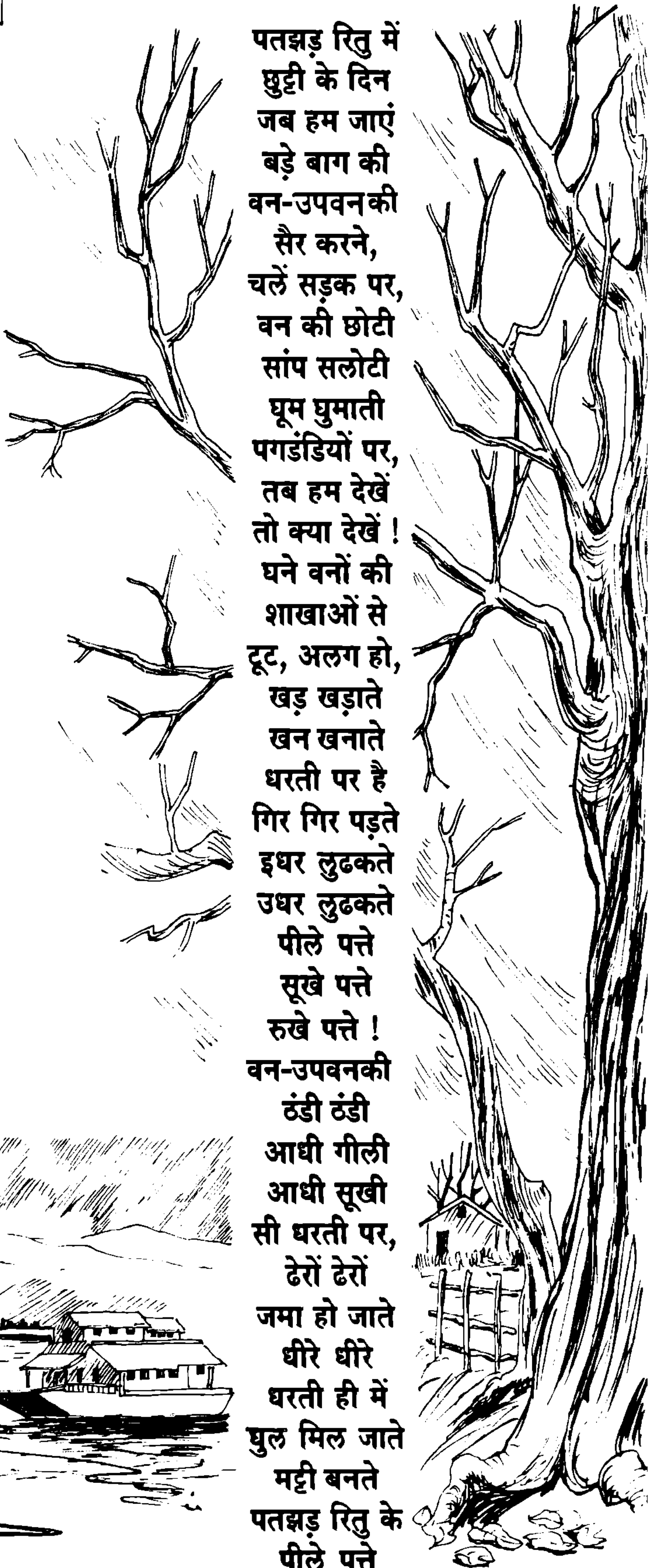

पतझड़ रितु में
छुट्टी के दिन
जब हम जाएं
बड़े बाग की
वन-उपवनकी
सैर करने,
चलें सड़क पर,
वन की छोटी
सांप सलोटी
घूम घुमाती
पगडंडियों पर,
तब हम देखें
तो क्या देखें !
घने वनों की
शाखाओं से
टूट, अलग हो,
खड़ खड़ाते
खन खनाते
धरती पर है
गिर गिर पड़ते
इधर लुढकते
उधर लुढकते
पीले पत्ते
सूखे पत्ते
रुखे पत्ते !
वन-उपवनकी
ठंडी ठंडी
आधी गीली
आधी सूखी
सी धरती पर,
ढेरों ढेरों
जमा हो जाते
धीरे धीरे
धरती ही में
घुल मिल जाते
मट्टी बनते
पतझड़ रितु के
पीले पत्ते

सूखे पत्ते
रूखे पत्ते !
नए बरस की
वसंत रितु में
छुट्टी के दिन
जब हम जाएं
बड़े बाग की
सैर करने,
चलें सड़क पर,
सांप सलोटी
घूम-घुमाती
छोटी छोटी
पगडंडियों पर,
तो हम देखें
तो क्या देखें
पतझड़ रितु के
पीले पत्ते
सूखे पत्ते
रूखे पत्ते
मिल गए थे
जो मट्टी में
फिर उग उग कर
नन्हें नन्हें
भोले भोले
नटखट नटखट
बच्चों जैसे प्यारे पत्ते
हरे हरे और
लाल रंग के,

फिर चढ बैठे
अपने अपने
सब वृक्षों की
छोटी बड़ी
शाखाओं पर !
शीतल शीतल
पवन में हिलते
रुनझुन गाते
हमें हैं कहते
देखो जी ! प्यारे बच्चों !
नया जनम ले
फिर हम आए
हंसने, गाने
तुमको मिलने ।
कल जो हम थे
पतझड़ रितु के
पीले पत्ते
सूखे पत्ते
रूखे पत्ते !

प्रभात का तारा

सुबह सबेरे
मुरगे जी की
कुकडु कडू सुन,
कौए जी की
कांय ! कांय सुन,
चिड़िया जी की
चूं ! चूं ! चुख सुन
बुल बुल जी की
चहक ! चहक सुन।
नुसरत, अशरफ
दोनों छोटे
बहन भाई की
नीन्द खुल गई।
बिस्तर ही में
लेटे लेटे
दोनों ने तब
कमरे की
खिड़की से बाहर
गुलमोहर के
सुन्दर सुन्दर
हरे हरे
कोमल पत्तों
के पीछे से,
सुबह सुबह के
आकाश के
धीमें, धीमें
से प्रकाश में,
जगमग कर
टिमटिमा कर
झांकते देखा
नन्हें, नन्हें
इक तारे को।
बाकी सारे
छोटे छोटे
और बड़े भी
असंख्य तारे
चले गए थे
सब सोने को।
एक अकेला
वही रहा था
पूरब दिश के
आसमान में
गुलमोहर की
हरी पत्तियों
के पीछे से,
झांक रहा था
नुसरत और
अशरफ दोनों को।
जैसे उन्हें
जगाने ही को
रहा था पीछे
वही अकेला
नन्हा सुन्दर
सा इक तारा।

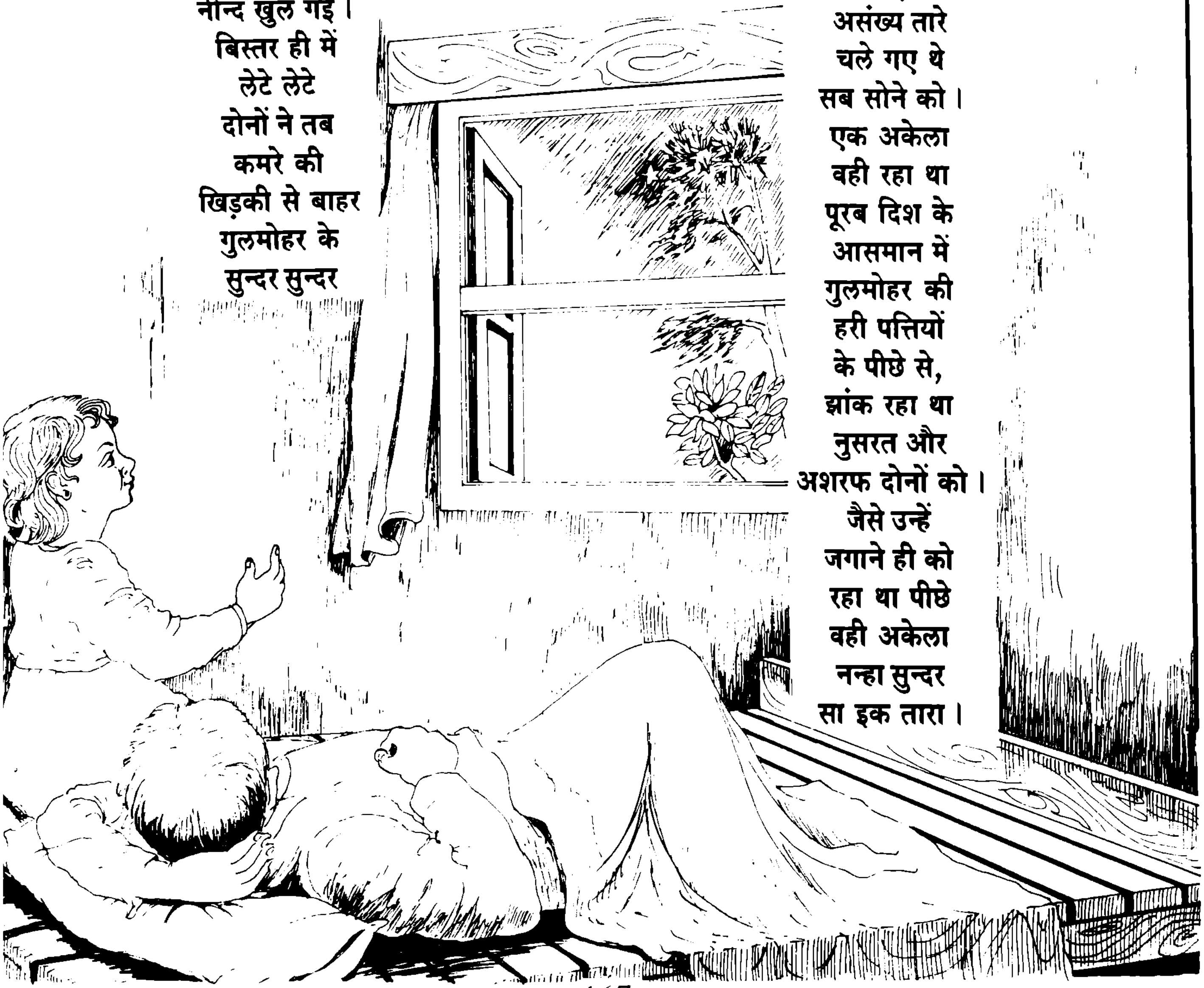

वरुण जी का जन्मदिन

प्यारे वरुण जी महाराज,
जुग जुग जिओ, करो तुम राज !
तेरा जन्मदिवस है आज ।
बताऊँ कैसे मालूम पड़ा ?
अरे ! सुबह आया था इक चिड़ा,
आया मेरे पास वह दौड़ा ।
चोंच खोल के बोला यूं,
चूं ! चूं ! चूं ! चूं ! चूं ! चूं !
उठो बुआ जी ! सोई क्यूं ?
बहुत खुशी का आज तो दिन है
छः बरसों का आज वरुण है
सात साल से एक ही कम है ।
उठके लिखो उसे बधाई
और खिलाओ मुझे मिठाई
लाओ, लाओ ! कहां छिपाई !
इतने में चिड़िया भी आई
नहाई धोई सजी सजाई
चूं ! चूं ! करके वह चिल्लाई ।
जन्मदिवस की बहुत बधाई
खाएंगे हम आज मिठाई
आज तो छोड़ेंगे न भाई ।
मैं बोली, 'आओ, भाई आओ ।
खिचड़ी खाओ, बरफ़ी खाओ
जन्मदिवस की खुशी मनाओ ।'

रश्मि और उजाला

मीठी नींद में सोई रश्मि
देख रही थी सुन्दर सपने
'जागो रश्मि, उठो रश्मि !'
की आवाज़ पड़ी कानों में
तब आंखें खोली रश्मि ने ।
उसने देखा खिड़की में से
चुपके, हंसता झांक रहा था
सात रंग का कुरता पहने
उसे जगाने को आया था
भोला भाला उजियाला ।
रश्मि बोली, "अरे उजाले !
इतनी जल्दी जाग गए तुम
सुबह सवेरे क्यों आए तुम ?
जाओ, बिस्तर में घुस जाओ
कंबल ओढ़ो और सो जाओ !
"शी ! शी ! कहने लगा उजाला,
"अभी तो नीन्द से मैं जागा हूँ,
फिर से मैं कैसे सो जाऊं ?
उठ जाओ रश्मि बिस्तर से
आओ तुमको कुछ दिखलाऊँ !"
रश्मि और उजाला दोनों
इक दूजे का हाथ पकड़ कर
हंसते, गाते बाग़ में आए
सुन्दर फूल उजाले ने तब
रश्मि जी को दिखलाए ।
रश्मि बोली, "अरे उजाले,
कितना अच्छा मित्र है तू तो,
शुक्रिया तेरा भोले भाले
इतने सुन्दर फूल दिखाए
कल भी मुझे जगाना तब तो !"

मीठी नीन्द में सोई थी मैं
अपने बिस्तर में
भूं ! भूं ! भूं ! की आवाज़
पड़ी मेरे कानों में ।
पाजी मच्छर, आधी रात को
मुझे सताने आया,
गाल मेरी तो काट लिया रे
सूज मेरा मुंह आया ।
जाने कहां से उड़ता उड़ता
रोज़ रात को आए ?
इतना रद्दी गाना गाए
और लहू पी जाए ।
गुस्सा खाकर उठी मैं भी
बिजली बटन दबाया,
लहू पी पी हुआ मोटा मच्छर
मुझे दीख तब पाया ।
मुट्ठी में जो इसे न पकड़ूं
शबनम नाम न मेरा
राक्षस ! लहू पिए यह सबका
तंग करे बहुतेरा ।
हाथ बढ़ा पकड़ने लगी तो
भाग गया वह दाएं,
दायां हाथ बढ़ाया आगे
उड़ने लगा वह बाएं ।
ऊपर, नीचे, दाएं, बाएं
उसने मुझे भगाया
पकड़ न पाई मैं मच्छर को
ऐसा मुझे नचाया ।
आखिर पकड़ लिया राक्षस को
मुट्ठी में अब आया
पकड़ के उसको फर्श पे पटका
जूता एक लगाया !

सुबह सबेरे अपने घर के
बरामदे में मैंने देखा
गली में धीरे धीरे चलता
मोटा मोटा काला काला,
ढीला ढाला, छोटी छोटी
आंखें और छोटी सी इक
पूंछ वाला, पूंछ हिलाता
गली का कचरा कूड़ा खाता
डगरचम ! डगरचम ! डकार लेता
इक भोंदू, भोंदू सा सुअर !
गली किनारे एक पेड़ पर
एक बड़ा कौआ बैठा था ।
सुअर को वह भी देख रहा था ।
कौए को जाने क्या सूझी
उसने की इक बात अनोखी ।
सुअर की पीठ पर वह चढ़ बैठा
घुड़ सवार कौआ बन बैठा ।
ढीलम ढाला सुअर चलता
गली का कचरा कूड़ा खाता,
डगरचम डगरचम डकार लेता
अपनी पीठ को धीरे धीरे
हिला हिला कर, झटका देकर
कौए को उड़ाना चाहता ।

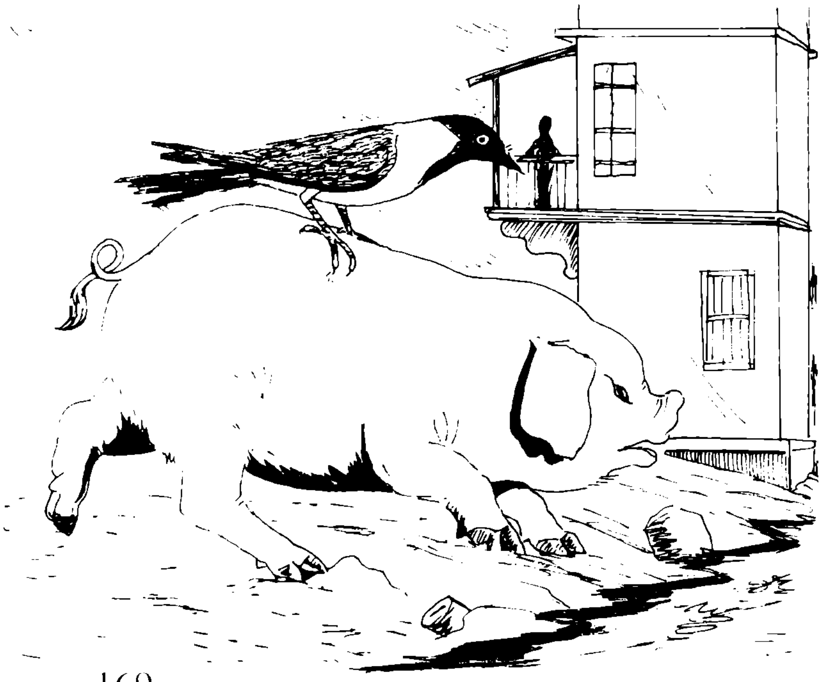

पर कौआ तो ढीठ बड़ा था
सुअर की पीठ पे मज़े से बैठा
इधर देखता, उधर देखता,
चोंच खोल कर कायं ! करता
सुअर से वह ज़रा न डरता ।
सुबह सबेरे अपने घर के
बरामदे से नीचे मैंने
गली में देखा मज़ेदार
मज़ेदार यह दृश्य अनोखा ।

भीगी बिल्ली और कौआ

सुनो जी बच्चों, मज़ेदार इक
कथा तुम्हें सुनाएं ।
आज सुबह से आसमान में
कुछ है बादल छाए
बुंदिया बरसे, धूप भी निकली
धूप छांह मुस्काए ।
अपने घर के बग़ीचे में
हरी घास लहराए ।
इक बिल्ली जो भीग गई थी
पेड़ के नीचे आए ।
अपनी जीभ से चाट चाट कर
गीला बदन सुखाए ।
पेड़ पे आ बैठा इक कौआ
सूखी मछली खाए,
भीगी भीगी बिल्ली जी को
मछली की बू आए !
पेड़ पे चढ़ना चाहे बिल्ली
पेड़ पे चढ़ा न जाए ।
भीगी बिल्ली, पेड़ भी गीला
पांव तो टिक न पाए ।
कौआ हंस हंस खाए मछली
बोले कांए ! कांए !
बिल्ली सूंघे सूखी मछली
मुंह में पानी आए,
पर सुन्दर सी भीगी बिल्ली
कुछ भी कर न पाए ।
ज्यों ही चढ़े कूद पेड़ पर
फिसल कर नीचे आए !

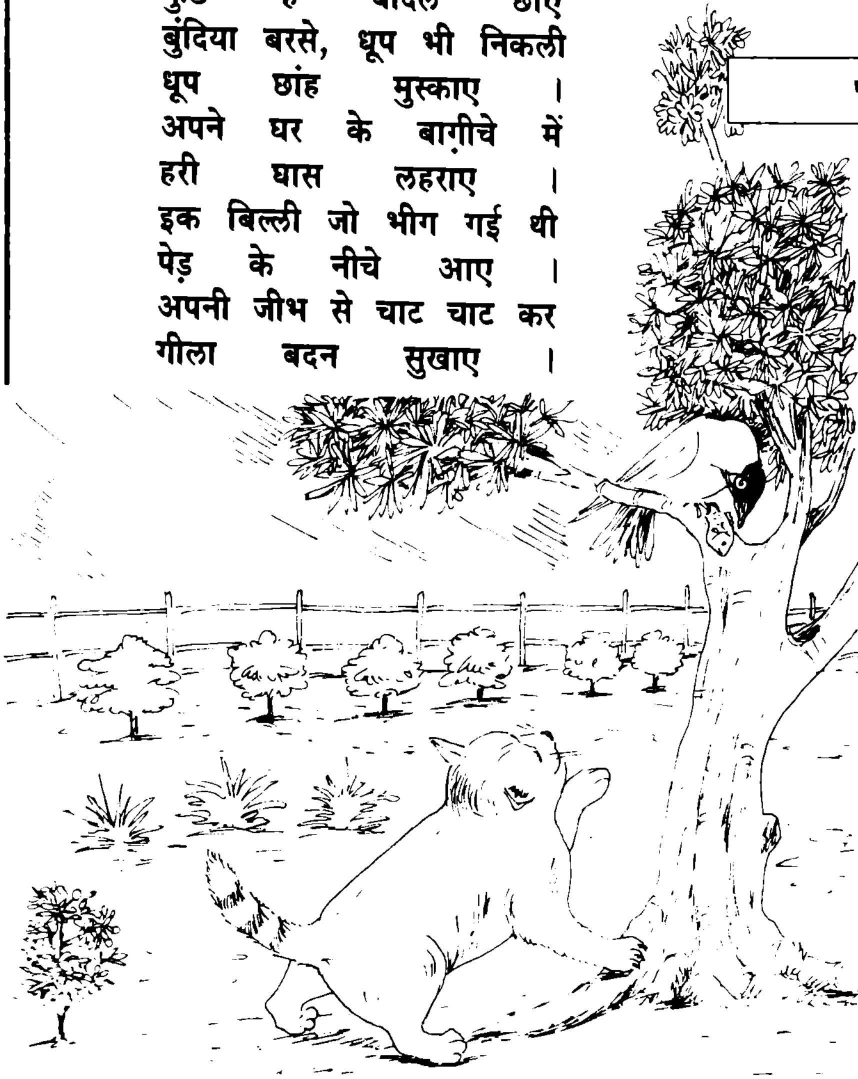

चील, मछली और कौए की कहानी

सुनो जी बच्चों एक कहानी
यह तो नई है, नहीं पुरानी ।
कल ही तो लिखी थी मैंने
आज आपको लगी सुनाने ।
सुन के बताना, लगी क्या अच्छी
है यह कहानी बिल्कुल सच्ची !
तो सुनिए ! एक दिन सुबह सबेरे,
नीले नीले आसमान में
उड़ती थी इक चील मज़े में,
कुछ ही नीचे धरती ऊपर
लहराती इक झील थी सुन्दर ।
सुन्दर झील में इक थी मछली
रंग सुनहरी की और पतली ।
कभी तैरती वह लहरों में
कभी खुशी से लगे उछलने ।
कभी गहरे पानी में जाती
फिर झट से ऊपर को आती ।
चील ने देखी जब वह मछली
लालच से वह इकदम मचली ।

चुपके से वह नीचे उतरी
छोटी मछली उसने पकड़ी ।
पंजों में ले उसे वह उड़ी
अपने घोंसले में ले चली
घोंसला जो था झील किनारे
एक वृक्ष की शाख सहारे ।
तभी, हवा में पंख चलाता,
इक कौआ भी आया उड़ता ।
चील को देखा, उस कौए ने
मछली थी जिसके पंजों में ।
मछली बेचारी तड़प रही थी
सांस भी न ले सकती थी ।
कौआ बोला, का ऽ ! का ऽ !
अरे वाह ! वाह भाई वाह !
धत् तेरी ऐसी की तैसी,
चील ने मछली कैसे फांसी ?
अजी, मुझे भी भूख लगी है
और । यही तो मछली खाने की है !
छीनूंगा इस चील से मछली
सोन, सुनहरी, सुन्दर पतली ।
चील के आगे वह उड़ आया
का ! का ! करके वह चिल्लाया ।

और शुरू हो गई लड़ाई
कौए ने कर दी चढ़ाई ।
फिर, चील उड़ रही आगे आगे
कौआ भी थे उसके पीछे ।
ऊपर नीचे, नीचे ऊपर
आसमान में काटें चक्कर !
तो, उड़ते, उड़ते, उड़ते, उड़ते
मछली पंजों में समेटते
बहुत परेशान हुई चील
पीछे कौआ, नीचे झील ।
फिर हुआ तो क्या हुआ,
कि, छूट गई मछली पंजों से
गिरी वह अपनी झील के जल में ।
शुक्र की सांस ली मछली ने
ख़ुशी से लगी वह तैरने !
चील और कौआ हुए हैरान
शर्मिंदा और परेशान ।
थके थे दोनों झगड़ा करते
भागे अपने घोंसलों में ।
तो बच्चों, कहानी हुई ख़तम
और पैसा हुआ हज़म !

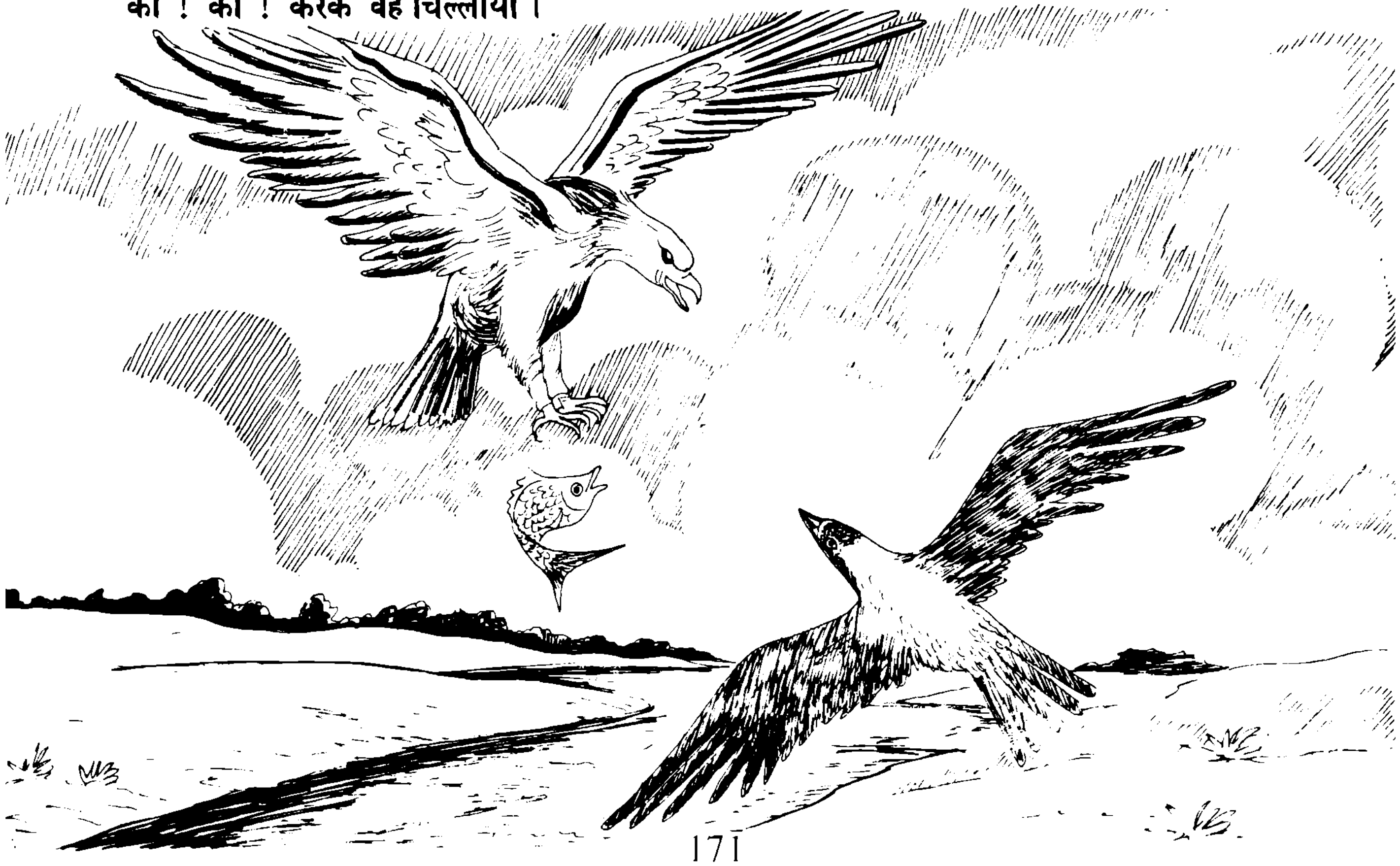

सात रंग-सात सुर

नृत्य गीत नाटिका

रंगमंच का परदा खुलने पर, लाल, पीले, नीले, हरे, सफ़ेद, काशनी, केसरी और इनके सात रंगों के ही कई एक और शेड वाले फूल-पत्तियों वाले गमलों और बेलों, झाड़ियों, पेड़ों का सुझाव देते किसी बाग का दृश्य। ऊषाकाल। सूरज की सात किरणों के धीरे-धीरे उदय होने का प्रभाव दिखाया जाए।

गुलाबी रंग का फ्राक पहने एक छोटी लड़की, माथे पर गुलाबों का मुकुट सा सजाए, हाथ में एक गुलाब लिए, मुस्कुराती हुई, धीमे-धीमे चलती स्टेज पर सामने आ जाती है।

लड़की–

मैं हूं फूल गुलाब का
रंग है मेरा लाल
खुशबू और सुन्दरता से
सबको करूं निहाल !

लड़की वहीं खड़ी हुई गुलाब का फूल सूंघती है।

फिर पीले पाजामे कुरते में पीले गुट्टे के फूलों की माला पहने पीले गेंदे का मुकुट सजाए एक लड़का मुस्कुराता हुआ आता है और लड़की को नमस्कार करता है।

लड़का–

मैं हूं फूल गेंदे का
रंग है पीला मेरा
सब लोगों को खुशियां देता
सदा काम है मेरा ।

नीली सलवार कमीज पहने, नीले एस्टर फूलों का मुकुट पहने मुस्कुराती हुई आती है। पहले दोनों बच्चों को नमस्कार करती है।

लड़की–

ऐस्टर फूल की मैं हूँ कली
नीला रंग है मेरा
बाग को सुन्दर रखना ही
सदा काम है मेरा ।

तीनों बच्चे एक दूसरे का हाथ पकड़कर धीमी लय में नाचने लगते हैं। एक लड़का सफ़ेद धोती कुरते में सफ़ेद रंग के फूलों की माला पहने, सफ़ेद फूलों का मुकुट पहने धीमे नाचता हुआ प्रवेश करता है। पहले तीन बच्चों को नमस्कार करता है और अपना परिचय देता है।

लड़का–

सफ़ेद रंग का मोतिया,
कितना सुन्दर मैं,
दूर दूर तक सुगंध अपनी
फैलाता हूं मैं ।

सभी बच्चे एक दूसरे का हाथ पकड़े धीमी लय में नाचते हैं। फिर हरे रंग की काश्मीरी पोशाक में एक लड़की हरी पत्तियों की माला पहने, हरी पत्तियों का मुकुट सजाए धीमे नाचती हुई आती है और सभी को नमस्कार करती है।

लड़की–

हरे रंग की पत्ती हूं
दीखूं सुंदर कितनी
सारे वन को हरियाली दूं
मैं हूं अच्छी कितनी

सभी बच्चे इक दूजे का हाथ पकड़ कर धीमी लय में नाचते हैं। अब नागालैंड के लोक वस्त्रों में एक लड़का प्रवेश करता है। वह काले रंग के मोतियों की मालाएं और काले रंग का मोतियों

का मुकुट पहने नाचता हुआ दाखिल होता है। सभी को नमस्कार करता है।

लड़का—

सारे जग को रात हूं देता।
मैं हूं रंग का काला
काला सफ़ेद दोनों ही का
मुख है भोला भाला।

सभी बच्चे मिलकर नाचते हैं। अब केरल प्रांत के लोक वस्त्रों में एक लड़की काशनी रंग के फूलों की माला पहने, काशनी फूलों का मुकुट पहने नाचती हुई आती है और अपना परिचय देती है।

लड़की—

मैं हूं वेल काशनी रंग की
ब्लुवेल नाम है मेरा
बागों में सुंदरता लाना
यही काम है मेरा

सभी बच्चे एक गोल चक्कर बना कर एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर धीमे कदमों से नाचते हैं। सुबह के सूर्य की सातों किरणें उन पर धीमे जगमगा रही है। बच्चे मिलकर गाते हैं।

सात किरणों की रोशनी में
आओ, मिल कर नाचे गाएं
सात रंग मिल सात सुरों में
सुन्दर मीठे गीत गाएं

सातों बच्चे बारी-बारी से सात सुरों का एक एक सुर गाते हैं—

पहला बच्चा	स ऽ ऽ ऽ !
दूसरा बच्चा	रे ऽ ऽ ऽ।
तीसरा बच्चा	ग ऽ ऽ ऽ।
चौथा बच्चा	म ऽ ऽ ऽ।
पांचवां बच्चा	प ऽ ऽ ऽ।
छंठा बच्चा	ध ऽ ऽ ऽ।
सातवां बच्चा	नी ऽ ऽ ऽ।

सभी मिलकर–
स ऽ रे ऽ ग ऽ म ऽ प ऽ ध ऽ नी ऽ सं ऽ ।
सं ऽ नी ऽ ध ऽ प ऽ म ऽ ग ऽ रे ऽ स !

सभी बच्चे सामूहिक गीत गाते हैं ।

सात रंग की किरणों जैसे,
सात रंग के फूलों जैसे,
संगीत के सात सुरों से,
हम भारत के नन्हें बच्चे,
हम भारत के सारे बच्चे ।
आपस में मिलकर गाएंगे,
आपस में मिलकर खेलेंगे,
हम भारत के नन्हें बच्चे,
हम भारत के प्यारे बच्चे ।

(संगीत नाटिका समाप्त)

वह तो झींगुर था

सोई थी मैं मीठी नींद में
अपने कमरे में बिस्तर पर,
अकस्मात पर आधी रात
चौंक पड़ी मैं जोर जोर की
चिर चिर झिन झिन चिर चिर सुनके ।
देखूं कहां से आवाज़ आई,
उठके मैंने बिजली जगाई,
सीधी मेरी नज़र पड़ी तब
लम्बी लम्बी टांगों वाले,
गोल चमकती आंखों वाले,
पीले रंग के इक कीड़े पर ।
लचकीले चमकीले छोटे,
पर समेट कर जो बैठा था
इक कुरसी पर विराजमान था ।
उड़ने वाले कीड़ों से मैं
सदा हूं थोड़ा थोड़ा डरती,
क्योंकि कभी कभी वह इकदम
आकर फ्राक या बालों पर ही
धीमे से, चिपट जाता है ।
अगर वह हो नन्हा सा कीड़ा
उड़कर आंख में पड़ जाता है
और बहुत ही तंग करता है ।
मैं बोली, 'नालायक कीड़े' !
कुछ तो शर्म करो रे बुद्धू !
मीठी नीन्द में सोई थी मैं
आधी रात को दिया जगा !
भर गिलास पानी का मैं तब
लाई कीड़े पर गिराने
पर, पल भर में कीड़ा उड़कर
भाग गया खिड़की के बाहर ।
घुप अंधेरे रात के में,
जाने कहां हुआ वह गायब !
'शुक्र है जल्दी मुसीबत छूटी'
कह के मैंने बत्ती बुझाई
आ लेटी मैं फिर बिस्तर पर
गहरी नीन्द में सो जाने को ।

छननन, छन छन, झनक झनक झिन
चिर चिर, छिन छिन छननन झिन
झिन खिड़की बाहर, कहीं निकट ही
लगी थी बजने, लगी गूंजने
बड़ी सुरीली एक सितार !
धरती सोई, अम्बर सोया
सोया था सारा संसार,
तारे झपकाते थे आंखें
मेरी खिड़की के बाहर ।
ओहो ! वह तो था कोई झींगुर
मेरी बड़ी देर की इच्छा
'कैसा होता है यह झींगुर ?'
पूरी करने को आया,
अपना छोटा रूप रंग वह
मुझे दिखाने को आया ।
कैसे और कहां से बजाए
झिन झिन झिन के सुन्दर सुर ।

मुझे बताने ही आया था ।
पर मैं तो गिलास भर पानी
उसपे गिराने को आई
वह आया था गीत सुनाने
उसे मारने मैं आई ।
हाय ! ऐसा किया क्यों मैंने ?
क्यों न समझी मैं कि झींगुर
मुझे ही मिलने को आया था ।
मुझको अपना गीत सुना कर
मित्र मेरा बनने आया था !
पर झींगुर तो भूल के सब कुछ
जा बैठा था किसी वृक्ष पे ।
हरे भरे पत्तों में छिपके
बजा रहा था सितार अपनी ।
'झिन झिन, छन छन, चिर चिर झिन
चिर चिर, झन, झन, झिन झुन झिन
गीत को खुशी खुशी से सुनते
मीठी नींद में फिर सोई मैं ।

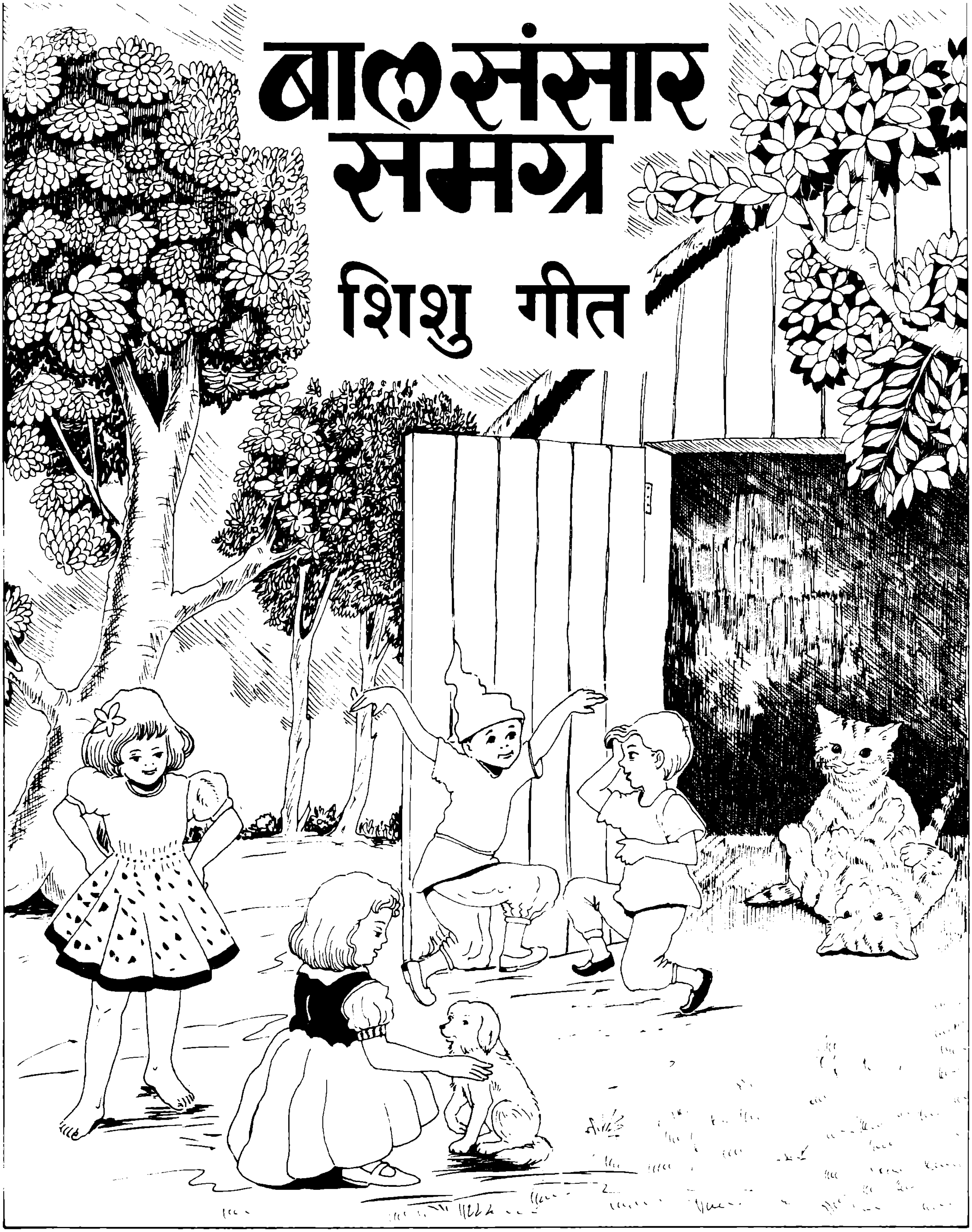
बाल संसार
समग्र
शिशु गीत

परिचय-शब्द

छोटे बालक-बालिकाओं के द्वारा ही कहे और व्यक्त किए सरल शब्दों, शब्द-चित्रों, छोटे-छोटे वाक्यों, भावों और अनुभवों को, मैंने कहीं छोटी, कहीं कुछ लम्बी गीतमयी कविता का रूप देने का प्रयास किया है।

बच्चे अपने आसपास की हरेक जड़-चेतन, छोटी बड़ी वस्तु को अपनी ज्ञानेंद्रियों द्वारा स्वाभाविकता ही जानने के इच्छुक होते हैं। कर्मेंद्रियों द्वारा व उनसे संबंध बनाते हुए ज्ञान और अनुभव पाते हुए, बड़े होते हैं।

इन छोटे गीतों-कविताओं द्वारा, बच्चों को सरल सहज हिन्दी भाषा और साहित्य में भी, रोचकता से प्रवेश कराने की कोशिश की गई है।

पहले पहल तो बच्चे, इस सरल प्राथमिक साहित्य को अपने बड़ों की सहायता-सहयोग से ही ग्रहण कर सकेंगे।

इन गीत-कविताओं को पढ़ाते व सिखाते वक्त रोचक बातचीत और सरल नाटकीय ढंग का प्रयोग बेहतर होगा।

संतोष साहनी

इकराम
बलराज साहनी मार्ग
जुहू-बम्बई-४९
८-१०-१९८९

दादा जी की पोती हूं

दादा जी की पोती हूं
सुन्दर सा इक मोती हूं ।
सारा दिन मैं हंसती हूं,
नहीं कभी भी रोती हूं ।
गीत भी मैं गाती हूं,
सब का मन बहलाती हूं ।

आजा गुड़िया

आजा गुड़िया आजा
मेरी गोद में आजा
तुमको दूध पिलाऊंगी
खाना तुझे खिलाऊंगी
गाना तुझे सुनाऊंगी
प्यार से तुझे सुलाऊंगी ।

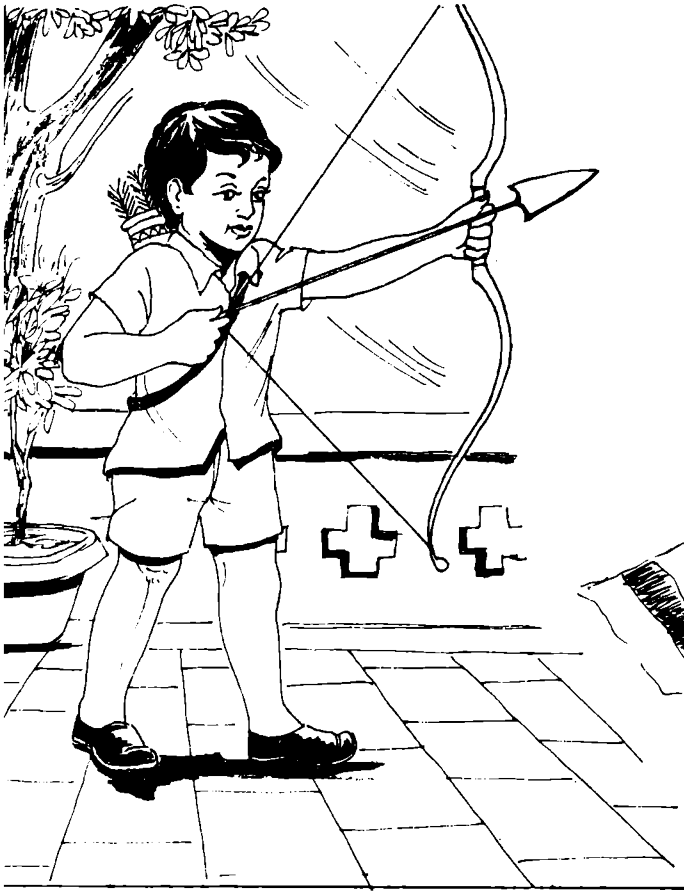

देखो, मेरा तीर कमान

देखो ! मेरा तीर कमान
देखो इसकी शान !
तीर कमान हाथ में लेकर
बन जाऊं मैं राम ।
ऐसा तीर चलाऊंगा मैं
चूके नहीं निशान !
देख के मुझको तीर चलाते
होंगे सब हैरान !
देखो ! मेरा तीर कमान
देखो इसकी शान !

हम खाएं फल

लाल, गोल सेब खाएं
हरा, पीला, आम
लम्बा, मीठा केला खाएं
छोटा सा बादाम !

मोर रे ! मोर रे !

वन के पंछी मोर रे
तू काहे मचावे शोर रे ।
अरे मोर रे तू पंछी कैसा ?
तेरे पंखों पर है पैसा !

आम और कोयल

गई सरदियां, गरमी आई
उगे पेड़ और आम,
पत्तों में छिप कोयल गाती
खाती कच्चे आम ।
कोयल गाती कुहु, कुहु कू ऽऽ
हम भी गाते कुहु ! कुहु कू ऽऽ

चूसेंगे हम आम !

अहा आम ! अहा आम !
मम्मी पापा, लाए आम
हरा हरा, और पीला आम
मम्मी जी काटो इक आम
अभी ही चूसेंगे हम आम ।
पापा ने तब काटा आम
मीना पप्पू चूसें आम
मीठा और रसीला आम !

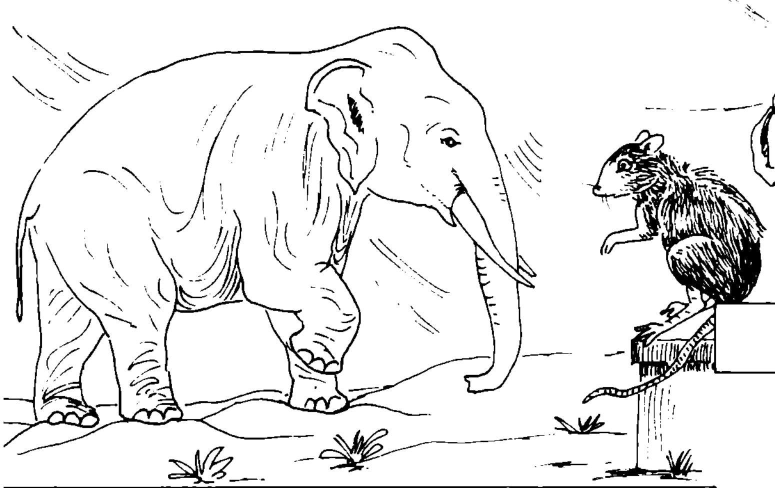

हाथी जी और चूहा जी

अरे ! इतने बड़े हाथी जी की
इतनी छोटी पूंछ ?
अरे वाह !
इतने छोटे चूहे जी की
इतनी लम्बी मूंछ !
हा ! हा ! हा !

अरे ऊंट जी

ऊंट जी ! अरे ऊंट जी !
पीठ है आपकी ऊंच जी !
टांगे आपकी लम्बी जी
पर है छोटी पूंछ जी ?
धीरे धीरे चलते आप
शलगम बहुत खाते हो आप !

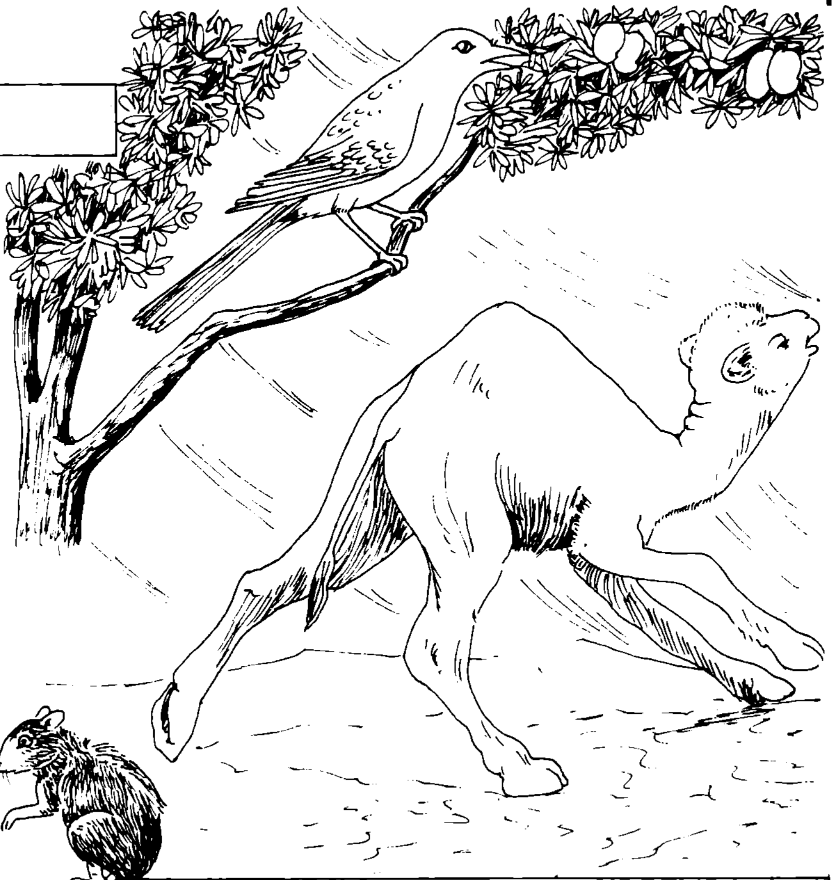

इमली का पेड़

अपने घर के बाहर,
कितना बड़ा पेड़ है ।
मालूम भी है आपको
कौन सा यह पेड़ है ?
यह तो पेड़ इमली का है
कितना सुन्दर पेड़ है ।
इमली पेड़ की छोटी पत्तियां
सुनिए, रुन झुन गाती पत्तियां
तोते उड़कर पेड़ पर आएं
खट्टी मीठी इमली खाएं !

मैं हूं घोड़ा

मैं हूं घोड़ा सफ़ेद रंग का
बिजली मेरा नाम ।
बच्चों को सवारी देना
यही है मेरा काम ।
पीठ पे बच्चों को बिठला कर
मैं हूं सैर कराता,
कभी हूं धीरे धीरे चलता
कभी हूं दुड़की लगाता ।
बच्चे जब खुशी से हंसते
मैं भी हिनहिनाता
ही ही! ही ही! ही ही! करके
गाना मैं हूं गाता ।

कुकड़ू ऽ ऽ कू ऽ ऽ

कुकड़ू ! कुकड़ू ! कू ऽ ऽ !
कुकड़ू कुकड़ू कू ऽ ऽ !
बच्चों, सोए हो क्यूं ?
बिस्तर में लेटे हो क्यूं ?
आंखें खोलो, जागो,
आलस को त्यागो ।
रात गई सोने को
सूरज है चढ़ने को ।
आसमान के तारे
भाग गए हैं सारे ।
ठंडी ठंडी पवन
चले सनन सनन !
चिड़िया ने आंख खोली
चूं चूं ! चूं चूं ! चूं चूं ! बोली
कुकड़ू कुकड़ू कडू ऽ
कुकड़ू कुकड़ू कडू !

मैं हूं हवाई जहाज

ज़ूं ऽ ऽ ! ज़ूं ऽ ऽ ! ज़ूं ऽ ऽ !
मैं हवाई जहाज़ हूं ऽ !
मैं तो एयरो प्लेन हूं ऽ ऽ !
देखो ! देखो ! देखो !
मैं कैसे उड़ता हूं ऽ ऽ !
ज़ूं ऽ ! ज़ूं ऽ ! ज़ूं ऽ !
काश्मीर से केरल जाऊं,
बम्बई से आसाम,
दिल्ली से गुजरात जाऊं,
फिर मैं करूं आराम !
आओ बच्चों सैर कराऊं
आकाश में तुम्हें उड़ाऊं
कुल दुनियां में तुम्हें घुमाऊं,
और तुम्हें घर वापस लाऊं !
ज़ूं ऽ ऽ ! ज़ूं ऽ ऽ ! ज़ूं ऽ ऽ !
मैं हवाई जहाज़ हूं ऽ !

चिड़ियां नहाएं

ठंडा ठंडा
पानी देख के,
छोटी छोटी
चिड़ियां आएं।
फुर फुर करती
नीचे उतरें,
चोंच में पानी
भर के नहाएं,
पंख पंख को
मल कर, धोकर,
अपनी चोंच से
साफ करें और
चूं ! चूं ! चुख ! चुख
गाना गाएं।
ठंडा ठंडा
पानी देख के
छोटी छोटी
चिड़ियां आएं।

मीरा और चिड़िया

मीरा बिस्तर में सोई है, चिड़िया
पेड़ पे सोई,
सुबह सबेरे चिड़िया जागी, मीरा
अभी भी सोई।
चिड़िया बोली चूं ! चूं ! चुख !
मीरा बिटिया जागो
देखो, सुन्दर सूरज निकला, छोड़ो
अब तो खटिया !
देखो हरी घास पर पीली सूरज
सूरज किरणें चमके,
ओस की बूंदे, मोती जैसी, फूल
फूल पर दमकें
सुनो, सुनो ! पेड़ों की पत्तियां सर
सर, मर मर गाएं
ठंडी ठंडी हवा के झोंके
झूला उन्हें झुलाएं।
मीरा बोली 'अच्छा चिड़िया' अभी
उठूंगी मैं
पहन के अच्छे अच्छे कपड़े स्कूल
जाऊंगी मैं !

मेरे बाग में सुन्दर फूल

यह भी फूल !
वह भी फूल !
देखो जी !
देखो जी !
हमारे घर के
बाग में
कितने फूल !
वह देखो
सफ़ेद फूल !
इसका नाम
गुलदौंदी।
यह देखो जी
यह है लाल
गुलाब का फूल !
कितनी अच्छी
खुशबू इसकी !
कितना सुन्दर
है यह फूल !
यह देखो जी
पीला फूल !
क्या है, क्या है
इसका नाम ?
इसका नाम
है गेंदा !
अहा ! अहा !
कितना प्यारा
है यह फूल !
यह देखो जी
नीला फूल
क्या है
इसका नाम ?
इसका नाम है
ऐस्टर !
अहा ! अहा !
मेरे घर के
बाग में
कितने कितने
सुन्दर फूल !

बैगनी बैगन

मेरे बाग की क्यारी में
उगे हुए हैं बैगन,
हरे भरे पौधों में लटके
बैगनी रंग के बैगन ।
छोटे बैगन, मोटे बैगन
लम्बे बैगन, पतले बैगन
कौन खाएगा, कच्चे बैगन ?
कौन खाएगा बैगन पक्के ?
नहीं खाएंगे हम तो बैगन
हमें न अच्छे लगते बैगन
ज़ोर ज़ोर से चिल्लाएंगे
ले लो बैगन ! ले लो बैगन !

हमने भिंडी उगाई

बाग में हमने मट्टी खोदी,
मट्टी में फिर बीज डाले,
बीजों को पानी से सींचा,
नन्हें पौधे तब उग आए ।
पौधों में से निकले फूल,
पीले पीले सुन्दर फूल !
फूलों में से भिंडी निकली
हरी नरम लम्बी और पतली ।
भिंडी काटी और पकाई
मज़े मज़े से हमने खाई ।

सुबह हुई

रात गई,
सुबह हुई,
हवा चली,
भली भली ।
पहले भोली,
चिड़िया बोली,
चटख, चटख चूं
चूं ! चूं ! चूं !
फिर तो सारे
प्यारे प्यारे
पंछी बोले
चोंचे खोले,
'कुहुक ! कुहुक ! कू !
का ऽ ! का ऽ ! कू ऽ !
सर, सर, मर मर,
सर सर, मर मर,
पत्ते हिले,
फूल खिले,
पूरब लाल,
घुला गुलाल !

सुबह का गीत

बीती रात
हुई प्रभात ।
पेड़ पर सोई,
चिड़िया जागी,
बोली चूं ! चूं ! चूं !
चुख ! चुख ! चुख ! चूं !
फिर तो सारे
पंछी प्यारे
नीन्द से जागे
गाने लागे
का ! का ! का ! का !
कूं ! कू ! कू ! कू !
चटख, चहख चूं चूं !
सर सर, मर, मर
सर, सर, मर, मर,
शीतल पवन में
झूमने लागी
नीम की पत्तियां,
आम की पत्तियां ।
खेलने लागीं,
पेड़ पेड़ पर
उड़ने लागीं
छोटी चिड़ियां !

तोते उड़ते

सुबह सबेरे
आसमान में
कितने कितने
हरे रंग के
तोते उड़ते।
बातें करते,
हंसते गाते,
टांय-टांय करते,
उड़ते उड़ते
दूर दूर
खेतों में जाकर,
दाना खाते,
पेड़ के कच्चे
फल कुतरते,
झील, तालाब का
पानी पीते,
नहाते, धोते
और खुश होते।
शाम पड़े जब,
सूर्य ढले जब,
टांय-टांय करते
आसमान में
उड़ते, उड़ते,
हरे रंग और
लाल चोंच के,
नटखट तोते,
गोल गोल और
छोटी छोटी
आंखों वाले
सारे तोते,
सुन्दर तोते,
अपने अपने
पेड़ों पर तब
लौट आते,
अपनी अपनी
टहनियों पर
आंख भींच कर
सब सो जाते।

हम हैं कबूतर

हम हैं कबूतर !
सुबह सबेरे
हम सब जागें।
घर की छत पर
हम सब मिल कर
गाना गाएं
गुडक ! गुडक ! गूं ऽ !
गुडक ! गुडक ! गूं !
घूम घूम कर,
चक्कर लेकर,
चोंच से चोंच
मिलाकर हम सब,
इक दूजे को
प्यार हैं करते,
इक दूजे से
बातें करते,
और हैं गाते
गुडक गुडक गूं !
गुडुक गुडुक गूं ऽ !
घर की छत से
उड़ कर हम सब

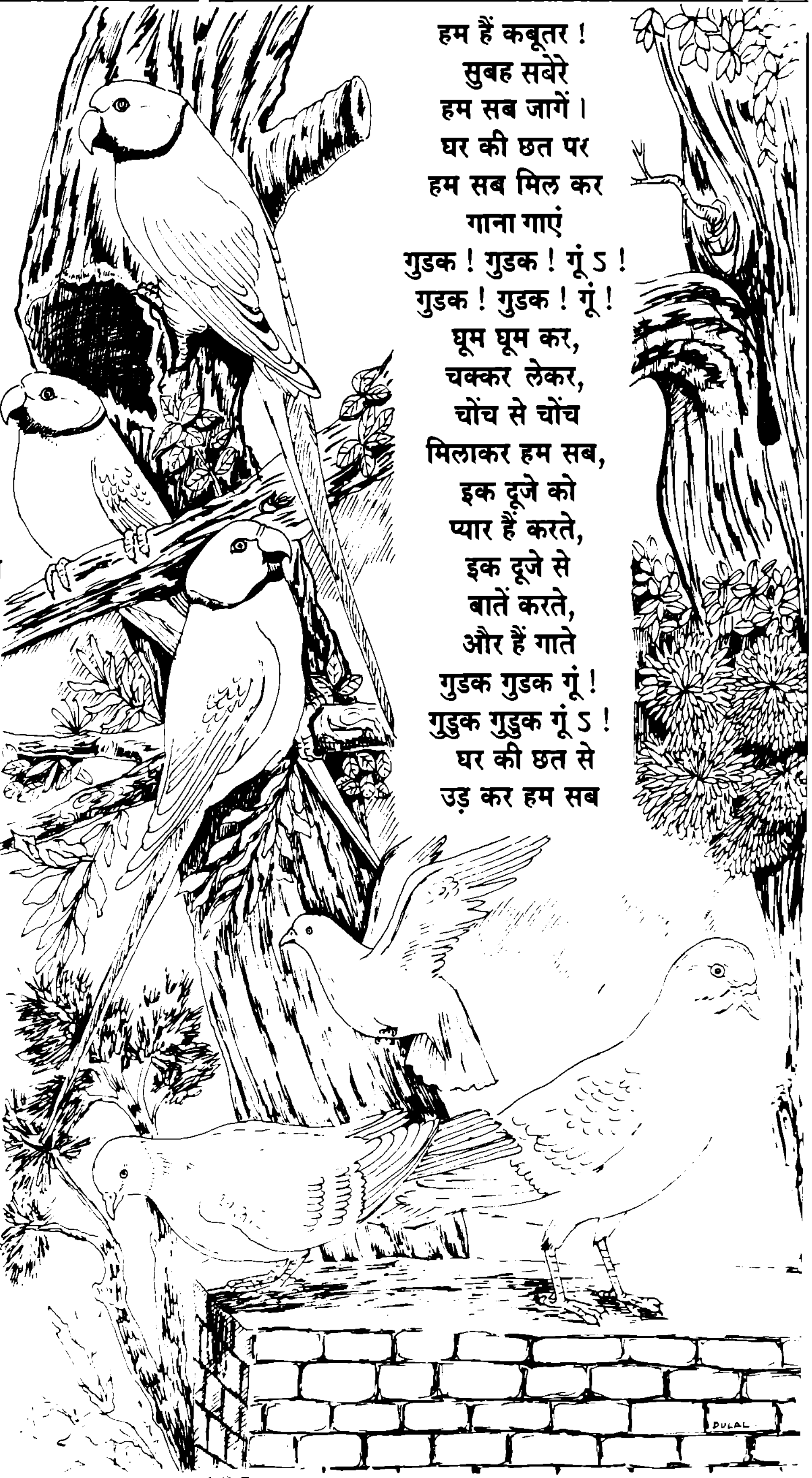

पेड़ में जाते,
आसमान की सैर करते,
और हैं गाते
गुडक गुडक गूं ऽ !
मीना पप्पू
सुबह सबेरे
रोज ही सुनते
गुडक ! गुडक ! गूं ऽ !
तब वे दोनों
सीढ़ी चढ़ के,
छत पर आते,
हमको दाना
खूब खिलाते,
हम भी खुशी से
दाना खाते,
और हैं गाते
गुटर गुटर गूं !
गुटर गुटर गूं !
मीना, पप्पू
खुशी से सुनते
गीत हमारा ।
वे भी संग
हमारे गाते
गुटर गुटर गूं !
गुटर गुटर गूं !

सुबह-सबेरे

सुबह सबेरे चिड़िया बोली
चूं ! चूं ! चुख ! चुख ! चूं
उठो मीरा गाने गाओ
सोई हुई क्यों ?
सुबह सबेरे कौआ बोला,
कांय ! कांय ! कांय !
उठो मीरा हाथ मुंह धोओ
कांय ! कांय ! कांय !
सुबह सबेरे गाय बोली
बांए ! बांए ! बांए !
आओ मीरा पास हमारे,
तुमको दूध पिलाएं ।
सुबह सबेरे तोता बोला,
टांय ! टांय ! टांय !
चलो जी मीरा, तौलिया पकड़ो
साबुन मल कर नहाएं !

लालू और आलू

लालू कहे आलू से
आलू रे आलू रे !
तू है मोटा जैसे भालू !
तू बाज़ार में कैसे आया
तूने हमें तो नहीं बताया ?
आलू कहे लालू से
रे छोटे से लालू !
तुम भी दीखते हो भालू !
सुनो रे मेरी कहानी
थोड़ी नई, थोड़ी पुरानी
मैं तो खेत में उगा था,
मैं तो मट्टी के नीचे था,
मुझे किसान ने बोया था ।
जब मैं बड़ा होने को आया,
किसान मुझे खोद कर लाया ।
मुझको बोरी में फिर डाल
बाज़ार में बेच आया ।
मैं हूं मीठा मीठा आलू
मैं हूं मोटा पर नहीं भालू
मुझे उबालो, मुझे पका लो
मुझे काट के, तल के, खा लो

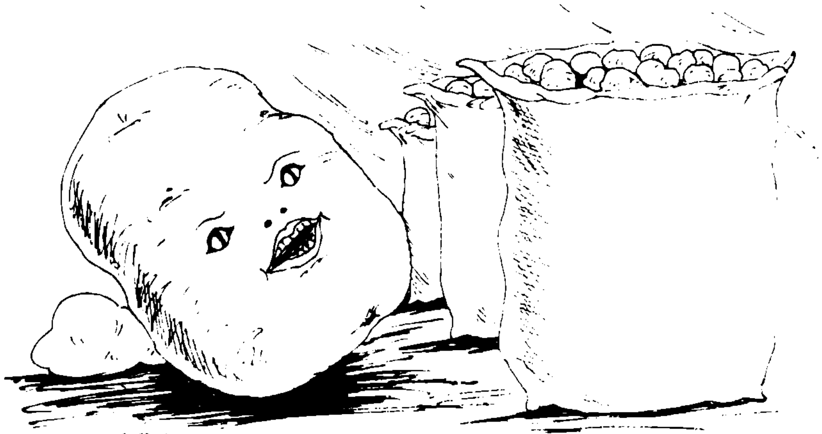

ओले गिरें

गोल गोल ओले
बरफ़ के गोले।
बादलों से झरें,
धरती पे गिरें,
पेड़ों पे गिरें,
छतरी पे गिरें,
बजें टक टक !
टपक, टपक !
पटक, पटक !
छोटे छोटे ओले,
थोड़े बड़े ओले !
गोल गोल ओले !
चारों ओर झरें
सफ़ेद सफ़ेद
हुए बाग, खेत।

पतंग मेरी

देखो जी
पतंग मेरी।
पतली पतली,
रंग रंगीली,
तितली जैसी
पतंग मेरी !
हवा में उड़ती,
दूर जा रही,
डोरा लेकर,
ऊपर उड़ती,
नीले नीले
आसमान में
दूर दूर तक
उड़ी जा रही !
झटका लेती
उड़ती जाती
पतंग मेरी।
देखो जी,
देखो जी !
कैसे उड़ती
पतंग मेरी !
सुन्दर चिड़िया
पतंग मेरी,
एयरो प्लेन है
पतंग मेरी,
राकेट है जी
पतंग मेरी
चान्द पे जाती
पतंग मेरी !

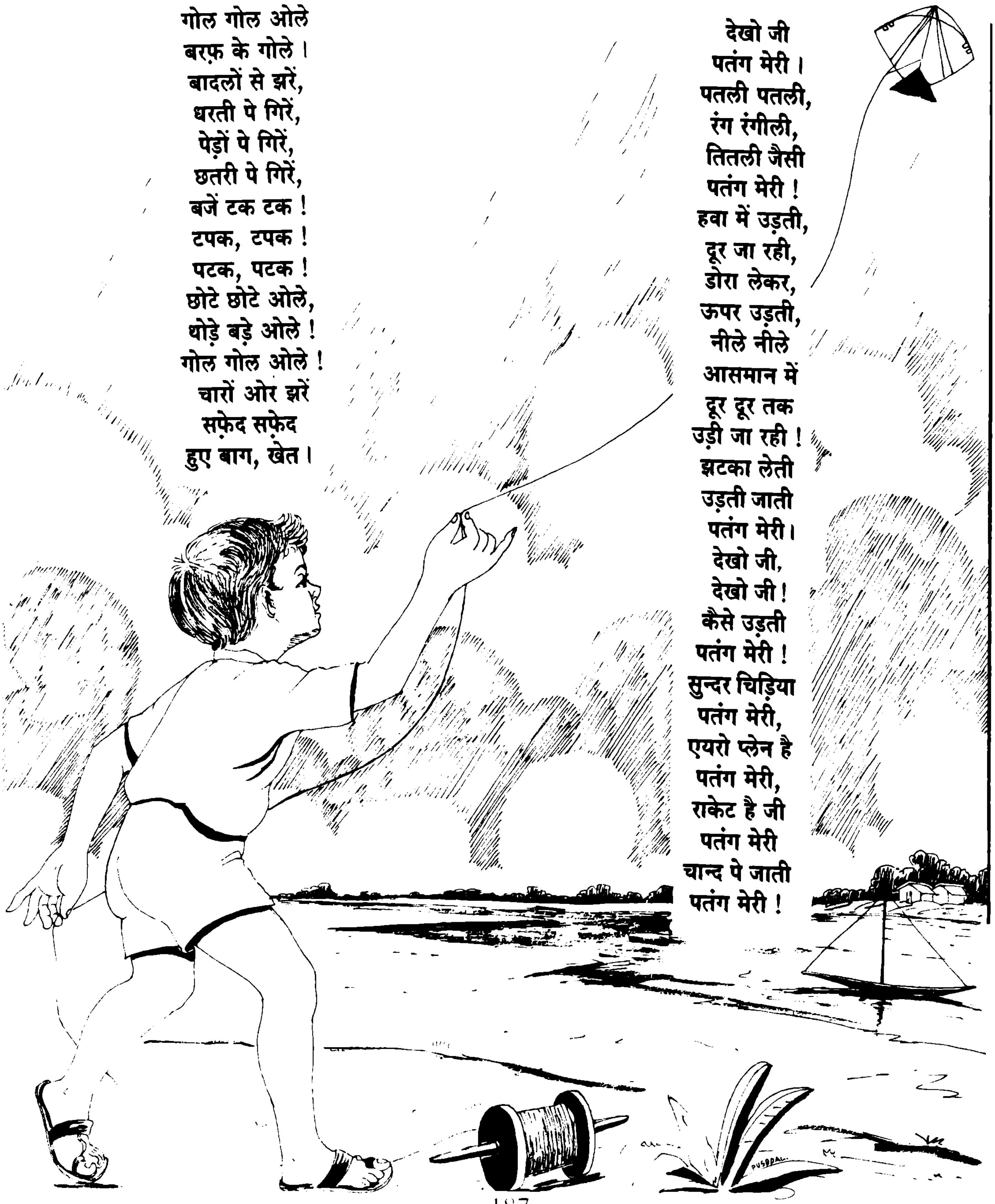

अनार का पेड़

मीना—

अहा अनार ! अहा अनार !
अपने बाग के पेड़ पर
उग आए अनार
छोटे से इस पेड़ पर
कितने ही अनार !

अकबर—

एक अनार, दो अनार
चार, पांच, छः, सात
आठ, नौ, दस अनार !
कैसे उगे पेड़ पर
ढेर से अनार ?

मम्मी—

पहले उगे फूल, फिर
उगने लगे अनार !
पहले छोटे छोटे थे
अब हैं बड़े अनार ।

मीना और अकबर—

मम्मी ! पापा ! तोड़ दो
पका हुआ अनार
काट के खाएंगे हम दोनों
मीठा एक अनार !

पापा— देखो बच्चो !

मम्मी काट रही अनार
अन्दर कितने दाने ।
एक सौ, दो सौ, तीन सौ,
चार सौ ! पांच सौ दाने !

मीना और अकबर—

लाल लाल, सुन्दर सुन्दर,
मीठे मीठे दाने,
चूस रहे हैं हम दोनों
अनार के दाने ।

बस ड्राईवर और कन्डक्टर

(बस ड्राईवर के युनीफार्म में) रंगमंच पर बस चलाने का अभिनय करते हुए एक बालक कहता है—

‘घूं ऽ ऽ ! घूं ऽ ऽ !
पों ऽ ऽ ! पों ऽ ऽ !
स्टीयरिंग को
लेफ्ट घुमाऊं
राइट घुमाऊं
सड़कों पर
बस चलाऊं
मैं हूं बस ड्राईवर !’’

बस कंडक्टर के यूनीफार्म में टिकट काटने का अभिनय करते हुए दूसरा छोटा बालक कहता है—

कटक ! किटक !
कटक ! किटक !
काटूं टिकट
मैं हूं बस कंडक्टर
चलने ही वाली है बस !

कुछ बच्चे अपने स्कूल के यूनीफार्म पहने, पुस्तकों के बैग लिए जल्दी चलकर पास आते हैं।

बस कन्डक्टर कहता है—
''आइए ! आइए !
जल्दी जल्दी
बस में आइए
सीट पे बैठिए।''
(बच्चे बस के अन्दर जाने और अपनी अपनी सीटों पर बैठने का अभिनय करते हैं)
बस कंडक्टर—
कहां है जाना ?
अपने स्कूल ?
दीजिए पैसे
लीजिए टिकट।
टिन ! टिन ! टिन
बजाऊं घंटी
चली बस !

बस ड्राईवर—
घूं ऽ ऽ ! घूं ऽ ऽ !
पों ऽ ऽ ! पों ऽ ऽ !
सड़कों पर
तेज़ तेज़
दौड़ रही है बस !

बस कन्डक्टर—
''ट्रिन ! ट्रिन !
आ गया स्टाप
स्कूल के पास
रुक गई बस
चलो जी बच्चो
जल्दी उतरो
जाओ स्कूल
देर हो रही
(बच्चे बस से जल्दी जल्दी उतरने का अभिनय करते हैं।)
सभी बच्चे—
शुक्रिया बस ड्राईवर !

बस ड्राईवर और बस कंडक्टर—
नमस्कार ! वाई ! वाई
कल भी वक्त पर आना
सभी बच्चे—
अच्छा ! नमस्ते !

(नाटिका समाप्त)

रात हुई

सभी चुप चुप
अंधेरा घुप।
काली रात
करे न बात।
सभी सोए
खोए खोए !
हिले न पांव
दिखे न हाथ
पर पहरेदार
कहे, होश्यार
होश्यार !
होश्यार !

पुच्चु के बच्चे

मेरे घर में एक है बिल्ली
पुच्चु उसका नाम,
मछली, दूध की चोरी करना
यही है इसका काम ।
बिल्ली मां के तीन हैं बच्चे
छोटे से और प्यारे,
बड़े प्यार से पुच्चु पाले
अपने राज दुलारे ।
इक बच्चा है चिट्टा काला,
दूजा काला-भूरा
तीजा बच्चा पीले रंग का
न काला न गोरा ।
खड़े कान है इनके छोटे
छोटी सी ही नाक
छोटी छोटी टांगे इनकी
गोल गोल सी आंख ।
हल्की सी आवाज़ भी सुनकर
चौकन्ने यह होते
अगर इन्हें किसी का डर हो
भाग, कहीं यह छुपते ।
कभी लड़ें कुश्ती आपस में
हो जाएं उल्टे पुल्टे
इक दूजे से फिर मिल बैठे
इक दूजे को चाटें ।
पुच्चु मां जब आती देखें
दौड़ें उसके पीछे
उसकी गोद में लेट के चूसें
मीठा दूध मज़े से ।
पुच्चु इनको जीभ से चाट के
इनके हाथ मुंह धोए,
यह भी प्यार से मां को चाटें
खेलें और सो जाएं ।
जब मैं इनके पास आऊं,
मुझसे खाना मांगे
प्लेट दूध की जब मैं लाऊं
मेरे पीछे भागें ।
छोटी जीभ से लप लप करके
दूध चटम कर जाएं
धन्यवाद कहने को, अपनी
छोटी पूंछ हिलाएं ।
पुच्चु मां के तीनों बच्चे
सुन्दर और सलोने
दीखें किसी दुकान में रखे
चलते फिरते खिलौने ।

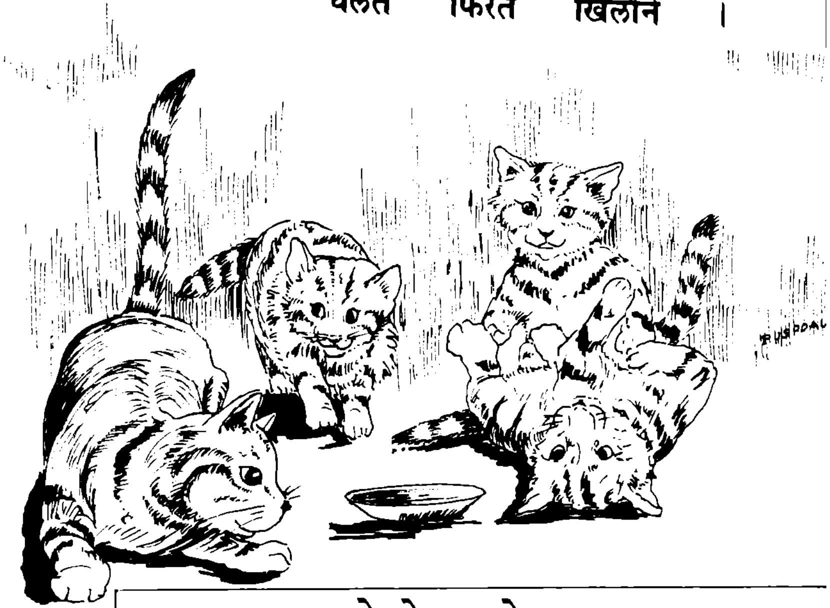

ले दो मुझको साइकल

प्यारी मम्मी, प्यारे पापा
मेरे जन्म दिवस पर
कल ज़रूर ले देना मुझको
छोटी सी इक साइकल ।
कल सबेरे जल्दी जल्दी
नए कपड़े पहन कर
बड़े बाजार की बड़ी दुकान से
खरीद लेंगे साइकल ।
फिर, बरस गांठ का लड्डू खाकर
चलाऊंगी मैं साइकल
ज़ोर से पैडल घुमा घुमाकर
लगाऊंगी मैं चक्कर !
डरो न मम्मी ! नहीं जाऊंगी
दूर किसी सड़क पर
चलाऊंगी घर के आंगन में
और बाहर गली पर ।
तेज़ चलाऊंगी पर साइकल !
ट्रिनऽ! ट्रिनऽ! घंटी बजाकर
हो न जाए ऐक्सीडेंट
पापा चलना बच कर !

प्रचारक ग्रंथावली परियोजना
हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स प्रा० लि०
सी.२१/३०, पिशाचमोचन, वाराणसी- २२१००१
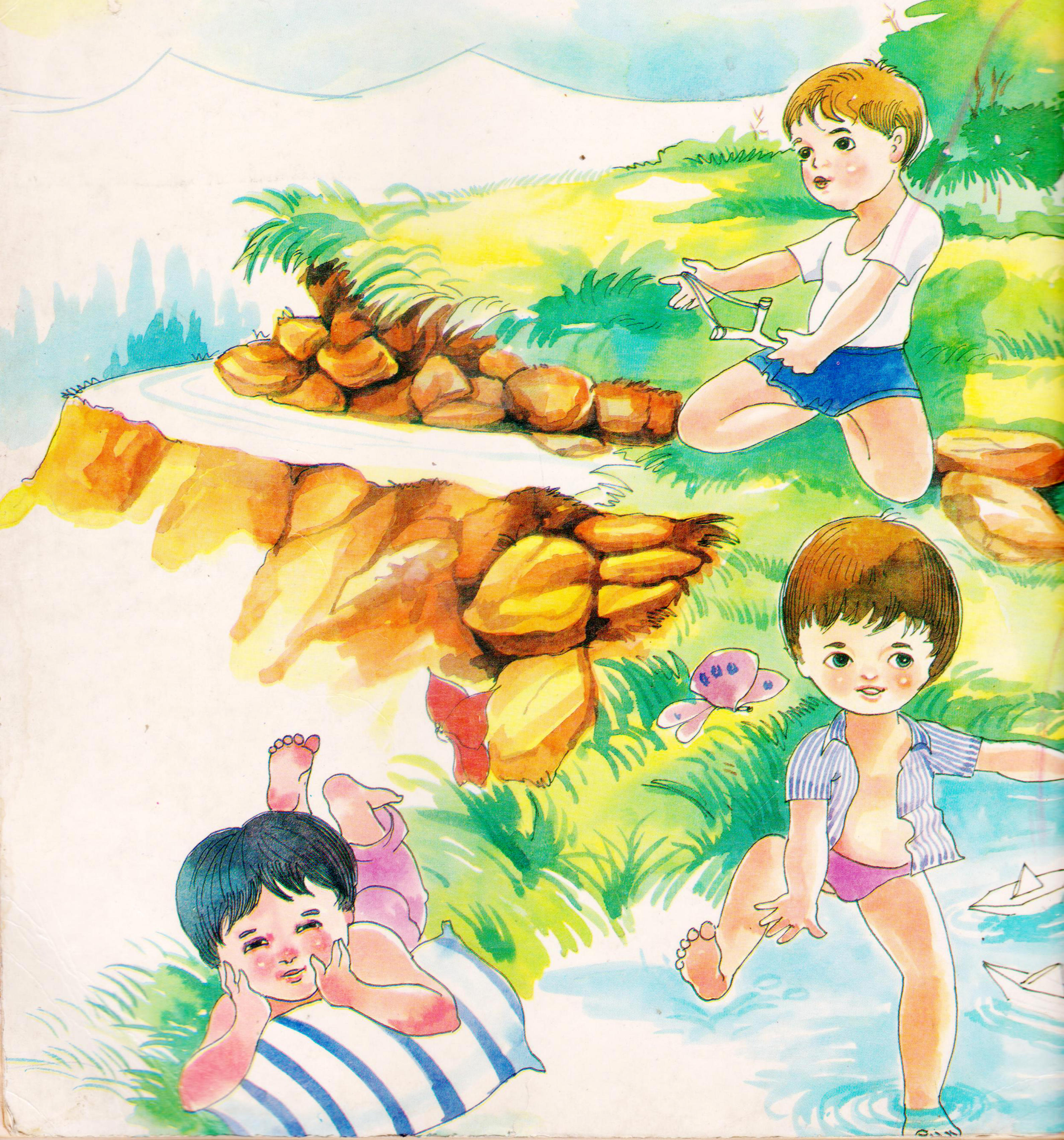
मुद्रक - वेरोनिका प्रिंटर्स, वाराणसी।